हिन्दुओंके
तीर्थस्थान
- सुदर्शन सिंह 'चक्र'
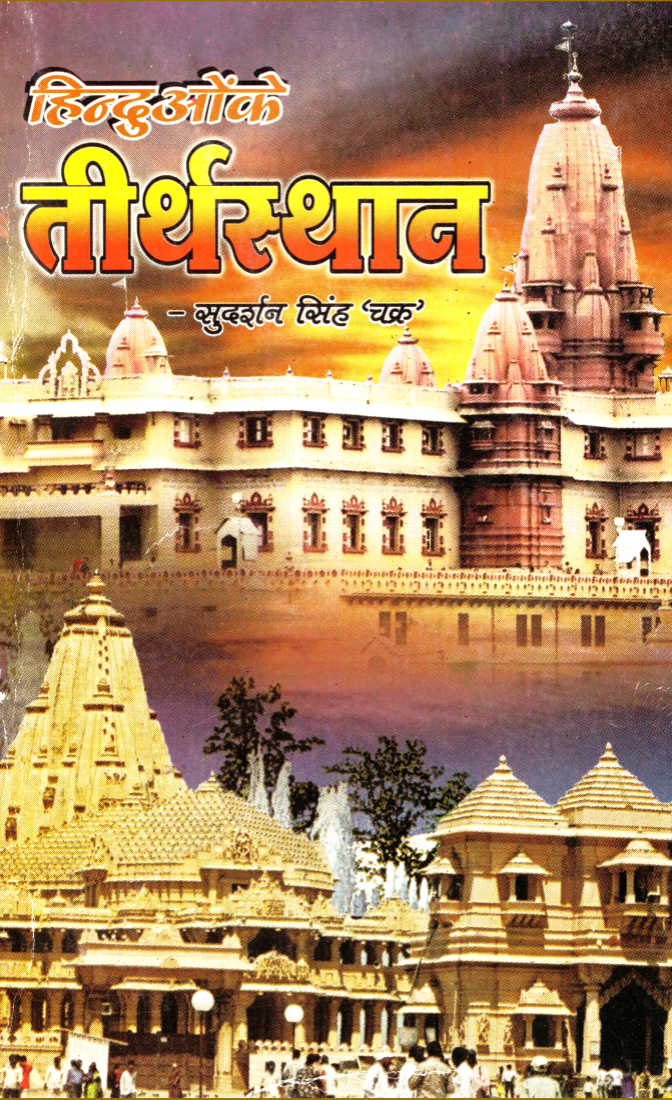
हिन्दुओंके तीर्थस्थान

●

लेखक :
सुदर्शनसिंह 'चक्र'

प्रकाशन-विभाग
श्रीकृष्ण-जन्मस्थान सेवा-संस्थान, मथुरा (उ० प्र०)

प्रकाशक :

श्रीकृष्ण-जन्मस्थान सेवा-संस्थान,
मथुरा-२८१००१

●

पंचम आवृत्ति : २००० ई० ..... ५००० प्रतियां

●

मूल्य

●

वर्ण संयोजक :

तरुण कम्प्यूटर ग्राफिक्स
गोपाल मार्केट, स्वामी घाट, मथुरा
फोन नं. - ४२३८९७

●

मुद्रक :

मयूर प्रेस,
जे. बी. नगर (पंचवटी) मसानी, मथुरा

अनुक्रमणिका

पूर्व भारत

परिशिष्ट

प्रकाशकीय

तीर्थी कुर्वन्ति तीर्थानि जो (मन-प्राण-शरीर को) पवित्र कर दे वही तीर्थ है । सामान्यतः तीर्थ तीन प्रकारके होते हैं– नित्यतीर्थ, भगवदीय तीर्थ और संत तीर्थ । काशी, हरिद्वार, उज्जैन, कैलास, मानसरोवर, गंगा, यमुना इत्यादि नित्यतीर्थ हैं । भगवदीय तीर्थों में वे स्थान आते हैं जहाँ भगवान्‌ने अवतार ग्रहण किया हो, जो स्थान उनकी लीलासे जुड़ा हो या जिस स्थानपर भक्तोंने भगवान्‌का साक्षात्कार किया हो । संत, महात्मा, योगी, सिद्ध भक्त इत्यादि ने जहाँ जन्म-ग्रहण किया, ज्ञान प्राप्त किया भगवत-चिन्तन किया, ज्ञानोपदेश दिया या आध्यात्मिक केन्द्र की स्थापना की गयी, वह संत तीर्थ है । भारतका कण-कण तीर्थ है । जो स्थान पौराणिक, ऐतिहासिक और लौकिक दृष्टिसे तीर्थ रूपमें स्वीकृत हैं उन प्रमुख स्थानों का परिचय है इस पुस्तकमें ।

तीर्थस्थान पिकनिक मनाने, भौतिक जिज्ञासा शान्त करने या मनोविनोद करनेका स्थान नहीं है । तीर्थ-स्थान सिद्ध-क्षेत्र होता है, वह स्थान जाग्रत होता है, तीर्थोंमें ईश्वरका नित्यवास होता है । तीर्थस्थानमें जानेसे मन शुद्ध होता है । हमारा चित्त भगवत-चिन्तनमें एकाग्र होता है । मनकी कलुषता धुल जाती है । भटकती हुई सांसारिक वृत्तियाँ तीर्थों में आते ही अध्यात्मसे

जुड़ने लगती है ।

श्रीसुदर्शनसिंहजी 'चक्र' ने कल्याणके 'तीर्थांक' (गीताप्रेस, गोरखपुरकी प्रसिद्ध पत्रिका) के निमित्त लगभग सन् १९५० ई० से सन् १९५६ ई० तक मानसरोवर, नेपाल सहित सम्पूर्ण भारतके तीर्थोमें तीर्थाटन किया । उस समय जिन-जिन तीर्थोंकी जो स्थिति, मार्ग, ठहरनेके स्थान थे उनका ही वर्णन हिन्दुओंके तीर्थस्थान में हैं । किन्तु अब ४०-४५ वर्षोंके अन्तरालमें बहुत कुछ परिवर्तन हो चुका है । नयी सड़कें, नया रेलवे स्टेशन, यात्राके साधन, होटल और धर्मशाले, नये मन्दिर, कुछ की स्थिति बदल गयी (मथुरा और अयोध्यामें जन्मस्थान); इसे ध्यान में रखकर 'हिन्दुओंके तीर्थस्थान' में जितना सम्भव हो सका है संशोधन और परिवर्तन कर दिया गया है । मील की दूरीको किलोमीटर में कर दिया गया है । साथ ही 'तीर्थयात्रा कैसे करनी चाहिए, तीर्थोमें, तीर्थोमें आचार-व्यवहार, तीर्थयात्रा में कर्तव्य; छोड़नेकी चीजें और तीर्थयात्रा किसलिए– पाप-पुण्य ! इत्यादि नयी सामग्री इस संस्करण में जोड़ी गई है । आशा है पाठक बन्धु इस नये कलेवर को स्वीकार करेंगे ।

-प्रकाशक

तीर्थ-यात्रा कैसे करनी चाहिए

(स्कन्दपुराण, काशी खण्डके अनुसार)

तीर्थयात्राकी इच्छा करनेवाला मनुष्य पहले घरमें उपवास, तीर्थयात्राके निमित्त (यथाशक्ति) गणेशजीका पूजन, पितृश्राद्ध, ब्राह्मण-पूजन तथा साधुओंका पूजन करे । फिर पारण करके हर्षित चित्तसे संयम-नियमका पालन करता हुआ तीर्थमें जाये । वहाँ पहुँचकर पितरोंका पूजन करे, तब वह तीर्थके यथार्थ फलका भागी होता है । (तीर्थसे लौटकर पुनः यह कृत्य करना चाहिए ।)

तीर्थमें ब्राह्मणकी परीक्षा न करें; वह अन्नकी इच्छा रखनेवाला हो तो उसे अवश्य भोजन करा दें । तीर्थोंमें सत्तू, हविष्यान्न, खीर, तिलके चूर्ण और गुड़से पिण्डदान करें । तीर्थमें अर्ध्य और आवाहनके बिना ही श्राद्ध करें ।

श्राद्धके योग्य समय हो अथवा न हो, तीर्थमें पहुँचते ही तुरन्त श्राद्ध-तर्पण करें । श्राद्धमें विघ्न नहीं आने दें ।

दूसरे कामसे तीर्थमें जानेपर भी वहाँ स्नान अवश्य करें । ऐसा करनेपर वह तीर्थस्नानके फलको पाता है । तीर्थयात्राके फलको नहीं ।

पाप करनेवाले मनुष्योंके पाप तीर्थस्नानसे नष्ट हो जाते हैं । श्रद्धालु पुरुषोंको तीर्थ शास्त्रोक्त फल देनेवाला होता है ।

जो दूसरोंके लिए तीर्थमें जाता है, उसको तीर्थ-फलका सोलहवाँ भाग मिलता है । जो दूसरे कार्यसे जाता है, उसको आधा फल मिलता है और कुशका पुतला बनाकर उसे तीर्थमें स्नान कराया जाता

है तो जिसके उद्देश्यसे पुतला नहलाया जाता है, उसे तीर्थस्नान करनेका आठवाँ भाग प्राप्त हो जाता है ।

तीर्थमें जाकर उपवास तथा सिरका मुण्डन कराना चाहिये; मुण्डन करानेसे सिरपर चढ़े हुए पाप दूर हो जाते हैं ।

जिस दिन तीर्थमें पहुँचना हो, उसके पहले दिन उपवास करें और तीर्थमें पहुँचनेके दिन श्राद्ध करें ।

तीर्थोंमें

१- स्कन्द पुराणके अनुसार सधवा स्त्रियोंके लिए पतिके साथ ही तीर्थमें स्नान करने और देव-दर्शनका विधान है ।

२- **तीर्थस्नान विधि** – तीर्थके दर्शन होते ही साष्टांग प्रणाम करना चाहिये । फिर 'तीर्थाय नमः' कहकर पुष्पांजलि देनी चाहिए । तीर्थके कुण्ड, सरोवर या नदीके जल का स्पर्श ॐकार का उच्चारण करके करना चाहिए । इसके बाद 'ॐ नमो देवदेवाय' मन्त्रका उच्चारण करता हुआ स्नान करें ।

३- **तीर्थमें तर्पण** – तीर्थमें पहुँचकर सर्वप्रथम पितृ-तर्पण करना चाहिए । यदि तीर्थ पहुँचनेके पहले कोई नदी मिल जाये तो उसे पार करते समय पितरोंका स्मरण एवं उच्चारण करना चाहिए । तर्पण तिलके साथ करना चाहिए । इसमें निषिद्ध तिथि-वारोंका दोष नहीं होता ।

४- **तीर्थ-श्राद्ध** – जिस तीर्थ में श्राद्धका नियम है, वहाँ पहुँचते ही श्राद्ध करना चाहिए । पिण्डदान पायस, घी-दूध में आटेको पकाकर या सत्तू से किया जा सकता है । तीर्थ -श्राद्धमें अर्घ्य, आवाहन

की आवश्यकता नहीं । तीर्थ-श्राद्धमें गीध, चाण्डाल आदिको भी देखनेसे न रोकना चाहिए । यहाँ उनकी दृष्टि शुभ मानी गयी है । जिसका पिता जीवित हो, वे भी तीर्थ-श्राद्ध कर सकते हैं ।

५- **तीर्थमें संध्या विधि** - प्रत्येक द्विज (ब्राह्मण, क्षत्री और वैश्य) को तीर्थमें निश्चित और नियमित रूपसे संध्या करनी चाहिये । यदि तीर्थ में दोनों (प्रातः और संध्या) कालमें कर पाना सम्भव नहीं हो तो प्रातःकाल स्नान कर एकांत तथा पवित्र स्थानमें बैठकर तीनों काल की संध्याओंका अनुष्ठान कर लेना चाहिए ।

६- **तीर्थमें सूतकादि दोष** – तीर्थमें यदि ज्ञात हो कि उनके परिवार में किसीकी मृत्यु या जन्म हो गया है तो तीर्थ में रहते हुए सूतक दोष नहीं लगता है । अपना कर्म ऐसे सम्बाद से नहीं रोकना चाहिए ।

७- **सवारी दोष** – तीर्थ में बैलगाड़ी की सवारी निषेध है । मत्स्यपुराण के अनुसार ''बैलगाड़ी की सवारी करने वाले का परलोक बिगड़ जाता है । पितृगण उसका जल ग्रहण नहीं करते ।' तीर्थमें जितना सम्भव हो पैदल ही दर्शन या स्नान को जाना चाहिए । नौका में यात्रा करनेका दोष नहीं है ।

८- तीर्थ में परान्न या परभोजन त्याग देना चाहिए । तीर्थ में जितना सम्भव हो सके जितेन्द्रीय रहना चाहिए तथा क्रोध-लोभ-मोह का सर्वथा त्याग कर देना चाहिए । पवित्रता का पूरा ध्यान रखना चाहिए । वाणी पर पूरा नियंत्रण रहे । ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए ।

९- तीर्थ में स्पर्श दोष नहीं लगता है । किसी अछूत, अस्पर्श्य या विधर्मी से स्पर्श होने से दोष नहीं मानना चाहिए । स्वयं के

अन्तः और बाह्य पवित्रता पर ध्यान रखना चाहिए ।

१०- सभी तीर्थों में जाकर मुण्डन तथा उपवास करने का नियम है (स्कन्दपुराण) । किन्तु कुरुक्षेत्र, बद्रीनाथ, जगन्नाथपुरी और गयामें मुण्डनादिका नियम नहीं है । स्त्रियोंके मुण्डनका भी विधान है । स्त्रियोंका मुण्डन केशके अन्तिम छोर का कुछ अंश कटा देने से भी मुण्डन की मान्यता पूरी हो जाती है ।

११- तीर्थों और पुण्यस्थलों में दान लेना निषिद्ध है जो तीर्थमें लोभवश दान लेता है उसका लोक तथा परलोक दोनों बिगड़ जाता है । (मत्स्यपुराण, तीर्थकाण्ड)

१२- वायुपुराण, तीर्थकाण्ड के अनुसार श्रद्धारहित, पापी, नास्तिक, संशयात्मा तथा कुतर्की— ये पाँच प्रकार के लोग तीर्थके फलसे वंचित रह जाते हैं ।

१३- जिससे कोई अपराध हो गया है, जिसने कभी भगवत-सेवा, पूजन, कीर्तन या सत्संग नहीं किया है; ऐसे व्यक्तिके तीर्थ में जाने से आत्मा और आचरण में शुद्धता आती है ।

१४- तीर्थ सेवन का परम फल उन्हींको मिलता है, जो विधिपूर्वक वहाँ जाते हैं और तीर्थोंके नियमों का सावधानी तथा श्रद्धाके साथ सुखपूर्वक पालन करते हैं । (भाईजी)

१५- जो लोग 'तीर्थ-काक' होते हैं— तीर्थों में जाकर भी कौए की तरह इधर-उधर गंदे विषयों पर ही मन चलाने तथा उन्हीं की खोज में भटकते रहते हैं, वे तो पूरा पाप कमाते हैं और इससे उन्हें दुस्तर नरकोंकी प्राप्ति होती है । (भाईजी)

तीर्थोंमें आचार-व्यवहार

१- खान-पान, आचरण और व्यवहार में सात्विकता रखें ।

२- किसी तरह का नशा, भाँग, गाँजा, अफीम, बीड़ी-सिगरेट, तमाखू, शराब को त्याग दें ।

३- ऐसा प्रयत्न करें कि तीर्थों में कम-से-कम आराम और सुख का उपभोग करें । वहाँ सुख न चाहें ।

४- रेडियो, टेपरिकार्डर, टी.वी., वगैरह साथ न रखें । यदि साथ में हो तो तीर्थ की मर्यादा के अनुसार ही बजायें ।

५- तीर्थमें भड़कीले वस्त्र न पहनें । प्रयत्न करें कि पवित्र (धुला या नवीन) भारतीय वस्त्र ही धारण किये जायँ ।

६- आपके द्वारा किसी स्थान पर गंदगी न फैले इस पर विशेष ध्यान दें । मल-मूत्र त्याग तीर्थ-स्थल से जितना दूर सम्भव हो अथवा पूर्व निर्मित शौचालय में ही करें ।

७- जूठन, शेष जल जहाँ-तहाँ न फेंके और न सार्वजनिक स्थान पर नाक साफ करें, कुल्ला फेंके और न थूक या बलगम फेंकें ।

८- तीर्थके कुण्ड, सरोवर या नदी में साबुन-शैम्पू का उपयोग न करें । वस्त्र साफ न करें । बच्चों के कपड़े न धोयें ।

९- मन्दिरों या तीर्थ के उपास्य स्थल पर जूता-चप्पल जहाँ-तहाँ न रखें निर्धारित स्थान पर ही रखना चाहिए ।

१०- तीर्थों में पूछ-ताछ या जिज्ञासा हमेशा वहाँके स्थानीय व्यक्ति से ही करें– वहाँ के कर्मचारी, पंडा-पुजारी या विश्वस्त दुकानदार

इत्यादि से ।

११- अनजान व्यक्तियों से तीर्थमें लेन-देन, खान-पान, निगरानी का कार्य सौंपना या सम्पर्क न रखें ।

१२- तीर्थ के वातावरण के अनुकूल सामान हमेशा साथ रखें (कपड़े, लाठी, जूता इत्यादि)

१३- आवश्यक औषधि (सरदर्द, बदनदर्द, ज्वर, उल्टी, समान्य जले-कटे, चोट लगने की) अपने साथ रखें और आवश्यकता होने पर अन्य यात्री की भी मदद करें ।

१४- तीर्थ-स्थान में विश्वस्त भोजनालय में ही भोजन करें जहाँ शुद्ध और ताजा भोजन उपलब्ध हो । अन्यथा फल वगैरह से काम चलाएँ ।

१५- तीर्थों में अछूत, रोगी या दीन-हीन व्यक्तियों अथवा अन्य धर्मावलंम्बी से स्नेह और प्रेममय व्यवहार रखें । किसीके प्रति द्वेष या घृणा का भाव न हो ।

१६- तीर्थ-यात्रा और तीर्थों में सर्वत्र सहयोग की भावना रखें और जितना सम्भव हो दूसरों को सहयोग देने का प्रयत्न करें ।

तीर्थयात्रामें कर्तव्य

तीर्थयात्रामें आसक्तिका त्याग कर्तव्य है ।
तीर्थयात्रामें कामनाओं का त्याग कर्तव्य है ।
तीर्थयात्रामें ममताका त्याग कर्तव्य है ।
तीर्थयात्रामें अहंकारका त्याग कर्तव्य है ।
तीर्थयात्रामें केवल भगवान्में आसक्ति करो ।
तीर्थयात्रामें केवल भगवान्में ही ममता करो ।

तीर्थयात्रामें केवल भगवान्के दासत्वका अहंकार करो ।

तीर्थयात्रा किसलिए

तीर्थयात्रा मौज-आरामके लिए नहीं ।
तीर्थयात्रा सैर-सपाटेके लिए नहीं ।
तीर्थयात्रा मनोरंजनके लिए नहीं ।
तीर्थयात्रा खान-पान शयनके लिए नहीं ।
तीर्थयात्रा महान् तपस्याके लिए है ।
तीर्थयात्रा परमार्थ साधनके लिए है ।
तीर्थयात्रा मनकी शुद्धिके लिए है ।
तीर्थयात्रा संयम-नियमके लिए है ।

तीर्थयात्रा में पाप-पुण्य

तीर्थयात्रामें निन्दा-चुगली करना पाप है ।
तीर्थयात्रामें राजस-तामस करना पाप है ।
तीर्थयात्रामें पर-स्त्री, पर-पुरुषपर कुदृष्टि पाप है ।
तीर्थयात्रामें पर-धनपर, मन ललचाना पाप है ।
तीर्थयात्रामें सब को सुख-सुविधा देकर पुण्य लूटो ।
तीर्थयात्रामें सत्य भाषण करके पुण्य लूटो ।
तीर्थयात्रामें भगवान्का नाम गुण-गाकर पुण्य लूटो ।
तीर्थयात्रामें धन-वैभवमें वैराग्य करके पुण्य लूटो ।

उत्तराखण्ड

मोक्षदायिनी पुरी

अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका ।
पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः ।।

१-अयोध्या, २-मथुरा, ३-माया (हरिद्वार), ४-काशी (वाराणसी), ५-काञ्ची, ६-अवन्तिका (उज्जैन), और ७-द्वारिका ये सात पुरियाँ मोक्ष देने वाली हैं ।

हरिद्वार (पुरी-१)

मायापुरी, हरिद्वार, कनखल, ज्वालापुर और भीमगोड़ा- इन पाँच स्थानोंको मिलाकर हरिद्वार कहा जाता है ।

स्वर्गद्वारेण तत्तुल्यं गंगाद्वारं न संशयः ।
तत्राभिषेकं कुर्वीत कोटितीर्थे समाहितः ।।

इसमें सन्देह नहीं कि हरिद्वार स्वर्गके द्वारके समान है । वहाँ कोटितीर्थ-ब्रह्मकुण्डमें एकाग्रचित्तसे स्नान करें ।

हरिद्वारमें बारहवें वर्ष जब सूर्य-चन्द्र मेष तथा गुरु कुम्भराशिमें होते हैं तो कुम्भका मेला होता है । छठवें वर्ष अर्धकुम्भी मेला होता है ।

उत्तर रेलवेका हरिद्वार प्रसिद्ध स्टेशन है । हरिद्वार देशके सभी बड़े नगरोंके रेल-मार्ग तथा सड़क-मार्गसे जुड़ा है । रेलमार्गसे

हावड़ा से १४९७ कि. मी., मुम्बईसे १८०५ कि. मी., दिल्लीसे २६३ कि. मी. तथा देहरादूनसे ५२ कि. मी. की दूरीपर स्थित है । दिल्लीसे नियमित बस-सेवा भी है, जिससे छः घंटेमें हरिद्वार पहुँचा जा सकता है । यहाँ ठहरनेके लिये अनेक धर्मशालाएँ हैं । साधु-महात्माओंके आश्रम यहाँ बहुत हैं । उनमें भी यात्री ठहरते हैं ।

१. **ब्रह्मकुण्ड या हरकी पैड़ी**– स्नान करनेका यह मुख्य स्थान है । राजा श्वेतने यहाँ तप करके ब्रह्माजीको प्रसन्न करके वरदान माँगा था–'यहाँ आप, शंकरजी तथा विष्णु भगवान् सब तीर्थोंके साथ रहें ।'

महायोगी भर्तृहरिने भी यहां तपस्या की, अतः उनके भाई महाराज विक्रमादित्यने यहाँ कुण्ड और सीढ़ियाँ (पैड़ियाँ) बनवायीं । इस कुण्डमें गंगाजल एक ओरसे आकर दूसरी ओर निकल जाता है । धारा तेज है, पर जल कमर जितना ही है ।

इस कुंडमें श्रीहरिकी चरणपादुका, मनसादेवी, साक्षीश्वर शिव तथा गंगाधर महादेवके मन्दिर हैं । सायंकाल यहाँ गंगाजीकी आरती दर्शनीय होती है ।

२. **गऊघाट**– ब्रह्मकुण्डसे दक्षिण है । यहाँ गोहत्याके पापसे मुक्तिके लिये स्नान किया जाता है ।

३. **कुशावर्त घाट**– यहाँ दत्तात्रेयजीने दस हजार वर्ष तप किया था । यहाँ पितरोंको पिण्डदान दिया जाता है ।

४. **रामघाट**– यहाँ श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है ।

५. **विष्णुघाट**– यहाँ श्रीभगवान् विष्णुने तप किया था ।

६. **गणेशघाट**– यहाँ गणेशजीकी विशाल मूर्ति है ।

७. **नारायणी शिला**–गणेशघाटसे थोड़ी दूरपर नारायणी शिला है । इसपर पिण्डदान होता है ।

८. **श्रवणनाथ मन्दिर**–कुशावर्तघाटके दक्षिण यह दर्शनीय मन्दिर है । यहाँ पंचमुखी महादेवकी मूर्ति है ।

९. **नीलेश्वर**–नहर पार करके जानेपर गंगाजीकी नील धारा मिलती है । उसमें स्नान करके पर्वतपर नीलेश्वर महादेवके दर्शनका बड़ा माहात्म्य है ।

१०. **कालीमन्दिर**–वहीं नीलधारा पार चण्डी पहाड़ीके मार्गमें कौल-सम्प्रदायका काली मन्दिर है ।

११. **चण्डी देवी**–नील पर्वतके शिखरपर चण्डी देवीका मन्दिर है । यहाँ आनेके लिये ३. कि.मी. की कड़ी चढ़ाई पड़ती है । ऊपर जानेके दो मार्ग हैं । एकसे जाकर दूसरेसे उतरनेपर सब मन्दिरोंके दर्शन हो जाते हैं । इनमें गौरीशंकर, नीलेश्वर तथा नागेश्वर मुख्य हैं ।

१२. **अंजनी देवी**–चण्डी मन्दिरके पास ही श्रीहनुमानजीकी माता अंजनी देवीका मन्दिर है ।

१३. **विल्वकेश्वर**–हरिद्वार स्टेशनसे थोड़ी दूरपर पर्वतपर जानेका सुगम मार्ग है । ऊपर विल्वकेश्वर शिव मन्दिर है । ऊपर देवी-मन्दिर भी है । इसी पर्वतपर गौरीकुण्ड है ।

१४. **भीमगोडा**–हरकी पैड़ीसे आगे पहाड़के नीचे सड़कके पास ही एक कुंड है । यहाँ कुछ मूर्तियाँ हैं । इस कुण्डमें स्नानका महत्व है । यहाँपर ब्रह्माजीका मन्दिर है ।

१५. **चौबीस अवतार**–यह मन्दिर भीमगोड़ासे आगे है ।

१६.**सप्तधारा**–इसे लोग सप्त सरोवर भी कहते हैं । वह भीमगोडासे १.५ कि.मी. आगे है । सप्तर्षियोंने यहाँ तपस्या की थी । अतः उनके लिये यहाँ गंगाजी सात धारामें बहीं । यहाँ सप्तर्षि आश्रम और परमार्थआश्रम अच्छे दर्शनीय हैं ।

कनखल

हरकी पैड़ीसे कनखल ५ कि.मी. है । यहाँ स्नानका बड़ा माहात्म्य है । यहाँ गंगाकी दो धारा मिलती हैं ।

१.**दक्षप्रजापतिका मन्दिर**–यह कनखलका मुख्य मन्दिर है । यहीं दक्षके यज्ञमें सतीने देह-त्याग किया था । यह क्षेत्र दर्शनसे ही जन्म-जन्मान्तरके पापोंसे मुक्त करनेवाला है । मायापुरीकी यात्रा इसके दर्शन किये बिना सफल नहीं होती ।

२.**सतीकुण्ड**–सतीके देहत्यागका स्थान दक्षेश्वरसे १ कि.मी. पर है । इस कुण्डमें स्नानका माहात्म्य है ।

कनखलमें अवधूत आश्रममें दर्शनीय मूर्तियाँ हैं ।

३.**सत्यनारायण**–हरिद्वारसे मोटर-बससे ऋषिकेश जाते समय सप्तधारासे ५ कि.मी. आगे यह मन्दिर है । स्नानके लिये यहाँ कुंड है ।

४.**वीरभद्रेश्वर**–सत्यनारायणसे ८ कि.मी. पर यह मन्दिर है। बाहर देवियोंके मन्दिर हैं ।

ऋषिकेश

यह भगवान् शिव एवं विष्णुका अभिन्न क्षेत्र है यहाँ राजा

रुरुने तप करके भगवान् शंकरका दर्शन किया था । तबसे यह बराबर तपस्वियोंकी स्थली रही है । हरिद्वारसे २४ कि. मी. दूर रेल, मोटर-बस और टैक्सी तीनों आती हैं ।

१–**त्रिवेणीघाट**–यहाँपर यात्री स्नान करते हैं ।

२–**भरत मन्दिर**–यहाँका मुख्य मन्दिर भरत मन्दिर है । इसके अतिरिक्त राम मन्दिर, वाराह मन्दिर चन्देश्वर मन्दिर आदि कई हैं ।

३–**मुनिकी रेती**–ऋषिकेश बाजारसे २.५ कि.मी. पर यह स्थान है । यहाँ कैलाशाश्रम और स्वामी शिवानन्दाश्रम दर्शनीय हैं ।

४–**स्वर्गाश्रम**–मुनिकी रेतीसे नौका द्वारा गंगा पार करनेपर स्वर्गाश्रम पहुँचा जाता है । यहाँ स्वर्गाश्रम, गीता-भवन,परमार्थ-निकेतन तथा अन्य अनेक आश्रम हैं । महर्षि महेशका शंकराचार्य नगर यहीं है । लक्ष्मण-झूलाके रास्ते भी यहाँ पहुँचा जाता है ।

५–**लक्ष्मण झूला**–मुनिकी रेतीसे २.५ कि.मी. पर झूलेके पुलसे पार करना होता है । स्वर्गाश्रमसे सड़कका मार्ग है । यहाँ लक्ष्मणजीका मन्दिर मुख्य है ।

ऋषिकेशका पौराणिक नाम 'कुब्जाम्रक' है । यह तपःस्थली है । कुब्ज रैम्य मुनिको आमके वृक्षमें विष्णुके दर्शन हुए थे ।

यमुनोत्तरी

तत्र स्नात्वा च पीत्वा च यमुना यत्र निस्सृता ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः पुनात्यासप्तमं कुलम् ॥

जहाँसे यमुना निकली है, वहाँ स्नान करके अथवा वहाँका जल पीकर मनुष्य सब पापोंसे छूट जाता है और उसके सात कुल

तक पवित्र हो जाते हैं ।

विशेष सूचनाएँ

१–यमुनोत्तरी, गंगोत्तरी, बद्रीनाथ और केदारनाथकी पूरी यात्रा करना हो तो यमुनोत्तरीसे प्रारम्भ करें ।

२–इनमेंसे एक या दो स्थान ही जाना हो तो भी यात्रा ऋषिकेशसे प्रारम्भ होती है । केवल बद्रीनाथके लिये कोटद्वार स्टेशनसे भी मोटर-बसें चलती हैं ।

३–मोटर-बस रोड बन गयी है । मार्ग ऐसा है कि पहाड़-पत्थर गिरनेसे अनेक बार कहीं भी अवरुद्ध हो जाता है । अतः मोटर-बस कहाँ तकके लिये मिलेगी, यह ठीक पता ऋषिकेशमें ही चल सकता है ।

४–जहाँसे पैदल जाना होता है, कुली मिलते हैं । एक कुली एक मन भार ले जाता है । वहाँ उनकी रजिस्टरमें कार्यालयमें नाम लिखाकर ले जाना चाहिये । उनकी मजदूरीका रेट कार्यालयसे पूछ लें ।

५–इस उत्तराखण्डकी पूरी यात्रामें रबड़के जूते चाहिये जो फिसलने वाले न हों । साथमें एक मजबूत छड़ी सहारेके लिये और बरसाती रखना अच्छा है । छाता काम नहीं देता ।

६–कोई अनजान फल, शाक, पत्तीको छुएँ नहीं । वे विषैले हो सकते हैं । बिच्छू-बूटी इधर बहुत है जो छू जाय तो पीड़ा देती है ।

७–प्यास लगनेपर झरनेका पानी सीधे न पीवें । अन्यथा हिल-डायरिया होनेका भय है । मिश्री-किसमिस कुछ अपने पास रखें और

एक हल्का गिलास । कुछ थोड़ा खाकर पानी पीवें । पानी पहिले लोटे या गिलासमें भर लें; एक मिनट रहने दें, जिससे उसमें जो कण हैं, नीचे बैठ जायँ तब पीवें । नीचेका एक घूंट जल फेंक दें । फिर गिलास भरना हो तो ऐसा ही करें ।

८–यमुनोत्तरी और केदारनाथके मार्गमें कहीं-कहीं जहरीली मक्खी होती हैं । काटनेपर फोड़े हो जाते हैं । शरीर ढका रखें । काटनेपर डिट्टोल, टिंचर या जम्बक मलहम लगावें ।

९–कच्चे सेब आड़ू आदि न खायँ ।

१०–सर्दी बहुत पड़ती है । गरम कपड़े खूब साथ ले जायँ । ऊपर दाल नहीं पकती । आलूसे काम चलाना पड़ता है ।

यात्राका समय–यह यात्रा प्रायः १५ अप्रैलसे प्रारम्भ होती है और दीपावली तक चलती है ।

यमुनोत्तरी मार्ग–अब सामान्यतः ऋषिकेशसे धरासू होकर मोटर-बस जाती है । ऋषिकेशसे यमुनोत्तरी २१० कि.मी. है । केवल १० कि.मी. पैदल मार्ग है । हरिद्वारसे इसकी दूरी २५५ कि. मी. तथा वाया देहरादून जानेपर २४४ कि. मी. है ।

खरसाली–यमुनोत्तरीके पंडे यहीं रहते हैं । इसके आगे कडी सर्दी पड़ती है और विषैली मक्खियाँ हैं ।

यमुनोत्तरी–यह स्थान समुद्र सतहसे दस हजार फीट ऊँचा है । काली कमलीकी धर्मशालाएँ हैं ।

यहाँ गरम पानीके कई कुंड हैं । उनमें पानी खौलता रहता है । यात्री कपड़ेमें बाँध कर आलू-चावल उसमें डुबा रखते हैं तो वे पक जाते हैं ।

इन गरम कुण्डोंमें स्नान करना सम्भव नहीं है । स्नानके लिये अलग कुण्ड बना है, जिनमें जल कुछ शीतल रहता है । यमुना-जल इतना शीतल है कि उसमें भी स्नान नहीं किया जा सकता ।

कलिन्द पर्वतसे बहुत ऊँचेसे हिम पिघलकर यहाँ जलके रूपमें गिरता है । इसीसे यमुनाका नाम कालिन्दी है ।

यहाँ छोटा-सा यमुनाजीका मन्दिर है । यहाँ असित मुनिका आश्रम था । उनके तपसे गंगाजीका एक छोटा झरना यहाँ प्रगट हुआ जो अभी है ।

गंगोत्तरी

गंगोद्‌भेदं समासाद्य त्रिरात्रीपोषितो नरः ।
वाजपेयमवाप्नोति ब्रह्मभूतो भवेत्सदा ॥

गंगा जहाँसे अवतरित होती हैं, वहाँ जाकर तीन रात्रि उपवास करके स्नान करनेसे मनुष्य बाजपेय-यज्ञका फल पाता है और सदाके लिये ब्रह्मभूत हो जाता है ।

यमुनोत्तरीसे जिस मार्गसे गये हैं, उसीसे गंगाणी तक लौट आना चाहिये । मोटर-बसके लिए सड़कोंका मार्ग बना हुआ है । इसलिये पैदल मार्ग कम होता जा रहा है । जहाँसे मोटर-बस मिल जावे, वहाँसे बस पकड़कर बरकोट होते उत्तरकाशी चले जाना चाहिये । हरिद्वारसे गंगोत्रीकी दूरी २९८ कि. मी. है । ऋषिकेशसे लंका तक बसमें एवं लंकासे भैरोघाटी तक ३ कि.मी. पैदल चलनेपर बस मिल जाती है ।

यमुनोत्तरीसे १० कि.मी. लौटकर मोटर-बसें उत्तरकाशीको

मिल जाती हैं । उत्तरकाशी एक प्रधान तीर्थ-स्थल है । यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं । अनेक आश्रम और मन्दिर हैं । इनमें विश्वनाथ मन्दिर दर्शनीय है । यहाँ जड़भरतका आश्रम था । उसके पास ब्रह्म-कुण्डमें स्नान, तर्पण होता है । इसमें सदा गंगाजल रहता है ।

यात्रीको ऋषिकेशसे सीधे गंगोत्तरी जाना हो तो भी बस मिलती है ।

गंगोत्तरी–

यह स्थान यमुनोत्तरीकी समान ऊँचाईपर है । कई धर्मशालाएँ हैं । अन्नसत्र भी है ।

मुख्य मन्दिर गंगा-मन्दिर है । आदिशंकराचार्यजीने यहाँ गंगाजीकी मूर्ति स्थापित की है । मन्दिरमें यमुना, सरस्वती, राजा भगीरथ तथा शंकराचार्यकी मूर्तियाँ भी हैं । समीप ही भैरव-मन्दिर है ।

यहाँ सूर्य-कुण्ड, ब्रह्म-कुण्ड, विष्णु-कुण्ड आदि तीर्थ गंगाजीमें हैं । एक विशाल भगीरथ शिला है, जिसपर उन्होंने तप किया था ।

गंगोत्तरीसे नीचे केदार-गंगा संगम है । वहाँसे थोड़ी दूरीपर गंगाजी ऊँचाईसे शिवलिंगपर गिरती हैं । वह स्थान गौरी-कुण्ड कहा जाता है ।

गोमुख

गंगाजीका मुख्य उद्गम-स्थान नारायण-पर्वत है, जो बद्रीनाथके ऊपर है । वहाँसे हिम-धारा (ग्लेशियर) चलता है । जलधाराके रूपमें कभी किसी समय गंगाजी गंगोत्तरीमें प्रगट होती थीं; किन्तु हिमालयकी

हिमराशि जैसे-जैसे घटती गई, गंगाका उद्गम हिमालयमें भीतर बढ़ता गया। जहाँ गंगाजी हिमके नीचेसे जलके रूपमें प्रगट होती हैं, उस स्थानको गोमुख कहते हैं। वह स्थान गंगोत्तरीसे अब ३० कि.मी. है। सम्भव है, यह दूरी और बढ़ जाय।

यात्री प्रायः गंगोत्तरीसे लौट आते हैं। कोई-कोई ही गोमुख जाते हैं। आगे कोई मार्ग नहीं बना है। मार्गमें चीड़वासामें ही पडाव है। दूकानें नहीं हैं रीछ और चीते भी मिलते हैं। तीव्र वेग धाराओंको पार करना, पत्थरोंपर कूदकर जाना जैसी कठिनाइयाँ हैं और शीत बहुत अधिक है।

गंगोत्तरीसे १६ कि.मी. पर देवगाड़ नदी गंगामें मिलती है। ७ कि.मी. आगे चीड़वास वन है। यात्री यहीं रात्रिको रुकते हैं। यहाँ साधु आश्रम हैं। ठहरने-भोजनकी सुविधा है। बड़े सवेरे गोमुख जाना चाहिये, जो वहाँसे ६.५ कि.मी. है। स्नान करके चीड़वास लौट आना चाहिये। धूप निकलते ही पर्वतसे हिम शिलाएँ टूट-टूट कर गिरने लगती हैं, अतः धूप चढ़नेसे पूर्व यात्रीको चीड़वास लौट आना चाहिये।

केदारनाथ

'काशीमें मरनेसे मुक्ति होती है; किन्तु केदार क्षेत्रमें तो केदारेश्वरके पूजन-मात्रसे मनुष्य मुक्त हो जाता है।' –**स्कन्दपुराण**

बहुतसे यात्री केवल बद्रीनाथ और केदारनाथकी यात्रा करते हैं। अतः केदारनाथ यात्राके भी दो मार्ग हैं। एक गंगोत्तरीसे उत्तरकाशी होकर बससे केदारनाथ और दूसरा ऋषिकेशसे केदारनाथ।

ऋषिकेशसे या उत्तरकाशीसे सोमप्रयाग तक मोटर-बसें आती हैं। मार्गमें रुद्रप्रयागमें अलकनन्दा और मन्दाकिनी संगम है। यहाँ धर्मशाला है। शिव-मन्दिर है। नारदजीने यहाँ तप किया था। ४ कि.मी. पर कोटेश्वर मन्दिर है। वहाँसे १.५ कि.मी. पर उमगामें नारायण मन्दिर है। मन्दाकिनीके किनारे-किनारे आगेका मार्ग है। रुद्रप्रयागसे गुप्तकाशी ३८ कि. मी., गुप्तकाशीसे त्रियुगीनारायण होते हुए सोमप्रयाग केदारनाथ जानेका अन्तिम बस अड्डा है। यहाँसे केदारनाथकी १८ कि. मी. की पैदल यात्रा है। सवारियोंके लिए खच्चर भी मिलते हैं। सोमप्रयागसे ६ कि.मी. गौरीकुण्ड है। गौरी-कुण्ड से १४ कि.मी. आगे केदारनाथ है।

सोमद्वार (सोमप्रयाग)– सोम नदीका संगम है। पुलपार १.५ कि.मी.पर छिन्नमस्तक गणपति हैं। यहाँसे ही ९,००० फीटकी ऊँचाईपर स्थित त्रियुगी नारायणको पैदल रास्ता जाता है। यहीं शिव-पार्वतीका विवाह हुआ था।

गौरीकुण्ड– ५ कि.मी.। धर्मशाला है। गरम और ठंडे पानीके दो कुण्ड हैं। यह पार्वतीका जन्म-स्थल है। यहाँ पार्वती मन्दिर है। एक राधाकृष्ण मन्दिर है। आगे १३ कि.मी. कड़ी चढ़ाई है। जहरीली मक्खियोंका उपद्रव भी है।

चिरपटिया भैरव– १.५ कि.मी.। भीम शिला- १.५ कि.मी.। रामबाड़ा-३ कि.मी.। धर्मशाला है। यहाँ वस्त्र चढ़ाया जाता है।

केदारनाथ– १.५ कि.मी.। महर्षि उपमन्युने यहाँ तप किया था। यहीं पाण्डवोंने भी तप किया था। भगवान् शिवने महिष रूप धारण किया तो उनके पाँच भाग पाँच स्थानोंमें प्रतिष्ठित हुए। उन पंचकेदारमें यह प्रथम है। मन्दिरमें केवल त्रिकोण पर्वत खण्ड

है, जिसकी यात्री स्वयं पूजा करते और अंकमाल देते हैं। दर्शनीय स्थान भृगुपंथ, क्षीरगंगा, वासुकिताल, गुगूकुण्ड, भैरव-शिला है। वासुकीताल १६ कि.मी. दूर बहुत कठिन मार्गपर किन्तु अत्यन्त रमणीय स्थान है। यहाँ भगवान् शंकरका नित्यवास है।

पंचपांडव मूर्तियाँ, भीमगुफा, भीमशिला तथा कई कुण्ड हैं। पर्वत-शिखरपर ब्रह्मकमल पाये जाते हैं। यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं; किन्तु शीत बहुत होनेसे यात्री रात्रिमें कम रुकते हैं। मन्दिरमें उषा-अनिरुद्ध, पाण्डव, श्रीकृष्ण तथा शिवपार्वतीकी मूर्तियाँ हैं। परिक्रमामें कई कुण्ड हैं।

केदारनाथमें अब यात्री-निवास तथा ठहरनेकी और अच्छी सुविधाएँ हो गई हैं।

बद्रीनाथ (धाम-१)

अन्यत्र मरणान्मुक्तिः स्वधर्मविधिपूर्वकात्।
बदरीदर्शनादेव मुक्तिः पुंसां करे स्थिता॥

स्वधर्मका विधिपूर्वक पालन करते हुए अन्यत्र मरनेसे मुक्ति होती है; किन्तु बद्रीनाथ दर्शनसे मुक्ति हस्तगत हो जाती है।

मार्ग १–ऋषिकेशसे सीधे बद्रीनाथ जाना हो या कोटद्वार स्टेशनसे तो जीप, मोटर-कार और मोटर-बसें सभी पहुंचाती हैं।

२–केदारनाथसे बद्रीनाथ जानेके लिये एक दूसरा मार्ग और है। यह मार्ग ऊखीमठ, तुंगनाथ, कालीमठ, गोपेश्वर होता चमोलीमें ऋषिकेशसे बद्रीनाथ जाने वाले मुख्य मार्गमें मिल जाता है। यह मार्ग भी मोटर-मार्ग बन गया है।

मार्गके मुख्य तीर्थ

ऋषिकेशसे बद्रीनाथके मार्गमें पड़ने वाले मुख्य स्थानोंकी थोड़ी चर्चा आवश्यक है ।

देवप्रयाग- ऋषिकेशसे ७० कि.मी. दूर देवप्रयाग में अलकनन्दा-भगीरथी संगम है । इसे प्राचीन सुदर्शन क्षेत्र कहा जाता है । इसके पश्चात् देवप्रयागसे कीर्तिनगर होते हुए श्रीनगर १०२ कि.मी. तथा यहाँसे ३७ कि. मी. की दूरीपर रुद्रप्रयाग है जहाँ मन्दाकिनी-अलकनन्दा संगम है । रुद्रप्रयागसे २४ कि.मी. पर कर्णप्रयाग, यहाँसे २१ कि.मी. पर नन्दप्रयाग, विष्णुप्रयाग ये तीन प्रयाग रुद्रप्रयागके अतिरिक्त मार्गमें और हैं । कुल पाँच प्रयाग ब्रदीनाथ तक पड़ते हैं ।

चमोलीसे ३४ कि.मी.पर कुम्हार चट्टी (हेलंगु) से पुलसे अलकनन्दाको पार करके १० कि.मी. जानेपर पंचम केदार कल्पेश्वर मन्दिर है । यहीं ध्यान बद्री भी है । यहाँ धर्मशाला है । यहाँ से भी रुद्रनाथको मार्ग है ।

जोशीमठ (ज्योतिर्मठ) –जगद्गुरु शंकराचार्यका यह उत्तर पीठ है । शीतकालमें छह महीने बद्रीनाथजीकी चलमूर्ति यहीं रहती है । ज्योतीश्वर शिव तथा भक्तवत्सल भगवान् ये दो मुख्य मन्दिर यहाँ हैं । इनके पास ही ज्योतिष्पीठ है । यहाँ एक नृसिंह मन्दिरमें भगवान् नृसिंहकी भुजा बहुत पतली है । कहा जाता है–जब यह भुजा टूटेगी, विष्णु प्रयागसे आगे नर-नारायण पर्वत मिल जायँगे । बद्रीनाथका मार्ग बन्द हो जायगा । यात्री तब भविष्य बद्रीकी यात्रा करेंगे ।

तपोवन –जोशीमठसे एक मार्ग नीति घाटी जाता है । उसमें

१० कि.मी.पर तपोवन है । वहाँ गरम जलका कुण्ड है । वहाँसे ५ कि.मी.पर विष्णु मन्दिर है । यही भविष्य बद्री है । वृक्षके नीचे एक शिलामें स्वतः विष्णु मूर्ति बन रही है, जो आधी बन गई है । वहाँ पास ही लता देवीका मन्दिर है ।

हेमकुंड –जोशीमठसे ५ कि. मी. पर विष्णुप्रयाग है । उससे १० कि.मी. आगे पांडुकेश्वर है । यहाँ योगबद्रीका मन्दिर है । यहाँसे एक मार्ग पुष्पघाटी, लोकपाल, हेमकुंडको जाता है । पुष्पघाटी विश्वका सबसे सुन्दर प्राकृतिक स्थल है । जोशीमठसे हेमकुंड २४ कि.मी. है । वहाँ गुरुद्वारा है । पूर्व जन्ममें गुरु गोविन्द सिंहने यहाँ तपस्या करके कालिकाकी आराधना की थी । इसके आगे काकभुशुण्डि तीर्थ है । लोकपालमें छोटा-सा मन्दिर है । आगे लोकपाल सरोवर है ।

बद्रीनाथ –यहाँ यात्री मन्दिरके सामने तप्त कुण्डमें स्नान करते हैं । नीचे नारद-कुण्डमें भी स्नान किया जाता है ।

मुख्य मन्दिरमें शालग्राम शिलामें बद्रीनाथजीकी चतुर्भुज मूर्ति है । कहते हैं कि यह नारद-कुण्डमें-से निकली है ।

यहाँ शंकराचार्य मन्दिर, आदिकेदार मन्दिर हैं । आदिकेदारके दर्शन करके तब बद्रीनाथके दर्शनार्थ जाना चाहिये ।

गरुड़-शिला, नारद-शिला, मार्कण्डेय-शिला, नृसिंह-शिला, वाराही शिलाएँ मुख्य शिला हैं जिनपर नारदादिने तप किया था । गंगाजीमें प्रह्लाद-कुण्ड, कर्मधारा तथा लक्ष्मी-धारा तीर्थ हैं ।

ब्रह्मकपाल तीर्थमें यहाँ यात्री पिण्डदान करते हैं ।

बद्रीनाथमें कई धर्मशालाएँ हैं । परमार्थ-धाम तथा कई आश्रम हैं ।

समीपके तीर्थ– बद्रीनाथसे आगे अत्रि-अनुसूया तीर्थ है। उससे आगे इन्द्रकी तपःस्थली इन्द्रधारा है। माणा गाँवके सामने नर-नारायण तथा धर्मपत्नी मूर्तिका मन्दिर है। यह स्थान धर्मक्षेत्र है। यहीं नर-नारायणका अवतार हुआ था। यह स्थान बद्रीनाथसे ५ कि.मी. है।

माता मूर्तिसे ६.५ कि.मी.पर लक्ष्मीवन है। लक्ष्मीधारा नामक छोटा झरना है। इससे आगेकी यात्रा अगस्त-सितम्बरमें ही सम्भव है। इससे पूर्व हिम-खंड गिरते रहते हैं।

बद्रीनाथसे ७ कि.मी. पर वसुधारा तक जाकर यात्री उसी दिन लौट आते हैं। आगे जाना हो तो भोजनादि सामान ले जाना चाहिये।

लक्ष्मीवनसे आगे चक्रतीर्थ नामक मैदान है। उसके ५ कि.मी. आगे सत्पथ सरोवर है। यह त्रिकोण सरोवर स्वच्छ जलसे भरा है।

स्वर्गारोहणका मार्ग सत्पथसे आगे बहुत कठिन चढ़ाईका है। ऊपर सोमतीर्थ नामक गोल कुण्ड है। फिर सूर्यकुण्ड मिलता है। यहीं आगे विष्णु-कुण्ड है। फिर त्रिकोण लिंगाकार पर्वत है। यहीं अलकनन्दा-भागीरथीके मूल स्रोत एक हुए हैं। आगे अलकापुरी और स्वर्गारोहण शिखर दीखते हैं।

वैष्णवदेवी

यह स्थान काश्मीरमें बहुत प्रसिद्ध है। आश्विन और चैत्र दोनों नवरात्रोंमें यहाँकी विशेष यात्रा होती है।

मार्ग – पठानकोट रेलवे स्टेशनसे जम्मू तक रेल मार्ग है। जम्मूसे कटरा तक मोटर-बसें जाती हैं। जम्मूसे कटरा लगभग ४८

कि.मी. उत्तर-पश्चिमकी ओर त्रिकुटा पर्वत-शृंखलाके अंचलमें है। कटरासे १३ .के.मी. यात्रा सीढ़ी-पथ से पैदल है ।

कटरामें कुली-एजेन्सीसे कुली लेना चाहिये। वहाँसे पैदल मार्ग है। ५ कि.मी.पर चरण-पादुकामें देवीके चरण चिह्न हैं ।

प्रथम विश्राम आदिकुमारी स्थानमें होता है। यहाँ धर्मशाला है। यहीं वैष्णवदेवीका प्रादुर्भाव हुआ था। यहाँ गर्भवास नामक एक संकीर्ण गुफा है ।

आगे मार्ग संकीर्ण तथा कड़ी चढ़ाईका है। चढ़ाईके बाद ५ कि.मी. की उतराई आती है ।

वैष्णवदेवीमें कोई मन्दिर नहीं है। एक गुफा है। उसमें ५० गज भीतर महालक्ष्मी, महाकाली, महासरस्वतीकी मूर्तियाँ हैं । इनके चरणोंसे निरन्तर जल बहता रहता है। इस धाराको बाणगंगा कहते हैं। गुफाद्वार संकीर्ण है। उसमें पहिले ५ गज लेटकर जाना पड़ता है। कपड़े भींग जाते हैं। अब इसका नवीनीकरण हो गया है ।

श्रीनगर

श्रीनगर वायु-मार्ग द्वारा सीधा दिल्लीसे जुड़ा है। इसका निकटतम रेलवे स्टेशन जम्मू है जहाँसे यह २१२ कि.मी. दूर है। भारतके सभी प्रमुख नगरोंसे रेलें तथा बसें जम्मू आती हैं। रेल द्वारा जम्मूकी दूरी मुम्बईसे २०४४ कि.मी., हावड़ासे २०३८ कि.मी., दिल्लीसे ६६० कि.मी. और जालंधरसे २१७ कि.मी. है। जम्मूसे श्रीनगर नियमित बस सर्विस या टैक्सी द्वारा जाया जा सकता है। गर्मियोंमें किसी भी रेलवे स्टेशनसे श्रीनगर तकका तीन महीनेका

रिटर्न टिकट मिलता है । श्रीनगरको केन्द्र बनाकर पूरी घाटीका भ्रमण किया जा सकता है । राजकीय नियमित बसें सभी स्थानोंके लिए उपलब्ध हैं ।

श्रीनगरसे लगी एक पहाड़ीको शंकराचार्य पहाड़ी कहते हैं । ऊपर आदिशंकराचार्य द्वारा स्थापित शिवलिंग है । पहाड़ीकी ३ कि.मी. चढ़ाई कड़ी है । पर्वतके नीचे शंकरमठ है । इसे दुर्गानाग मन्दिर कहते हैं ।

श्रीनगरमें महाश्रीका मन्दिर चौथे पुलके पास तथा हरिपर्वतपर एक मन्दिर है । सम्पूर्ण कश्मीर दर्शनीय है । नगरमें पत्थर मस्जिद, नेहरू-उद्यान दर्शनीय हैं और मुगल उद्यान तो अपने सौन्दर्यके लिये प्रसिद्ध ही हैं ।

कश्मीरमें क्षीर-भवानी, अनन्तनाग और मार्तण्ड मन्दिर दर्शनीय हैं । इन सब स्थानोंपर मोटर-बसें जाती हैं । श्रीनगरसे मोटर-बससे पहलगाँव जाते समय मध्यमें अनन्तनाग है । मार्तण्ड मन्दिर पर्वतपर है । नीचे पण्डोंका गाँव मटन है । वहाँ मार्तण्ड-सरोवर तीर्थ है ।

अमरनाथ

श्रीनगरसे पहलगाँव मोटर-बससे आया जाता है । यहाँसे पालकी, खच्चर या पैदल अमरनाथकी यात्रा प्रारम्भ होती है ।

मुख्य यात्रा श्रावण-पूर्णिमाको होती है । आषाढ़ पूर्णिमाको भी मेला लगता है, किन्तु १५ जूनके बाद किसी दिन भी यात्रा की जा सकती है । सितम्बर तक यात्री प्रायः प्रतिदिन जाते हैं ।

तैयारी– अमरनाथकी यात्रा सबसे छोटी, सुगम हिम-प्रदेशीय यात्रा है । इससे हिम-प्रदेशकी यात्राका कुछ अनुभव यात्री कर सकता

है ।

१-ऊनी मोजे, २-कान ढकने तक ऊनी टोपी, ३-गरम कोट, ४-धूपका चश्मा, ५-ऊनी दस्ताने, ६-एक छड़ी, ७-तीन कम्बल, ८-बरसाती कोट टोपी सहित, ९-टार्च, १०-थोड़े सूखे आलूबुखारे पर्याप्त सामान हैं। भोजनका सामान न ले जायँ तो यात्राके समयमें मिल जाता है ।

पहलगाँवसे ही सवारी घोड़ा और कुली या खच्चर सामान ढोनेको ले जाना चाहिये । श्रीनगरसे रस्सीकी बुनी चप्पल, धूपबत्ती, वैसलीन, नारियल, माचिस ले जाना चाहिये । यह सामान गुफामें काम आवेगा । पूजाके लिये और जो ले जाना चाहें रोली, वस्त्र, पेड़े वह भी यहीं से ले लें ।

मार्ग –पहलगाँवसे १५ कि.मी. चन्दनबाड़ी । मार्ग अच्छा है । यहाँ अच्छे होटल हैं ।

शेषनाग –११ कि.मी. । यहाँ डाक बंगला है । चन्दन वाड़ीसे यहाँके बीचमें ५ कि.मी. कड़ी चढ़ाई है । यहाँ एक होटल है । शेषनाग झीलका सौन्दर्य अनुपम है ।

पञ्चतरणी–१४ कि.मी. । यह मार्ग हिमाच्छादित है । धूप निकले तो रंगीन चश्मा न लगानेपर नेत्रोंमें पीड़ा हो जाती है । जहाँ चक्कर आने लगे, मुंहमें खटाई डाल लें । हाथ-मुखमें वैसलीन लगा लें, अन्यथा हिमदंशके घाव हो सकते हैं । यहाँ एक बरामदा जैसा पड़ाव है ।

अमरनाथ–५.५ कि.मी. । यहाँ ठहरनेका स्थान नहीं है । यात्रीको पञ्चतरणी लौट आना पड़ता है ।

अमरनाथ समुद्रतलसे १६००० फीट ऊँचाईपर है । पर्वतमें

६० फीट लम्बी ३० फीट चौड़ी १५ फीट ऊँची गुफा है । इसमें स्थान-स्थानपर जल टपकता रहता है । गुफामें प्राकृतिक हिम-चबूतरेपर हिमनिर्मित शिवलिंग है ।

गुफासे नीचे अमर गंगाकी धारामें स्नान करके गुफामें जूता उतारकर रस्सीकी चप्पलें पहिन कर जाते हैं । गुफामें भस्म जैसी सफेद मिट्टी एक स्थानपर निकलती है । उसे यात्री प्रसाद रूपमें साथ लाते हैं ।

मुख्य हिमलिंगको छोड़ कर दो छोटे हिमपिंड और रहते हैं । उन्हें गणेश तथा पार्वती कहते हैं । यह हिमपार्वती पीठ ५१ शक्ति पीठोंमें है । सतीका कंठ यहाँ गिरा था ।

यात्री रस्सीकी चप्पलें पहिन कर शिवलिंग तक जाकर पूजन कर सकता है ।

भ्रान्त धारणा १– यह हिमलिंग अमावस्याको नहीं रहता और पूर्णिमाको पूरा हो जाता है । चन्द्रमाके साथ घटता-बढ़ता है, यह झूठी बात है । हिमलिंग बराबर एक-सा रहता है । गर्मीमें थोड़ा गलकर घटता है ।

२– गुफामें एक ही जोड़ी कबूतर रहते हैं, यह झूठी बात है । कई बार कई जोड़ी रहते देखे गये हैं ।

मणिकर्ण

यह स्थान कुल्लू घाटीकी पार्वती घाटीमें है । पठानकोटसे, शिमलासे या चण्डीगढ़से कुल्लू-मनालीके लिये मोटर-बसें चलती हैं । कहींसे आवें, मण्डीसे मार्ग एक हो जाता है । कुल्लूसे १० कि.मी. पहिले ही भुम्यन्तर (भन्तर) बाजार मिलता है । यहाँसे मणिकर्णके

लिये टैक्सी मोटर चलती हैं ।

मणिकर्ण उमामहेश्वर क्षेत्र है । पार्वती नदीके किनारे ही नहीं, धारामें भी कई स्थानसे गरम पानी फुहारे जैसा ऊपर उठता है । जबकि पार्वतीका जल हिमशीतल है । यहाँ यह खौलते पानीके स्रोत १-२.५ कि.मी. तक स्थान-स्थानपर मिलते हैं । पानी इतना गरम है कि लोग उसमें चावल-आलू पकाते हैं ।

मणिकर्णमें डाक बंगला है । एक छोटा मन्दिर है । कई कुण्ड हैं गाँवके पास । गाँवमें दो मन्दिर हैं । नदी तटपर गरम कुण्ड स्नानके लिये बने हैं । वहाँ भी ठहरनेकी अच्छी व्यवस्था है । ●●●

उत्तर भारत ◉◉◉◉◉◉◉◉◉◉◉◉◉◉

कांगड़ा

पठानकोटसे १४६ कि.मी. पर कांगड़ा स्टेशन है और वहाँ-से ९ कि.मी. आगे कांगड़ा मन्दिर स्टेशन है । स्टेशनसे मन्दिर २.५ कि.मी. दूर है । पठानकोटसे मोटर-बससे आनेपर मन्दिर केवल १ कि.मी. पैदल मार्गपर है ।

यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशालाएँ हैं । यहाँ महामाया वज्रेश्वरी (विद्येश्वरी) का मन्दिर है । कहते हैं कि यह ५१ शक्तिपीठोंमें है । यहाँ सतीका मुण्ड गिरा था । मन्दिरमें मुण्डकी ही प्रतिमा है । देवीके सम्मुख चाँदीकी पीठपर वाग-यन्त्र है । यह मन्दिर जालन्धर पीठके शक्ति त्रिकोणमें है । शेष दो हैं ज्वालामुखी और चिन्त्यपूर्णी ।

समीपके तीर्थ –कांगड़ासे ३३ कि.मी. पर चामुण्डा-मार्ग स्टेशन

है । स्टेशनसे ६ कि.मी.पर पर्वतपर चामुण्डा देवीका मन्दिर है । पहाड़ीके दूसरी ओर भव्य शिव मन्दिर है ।

वैद्यनाथ पपरोला– यह स्टेशन चामुण्डा-मार्ग से ३३ कि.मी. है । मोटर-बस भी जाती है । यहाँ वैद्यनाथ मन्दिर है । समीपके लोग इसे ही द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें मानते हैं ।

ज्वालामुखी

पठानकोटसे १३५ कि.मी. पर ज्वालामुखी रोड स्टेशन है । यहाँसे मोटर-बस, टैम्पो द्वारा जाया जा सकता है । कांगड़ासे भी ज्वालामुखीके लिए सीधी बस मिलती है । मोटरें मन्दिरसे दो फर्लांग दूर रुकती हैं । मोटर अड्डेपर अच्छी धर्मशाला है ।

यह ५१ शक्ति पीठोंमें है । यहाँ सतीकी जिह्वा गिरी थी । मन्दिर विशाल है । इसमें मूर्ति नहीं है । सिंहासन जैसे भागमें और सामने कुण्डमें भूमिमेंसे मशालके समान ज्योति निकलती है । इसीको देवी माना जाता है । ये ज्योतियाँ और भी तीन-चार स्थानोंसे निकलती हैं । कुछ ऐसे भी प्रकाश इनमें मन्दिरके सामने या पीछे भागमें हैं जो स्वतः बुझते-जलते रहते हैं । आसपास कई और मन्दिर हैं ।

यात्री ज्वालामुखीको दूध, जल, पेड़े आदि चढ़ाते हैं । यहाँसे थोड़ी दूर ऊपर जानेपर गुरु अर्जुनदेवजीका मन्दिर मिलता है ।

चिन्त्यपूर्णी

जालन्धर शक्ति-त्रिकोणका यह तीसरा मन्दिर होशियारपुर जिलेमें है । होशियारपुरसे पठानकोटसे मोटर-बससे आ सकते हैं ।

१६० सीढ़ियाँ चढ़कर देवीका मन्दिर मिलता है । इसमें भी

देवीकी मूर्ति नहीं है । कांगड़ा मन्दिरके समान पिण्डी है और यन्त्र पूजित होता है ।

शाकम्भरी

सहारनपुरसे यहाँ तक मोटर-बसका मार्ग है ४२ कि.मी. का यह मन्दिर पर्वतोंसे घिरा है । मन्दिरसे १.५ कि.मी. पहिले भैरव-मन्दिर है ।

मन्दिरमें शाकम्भरी देवीके अतिरिक्त भीमा, भ्रामरी तथा शताक्षी देवीकी मूर्तियाँ हैं । कहा जाता है कि श्रीशंकराचार्यने इनकी स्थापना की है ।

यहाँ यात्रीको ठहरनेके लिये कोठरियाँ मिलती हैं ।

अमृतसर

अमृतसरकी दूरी मुगलसराय से ११६८ कि.मी., लखनऊसे ८५० कि.मी., अम्बालासे २४९ कि.मी. तथा पठानकोटसे १०७ कि.मी. है ।

पंजाबका यह प्रसिद्ध नगर है । कई धर्मशालाएँ नगरमें हैं ।

यह प्रधान सिख तीर्थ है । नगरके मध्यमें अमृतसर सरोवर है । यहाँ १३ गुरुद्वारे (अखाड़े) हैं । इनमें प्रधान गुरुद्वारा 'स्वर्ण मन्दिर' एक सरोवरके मध्य है । यह बहुत भव्य है । भारतके प्रमुख दर्शनीय स्थानोंमें है ।

स्मरण रखना चाहिये कि सभी गुरुद्वारोंमें यात्रीको नंगे सिर नहीं जाने दिया जाता । टोपी लगाकर या पगड़ी बाँधकर अथवा सिरपर रूमाल बाँधकर जा सकते हैं ।

नगरमें सनातन धर्मका दुर्ग्याना मन्दिर भी भव्य है और सरोवरके मध्यमें है । उसमें श्रीरामपंचायतन, लक्ष्मी-नारायण तथा श्रीराधाकृष्णके मन्दिर हैं । उसके विशाल सरोवरके एक तटसे लगा सुन्दर तुलसी-मन्दिर है ।

नगरमें अनेकों मन्दिर हैं । उनमें सत्यनारायण मन्दिर दर्शनीय है । राष्ट्रीय तीर्थ जलियाँवाला बाग इसी नगरमें है । उसमें गोलियाँ लगनेके चिह्न सुरक्षित रखे गये हैं ।

रिबालसर

पंजाबके मंडी नामक स्थानसे यह २४ कि.मी. है । मंडीसे सवारी मिलती है ।

यहाँ एक बड़ा सरोवर है । उसके दक्षिण-पश्चिम 'मानी-पानी' बौद्ध मन्दिर है । समीपमें धर्मशाला है । पासमें तीन मन्दिर हैं– शंकरजी, लक्ष्मीनारायण तथा महर्षि लोमशके ।

सरोवरमें सात तैरते हुए भूभाग हैं । उनपर वृक्षोंके ऊपर देवमूर्तियाँ बनी हैं । इन द्वीपोंको किनारे लाकर दर्शन कराया जाता है । सरोवरके पूर्व गुरुद्वारा है ।

नयनादेवी

आनन्दपुर साहब स्टेशनसे १६ कि.मी. तक मोटर-बससे जाकर १९ कि.मी. पैदल यात्रा करनी पड़ती है । पहाड़ी चढ़ाईका मार्ग है । पर्वतपर नयना देवीका स्थान है ।

शुकताल

मुजफ्फरनगरसे ३० कि.मी. दूर गंगातटपर यह सुरम्य तीर्थ है । शुकदेवजीने यहीं महाराजपरीक्षितको श्रीमद्भागवत सुनाया था । नगरसे मोटर-बस जाती है । शुकदेवजीका भव्य मन्दिर है । यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है । यहाँ हनुमद्धाम और गणेशधाम दर्शनीय है । हनुमद्धाममें हनुमानजीका ७६ फुट ७ इंच ऊँची विशाल हनुमानजीकी प्रतिमा है जिसके भीतर ७०० करोड़ भगवन्नाम समाया हुआ है । गणेश धाममें गणेशजीकी विशाल प्रतिमा है जिसमें नर्मदेश्वर शिवलिंग रखा गया है ।

कुरुक्षेत्र

कुरुक्षेत्रं गमिष्यामि कुरुक्षेत्रे वसाम्यहम् ।
य एवं सततं ब्रूयात् सोऽपि पापैः प्रमुच्यते ॥

'मैं कुरुक्षेत्र जाऊँगा । मैं कुरुक्षेत्रमें ही रहूँगा । जो बार-बार ऐसा केवल कहता है, वह भी निष्पाप हो जाता है ।'

पहिले यह स्थान 'ब्रह्माकी उत्तरवेदी' कहा जाता था । सरस्वतीके तटपर ऋषियोंके आश्रम थे । यह क्षेत्र लगभग ८० कि.मी. वर्गाकार भूभाग था ।

पाण्डववंशके आदि पुरुष महाराजा कुरुने इसे तप, सत्य, क्षमा, दया, शौच, दान, योग तथा ब्रह्मचर्यके अष्टांग धर्मकी भूमि बनानेका निश्चय किया । सोनेके रथमें बैठकर वे यहाँ आये और उस रथसे उन्होंने हल बनवाया । शंकरजीका बैल और यमराजका भैंसा लेकर

वे भूमि जोतने लगे । धर्मकी खेतीमें महाकाल और मृत्यु बाधा नहीं देते । वे सहायक होते हैं ।

देवराज इन्द्रने पूछा–'क्या कर रहे हो ?'

राजाकुरु –'अष्टांग धर्मकी खेतीकी तैयारी ।'

इन्द्र –'बीज कहाँ है ?'

राजा –'मेरे पास है ।'

इन्द्र लौट गये; क्योंकि जो धर्मका बीज हृदयमें लिये है, स्वर्गका स्वामी उसे न कुछ दे सकता है, न हरा सकता है ।

राजा प्रतिदिन सात कोस भूमि जोतते थे । ४८ कोस भूमि जब जोत चुके तो धर्मके परम स्वामी भगवान् विष्णु पधारे । उन्होंने भी इन्द्रके समान प्रश्न किये । वही उत्तर सुनकर बोले–'बीज मुझे दो । मैं तुम्हारे लिये बो दूँ ।'

धर्मका बीज है आत्मोत्सर्ग । राजाने क्रमशः अपनी भुजाएँ, पैर और मस्तक दे दिया । चक्रसे उनके टुकड़े करके भगवान्ने उसे भूमिमें स्थान-स्थानपर दबा दिया । तबसे यह भूमि कुरुका खेत–कुरुक्षेत्र धर्मक्षेत्र हो गया ।

भगवान् श्रीकृष्णने यहाँ गीता सुनाई । महाभारतसे भी पूर्व परशुरामजीने क्षत्रियोंका संहार करके यहाँ नौ रक्तह्रद (कुंड) बनाया था और यहाँ यज्ञ किया था । महाभारतमें और पीछे भी अनेक बार यह विशाल युद्धोंकी भूमि बनी । युद्धमें सम्मुख प्राण देने वाले योधाओंके रक्तसे इसका कण-कण पवित्र हुआ है ।

कुरुक्षेत्र बहुत विस्तृत भूभाग होनेसे उसके तीर्थ अब कई जिलोंमें पड़ गये हैं । यात्रीके जानेके मुख्य स्थानोंका ही वर्णन देना

शक्य है ।

१–**ब्रह्मसर**–कुरुक्षेत्र रेलवे स्टेशनसे लगभग १.५ कि.मी.पर इस क्षेत्रका मुख्य सरोवर ब्रह्मसर है । सूर्यग्रहण मेलेके समय इसीमें यात्री स्नान करते हैं ।

इस सरोवरमें दो द्वीप है । इन द्वीपोंमें कई प्राचीन मन्दिर हैं । इसके एक द्वीपमें 'चन्द्रकूप' तीर्थ है ।

२–**संनिहित**–यह छोटा सरोवर है । यात्री पहले यहीं आते हैं । इसके पश्चिम तटपर लक्ष्मी-नारायण मन्दिर है ।

कुरुक्षेत्रमें बिरला मन्दिर तथा कई अन्य धर्मशालाएँ ठहरनेके लिये हैं ।

३–**थानेसर शहर**–(स्टेशनसे ३ कि.मी.) के पास स्थाण्वीश्वर शिवका प्राचीन मन्दिर है ।

४–**भद्रकाली मन्दिर**–स्थाण्वीश्वरसे थोड़ी दूरपर भद्रकाली मन्दिर है । यह ५१ शक्ति पीठोंमें-से एक है । पाण्डवोंने युद्धसे पूर्व यहाँ देवीका पूजन किया था । यहाँ सतीकी एड़ी गिरी थी ।

५–**ज्योतिसर**–यह वह स्थान है जहाँ भगवान् श्रीकृष्णने अर्जुनको गीता सुनाई थी । यह स्टेशनसे ८ कि.मी. दूर पश्चिम पेहवा जाने वाली पक्की सड़कपर है ।

६–**सरस्वती नदी**–ज्योतिसरसे उत्तर इसी नामका गाँव है, उस गाँवके समीपसे ही सरस्वती नदी बहती थी, जो कि अब नदी न होकर जलाशय मात्र है ।

ज्योतिसरमें एक प्राचीन वटवृक्ष तथा कई मन्दिर हैं ।

७–**पेहेवा (पृथूदक)** –कुरुक्षेत्रमें यह बहुत पवित्र स्थल

पुराणोंमें माना गया है । कुरुक्षेत्रसे मोटर-बससे २२.५ कि.मी. जाना पड़ता है । यह महाराज पृथु द्वारा निर्मित सरोवर है । इसके आस-पास और भी अनेक मन्दिर हैं ।

कुरुक्षेत्र– पेहेवा मार्गमें नरकातरी (भीष्मशर-शैय्या) के स्थानपर एक सरोवर है । इनके अतिरिक्त बहुत-से सरोवर, मन्दिर आदि तीर्थ रूप इस क्षेत्रमें हैं ।

दिल्ली

भारतकी राजधानी दिल्लीका प्राचीन नाम इन्द्रप्रस्थ है । कम लोग जानते हैं कि इन्द्रप्रस्थ एक छोटा गाँव था, जब धृतराष्ट्रकी आज्ञासे पाण्डव यहाँ बसने आये । इसे नगरके रूपमें श्रीकृष्णने बसाया है ।

खाण्डव-वनकी इन्द्र रक्षा करते थे । उनके रक्षित प्रदेशके समीप होनेसे इसका नाम इन्द्रप्रस्थ था । श्रीकृष्णकी सहायतासे अर्जुनने खाण्डव-वनको अग्निकी भेंट कर दिया । उस वनदाहसे बचाये जानेके कारण दानवराज मयने युधिष्ठिरके लिये राज-सभा बना दी और श्रीकृष्णकी आज्ञासे विश्वकर्माने पाण्डवोंके लिये इन्द्रप्रस्थ नगर बनाया ।

देशकी राजधानी होनेके कारण प्रत्येक राज्यकी राजधानी एवं नियमित उड़ान भरनेवाले हवाई अड्डेसे दिल्ली पहुँचनेका हवाई जहाजका साधन है । रेल एवं सड़क मार्गके द्वारा भी देशके सभी प्रमुख स्थान जुड़े हैं ।

नयी दिल्लीमें बिरला मन्दिर दर्शनीय है । कुतुबमीनारके समीप योगमाया मन्दिर प्राचीन है । मन्दिरमें कोई मूर्ति न होकर केवल

योनिपीठ है । यहाँसे ११ कि.मी.पर आंखलामें काली मन्दिर है । पुराने किलेके पास पूर्वी दीवारकी ओर एक छोटा भैरव मन्दिर बहुत प्राचीन है । इसे भीमसेन काशीसे ले आये थे ।

मथुरा (पुरी-२)

महामाघ्यां प्रयागे तु यत्फलं लभते नरः ।
तत्फलं लभते देवी मथुरायां दिने दिने ।।

भगवान् शिव कहते हैं–'पार्वती ! माघ मासकी अमावस्याके दिन मघा नक्षत्र होनेपर प्रयागमें स्नान करनेसे जो पुण्य होता है, वह मथुरामें प्रत्येक दिन स्नान-दर्शन करनेका है ।'

मथुरा सप्त मोक्षदायिनी पुरियोंमें-से एक पुरी है । यह उत्तर प्रदेशका प्रमुख धार्मिक स्थल है । आगरा-दिल्ली रेल मार्गपर स्थित है । नयी दिल्लीसे १४५ कि.मी. तथा आगरासे ५८ कि.मी. की दूरीपर मथुरा है । मुम्बई और हावड़ासे सीधा रेलमार्ग है । यातायातकी सभी सुविधाएँ यहाँ हैं । यात्रीके ठहरनेके लिये २० से अधिक धर्मशालाएँ एवं यात्री विश्राम-गृह (आश्रम) काफी संख्या में हैं । पंडोंके घर भी यात्री ठहरते हैं ।

मथुरामें यात्री प्रायः विश्राम घाटपर स्नान करते हैं । वैसे यमुनामें २४ घाट यहाँ हैं जो सभी तीर्थ हैं ।

मथुराका प्राचीन नाम मधुपुरी-मधुबन है । देवर्षि नारदके आदेशसे ध्रुवने यहीं तप करके भगवान्‌का दर्शन प्राप्त किया था ।

त्रेताके अन्तमें मधुदैत्यको मारकर श्रीरामके छोटे भाई शत्रुघ्नकुमारने यहाँ नगर बसाया और अपने पुत्रोंको यहाँका राज्य

दे दिया । पीछे यह यदुकुलकी राजधानी बनी । यहीं कंशके कारागारमें श्रीकृष्णचन्द्रने अवतार ग्रहण किया ।

मथुरामें दो मुख्य दर्शनीय मन्दिर हैं– १-श्रीकृष्ण जन्मभूमि मन्दिर । २-ठाकुर श्रीद्वारिकाधीशजीका मन्दिर । यह विश्राम घाटपर ही है । यह दोनों मन्दिर मथुरा रेलवे स्टेशनसे लगभग ५ कि.मी. और ८ कि.मी. की दूरीपर स्थित है ।

श्रीकृष्ण-जन्मस्थान – यहाँ मस्जिदके ठीक पींछे गर्भ-गृह है, जहाँ आनन्दकन्द भगवान् श्रीकृष्णका जन्म हुआ था । उसी क्षेत्रमें श्रीकेशवदेव मन्दिर है । यहाँ प्रमुख और भव्य मन्दिर हैं– भागवत-भवन । इसमें ५ मन्दिर हैं । मुख्य मन्दिरमें राधा और कृष्ण हैं । इसके अतिरिक्त जगन्नाथ-सुभद्रा-बलभद्र, राम-सीता-लक्ष्मण, पारद निर्मित शिवलिंग केशवेश्वर और भगवती दुर्गाके मन्दिर हैं । राधाकृष्ण मन्दिरके पीछे परिक्रमा मार्गमें सम्पूर्ण भागवत ताम्बेके प्लेटपर अंकित है ।

विश्राम-घाटके समीप ही श्रीबल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है ।

ध्रुवघाटके समीप ध्रुव टीलेपर ध्रुवजीकी मूर्ति है । असी कुण्डाघाट वाराह-क्षेत्र है । यहाँ वाराह तथा गणेशकी मूर्ति है ।

श्रीकृष्ण जन्मभूमिसे समीप ही भूतेश्वर मन्दिर तथा कंकाली देवीका मन्दिर है । भूतेश्वर मथुराके क्षेत्राधिदेव तथा कंकाली नगर कालिका हैं ।

द्वारिकाधीश मन्दिरके दाहिनी ओर गतश्रम नारायण-मन्दिरमें श्रीराधाकृष्णके साथ कुब्जाकी मूर्ति भी है । द्वारिकाधीश मन्दिरके पीछे वाराह-मन्दिर है । उससे आगे गोविन्दजीका मन्दिर है ।

श्रीरामद्वारेमें श्रीराम मूर्ति तो है ही, अष्टभुजी गोपाल मूर्ति

भी है । स्वामी घाटपर श्रीबिहारीजीका मन्दिर तथा गोवर्धननाथका विशाल मन्दिर है ।

होली दरवाजेपर वज्रनाभ द्वारा प्रतिष्ठित कंस-निकन्दन मन्दिर है । श्रीकृष्णचन्द्रके प्रपौत्र वज्रनाभने उजड़ी मथुरा फिर बसाई, यह बात यहाँ स्मरण रखना चाहिये ।

मथुरामें बहुत अधिक मन्दिर हैं । सबका नाम दे पाना सम्भव नहीं है, किन्तु यहाँ ५१ शक्ति पीठोंमें एक शक्ति पीठ भी है । यह सरस्वती कुण्डसे थोड़ा आगे चामुण्डा देवीका मन्दिर है । यहाँ सतीके केश गिरे थे ।

मथुराकी परिक्रमा प्रत्येक एकादशी और अक्षय नवमीको होती है । परिक्रमा लगभग ११ कि.मी. की है । इसमें मथुराके सब तीर्थ आ जाते हैं । परिक्रमाके स्थान ये हैं– विश्रामघाट, गतश्रम नारायण-मन्दिर, कंसखार, सीतबुर्ज, चर्चिका देवी, योगघाट, पिप्पलेश्वर महादेव, योगमार्ग-बटुक, प्रयागघाट, बेनीमाधव-मन्दिर, श्यामघाट, श्यामजीका मन्दिर, दाऊजी, मदनमोहनजी, गोकुलनाथजी, कनखलतीर्थ, तिन्दुकतीर्थ, सूर्यघाट, ध्रुवक्षेत्र, ध्रुवटीला, सप्तर्षि टीला, कोटितीर्थ, रावण-टीला, बुद्ध-तीर्थ, बलि-टीला, रंगभूमि, रंगेश्वर महादेव, सप्तसमुद्र कूप, शिवताल, बलभद्र-कुण्ड, भूतेश्वर महादेव, पोतरा-कुण्ड, ज्ञान-वापी, श्रीकृष्ण-जन्मभूमि, केशवदेव-मन्दिर, कृष्ण-कूप, कुब्जाकूप, महाविद्या, सरस्वती-कुण्ड, सरस्वती-मन्दिर, चामुण्डा, उत्तरकोटि-तीर्थ, गणेशतीर्थ (गणेश-टीला), गोकर्णेश्वर महादेव, गौतम ऋषिकी समाधि, सेनापति घाट, सरस्वती-संगम, दशाश्वमेध-घाट, अम्बरीष-टीला, चक्रतीर्थ, वेदव्यास तपःस्थली, कृष्ण-गंगा, कालिंजर महादेव, सोमतीर्थ, गौघाट, घण्टाकर्ण, मुक्ति-तीर्थ, कंस-किला,

ब्रह्मघाट, वैकुण्ठ-घाट, धारापतन, वसुदेव-घाट, प्राचीन विश्राम घाट, असकुण्डा-घाट, वाराह-क्षेत्र, ठा. श्रीद्वारिकाधीश मन्दिर, मणिकर्णिका-घाट, महाप्रभु बल्लभाचार्यकी बैठक, गार्गी-सार्गी तीर्थ, और विश्राम घाट आदि हैं ।

देवशयनी तथा देवोत्थान एकादशीको मथुरा-वृन्दावनकी सम्मिलित परिक्रमा की जाती है ।

जैन तीर्थ –मथुरा स्टेशनसे १.५ कि.मी. पर चौरासी नामक स्थान जैन तीर्थ है । यहाँ ६ जैन मन्दिर हैं । अन्तिम केवली जम्बूस्वामी, महामुनि विद्युच्च ५०० अनुगर्तोके साथ यहाँसे मोक्ष पधारे । उनके ५०० स्तूप बने हैं ।

वृन्दावन

गोविन्ददेहतोऽभिन्नं पूर्णब्रह्मसुखाश्रयम् ।
मुक्तिस्तत्र रजःस्पर्शात् तन्माहात्म्यं किमुच्यते ।।

वृन्दावन श्रीगोविन्दके विग्रहसे अभिन्न पूर्ण आनन्द रूप ब्रह्म ही है । यहाँकी रजके स्पर्शसे जीव मुक्त हो जाता है । इसके माहात्म्यका वर्णन कैसे सम्भव हो सकता है ।

ब्रजमण्डलका विस्तार चौरासी कोसमें है और यह सम्पूर्ण क्षेत्र भगवान् आनन्दकंद श्रीकृष्णचन्द्रकी लीला भूमि है । पूरे क्षेत्रमें स्थान-स्थानपर लीला विशेषसे सम्बन्धित तीर्थ हैं । लेकिन श्रीवृन्दावन तो उनकी अन्तरंग लीला स्थली है । यह उनका स्वरूपभूत धाम है ।

मथुरासे वृन्दावन रेलमार्ग भी है और सड़क भी । मोटर-बसें, टैम्पो, ऑटो रिक्शा भी चलती हैं । मथुरासे यह १३ कि.मी.

दूर है ।

मथुरासे वृन्दावन सड़क-मार्गसे जानेपर जयसिंहपुरा मुहल्लेमें चामुण्डादेवीका मन्दिर, और गायत्री तपोभूमि पड़ता है । यह दोनों एक-दूसरे के आमने-सामने हैं । आगे चलकर सेठ जुगलकिशोर बिरला द्वारा निर्मित गीता-मन्दिर (बिरला-मन्दिर) है, जिसमें चक्रधारी श्रीकृष्णकी आदमकद प्रतिमा है । इसके परिसरमें एक स्तम्भ में सम्पूर्ण श्रीमद्भगवद्गीता खुदी हुई है । वृन्दावन क्षेत्रमें मुख्य मार्गके किनारे श्रीलीलानन्द ठाकुर पागल बाबा द्वारा निर्मित विशाल और भव्य पागल बाबा मन्दिर है ।

वृन्दावनमें यमुना-स्नान सुगमता पूर्वक केशीघाटपर होता है । अन्यत्र यमुना दूर हो गई है ।

यहाँ यात्रीके ठहरनेके लिये बहुत अधिक धर्मशालाएँ हैं । उनमें कुछ आधुनिक सुविधायुक्त भी हैं ।

यात्री यदि केशीघाटपर स्नान करता है तो उसे वंशीवट तथा गोपेश्वर महादेवके दर्शन करके आगे बढ़ना चाहिये । उसी ओर जगन्नाथ घाटपर जगन्नाथजीका मन्दिर है । उसमें श्रीजगन्नाथ धामकी ही मूर्तियाँ लाकर विराजमान की गई हैं ।

वृन्दावनके मन्दिरोंकी संख्या शताधिक है । इनमें चार प्रमुख मन्दिर हैं–

१–**श्रीरंगजीका मन्दिर** –यह श्रीरामानुज सम्प्रदायका विशाल मन्दिर है । यह बस-स्टैण्ड से निकट है ।

२–**श्रीराधारमणजीका मन्दिर** –यहाँ माध्व गौडेश्वर सम्प्रदायके श्रीगोपाल भट्टके आराध्य प्रतिष्ठित हैं । यह शालग्रामसे स्वतः प्रगट हुआ श्रीविग्रह है ।

३-**श्रीराधावल्लभजी** -श्रीहितहरिवंशजी गोस्वामी पादके आराध्यका यह मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है ।

४-**ठा. श्रीबाँके बिहारीजी** -श्रीहरिदासजीके ये ठाकुरजी वृन्दावनके अधिकांश भावुक भक्तोंके सर्वस्व हैं ।

वृन्दावनमें दो कुञ्ज हैं- १-**निधिवन**, २-**सेवाकुञ्ज** । ये चहारदीवारीसे घिरे प्राचीन लताओंके वन हैं । इनमें भीतर मन्दिर हैं । निधिवन, श्रीराधारमणजी तथा श्रीशाहविहारीजीके मन्दिरोंके पास है और सेवाकुञ्ज, वनखण्डीश्वर शिवसे कुछ दूर पड़ता है ।

परिक्रमा-क्रमसे करें -कालियघाटपर कालियमर्दन मन्दिर, युगलघाटपर युगलविहारीजी, मदनमोहनजीका मन्दिर, अद्वैताचार्यकी तपोभूमि अद्वैतवट, अष्ट सखियोंका मन्दिर, श्रीबाँकेविहारीजी, श्रीराधाबल्लभजी, आनन्दीमाताका मन्दिर, दानगली, मानगली, सेवाकुञ्ज, रसिकविहारीजी, शृंगारवट, सवामनके शालग्रामजी, शाहविहारीजीका मन्दिर, निधुवन, श्रीराधारमणजी, श्रीगोपीनाथजी, श्रीगोकुलानन्द मन्दिर, वंशीवट, श्रीमहाप्रभुकी बैठक, गोपेश्वर महादेव, ब्रह्मचारीजीका मन्दिर, लाला बाबूका मन्दिर, श्रीजगन्नाथजी ब्रह्मकुंड, श्रीरंग-मन्दिर, गोविन्ददेवजी, ज्ञानगुदड़ी, टाटीस्थान, जयपुरवाला मन्दिर, जमाई बाबूका मन्दिर, कानपुरवाला मन्दिर, उड़ियाबाबाका आश्रम और आनन्द-वृन्दावनका शिव-मन्दिर, यह लगभग ६-७ मीलकी परिक्रमा हो गई मन्दिर दर्शन करते क्रमशः चलनेपर ।

वृन्दावनमें गौरांग महाप्रभुका भव्य मन्दिर भी यात्रियोंको आकर्षित करता है । रमणरेतीमें स्कॉन का श्रीकृष्ण-बलराम मन्दिर बहुत ही भव्य एवं आकर्षक है । यहाँ विदेशी भक्तोंकी बहुलता

है । यह अंग्रेजों का मन्दिरके नाम से प्रसिद्ध है ।

वृन्दावन मन्दिरोंका नगर है । इसके केवल मुख्य-मुख्य मन्दिरोंके नाम ही यहाँ दिये गये हैं ।

ब्रजके तीर्थ मथुराकी विभिन्न दिशाओंमें हैं । अतः प्रत्येकके दर्शन करके मथुरा लौटना पड़ता है ।

यह स्मरण रखना चाहिये कि मथुरा-वृन्दावनपर बार-बार आततायियोंके आक्रमण हुए हैं । अतः यहाँ ५०० वर्षसे पुराना कोई मन्दिर नहीं है । श्रीचैतन्यमहाप्रभु व्रज पधारे थे तब वृन्दावन वन मात्र था । कुछ संत वृक्षोंके नीचे भजन करते रहते थे ।

गोकुल

मथुरासे १० कि.मी. दूर यमुना-पार यह स्थान है । ताँगा, रिक्शा आदि सवारियाँ यमुना पार जानेके लिए मिल जाती हैं । यमुनापर बने पुलके पार कर लेने पर गोकुल, महावन, और बल्देव (दाऊजी) के लिए बस तथा टैम्पो मिल जाती है ।

नन्दबाबा पहिले गोकुलमें ही रहते थे । यहीं वसुदेवजी कारागारसे रात्रिमें शिशु श्रीकृष्णको लाये थे । श्रीकृष्णकी बाल-लीलाएँ यहीं हुई थीं ।

गोकुलमें अब वल्लभ सम्प्रदायके कई मन्दिर हैं ।

महावन– गोकुलसे यह स्थान एक मील है । यहाँ नन्द-भवन है । जन्माष्टमीको मेला लगता है ।

बलदेव– महावनसे १२ कि.मी. आगे यह गाँव है । यहाँ दाऊजी (श्रीबलरामजी) का प्रसिद्ध मन्दिर और क्षीरसागर सरोवर है ।

गोकुलमें यात्रीके ठहरनेके लिये धर्मशालाएँ हैं । यहाँ रुककर भी यात्री महावन-दाऊजीके दर्शन करने जाते हैं ।

गोवर्धन

मथुरासे २१ कि.मी. की दूरीपर है । मथुरासे मोटर-बस तथा टैम्पो मिलती हैं ।

मथुरासे गोवर्धन जानेके दो मार्ग हैं– १. मथुरा-दिल्ली रोडसे होते हुए कोसीकलां होकर नन्दगाँव, बरसाना और गोवर्धन या दूसरा मार्ग जिसे सामान्यतः यात्री सुलभ मानते हैं - मथुरा से गोवर्धन २१ कि.मी., है । गोवर्धनसे बरसाना २४ कि.मी., बरसानासे नन्दगाँव ४ कि.मी., नन्दगाँवसे कुछ कि.मी. पर कोसीकलां है जहाँसे दिल्ली-से आने वाली रेल और बसें मथुरा-आगराके लिए नियमित चलती हैं जिनसे मथुरा लौट सकते हैं ।

गोवर्धन एक छोटी ६.५ कि.मी. लम्बी पहाड़ी है । इसकी ऊँचाई बहुत थोड़ी है । कहीं-कहीं तो भूमि बराबर है । यह पर्वत साक्षात् भगवद्स्वरूप माना जाता है । इसकी परिक्रमा होती है, जो २२ कि.मी. है । श्रद्धालु इसपर चढ़ते नहीं । दण्डवत करते हुए इसकी परिक्रमा बहुत लोग करते हैं । कई संत तो एक स्थानपर १०८ दण्डवतके क्रमसे कई वर्षमें यह परिक्रमा पूरी करते हैं ।

गोवर्धन बस्ती प्रायः मध्यमें है । उसमें मानसी-गंगा नामक बड़ा सरोवर है ।

गोवर्धन-परिक्रमामें राधाकुण्ड, कृष्णकुण्ड, कुसुम-सरोवर, नारदकुण्ड, जतीपुरा आदि स्थान हैं ।

राधाकुण्ड और कृष्णकुण्ड परस्पर मध्यमें मिलते हैं । यहाँ

श्रीहितहरिवंशजी, श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभु, श्रीविट्ठलनाथजी तथा गोकुलनाथजीकी बैठकें हैं । यहाँ गिरिराजजीकी जिह्वा-स्वरूप गोविन्ददेवजीके दर्शन हैं । वृक्ष- रूप पाण्डव-श्रीकृष्ण तथा अनेक मन्दिर हैं ।

अन्यौरमें श्रीवल्लभाचार्यकी बैठक तथा गौरीकुण्ड है । यहाँ गिरिराजपर दही-कटोरा, टोपी आदिके चिह्न हैं । संकर्षण-कुण्ड तथा दाऊजीका मन्दिर है । वाजनी शिला है, जिसे अँगुलीसे ठोंकनेपर शब्द होता है ।

इसके आगे केसरीकुण्ड, गन्धर्वकुण्ड, गोविन्दकुण्ड हैं । चतुरानागाके स्थानके पास गिरिराजपर छड़ीका चिह्न मुकुट तथा हस्ताक्षर हैं भगवान्‌के ।

यहाँसे थोड़ी दूरसे देखनेपर गिरिराजपर रेखाओंसे बने वृषभारूढ़ शिव तथा राधाकृष्णके दर्शन होते हैं । यह दृश्य समीपसे नहीं दीखता ।

आगे सिन्दूरी-शिला है । इसे छूनेसे हाथ लाल हो जाते हैं । पूँछड़ीके पास अप्सरा-कुण्ड, नवल-कुण्ड, पूँछड़ीका लौठा, कुछ भूत-मूर्तियाँ तथा रामदासका कुंआँ है ।

श्यामढाकमें अनेक भगवल्लीला-स्थले हैं । गोपी तलाई, गोपीसागर, श्यामढाक तथा मन्दिर हैं ।

जतीपुरामें श्रीबल्लभाचार्यकी बैठक है । यहाँ गिरिराजका मुखारविन्द है । गिरिराजमें नाभि-चिह्न तथा कई गुफाएँ हैं ।

बरसाना

इसका प्राचीन नाम वृहत्सानु है । नन्दगाँवसे ४ कि.मी. और

मथुरासे ४४ कि.मी. दूर है । यह श्रीकृष्णकी आह्लादिनी शक्ति श्रीराधाजीकी पितृभूमि है ।

बरसानामें यात्रियोंके ठहरनेके लिये कई धर्मशालाएँ हैं ।

नन्दगाँवकी पहाड़ी शिवस्वरूप, बरसानेका पर्वत ब्रह्मास्वरूप और गोवर्धन विष्णुस्वरूप माना जाता है । बरसानेके पर्वत वृहत्सानुके चार शिखर ब्रह्माके चार मुख माने जाते हैं । इन शिखरोंमें एकपर मोरमुकुटी, दूसरेपर मानगढ़, तीसरेपर विलासगढ़ और चौथेपर दानगढ़ है ।

बरसानेकी दूसरी ओर एक छोटी पहाड़ी है । दोनों पहाड़ियोंके मिलनेका स्थान बहुत तंग घाटी है । इसे साँकरी खोर कहते हैं । यहीं श्यामसुन्दर खड़े होकर गोपियोंका मार्ग रोककर दधि-दान लेते थे ।

पर्वतसे नीचे अष्ट सखियोंका और वृषभानुजीका, ये दो मन्दिर हैं । वहाँसे सीढ़ियाँ चढ़नेपर बीचमें श्रीराधाके पितामह महीभानुजीका मन्दिर है । ऊपर श्रीराधाका विशाल मन्दिर है ।

बरसानेमें भानोखर, कीर्तिकुण्ड, मुक्ताकुण्ड तथा पीरी पोखर, ये सरोवर तीर्थ माने जाते हैं ।

नन्दगाँव-बरसानेके मध्य प्रेम-सरोवर है । यहाँ वल्लभाचार्यकी बैठक तथा राधागोपाल मन्दिर है । यह पूरा क्षेत्र ब्रजके रसिक संत-महात्माओंकी प्रिय भूमि है । यहाँ प्रायः प्रेमी भजननिष्ठ संत रहते हैं ।

नन्दगाँव

गोकुलमें कंसके द्वारा भेजे गये असुरोंका उत्पात बढ़ जानेपर

श्रीनन्दबाबा यह स्थान छोड़कर गोपोंके साथ नन्दगाँव जा बसे थे ।

यह स्थान मथुरासे ४६ कि.मी. दूर है । मथुरासे मोटर बसें जाती हैं । यात्रियोंको ठहरनेके लिये धर्मशाला है ।

पामरी-कुण्ड नामक सरोवरमें यहाँ यात्री स्नान करते हैं ।

एक छोटी पहाड़ीपर श्रीनन्दजीका मन्दिर है । उसमें नन्द-यशोदा, श्रीबलराम, श्रीकृष्ण, श्रीराधा तथा ग्वालबालोंकी मूर्तियाँ हैं ।

प्राचीन मन्दिरका जीर्णोद्धार हो गया है और अब यहाँका मन्दिर विशाल तथा सुन्दर है ।

नन्दमन्दिरसे बरसानेके श्रीराधाजीके मन्दिरके दर्शन होते हैं ।

कामवन

इसका पुराना नाम काम्यक वन है । यहाँ ८४ तीर्थ कहे जाते हैं । यहाँका मुख्य मन्दिर श्रीगोविन्ददेवजीका है । इसके अतिरिक्त भी अनेकों मन्दिर तथा कुण्ड हैं । व्रजके तीर्थोंमें कामवन दर्शनीय स्थान हैं ।

गढ़मुक्तेश्वर

मेरठसे ४२ कि.मी. दूर गंगातटपर यह नगर है । मेरठसे मोटर बसका मार्ग है ।

गंगातटसे १.५ कि.मी. पर मुक्तेश्वरका विशाल मन्दिर है । मन्दिरके भीतर ही नृग कूप है । इसके अतिरिक्त कई अन्य मन्दिर हैं । गंगाजीके तीन मन्दिर हैं ।

कर्णवास

अलीगढ़-बरेली रेलवे लाइनपर नरौरा स्टेशन उतर कर यहाँ जाया जाता है । यह गंगातटपर प्राचीन तीर्थ तथा संतोंकी तपोभूमि है । यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं । यह प्राचीन भृगु-क्षेत्र है ।

कल्याणीदेवी, कर्णशिला यहाँके प्राचीन स्थान हैं । प्रसिद्ध संत विद्याधरजी तथा आर्य-समाजके संस्थापक स्वामी दयानन्दजीने यहाँ साधना की थी ।

रामघाट

नरौरासे ही यहाँका मार्ग है । कर्णवाससे यह स्थान १६ कि.मी. है । यहाँ धर्मशालाएँ हैं । मन्दिर बहुत हैं यहाँ मुख्य हैं हनुमानजी, नृसिंह, बिहारीजी, गंगाजी, श्रीसीताराम, सत्यनारायण, रघुनाथजी, गोविन्ददेवजी, दाऊजी, कृष्ण-बलदेव तथा खण्डेश्वर महादेव ।

सम्भल

चन्दौसी-मुरादाबाद रेलवे लाइनमें राजाका साहसपुर स्टेशनसे एक लाइन सम्भल हातिमसराय तक गई है ।

इस स्थानका नाम सतयुगमें सत्यव्रत, त्रेतामें महद्‌गिरि, द्वापरमें पिंगल था और अब कलियुगमें सम्भल हो गया है । कलिके अन्तमें यहीं भगवान्, कल्कि अवतार ग्रहण करेंगे ।

यहाँ अड़सठ तीर्थ और उन्नीस कूप हैं । तीन मुख्य शिव मन्दिर हैं । पूर्वमें चन्द्रशेखर, उत्तरमें भुवनेश्वर और दक्षिणमें सम्भलेश्वर ।

भगवदवतार-स्थल नित्य होते हैं। सम्भल भविष्य अवतार-स्थली होनेसे भगवान् कल्किका नित्य धाम है। यहाँ विभिन्न तीर्थोंमें पर्व विशेषपर मेले होते हैं।

सोरों (वाराह-क्षेत्र)

पूर्वोत्तर रेलवेका सोरों स्टेशन है। यह एटा जिलेमें है। यहाँ बहुत-सी धर्मशालाएँ हैं।

पहिले यहाँ गंगाकी धारा थी; किन्तु अब दूर चली गई है। अनेक पक्के घाट बने हैं और उनपर बहुतसे मन्दिर हैं। यहाँका मुख्य मन्दिर वाराह मन्दिर है।

इस तीर्थकी परिक्रमा ८ कि.मी. की है। यहाँ गृद्धबट है। उसके नीचे बटुकनाथ मन्दिर है। श्रीनन्ददासजी द्वारा स्थापित श्यामायन मन्दिर यहाँ है। योगमार्ग स्थान तथा सूर्यकुण्ड यहाँके विख्यात तीर्थ हैं।

गोला गोकर्णनाथ

पूर्वोत्तर रेलवेमें लखीमपुर खीरीसे ३५ कि.मी.पर यह स्टेशन है। धर्मशालाएँ हैं।

यह उत्तर गोकर्ण क्षेत्र है। यहाँ भगवान् शिवका आत्मतत्त्व लिंग है।

वाराह पुराणकी कथा है–भगवान् शिवने एकबार तीन सींगों वाले मृगका रूप धारण किया। उन्हें ढूंढने देवताओंके साथ भगवान् विष्णु आये। विष्णु भगवान् ब्रह्माजी और इन्द्रने उस मृगके एक-

एक सींग पकड़ लिये । शंकरजी अदृश्य हो गये; किन्तु सींग उनके हाथमें रह गये ।

उनमें एक सींग देवताओंने यहाँ गोकर्णनाथमें स्थापित किया । दूसरा शृंगेश्वर (भागलपुर जिला, बिहार) में तीसरा इन्द्र स्वर्ग ले गये । जब रावणने इन्द्रपर विजय प्राप्त की तो स्वर्गसे वह गोकर्ण-लिंग उठा लाया; किन्तु उसे पृथ्वीपर भूलसे उसने दक्षिण भारतके गोकर्ण-क्षेत्रमें रख दिया । फिर वह उसे उठा न सका । अतः वह वहाँ है ।

यहाँ एक खूब बड़ा सरोवर है । उसके किनारे श्रीगोकर्णनाथका विशाल मन्दिर है । इस क्षेत्रमें आसपास विभिन्न स्थानोंपर ८ कि.मी. के भीतर पाँच तीर्थकुण्ड हैं । यहाँ पंचलिंग माने जाते हैं, जिनमें गोकर्ण मुख्य हैं । शेष चार हैं–देवेश्वर महादेव (देवकली स्टेशनके पास) गदेश्वर (भौरा स्टेशनके पास) बटेश्ववर (बाबर गाँवमें) और स्वर्णेश्वर (सुनेसर गाँवसे पश्चिम) ।

नैमिषारण्य

'इदं त्रैलोक्यविख्यातं तीर्थं नैमिषमुत्तमम् ।
महादेवप्रियकरं महापातकनाशनम् ॥'

तीनों लोकोंमें यह श्रेष्ठ नैमिषतीर्थ प्रसिद्ध है । यह महादेवजीको प्रिय है और महापाप नष्ट करने वाला है ।

कथा – ऋषि शौनकके मनमें दीर्घकाल तक ज्ञानसत्र करनेकी इच्छा हुई । वे सत्रके उपयुक्त स्थान पूछने ब्रह्माजीके पास पहुँच गये । ब्रह्माजीने उन्हें एक चक्र देकर कहा–'इसे पृथ्वीपर चलाते

जाओ । जहाँ इसकी नेमि (बाहरी परिधि) गिर जाय, वह स्थान तुम्हारे उपयुक्त है ।'

शौनकके साथ अट्ठासी सहस्र ऋषि थे । वे सब लोग उस चक्रको चलाते हुए यात्रा करने लगे । गोमती किनारे एक तपोवनमें चक्रकी नेमि गिर गई और चक्र वहीं भूमिमें प्रविष्ट हो गया । नेमि गिरनेसे उस स्थानका नाम नैमिष पड़ा । चक्र जहाँ भूमिमें प्रविष्ट हुआ, वह चक्रतीर्थ बन गया । यह ५१ पितृतीर्थोंमें एक है । यहाँ श्राद्ध, पिण्डदान होता है । शौनकने यहाँ ज्ञान सत्र एक सहस्र वर्ष किया । सूतने यहीं ऋषियोंको सब पुराण सुनाये ।

मार्ग –उत्तर रेलवेके बालामऊ स्टेशनसे एक लाइन सीतापुर कैंट जाती है । उसपर २८ कि.मी. पर नैमिषारण्य स्टेशन है ।

तीर्थ –स्टेशनसे लगभग १.५ कि.मी. दूर चक्रतीर्थ है । यह एक सरोवर है, जिसका मध्यभाग गोलाकार है । उसमेंसे बराबर जल निकलता रहता है । इसके किनारे कई मन्दिर हैं, जिनमें भूतनाथ मन्दिर मुख्य हैं ।

यहाँके मुख्य स्थान हैं–पञ्चप्रयाग, अक्षयवट, ललितादेवी मन्दिर, गोवर्धन महादेव, क्षेमकायादेवी, जानकी कुंड, हनुमानजी, काशी सरोवर, विश्वनाथ, अन्नपूर्णा मन्दिर, धर्मराज मन्दिर, व्यास-शुकस्थान गोमती नदी, पाण्डव टीला, सूतजीका स्थान और राम मन्दिर ।

यहाँ वनमें ५ कि.मी.पर रुद्रावर्त कूप है ।

नैमिषारण्य पुराणोंकी आविर्भावस्थली होनेसे भारतका प्रमुख धार्मिक स्थान है । श्रीबलरामजीने यहाँ यज्ञ किया था ।

मिश्रिख

यह नैमिषारण्यसे ७ कि.मी. दूर स्टेशन है । स्टेशनसे तीर्थ १.५ कि.मी. दूर है ।

यहाँ दधीचि कुण्ड है । कहा जाता है कि यहीं महर्षि दधीचिका आश्रम था । वृत्रासुर-वधके लिये इन्द्रने उनसे अपने शरीरकी हड्डियाँ माँगीं तो उन्होंने योगके द्वारा देह त्याग किया ।

दधिचिकुण्डमें सब तीर्थोंका जल देवताओंने मिश्रित किया, अतः इसका नाम मिश्रिख हो गया । कुण्डके समीप दधिचि ऋषिका मन्दिर है ।

धौतपाप

यह मिश्रिखसे १३ कि.मी. दूर है । गोमती-तटपर यह तीर्थ है । इस गाँवका नाम राजपति है । यहाँ स्नान करनेसे सब पाप नष्ट हो जाते हैं, ऐसा वर्णन पुराणोंमें है । हत्याके पाससे छूटनेके लिये लोग यहाँ आते हैं । भगवान्‌की ठाकुरवाड़ी, शिव तथा हनुमानजीके मन्दिर हैं ।

ब्रह्मावर्त (बिठूर)

कानपुरसे रेलवे तथा मोटर बस दोनोंका मार्ग है । स्टेशनसे चलनेपर पहिले नवीन बस्ती और वादमें पुराना तीर्थ मिलता है ।

यहाँ गंगाजीके कई घाट हैं । उनमें ब्रह्माघाट मुख्य है । मन्दिर बहुत हैं । मुख्य मन्दिर वाल्मीकेश्वर है ।

गंगाके घाटकी सीढ़ियोंपर एक स्थानपर फुट भर ऊँची कील है । इसे ब्रह्माकी कील कहते हैं ।

यह स्थान स्वायम्भुव मनुकी राजधानी थी । ध्रुवका जन्म यहीं हुआ था ।

कानपुर

उत्तर प्रदेशका यह महानगर गंगा-किनारे है । गंगा-तटपर घाट तथा कई मन्दिर हैं । कमला नगरमें सिंहानियाँका बनवाया मन्दिर बहुत भव्य-दर्शनीय है । नगरमें अनेक और मन्दिर हैं ।

चित्रकूट

यावता चित्रकूटस्य नरः शृंगाण्यवेक्षते ।
कल्याणानि समाधत्ते न मोहे कुरुते मनः ॥

जब तक मनुष्य चित्रकूटके शिखरोंको देखता है तब तक उसका मन कल्याण-मार्गमें लगता है, मोहमें नहीं लगता ।

यहाँ महर्षि अत्रिका आश्रम था । महासती अनुसूयाने यहीं त्रिदेवोंको अपना पुत्र बनाया । भगवान् श्रीराम यहाँ निवास करते रहें । यहाँ श्रीरामका नित्य सान्निध्य है ।

मार्ग– मानिकपुर-झाँसी लाइनपर चित्रकूट धाम करवी स्टेशन है । झाँसीसे इसकी दूरी २६१ कि.मी. है । यहाँसे बस मिल जाती है । इलाहबादसे और सतनासे भी चित्रकूटके लिये मोटर-बसें चलती हैं ।

चित्रकूट बस्तीका नाम सीतापुर है । यह करवी स्टेशनसे ८

कि.मी. है । यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं ।

चित्रकूटका पूरा दर्शन ५ दिनमें होता है । उसका क्रम यह है ।

प्रथम दिन– सीतापुरमें राघवप्रयागमें स्नान । कामदगिरि परिक्रमा और सीतापुरके तीर्थोके दर्शन । ११ कि.मी. ।

दूसरे दिन– राघवप्रयागमें स्नान करके मन्दाकिनी पार होकर कोटि तीर्थ, सीता-रसोई, हनुमानधार होते लौटें । १९ कि.मी. ।

तीसरे दिन– स्नान करके केशवगढ़, प्रमोदवन, जानकीकुण्ड, सिरसावन, स्फटिकशिला, अनुसूया होते बाबूपुरमें रात्रि-विश्राम । १६ कि.मी. ।

चौथे दिन– बाबूपुरसे गुप्त गोदावरी जाकर स्नान, कैलास पर्वतका दर्शन करते चौबेपुरमें रात्रि-विश्राम । १६ कि.मी. ।

पाँचवे दिन– भरतकूप जाकर स्नान और रामशैया होते सीतापुर लौटें । १६ कि.मी. ।

मन्दाकिनीके किनारे सीतापुरमें २४ पक्के घाट हैं । इनमें राघवप्रयाग, रामघाट मुख्य हैं ।

रामघाटपर यज्ञवेदी-मन्दिर है । यहाँ ब्रह्माने यज्ञ किया था । उससे लगा हुआ पर्णकुटी मन्दिर है, जहाँ श्रीराम सो रहे थे । रामघाटके समीप गलीमें गोस्वामी तुलसीदासजीके रहनेका स्थान है ।

राघवप्रयाग-घाटके ऊपर मत्तगजेन्द्रेश्वर शिव-मन्दिर है ।

कामदगिरि– सीतापुरसे २.५ कि.मी.पर यह पहाड़ी है । यह पवित्र मानी जाती है । इसपर ऊपर नहीं चढ़ा जाता । पूरा परिक्रमा-मार्ग पक्का बना है । ५ कि.मी.की परिक्रमा है । इसमें क्रमशः

मुखारविन्द, हनुमानजी, साक्षी-गोपाल, लक्ष्मीनारायण, श्रीराम, तुलसीदासजीका स्थान, कैकेयी और भरत-मन्दिर, चरण-पादुका, लक्ष्मण-मन्दिर आदि मन्दिर हैं । लक्ष्मण-मन्दिर पहाड़ीपर है । १५० सीढ़ी चढ़ना पड़ता है ।

चरण पादुकामें, जानकी कुण्डमें और स्फटिक शिलामें चरण-चिह्न मिलते हैं । कहा जाता है कि श्रीराम-भरतके मिलन जैसे विशेष अवसरोंपर पत्थर पिघल जानेसे ये चिह्न बने हैं ।

कोटितीर्थ-हनुमानधारा– सीतापुरसे पूर्व संकर्षण पर्वतपर कोटितीर्थ है । वहाँसे चढ़नेपर चढ़ाई कम पड़ती है । वहाँसे ऊपर ही ऊपर बाँके सिद्ध, पंपासर, यमतीर्थ, सिद्धाश्रम, गृद्धाश्रम होकर उतरें तो पहिले सीता-रसोई, फिर हनुमानधारा है । यहाँ हनुमानजीके आगे एक पतली धारा कुण्डमें गिरती है ।

जानकी कुण्ड– पयस्विनी नाला पार करके मन्दाकिनीके किनारे चलनेपर प्रमोदवन मिलता है । यह पक्की दीवारसे घिरा है । बीचमें मन्दिर है । आगे जानकी कुण्ड है । वहाँसे २.५ कि.मी.पर स्फटिक शिला है । यहीं श्रीरामने काक बने जयन्तपर ब्रह्मास्त्र छोड़ा था ।

अनुसूया– (अत्रि आश्रम)– स्फटिक शिलासे ८ कि.मी., सीतापुरसे १३ कि.मी. । यहाँ महर्षि अत्रिका आश्रम था । अत्रि, अनुसूया तथा उनके तीनों पुत्र चन्द्रमा, दुर्वासा तथा दत्तके यहाँ मन्दिर हैं । स्थान जंगलमें है,पर अब पक्की सड़क बन गई है । टैक्सी आती है सीतापुरसे । यहीं मन्दाकिनीका उद्गम है । एक पहाड़ीपर बहुत ऊपर सीढ़ियाँ चढ़नेपर हनुमानजीकी मूर्ति मिलती है ।

गुप्त गोदावरी– टैक्सी यहाँ तक आती है । एक गुफामेंसे बराबर जल निकलता रहता है । भीतर १५-२० गज जाकर

सीताकुण्ड है । गुफामें अन्धकार है ।

भरतकूप– यह सीतापुरसे ६.५ कि.मी. है । श्रीभरतजीने राम-राज्याभिषेकके लिये लाया तीर्थजल इसमें डाला था ।

रामशय्या– भरतकूपसे लौटते यह स्थान मिलता है । एक शिलामें दो व्यक्तियोंके लेटनेके चिह्न हैं । मध्यमें धनुषका चिह्न है । कहते हैं कि यहाँ श्रीसीतारामने रात्रि विश्राम किया था ।

प्रयाग (इलाहाबाद)

ग्रहाणां च यथा सूर्यो नक्षत्राणां यथा शशी ।
तीर्थानामुत्तमं तीर्थं प्रयागाख्यमनुत्तमम् ॥

जैसे ग्रहोंमें सूर्य और नक्षत्रोंमें चन्द्रमा हैं, वैसे ही तीर्थोंमें प्रयागराज सर्वश्रेष्ठ हैं । उनसे श्रेष्ठ और तीर्थ नहीं है ।

प्रयागको तीर्थराज कहा जाता है । सातों मोक्षदायिनी पुरियाँ इनकी रानी हैं । यमुना-गंगा द्वारा विभक्त तीनों भूभाग यहाँ तीन अग्नि रूप माने जाते हैं । ये यज्ञ-वेदी हैं । गंगा-यमुनाके मध्यका भाग गार्हस्पत्याग्नि, गंगा-पारका भाग झूसी-आवहनीय अग्नि और यमुना-पारका भाग अरैल-दक्षिणाग्नि माना जाता है ।

प्रयागमें माघ मास भर रहना कल्पवास कहा जाता है । इसका बहुत माहात्म्य पुराणोंमें है । प्रत्येक माघमें कई सहस्र यात्री यहाँ निवास करते हैं ।

प्रत्येक बारहवें वर्ष जब बृहस्पति वृष राशिमें और सूर्य मकरमें हों, यहाँ कुम्भ पर्व होता है । इसमें कई लाख यात्री आते हैं । प्रति छठे वर्ष अर्धकुम्भी मेला होता है ।

प्रयाग सभी ओरसे रेलवे-केन्द्र है और सड़कोंका भी केन्द्र है । नगरमें स्थान-स्थानपर धर्मशालाएँ हैं ।

तीर्थ– प्रयागका मुख्य तीर्थ है गंगा-यमुनाका संगम । यह स्थान जंकशन स्टेशनसे लगभग ८ कि.मी. दूर है ।

यहाँका मुख्य तीर्थ-कर्म मुण्डन है । संगमके समीप ही मुण्डन होता है । सौभाग्यवती स्त्रियोंके लिये वेणी-दान (थोड़े केश कटवाने) की विधि है ।

गंगाजल श्वेत तथा यमुना-जल नीला (वर्षामें कुछ लाल) रहता है । दोनोंका मिलन-स्थल स्पष्ट दीख पड़ता है । यहाँ कोई पक्का घाट नहीं है । पंडोंकी चौकियोंपरसे स्नानको उतरना पड़ता है ।

प्रयागके मुख्य तीर्थोंमें १२ माधव माने जाते हैं । इनमेंसे शंखमाधव झूसीकी ओर, अनन्तमाधव अक्षयवटके समीप, आदिमाधव अरैलमें और वेणीमाधव दारागंजमें सुगमतासे दर्शन करने योग्य हैं ।

प्रयाग किलेमें अक्षयवटके दर्शन होते हैं । वहाँ भीतर भूमिके नीचे बने स्थानमें अनेकों मूर्तियाँ हैं ।

हनुमानजीकी विशाल लेटी मूर्ति किलेके समीप ही है । किलेसे थोड़ी दूरपर मनकामेश्वर मन्दिर है ।

दारागंजमें बिन्दु माधवके दर्शन करके १.५ कि.मी. आगे जानेपर गंगातटपर नागवासुकि मन्दिर है । उससे ३ कि.मी. पश्चिम बलदेवजी (शेष) का मन्दिर है । वहाँसे ३ कि.मी.पर गंगा-किनारे कोटितीर्थ है जो अब शिवकुटीके नामसे जाना जाता है ।

करनलगंजमें भरद्वाजाश्रम है । यहाँ भरद्वाजेश्वर शिवलिंग है । एक मन्दिरमें शेष-मूर्ति है ।

दारागंजसे पहिले चौकसे आनेमें अलोपीदेवीका मन्दिर है । यह ललितादेवी हैं । यह स्थान ५१ शक्ति-पीठोंमेंसे है । यहाँ सतीकी हाथकी अँगुली गिरी थी ।

गंगापार झूसीमें हंसकूप, समुद्रकूप तथा बिन्दु माधव ये तीर्थस्थान हैं ।

सम्पूर्ण प्रयाग-क्षेत्रकी बहिर्वेदी परिक्रमामें दस दिन लगते हैं । अन्तर्वेदीकी परिक्रमा तीन दिनमें होती है ।

अयोध्या (पुरी-३)

कवनिउँ जनम अवध बस जोई ।
रामपरायन सो परि होई ।।

अयोध्या नित्य भगवद्धाम है । सप्तमोक्षदायिनी पुरियोंमें इसका नाम प्रथम आता है । मैंने तो अपने वर्णन-क्रमसे संख्या दी है ।

अयोध्याका अर्थ है– जिससे युद्ध न किया जा सके । अयोध्याका नाम स्मरण करनेसे पाप नष्ट हो जाते हैं । वेदोंमें इस भगवद्धामका उल्लेख है ।

'अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या ।'

जैसे आठ चक्र, नव द्वारके मानव शरीरमें हृदय भगवद्धाम है, वैसे अयोध्या ब्रह्माण्डका हृदय और भगवद्धाम है ।

सूर्यवंशकी आदि राजधानी अयोध्या अगणित अश्वमेघ-राजसूय यज्ञोंकी भूमि है और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामकी अवतार-भूमि तो यह है ही । अतः प्रत्येक दृष्टिसे अयोध्या महत्तम क्षेत्र है ।

मार्ग- उत्तर रेलवेका अयोध्याका स्टेशन है । यह नगर लखनऊसे १३५ कि.मी. है । लखनऊ या वाराणसीसे सीधी रेलें जाती हैं । वाराणसीसे यह १८९ कि.मी. दूर है । पक्की सड़कका मार्ग सभी इधरके बड़े नगरोंसे है । ठहरनेके लिये यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं ।

तीर्थ– सरयूकी धारा अब घाटोंसे दूर चली गई है । वैसे अनेक घाट हैं और उनपर सुन्दर मन्दिर हैं । यहाँ यह बात स्मरण रखने योग्य है कि वर्तमान अयोध्या महाराज विक्रमादित्य द्वारा बसाई गई है । उससे पूर्वका कुछ नहीं है । उसके बाद भी कई बार इसपर आक्रमण हुए हैं ।

कनक-भवन– यह अयोध्याका मुख्य एवं विशाल मन्दिर है । इसे श्रीसीताजीका निज महल कहा जाता है ।

हनुमान गढ़ी– ६० सीढ़ी ऊपर दुर्ग जैसे कोटके भीतर यह मन्दिर है ।

इनके अतिरिक्त लक्ष्मणघाटपर लक्ष्मणजीकी ५ फुटकी मूर्ति मन्दिरमें है । स्वर्गद्वार घाटपर नागेश्वरनाथ शिव-मन्दिर है । यह मूर्ति कुश-द्वारा स्थापित कही जाती है । पासमें श्रीराम-मन्दिरमें एक ही पत्थरमें रामपञ्चायतन मूर्ति है । अहल्याबाई घाटपर श्रीराम-मन्दिर है ।

दर्शनेश्वर– हनुमानगढ़ीसे थोड़ी दूरपर यह मन्दिर वाटिकाके भीतर है ।

जन्मस्थान– इस मन्दिरको बाबरने मस्जिद बना दिया था । जिसमें फिरसे राममूर्ति आसीन हो गयी थी । श्रीराम-जन्मभूमि मुक्ति आन्दोलनमें ६ दिसम्बर १९९२ ई० को यह बाबरी मस्जिद ध्वस्त

हो गई । श्रीराम-विग्रहकी सेवा-पूजा खुले में (सामान्य आवरण में) हो रही है । इसके चारों ओरका क्षेत्र जबरदस्त बैरीकेटिंगसे घेर दिया गया है । सुरक्षाकी कड़ी निगरानी है ।

तुलसी-चौरा– वह स्थान है, जहाँ गोस्वामी तुलसीदासजीने श्रीरामचरितमानस प्रारम्भ किया था । यहाँ गोस्वामीजीकी मूर्ति है ।

मणिपर्वत– अयोध्या स्टेशनके पास टीलेपर यह मन्दिर है ।

अयोध्यामें बहुत अधिक मन्दिर हैं । अनेक कुण्ड-तीर्थ हैं ।

नन्दिग्राम

फैजाबादसे १६ कि.मी., अयोध्यासे २५.५ कि.मी.पर यह स्थान है । श्रीराम-बनवासके समय भरतजी यहीं रहकर तप करते थे । यहाँ भरतकुण्ड सरोवर तथा भरतजीका मन्दिर है ।

वाराणसी (काशी पुरी-४)

मुक्ति जन्म महि जानि, ग्यान खानि अघ हानि कर ।
जहँ बस सम्भु भवानि, सो कासी सेइअ कस न ।।

कहा जाता है कि मोक्षदायिनी दूसरी पुरियोंमें मरनेपर काशीमें जन्म होकर तब मोक्ष होता है । 'काशी मरणान्मुक्तिः' काशीमें मरने वाला मुक्त हो जाता है ।

वरुणा और असीके मध्यमें यह बसी हुई पुरी भगवान् शिवका अत्यन्त प्रिय धाम है । यहाँ मरणोन्मुखको शंकरजी स्वयं तारक मन्त्रका उपदेश करके मुक्त कर देते हैं ।

यह भारतका प्राचीनतम विद्या-केन्द्र है। अद्‌भुत बात है कि यह सम्पूर्ण भारत है। पूरे भारतके प्रान्तोंके लोग यहाँ पृथक-पृथक मुहल्लोंमें बसे हैं। वहाँ उनकी भाषा, रहन-सहन अपनी है। भारतके समस्त तीर्थोंके स्थान काशीमें हैं। सभी धर्म-सम्प्रदायोंके यहाँ मठ या गद्दियाँ हैं।

द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें एक यहाँ है। ५१ शक्तिपीठोंमेंसे एक यहाँ हैं। गणपति मुख्य क्षेत्रोंमें एक यहाँ है। सूर्यके मुख्य क्षेत्रोंमें एक यहाँ है।

वाराणसी उत्तर-प्रदेशका महानगर है। रेल और सड़कके मार्ग सभी ओरसे यहाँ आते हैं। हवाई-मार्गसे आनेकी भी सुविधा है। नगरमें दो दर्जनसे अधिक अच्छी धर्मशालाएँ हैं। पण्डोंके घर तथा होटलोंमें भी यात्री ठहरते हैं।

तीर्थ– काशीमें गंगाके ४१ घाट हैं। इनमें भी कुछ मुख्य हैं– गाय-घाट, पंचगंगा-घाट, मणिकर्णिका-घाट, दशाश्वमेध-घाट आदि।

इन ४१ घाटोंपर अनेक मन्दिर तथा कुंड, तीर्थ हैं। सबका वर्णन दे पाना सम्भव नहीं है।

विश्वनाथ– काशीका यह सबसे मुख्य मन्दिर है। इस मन्दिरमें विश्वनाथजीके अतिरिक्त दण्डपाणीश्वर सौभाग्य गौरी, शृंगार गौरी, अविमुक्तेश्वर तथा सत्यनारायण मन्दिर हैं। श्रीविश्वनाथ ज्योतिर्लिंग हैं।

ज्ञानवापी– विश्वनाथ मन्दिरके पास यह कूप है। पासमें ७ फुट ऊँचा नन्दी है।

अक्षयवट– विश्वनाथ मन्दिरके पास एक मन्दिरमें शनैश्चर

मन्दिर तथा अक्षयवट है ।

अन्नपूर्णा– विश्वनाथ गलीमें ही यह मन्दिर है । यह काशीकी महाशक्ति हैं । इस मन्दिरमें कुबेर, सूर्य, गणेश विष्णु, हनुमानजी तथा भास्करराय द्वारा स्थापित मन्त्रेश्वर लिंग हैं ।

सत्यनारायण– अन्नपूर्णा मन्दिरसे लगे इस मन्दिरमें महाकाली, शिवपरिवार, गंगावतरण, लक्ष्मीनारायण, श्रीराम-दरबार, राधाकृष्ण, उमा-महेश्वर तथा नृसिंहजीकी भव्य मूर्तियाँ हैं ।

ढुण्ढिराज– विश्वनाथ गलीके द्वारपर यह गणेश मूर्ति है । पास ही सीढ़ी चढ़कर जायँ तो पञ्चमुख गणपतिके दर्शन हैं ।

आदिविश्वेश्वर– ज्ञानवापीसे आगे सड़कके पास हैं ।

लांगलीश्वर– आदिविश्वेश्वरके समीप पाँच पांडवोंसे आगे एक मन्दिरमें यह विशाल शिवलिंग है । इसके आगे सड़कपर सत्यनारायण मन्दिर है ।

काशी-करवत– ज्ञानवापीमें मस्जिदके पास गलीमें यह स्थान है । यहाँ एक कुएंमें शिवलिंग है । ऊपरसे ही पुष्पादि चढ़ाये जाते हैं ।

गोपाल-मन्दिर– चौखम्भा मुहल्लेमें यह बल्लभ सम्प्रदायका सुन्दर मन्दिर है ।

सिद्धदा दुर्गा– यह मन्दिर गोपाल मन्दिरसे थोड़ी दूर है ।

काल-भैरव– भैरवनाथ मुहल्लेमें काशीके इन नगर रक्षकका मन्दिर है ।

दुर्गाजी– दुर्गाकुंड सरोवरके समीप दुर्गाजीका मन्दिर है । दुर्गाजीके समीप ही 'तुलसी-मानस मन्दिर' बना है । यहाँ सम्पूर्ण

रामचरित मानस संगमरमरपर लिखा है । मन्दिर बहुत सुन्दर है ।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमें विश्वनाथ मन्दिर भारतके श्रेष्ठतम भव्य मन्दिरोंमें-से है ।

इनके अतिरिक्त काशीमें इतने अधिक मन्दिर और तीर्थ हैं कि उनका नाम भी देना सम्भव नहीं है । कुछ मुख्य हैं– कुरुक्षेत्र तीर्थ, पिशाचमोचन-तीर्थ, लक्ष्मी-कुण्ड, मन्दाकिनी, गोरखनाथ-मन्दिर, भारतमाता-मन्दिर, काशीदेवी, कबीरचौरा, धूपचण्डी, कपालमोचन, बटुक भैरव, तिलभाण्डेश्वर आदि ।

माणिकर्णिका घाटपर विशालाक्षी-मन्दिर इक्यावन शक्ति पीठोंमें-से एक है । यहाँ सतीका कर्ण-कुंडल गिरा था ।

काशीकी नित्य यात्राका क्रम है– मणिकर्णिका स्नान । भगवान् विष्णु, दण्डपाणि भैरव, महेश्वर, ढुण्ढिराज, ज्ञानवापी, नन्दिकेश्वर, तथा तारकेश्वरका दर्शन करके फिर दण्डपाणिका दर्शन और तब विश्वनाथ-अन्नपूर्णाका दर्शन करे । यह काशीके अविमुक्त क्षेत्रकी यात्रा है ।

काशीकी अन्तर्वेदी परिक्रमामें ६८ स्थानोंपर दर्शन किये जाते हैं । यह परिक्रमा भी साधक प्रतिदिन कर सकते हैं ।

पूरे वाराणसी क्षेत्रकी पंचक्रोशी परिक्रमा ७५ कि.मी.की है । इसमें स्थान-स्थानपर धर्मशालाएँ तथा बाजार हैं । पुरुषोत्तम मास पड़नेपर पञ्चक्रोशी परिक्रमा बहुतसे यात्री करते हैं । यह परिक्रमा दस दिनमें होती है ।

काशी अब भी विद्याका केन्द्र है । हिन्दू विश्व-विद्यालय भारतका सबसे बड़ा विश्वविद्यालय है । इसके अतिरिक्त संस्कृत विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय विद्यापीठ तथा अन्य अनेक कालेज, स्कूल

तो हैं ही, संस्कृतके बहुत अधिक विद्यालय यहाँ हैं ।

विन्ध्याचल

देवी भागवतके अनुसार स्वायम्भुव मनुके तपसे भगवतीने उन्हें दर्शन दिया और उन्हें वरदान देकर वे विन्ध्याचलपर आ गई ।

मार्ग– उत्तर रेलवेपर मिर्जापुरसे ७ कि.मी. पर विन्ध्याचल स्टेशन है । यहाँ चार धर्मशालाएँ हैं । पंडोंके घर भी यात्री ठहरते हैं ।

तीर्थ– यह स्थान गंगा किनारे है । गंगाजीसे विन्ध्यवासिनी मन्दिर दो फर्लांग है । यह मन्दिर बाजारके बीचमें है । मन्दिरमें कौशिकी देवीकी मूर्ति है । इन्हें ही विन्ध्यवासिनी कहा जाता है । मन्दिरके भीतर ही आंगनमें बारह भुजा देवी, खर्परेश्वर शिव, महाकाली तथा धर्मध्वजा देवीकी मूर्तियाँ हैं । इस मन्दिरसे थोड़ी दूरपर विन्ध्येश्वर शिव मन्दिर है ।

महाकाली– वस्तुतः ये चामुण्डा देवी हैं । यह स्थान काली खोह कहा जाता है । विन्ध्याचलसे यह ३ कि.मी. दूर है । यहाँ आनेके लिये पहाड़ी चढ़कर फिर उतरना होता है । पासमें भैरवजीका स्थान है । १२५ सीढ़ी ऊपर गेरुआ तालाब है । यात्री उसमें कपड़े रंग लेते हैं । यहाँ श्रीकृष्ण मन्दिर है । सौ सीढ़ी उतरकर सीता कुण्ड है । उसके पास झरना है । झरनेके दूसरी ओर अष्ट-भुजा मन्दिर है ।

अष्टभुजा– यह स्थान काली खोहसे १.५ कि.मी. है । कुछ लोग इन्हें महासरस्वती भी मानते हैं ।

द्वापरान्तमें वसुदेवजी श्रीकृष्णको कंसके कारागारसे गोकुल नन्दभवन ले जाकर छोड़ आये और वहाँसे सद्योजात नन्द-तनयाको ले आये । कंस जब उस कन्याको पत्थरपर पटकने लगा तो उसके हाथसे छूटकर वे योगमाया गगनमें चली गईं और अष्टभुजा रूपमें प्रगट हो गईं । वे ही यहाँ विराजमान हैं ।

अष्टभुजाके पास गुफामें एक काली मन्दिर है । वहाँसे क्रमशः भैरव कुंड, भैरवनाथ मन्दिर, मच्छन्दरा कुंड मिलते हैं । पर्वतसे उतरनेपर शीतला मन्दिर तथा सरोवर है । फिर हनुमान मन्दिर एवं रामेश्वर मन्दिर विन्ध्याचल आनेमें मिलते हैं ।

पूर्व भारत ◉◉◉◉◉◉◉◉◉◉◉◉◉

पशुपतिनाथ

नैपालकी राजधानी काठमाण्डूसे पशुपतिनाथका मन्दिर दो कि.मी.पर विष्णुमती नदीके तटपर है ।

पशुपति नाथकी मुख्य यात्रा शिवरात्रिपर होती है । वैसे भी यात्री किसी समय जा सकते हैं । उनके पास जिलाधीशका भारतीय नागरिक होनेका प्रमाण-पत्र और डाक्टरका स्वास्थ्य प्रमाण-पत्र होना चाहिये ।

मार्ग– दिल्ली, वाराणसी, पटना, गोरखपुरसे सीधे हवाई जहाज काठमाण्डू जाता है । पूर्वोत्तर रेलवेके स्टेशन रक्सौलके पास नैपालका वीरगंज स्टेशन है । वहाँसे ट्रेन अमलेख गंज तक जाती है । आगे मोटर-बसका मार्ग है ।

काठमाण्डू और पशुपतिनाथमें धर्मशालाएँ हैं ।

तीर्थ– पशुपतिनाथमें पञ्चमुख लिंग है । यह पंचकेदारमें एक है । यहाँ महिष रूप धारी शिवका शिरो भाग है । यह शंकरजीके अष्टतत्व लिंगोंमें एक है । समीपमें ही देवीका विशाल मन्दिर है ।

पशुपतिनाथ मन्दिरसे थोड़ी दूरपर गुह्येश्वरी देवीका विशाल मन्दिर है । यह मन्दिर खूब भव्य है । यह ५१ शक्ति पीठोंमें है । यहाँ सतीके दोनों जानु गिरे थे ।

मुक्तिनाथ

समय– मुक्तिनाथ हिमप्रदेशीय यात्रा है । अतः मईसे सितम्बर तक इस यात्राका अनुकूल समय है । दामोदर कुण्डकी यात्रा अगस्त-सितम्बरमें करना उचित है ।

तैयारी– कम्बल, टार्च, गरम कपड़े, घड़ी, बरसाती, धूपका चश्मा, वेसलीन, खटाई, दस्ताने आवश्यक हैं ।

मार्ग– काठमाण्डूसे मुक्तिनाथ २२४ कि.मी. है । काठमाण्डू या गोरखपुरसे पोखरा तक हवाई जहाज या मोटर-बससे जाना चाहये । पैदल मार्ग पोखरासे–

नागडांडा–	११ कि.मी. ।
घोरे पानी–	१४.५ कि.मी. ।
दानभंसार–	१४.५ कि.मी. ।
टुकचे बाजार–	१८ कि.मी. ।
मुक्तिनाथ–	१९ कि.मी. ।

मार्गमें ठहरनेके स्थान तथा ग्राम-बाजार मिलते हैं ।

मुक्तिनाथ– यह शालग्राम क्षेत्र है । दान भंसारसे ही गंडकी तटपर, पर्वतपर शालग्राम-शिला मिलने लगती है ।

मुक्तिनाथमें नारायणी (गण्डकी) नदीमें सात झरने गरम पानीके हैं । उद्गमके समीप अग्नि ज्वाला दीखती है । यहाँ कई मन्दिर तथा धर्मशालाएँ हैं ।

मुक्तिनाथ ५१ शक्तिपीठोंमें हैं । यहाँ सतीका दाहिना गण्डस्थल गिरा था ।

दामोदर-कुण्ड

गण्डकी नदीका यह उद्गम स्थान मुक्तिनाथसे २५.५ कि.मी. आगे है । कोई बना मार्ग नहीं है । टुकचे बाजारसे कुली, तम्बू, भोजनका सामान साथ ले जाना चाहिये ।

दो दिनकी यात्रापर नकली दामोदर कुण्ड मिलता है । एक दिन और आगे चलनेपर सकली (शुद्ध) दामोदर कुण्ड प्राप्त होता है । बर्फपर अनुमानसे चलना पड़ता है, अतः मार्गका जानकार कुली होना चाहिये ।

यह यात्रा बहुत कठिन है । शीत बहुत रहता है । फलतः कम ही यात्री दामोदर कुण्डकी यात्रा करते हैं ।

सीतामढ़ी

नैपालमें पशुपतिनाथकी यात्रा करके लौटते समय सीतामढ़ी-जनकपुरकी यात्रा सुगम रहती है । रक्सौल दरभंगा लाइनपर सीतामढ़ी स्टेशन है । यहाँ धर्मशालाएँ हैं ।

स्टेशनसे मुख्य मन्दिर १.५ कि.मी. दूर है । यहाँकी बस्ती लखनदेई नदी किनारे है । मुख्य मन्दिर श्रीसीताजीका है । उसी घेरेमें श्रीराम, लक्ष्मण, शिव तथा हनुमानजीके भी मन्दिर हैं ।

श्रीसीताजीका आविर्भाव स्थल उर्विजा कुण्ड मन्दिरके दक्षिणमें है ।

कथा– महाराज निमिके वंशमें उत्पन्न ह्रस्वरोमाके पुत्र राजा सीरध्वज जनकके समयमें राज्यमें अकाल पड़ा । वर्षाके निमित्त यज्ञका निश्चय करके राजा स्वर्णके हलसे यज्ञभूमि जोत रहे थे । भूमिमें हलाग्र लगनेपर वहाँसे एक ज्योतिर्मयी कन्या प्रगट हुई । हलाग्र-सीर लगनेसे उत्पन्न होनेके कारण उनका नाम सीता पड़ा ।

जनकपुर (मिथिला)

जनकस्य तु राजर्षेः कूपस्त्रिदशपूजितः ।
तत्राभिषेकं कृत्वा तु विष्णुलोकमवाप्नुयात् ।।

राजर्षि जनकका कुआँ देवताओं द्वारा भी सम्मानित है । उसके जलसे स्नान करके मनुष्य वैकुण्ठ जाता है ।

जनकपुरका नाम मिथिला, विदेहनगर तथा तीरमुक्ति है ।

मार्ग– दरभंगासे जनकपुर रोड स्टेशन ४३ कि.मी. है । दूसरा मार्ग है सीतामढ़ी या दरभंगासे जयनगर और जयनगरसे नैपाल सरकारकी रेलसे जनकपुर । यह मार्ग सुविधाजनक है ।

तीर्थ– जनकपुरके चारों ओर पूर्व क्रमसे शिलानाथ, कपिलेश्वर, कूपेश्वर, कल्याणेश्वर, जलेश्वर, क्षीरेश्वर तथा मिथिलेश्वर ये शिव मन्दिर हैं ।

श्रीजानकी मन्दिर यहाँका मुख्य मन्दिर है । इसी घेरेमें श्रीसीताजीकी माता सुनयनाजीका मन्दिर है। इसके अतिरिक्त श्रीराम मन्दिर, जनक मन्दिर, लक्ष्मण मन्दिर, रंगभूमि, रत्नसागर मन्दिर तथा दशरथ मन्दिर थोड़ी-थोड़ी दूरीपर हैं ।

जनकपुरमें तीर्थ रूप सरोवरोंकी भरमार है । धनुषसर, गंगासागर, अरगजासर, महाराजसर, जनकसर, रत्नसागर, अग्निकुंड, विहारकुंड, विद्याकूप आदि ७६ कूप तथा सरोवर इस धाममें माने गये हैं ।

दुग्धवती, यमुनी, जलाधि, गेरुका, भूयसी, इक्षुमती, मण्डना (माढा) व्याघ्रमती (विग्धी) और विरजा ये नौ नदियाँ यहाँ आसपास हैं । ये सब पवित्र हैं ।

धनुषा– यह बस्ती जनकपुरसे १४ कि.मी. दूर है । कच्चा मार्ग है । यहाँ जंगलमें एक सरोवरके समीप पत्थरका विशाल धनुष खण्ड पड़ा है । कहा जाता है कि श्रीराम द्वारा तोड़े गये शिव-धनुषका ही वह खण्ड है ।

श्रीरामकी भक्तिकी रसिक शाखाका आकर्षण केन्द्र मिथिला है । अतः रसिक संत, महात्माओंके आश्रम जनकपुरमें हैं ।

सोनपुर (हरिहर-क्षेत्र)

पूर्वोत्तर रेलवेका सोनपुर स्टेशन है । स्टेशनसे थोड़ी दूरीपर गण्डकी नदी गंगामें मिलती है । यहीं सोनपुर कस्वा है । यह हरिहर क्षेत्र माना जाता है ।

यहाँ तेल नदीके तटपर सुवर्ण मेरू महादेवका मन्दिर है ।

नगरमें यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला है। गंडकी-गंगा संगम ही वस्तुतः यहाँका पुण्य तीर्थ है। वहाँ स्नानकी महिमा है।

श्रीमद्भागवतमें इसे शालग्राम-क्षेत्र कहा है। जड़भरतने पूर्वजन्ममें यहीं तप किया था। महर्षि विश्वामित्रके साथ जनकपुर जाते हुए श्रीराम-लक्ष्मण यहाँ पधारे थे।

यह स्थान ऋषियों, तपस्वियोंका सदा प्रिय रहा है। अब तो कार्तिक पूर्णिमापर दो सप्ताह तक यहाँ मेला लगता है। उसमें पशु-विक्रय बहुत होता है।

पटना

यह महानगर बिहार प्रान्तकी राजधानी है। गंगा तटपर बसा है। यहाँ धर्मशालाएँ हैं और होटल पर्याप्त हैं।

पटना में पटना साहब मुख्यतः सिख-तीर्थ है। गुरु गोविन्द सिंहकी दो जोड़ी चरण पादुकाएँ यहाँ सुरक्षित हैं।

छोटी पटनदेवी– यह मन्दिर हरि मन्दिरसे दक्षिण गलीमें है। इसमें महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वतीकी मूर्तियाँ हैं।

पटनदेवी– चौकसे ५ कि.मी. पश्चिम महाराज गंजमें यह मन्दिर है। यह ५१ शक्तिपीठोंमें एक है। यहाँ सतीका दाहिना जंघा गिरा था। समीपमें बिरलाजीका बनवाया सत्यानारायण मन्दिर है।

पटनामें जैनोंके ५ मन्दिर और चैत्यालय हैं। पटना स्टेशनके पास टेकरीपर सेठ सुदर्शनका मोक्षस्थान है। वहाँ उनकी चरणपादुकाएँ हैं।

गया

ब्रह्मज्ञानेन किं साध्यं गोगृहे मरणेन किम् ।
वासेन किं कुरुक्षेत्रे यदि पुत्रो गयां व्रजेत् ॥

ब्रह्मज्ञानसे अथवा गौशालामें मरनेसे या कुरुक्षेत्र निवाससे क्या लेना है, यदि पुत्र गया- श्राद्ध करने वाला है ।

गया भारतवर्षका प्रमुख पितृतीर्थ है । गयामें पितरोंको पिण्डदान करनेसे उनकी अक्षय तृप्ति होती है ।

एक व्यक्ति कई बार गया-श्राद्ध कर सकता है । गया श्राद्ध करनेपर भी वार्षिक श्राद्ध करना उत्तम है; किन्तु गया-श्राद्धके पश्चात् वार्षिक श्राद्ध न हो सके तो श्राद्ध न करनेका दोष नहीं होता ।

कथा- सतयुगमें गय नामक दैत्यने तपस्या प्रारम्भ की । उसके तपसे तीनों लोक संतप्त होने लगे । ब्रह्माजीने उससे वरदान मांगनेको कहा तो उसने कह दिया- 'मुझे कुछ नहीं चाहिये । तप करना मुझे प्रिय है ।'

अन्तमें ब्रह्माने उससे उसका तपसे पवित्र देह यज्ञ करनेके लिए मांगा । उसके शरीरपर वेदी बनाकर सहस्र वर्ष तक ब्रह्मा यज्ञ करते रहे । यज्ञ पूरा होनेपर वह उठने लगा तब उसे धर्मवती शिलासे दबाकर भगवान नारायण उसके हृदय स्थानपर खड़े हुए ।

धर्मकी पुत्री धर्मवती महर्षि मरीचिके चरण दवा रही थी । इतनेमें ब्रह्माजी पधारे तो वे श्वसुर जानकर स्वागतार्थ खड़ी हो गई । महर्षि मरीचिने उनके द्वारा पतिसेवा त्यागसे रुष्ट होकर उन्हें शिला हो जानेका शाप दे दिया । तब उन्होंने सहस्र वर्ष तप किया ।

भगवान् नारायणने उनमें सब देवताओंके साथ निवासका वरदान दिया।

इस धर्मवती शिलासे गयको जब दबाकर भगवान् नारायण गदाधर रूपसे उसपर स्थित हुए तो उसने वरदान मांगा–'मेरे शरीरपर कहीं भी जो पिण्डदान करे, उसके पितरोंको अक्षय तृप्ति हो।'

गयका वह शरीर १६ कि.मी. विस्तार वाला परम पवित्र है। इस क्षेत्रमें कहीं भी और कभी भी पिण्डदान करनेसे मृत प्राणी प्रेतयोनिसे छूट जाता है और पितृलोकमें उसे अक्षयतृप्ति प्राप्त होती है।

मार्ग– गया उत्तर रेलवेका प्रसिद्ध स्टेशन है। नगरमें कई धर्मशालाएँ हैं। पंडोंके यहाँ भी यात्रियोंके ठहरनेकी व्यवस्था है।

तीर्थ– गयामें मुख्य मन्दिर विष्णुपद है। यह स्टेशनसे ३ कि.मी. है। यह मन्दिर फल्गु नदीके समीप है। गयाके अन्य स्थान दूर-दूर हैं; किन्तु सवारियाँ सर्वत्र जाती हैं।

गया-श्राद्धका क्रम

गया- श्राद्ध सात दिनमें करनेकी विधि है। वैसे यह बहुत कठिन होता है। यहाँ १५ दिनका क्रम दिया जा रहा है।

१– गयासे पहिले ही पुन-पुन नदीमें स्नान करके, वहाँ श्राद्ध करके तव गया आकर फल्गुमें स्नान तथा वहीं किनारे श्राद्ध करे।

२– फल्गुमें स्नान, गयासे ११ कि.मी. प्रेत-शिला जाकर ब्रह्मकुण्डमें स्नान-श्राद्ध फिर ४०० सीढ़ी ऊपर जाकर प्रेत-शिलापर श्राद्ध करे। रामकुण्ड एवं राम-शिलापर श्राद्ध तथा काक-बलि। रामशिला विष्णुपदसे ५ कि.मी.पर फल्गुके किनारे पहाड़ी है। नीचे

रामकुण्ड है । रामशिलासे दक्षिण एक घेरेमें काक-बलिका स्थान तथा अक्षयवट है । यहां काक-बलि, श्वान-बलि और यम- बलि दी जाती है ।

३– उत्तरमानस, उदीची, कनखल, दक्षिण मानस और जिह्वालोल तीर्थोंपर पिण्डदान । विष्णुपदसे १.५ कि.मी. रामशिला मार्गपर उत्तर मानस सरोवर है । यहाँ कई मन्दिर हैं । जिह्वालोल फल्गु किनारे एक पीपल वृक्ष है । उदीची, कनखल और दक्षिण मानस-कुण्ड हैं ।

४– सरस्वती स्नान, मतंगवापी और धर्मारण्य तथा बोधगयामें श्राद्ध । गयासे ६.५ कि.मी. पर सरस्वती नदी है । वहाँसे १.५ कि.मी.पर मतंगवापी नामक बावली है । वहाँसे ३ कि.मी.पर धर्मारण्य कूप है । आगे १.५ कि.मी.पर बोध गया है । यहाँ भगवान् बुद्धका विशाल मन्दिर है । मन्दिरके पीछे बोधिवृक्ष था । अब वहाँ 'बौद्ध सिंहासन' है ।

५– ब्रह्म-सरोवरपर श्राद्ध । आम्रसेचन तथा काकबलि । गयाके दक्षिण द्वारके पास यह सरोवर है । वहीं काकबलिका स्थान है । सरोवरमें पड़े गदाखण्डकी परिक्रमा होती है । समीप ही तारक ब्रह्मका दर्शन एवं आम्र-सेचन स्थान है ।

६– विष्णुपद मन्दिरमें रुद्रपद, ब्रह्मपद तथा विष्णुपदपर खीरके पिण्ड बनाकर श्राद्ध ।

७-८-९- तीन दिनों तक विष्णुपद मन्दिरके षोडश वेदी मंडपमें १४ स्थानोंपर तथा समीपके मंडपमें दो स्थानपर श्राद्ध ।

१०– राम गयामें श्राद्ध– सीताकुण्डपर माता, पितामही तथा प्रपितामहीको बालूके पिण्डसे पिण्डदान । विष्णुपद मन्दिरके सामने

फल्गु नदीके पार सीताकुण्ड है । वहीं राम गया शिला है ।

११–गयसिर और गयकूपके समीप पिण्डदान । विष्णुपद मन्दिरसे दक्षिण गयसिर स्थान है । इससे पश्चिम गयकूप है ।

१२–मुण्डपृष्ठ, आदि गया और धौतपापमें खोवे तथा तिलके पिण्डसे पिण्डदान । गयसिरसे थोड़ी दूरपर मुण्डपृष्ठ है । यहाँ १२ भुजाकी मुण्डपृष्ठा देवी हैं । यहाँसे दक्षिण, पश्चिम आदिगया शिला है । आदिगयासे दक्षिण-पश्चिम दक्षिण फाटकके पूर्वी वरामदेमें धौतपाप नामक सफेद शिला है ।

१३–भीम गया, गो प्रचार तथा गदालोलमें पिंडदान । गयाके दक्षिण फाटकके पास एक घेरेमें भीमसेनकी मूर्ति है । यह भीम गया स्थान है । भीमगयासे नैऋत कोणमें छोटी गोप्रचार पहाड़ी है । यहाँ कई मन्दिर हैं । एक शिलापर गायोंके खुरोंके चिह्न हैं । अक्षयवटके दक्षिण गदालोल नामक कच्चा सरोवर है । कहते हैं कि भगवान्‌ने असुरको मारकर यहाँ गदा धोयी थी ।

१४–फल्गु स्नान करके दूधका तर्पण, गायत्री, सावित्री तथा सरस्वती तीर्थोंपर क्रमशः प्रातः, मध्याह्न, सायं सन्ध्या । ये तीर्थ फल्गु नदीमें ही हैं ।

१५–वैतरणी स्नान एवं तर्पण । गयाके दक्षिणी फाटकके बाहर वैतरणी सरोवर है ।

१६–अक्षयवटके नीचे श्राद्ध और ब्राह्मण भोजन । ब्रह्मसरोवर गयाके दक्षिण फाटकके बाहर है । उसके पास पक्की दीवारके घेरेमें अक्षयवट है । यहाँ समीपमें रुक्मिणी सरोवर, वृद्ध प्रपिता महेश्वर मन्दिर तथा वटेश्वर महादेवके मन्दिर हैं ।

१७–गायत्री घाटपर दही-अक्षतका पिण्ड दान ।

इस प्रकार १५ दिनके स्थानमें सत्रह दिन लगते हैं । भाद्र मासकी पूर्णिमासे आश्विन शुक्ल प्रतिपदा तक गयाका यह श्राद्ध-क्रम बहुतसे यात्री पालन करते हैं । दूसरे समयमें भी इस क्रमसे अथवा सात दिनमें इसे किया जा सकता है ।

इतना समय नहीं ही हो तो गया जाकर फल्गुमें स्नान करके विष्णुपदमें पिण्डदान करना चाहिये ।

गयामें कुलहापहाड़ जैन तीर्थ है । यह ५ कि.मी. दूर है ।

राजगृह

रेल द्वारा पटनासे बख्तियारपुर और वहाँसे राजगीर स्टेशन तक रेलमार्ग है. । पटनासे मोटर-बसें भी जाती हैं ।

राजगृहमें जैन धर्मशाला तथा सनातन धर्मियोंकी धर्मशाला हैं । राजगृह जैन तथा बौद्ध तीर्थ भी है ।

तीर्थ– राजगृहमें एक छोटी नदी है । उसे सरस्वती कहते हैं । बस्तीसे १.५ कि.मी. दूर वैभार पर्वतपर ब्रह्मकुण्ड है । इसके पास हंसतीर्थ तथा यक्षिणी चैत्य है । यहाँ अनेक गरम पानीके झरने हैं । उनको विभिन्न नामोंका तीर्थ माना जाता है । एक ही आंगनमें कई झरने तथा एक कुण्ड है ।

ब्रह्मकुण्डके आस-पास केदार कुण्ड, सीता कुण्ड, आदि कई कुण्ड हैं । यहाँ उत्तर सरस्वतीको ही वैतरणी कहते हैं । नदी तटपर पक्के घाट हैं । यहां पिण्डदान होता है । वायें तटपर माधव भगवान्‌का मन्दिर है । समीप वानरी कुण्ड, सोन भंडार आदि क्षेत्र हैं ।

राजगृहमें ५ पवित्र पर्वत हैं– १-वैभार २-विपुलाचल, ३-

रत्नगिरि, ४-उदयगिरि, ५-स्वर्णगिरि । इनमें वैभार पर्वतके पास सब कुण्ड हैं । ऊपर १.५ कि.मी. चढ़ाईपर सोमनाथ तथा सिद्धनाथ प्रसिद्ध मन्दिर हैं । यहाँ ५ जैन मन्दिर भी हैं । यह पंचम पर्वत है ।

विपुलाचलपर चार जैन मन्दिर हैं । महावीर स्वामीकी पादुकाएँ हैं । इसपर मुनि सुव्रतनाथके ४ कक्ष्याणक हुए थे । इसके दक्षिणके शिखरपर प्राचीन गणेश मन्दिर है । यह प्रथम पर्वत है ।

रत्नगिरि द्वितीय पर्वत है । इसपर एक जैन मन्दिर तथा तीर्थंकरोंकी चरणपादुकाएँ हैं ।

उदयगिरि तृतीय पर्वत है । इसपर नाटकेश्वर शिव-मन्दिर तथा जैन-मन्दिर एवं चरण पादुकाएँ हैं ।

स्वर्णगिरि चतुर्थ पर्वत है । इसपर दो जैन मन्दिर तथा चरण चिह्न स्थल है ।

राजगृहका पुराना नाम गिरिव्रत है । यह मगधराज जरासन्धकी राजधानी थी । यहाँसे दूर-दूर तक तीर्थ स्थल हैं । कुछ कि.मी की दूरीमें–वैकुण्ठ तीर्थ, कण्वाश्रम, मणियार मठ, गृद्ध्र कूट, अग्नि तीर्थ, तपोवन, सीताकुटी, बारह माथा, यतीकोल आदि तीर्थ हैं । यहाँ १८ बौद्ध बिहार थे । अब एक भव्य बौधस्तूप बन गया है ।

वैद्यनाथ धाम

द्वादश ज्योतिर्लिंगमें प्रथम काशीमें विश्वनाथ और द्वितीय वैद्यनाथ लिंग है । यह ५१ शक्तिपीठोंमें एक पीठ है । यहाँ सतीका हृदय गिरा था । वैद्यनाथ लिंगका आधार पीठ ही शक्तिपीठ है । वैद्यनाथका एक नाम देवधर भी है ।

मार्ग– पूर्वी रेलवेकी मुख्य लाइनके जसीडीह स्टेशनसे एक लाइन वैद्यनाथ-धाम तक जाती है। जसीडीहसे यह स्थान ७ कि.मी. है। रेलवे स्टेशनसे मन्दिर १.५ कि.मी. है। भागलपुर और सुल्तानगंज, से सड़क मार्ग है, बस, टैक्सी से या पैदल यात्रा होती है। मन्दिर तक पक्की सड़क है। यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं।

तीर्थ– शिव गंगा सरोवर मुख्य मन्दिरके पास ही है। इसीमें यात्री स्नान करते हैं।

यहाँका मुख्य मन्दिर श्रीवैद्यनाथ मन्दिर है। इसमें रावण द्वारा कैलाससे लायी गयी लिंग मूर्ति स्थापित है। आधार पीठसे इसकी ऊँचाई अत्यल्प है।

वैद्यनाथ मन्दिरके घेरेमें दूसरे २१ मन्दिर हैं। इनमें गौरीमन्दिरको कुछ लोग शक्तिपीठ कहते हैं। इसमें एक ही सिंहासनपर जयदुर्गा तथा त्रिपुरसुन्दरी विराजमान हैं। इनके अतिरिक्त कार्तिकेय, गणपति, ब्रह्मा, सन्ध्यादेवी, कालभैरव, हनुमान, मनसादेवी, सरस्वती, सूर्य, बगलादेवी, श्रीराम, आनन्द भैरव, गंगाजी, माणिक चौक, हर-गौरी, कालिका, अन्नपूर्णा, चन्द्रकूप, लक्ष्मीनारायण तथा नीलकण्ड महादेव मन्दिर यहाँ हैं।

देवघर नगरसे ६.५ कि.मी. पर्वतपर शिव मन्दिर है। यहाँ एक शूल कुण्ड है। स्थानीय लोग इसे महर्षि वाल्मीकिका तपोवन कहते हैं।

तपोवनसे १० कि.मी. पर त्रिकूट पर्वतपर त्रिकूटेश्वर मन्दिर है। इस पर्वतसे मयूराक्षी नदी निकलती है।

नन्दन पर्वत देवघरके वायव्यकोणमें है। इसपर छिन्नमस्ता देवीका मन्दिर है। पर्वतके नीचे काली मन्दिर है।

नगरमें आधुनिक कई आश्रम एवं मन्दिर दर्शनीय हैं ।

कथा– राक्षसराज रावणने कैलासपर तप करके शंकरजीको प्रसन्न किया । उनसे लंकामें निवास करनेकी प्रार्थना की । भगवान् शिवने उसे ज्योतिर्लिंग दे दिया । यह कह दिया, 'जहाँ इसे भूमिपर रखोगे, वहाँसे यह नहीं उठेगा ।'

देवता नहीं चाहते थे कि ज्योतिर्लिंग लंकामें जाय । अतः वरुणने रावणके उदरमें प्रवेश किया । उसे लघुशंकाका तीव्र वेग हुआ । विवश होकर पृथ्वीपर उतरा वहाँ भगवान् विष्णु ब्राह्मण बालकके वेशमें पहिलेसे खड़े थे । उन्हें मूर्ति देकर वह लघुशंका करने बैठा । कुछ देर प्रतीक्षा करके ब्राह्मण देवता मूर्ति पृथ्वीपर रखकर चलते बने । उठनेपर जब मूर्ति रावणके उठाये नहीं उठी तो निराश होकर उसने चन्द्रकूप बनाकर उसमें सब तीर्थोंका जल छोड़ा और उससे अभिषेक किया । भूमिपर रखते ही वह दिव्य मूर्ति पाताल तक चली गई थी । पृथ्वीपर तो कुछ अंगुलमात्र रही थी ।

मनुष्योंमें सर्वप्रथम बैजू नामक भीलने इस मूर्तिको देखा और इसके सेवन-पूजनमें वह जीवन भर लगा रहा । उसीके कारणं मूर्तिका नाम बैजनाथ या बैद्यनाथ हो गया ।

वासुकीनाथ

वैद्यनाथसे ४५ कि.मी. पूर्व दुमका जाने वाले मार्गपर यह स्थान है । देवघर या भागलपुरसे मोटर बसें जाती हैं ।

इस अञ्चलके लोगोंकी मान्यताके अनुसार यही नागेश्वर ज्योतिर्लिंग है ।

यहाँका मुख्य मन्दिर श्रीवासुकीनाथका है । इसके अतिरिक्त पार्वती, काली, अन्नपूर्णा, राधाकृष्ण, तारा, त्रिपुरसुन्दरी, भैरवी, धूमावती, मातंगी, कार्तिकेय, गणेश, सूर्य, छिन्नमस्ता, बगला, त्रिपुरभैरवी, कमला, वटुकभैरव, कालभैरव, सुदर्शन-चक्र तथा हनुमान मन्दिर यहाँ पास-पास हैं । कभी यह शाक्तमतका मुख्य स्थान था ।

यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं । मन्दिरके पास ही चन्द्रकूप सरोवर है ।

कथा– प्रसिद्ध शिवभक्त सुप्रियको मारने दारुक राक्षस आया तब शंकरजीने प्रकट होकर उसे मार दिया । कालान्तरमें वासु नामक भीलने यहाँ स्थित लिंग विग्रह ढूंढा, अतः इसका नाम वासुकीनाथ पड़ा । यहाँसे ईशान कोणमें वासुकी पर्वत है । अमृत-मन्थनके पश्चात् देवताओंके छोड़नेपर वासुकी-नागने वहाँ विश्राम किया था । फिर उन्होंने यहाँ लिंगार्चन किया ।

कलकत्ता

भारतवर्षका यह महानगर गंगातटपर स्थित है । ५१ शक्तिपीठोंमें-से एक शक्तिपीठ यहाँ आदिकाली मन्दिर है । वहाँ सतीके दाहिने पैरकी चार अंगुलियाँ गिरी थीं ।

कलकत्तेमें बहुत-सी धर्मशालाएँ तथा होटल हैं । यात्रीके रहने-ठहरनेकी आधुनिकतम सुविधाएँ तथा यातायातके साधन यहाँ उपलब्ध हैं ।

कलकत्तेमें बहुत अधिक मन्दिर हैं, किन्तु जिन्हें तीर्थ कहा जा सके– ऐसे चार मन्दिर हैं ।

आदिकाली– टालीगंजके बस एवं ट्राम अड्डेसे १.५ कि.मी. दूर नगरके बाहर यह देवी मन्दिर है। मुख्य मन्दिरके दोनों और ६-६ शिव-मन्दिर हैं।

काली मन्दिर– यह प्रख्यात मन्दिर है। देवी मन्दिरके समीप ही नकुलेश्वर शिव-मन्दिर है।

दक्षिणेश्वर– इस नामका रेलवे स्टेशन है। कलकत्ताके सियाल्दह रेल्वे स्टेशनसे यह १४ कि.मी. पर है। कलकत्ताके विभिन्न स्थानोंसे बस द्वारा भी पहुँचा जाता है। वेलूर-मठ होकर भी गंगा पार कर दक्षिणेश्वर जाने का मार्ग है। यह स्थान गंगातटपर है। मुख्य मन्दिरके अतिरिक्त चबूतरोंपर १२ शिव मन्दिर हैं। परमहंस रामकृष्णने इस मन्दिरमें आराधना की है। यहां परमहंस देवका कमरा मुख्य मन्दिरके समीप है। उसमें उनके स्मृति-चिह्न सुरक्षित हैं। परमहंसजीकी पत्नी श्रीशारदा माता तथा रानी रासमणिकी समाधियाँ भी यहाँ हैं। एक वटवृक्ष है जिसके नीचे परमहंसजी ध्यान किया करते थे।

वेलूर मठ– दक्षिणेश्वरके लगभग सामने गंगाके दूसरे तटपर यह स्वामी विवेकानन्दंजी द्वारा स्थापित मठ है। दक्षिणेश्वर मन्दिर प्रांगण से गंगा तट पर पहुँचते ही मोटर-नौका उपलब्ध होती हैं जो गंगा के दूसरे तट पर बेलूर-मठ पहुँचा देते हैं। इसमें परमहंस देवका भव्य मन्दिर है। यहीं स्वामी विवेकानन्दकी समाधि है।

कलकत्ता भारतके अनेक इतिहास-प्रसिद्ध महापुरुषोंकी जन्मभूमि है। उनमें है महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर, श्रीकेशवचन्द्र सेन, स्वामी विवेकानन्द, श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुर, श्रीचितरञ्जन दास आदि।

तीर्थ यात्रीको गंगा-सागर जानेके लिये, नवद्वीप या आसाममें

कामाख्या जानेके लिये भी कलकत्ता आकर ट्रेन पकड़ना सुविधाजनक होता है ।

गंगासागर

गंगा सर्वत्र पुण्यासीद् त्रीणिस्नाने विशेषतः ।
हरद्वारे प्रयागे च गंगा सागर संगमे ॥

गंगाजी सर्वत्र पुण्यदायिनी हैं; किन्तु तीन स्थान विशेष पुण्यप्रद हैं हरिद्वार, प्रयाग तथा गंगासागर संगम ।

कलकत्तेसे ६१ कि.मी. दक्षिण डायमण्ड हार्बर स्टेशन है । वहाँसे जहाज और नावें गंगासागर जाती हैं । यह सागर द्वीप कलकत्तेसे १४४ कि.मी. दक्षिण है ।

यह द्वीप लगभग २४० वर्ग कि.मी.का है । पूरा द्वीप वनसे ढका और जनहीनप्राय है । कुछ थोड़े साधु वहाँ रहते हैं । गंगासागर मेलेके स्थानसे कई कि.मी. उत्तर वामनखलमें एक प्राचीन मन्दिर है । उसके पास चन्दन पीड़िमें एक जीर्ण मन्दिर है और बुड़-बुड़ोर तटपर विशालाक्षी मन्दिर है ।

जहाँ गंगासागर मेला लगता है, वहाँ कभी पहिले गंगाजी समुद्रमें मिलती थी । अब वहाँ गंगाकी एक छोटी धारा समुद्रमें मिलती है । गंगाका मुहाना कई कि.मी. पीछे हट आया है ।

मकर संक्रान्ति (१४ जनवरी) पर गंगा सागरका मेला लगता है और पांच दिन रहता है । इसमें स्नान तीन दिन होता है ।

यहाँ कोई मन्दिर नहीं है । मेलेके समय १.५ कि.मी. जंगल काटकर स्थान बनाया जाता है । कभी यहाँ कपिल मुनिका मन्दिर

था । उसे समुद्र बहा ले गया । अब कपिल मुनिकी मूर्ति कलकत्तेमें रहती है । मेलेसे दो-चार दिन पूर्व पुरोहित उसे ले आते हैं । यह मूर्ति लाल रंगकी है । रेतमें चबूतरेपर अस्थायी मन्दिर बनाकर उसमें यह मूर्ति स्थापित होती है ।

यहाँ यात्री रेतपर ही रहते हैं । मुण्डन और पिण्डदान भी यहाँ होता है । यहाँ मीठे जलका अभाव है । मीठे जलका एक कच्चा सरोवर है । उसमें स्नान कोई नहीं कर पाता । घड़ेमें उसका जल ले जा सकते हैं ।

कार्तिक पूर्णिमापर भी कुछ लोग गंगासागर जाते हैं । उस समय भोजन-सामग्री कलकत्तेसे साथ ले जाना चाहिये; क्योंकि तब सागर द्वीप निर्जन होता है । मेलेमें तो वहाँ पूरा बाजार रहता है ।

तारकेश्वर

हावड़ासे एक लाइन तारकेश्वर तक जाती है । स्टेशनसे मन्दिर लगभग १.५ कि.मी. है । तारकेश्वर छोटा बाजार है । यात्री पंड़ोंके घर ठहरते हैं । मन्दिरके समीप दुग्धगंगा सरोवर है । यात्री उसमें स्नान करते हैं ।

तारकेश्वर मन्दिरके समीप ही काली मन्दिर है । वैद्यनाथ धामकी भाँति यहाँ भी सकाम लोग धरना देते हैं । वे संकल्प करके निर्जल व्रत करते हुए बराबर पंचाक्षर मन्त्रका जप करते रहते हैं ।

नवद्वीप

श्रीचैतन्य महाप्रभुकी जन्मभूमि होनेसे नवद्वीप गौड़ीय वैष्णव

सम्प्रदायका महातीर्थ है । इतना महत्त्व दूसरे किसी आचार्यके जन्मस्थलको प्राप्त नहीं है ।

हाबड़ासे १०५ कि.मी. दूर नवद्वीप धाम स्टेशन है । स्टेशनसे नगर १.५ कि.मी. दूर है । यहाँ भजनाश्रममें यात्रियोंके ठहरनेकी सुविधा है ।

नवद्वीपके अधिकांश मन्दिरोंमें यात्रीको निश्चित दक्षिणा देकर प्रवेश मिलता है । ऐसे बहुतसे मन्दिरोंमें श्रीचैतन्य महाप्रभुकी लीलाओंको मिट्टी की मूर्तियाँ सजाई रखी हैं । उनकी पूजा नहीं होती । यात्री उनके दर्शन कर आता है ।

यहाँका मुख्य मन्दिर श्रीगौरांग महाप्रभुका मन्दिर है । कहा जाता है कि यह श्रीविग्रह श्रीविष्णुप्रियाजी द्वारा प्रतिष्ठित है ।

श्रीअद्वैताचार्य मन्दिर, श्रीगौर गोविन्द मन्दिर, श्रीशचीमाता विष्णुप्रिया मन्दिर, जगाई-मघाई उद्धार, श्रीगदाधर-आँगन, नन्दन आचार्यके घर नित्यानन्द मिलन, गुप्तवृन्दावन, श्रीगौरांग जन्म लीला, श्रीगौरांग बाल लीला, श्रीगौरांग विवाह लीला, महाप्रभुकी ढोल वाड़ी, श्रीनित्यानन्द प्रभु और हरिसभा आदि । इन सबमें मिट्टीकी मूर्तियाँ सजाई गई हैं ।

सोनार गौरांग मन्दिरमें महाप्रभुकी स्वर्ण मूर्ति है । षड़भुज गौरांग, गौरांग-विश्वरूप तथा श्रीवास प्रांगणके अतिरिक्त निम्न मन्दिर हैं जिनमें यात्रीको दक्षिणा नहीं देनी पड़ती ।

नवद्वीपकी अधीश्वरी पौड़ा माता, सिद्धेश्वर (बूढ़े-शिव), आगमेश्वरी, तुलादेवी, गोविन्दजीका मन्दिर, श्रीवृन्दावनचन्द्र, सोनार निताई-गौर, श्रीसीताराम, श्रीगौर-विष्णुप्रिया औरं नृसिंह मन्दिर ।

मायापुर– गौड़ीयमठके संस्थापक श्रीभक्ति विनोद ठाकुरके

मतके अनुसार वर्तमान मायापुर ही नवद्वीप है । वर्तमान नवद्वीप धाम तो रामचन्द्रपुर है ।

मायापुर नवद्वीप धामसे गंगापार होकर जाना पड़ता है । यह गौड़ीयमठका मुख्य स्थान है । वहाँके दर्शनीय स्थान हैं–

१-श्रीयोगपीठ (चैतन्य महाप्रभुका आविर्भाव स्थान) २–श्रीवास आँगन ३-अनुकूल कृष्णानुशीलनागार ४-श्रीअद्वैत-भवन ५-श्रीचैतन्यमठ ६-मुरारी गुप्तका सीताराम मन्दिर और राधा गोविन्द मन्दिर ७-पृथुकुण्ड या बल्लाल-दीपि ८-कालीकी समाधि ९-महाप्रभु घाट १०-श्रीधर आँगन आदि ।

नवद्वीप धामकी भाँति यहाँ भी कई मन्दिरोंमें मिट्टीकी मूर्तियाँ सजाई रखी हैं और निश्चित दक्षिणा देकर ही उनमें यात्रीको प्रवेश मिलता है ।

कामाख्या (क्षी) देवी

पीठानि चैकपञ्चादश भवन्मुनिपुंगव ।
तेषु श्रेष्ठतमः पीठः कामरूपो महामते ॥

मुनिश्रेष्ठ ! सतीके शरीरके अंग गिरनेसे ५१ शक्तिपीठ हुए । उन सबमें है महामति ! कामरूप सर्वश्रेष्ठ है ।

कथा– अपने पिता दक्ष प्रजापतिके यज्ञमें सतीने जब शिवका भाग नहीं देखा तो योगके द्वारा शरीर त्याग दिया । भगवान् शिव सतीके इस नैष्ठिक प्रेमसे ऐसे उन्मत्त हुए कि उनका शरीर गोदमें लेकर घूमने लगे ।

शंकरजीको शान्त करनेके लिये देवताओंने भगवान् विष्णुसे प्रार्थना की । भगवान्ने चक्रसे सतीके शरीरके टुकड़े कर दिये । सतीका शरीर कटकर गिर जानेपर शंकरजीका शोक घटा । वे शान्त हुए ।

भारत भूमिपर ५१ स्थानोंमें शक्तिके अंग गिरे । वे शक्तिपीठ माने जाते हैं । वहाँ देवी एकरूपसे नित्य निवास करती हैं । वहाँ भगवान् शिव भी एक रूपसे रहते हैं । अतः शक्तिपीठ जहाँ हैं, वहाँ शिव-मन्दिर भी हैं ।

मार्ग– यह तीर्थ आसाममें है । पूर्वोत्तर रेलवेसे अमीन गाँव स्टेशन आकर स्टीमर द्वारा नदी पार करना पड़ता है । वहाँसे तीर्थ स्थान ४ कि.मी. है । मोटर-बस जाती है । गुवाहाटीसे भी कामाक्षी देवीका मार्ग है । गुवाहाटी से ६ कि.मी. पर कामाख्या रेलवे स्टेशन है । वहाँसे भी बस-टैम्पो द्वारा कामाक्षी देवीका मार्ग है ।

कामाक्षीदेवीका मन्दिर १.५ कि.मी. ऊँची पहाड़ीपर है । कामाक्षीदेवीका प्राचीन मन्दिर सन् १५६४ ई. में कालापहाड़ ने तोड़ डाला था । यहाँ धर्मशालाएँ हैं ।

कामाक्षी मन्दिर ५१ शक्तिपीठोंमें मुख्यपीठ है । यहाँ सतीका गुह्यांग गिरा था । मन्दिरमें मूर्ति नहीं है । गुह्याकार रूप ही है ।

यहाँ लोहितकुण्ड, मानसकुण्डादि तीर्थ हैं । पहाड़ीसे उतरनेपर गुवाहाटी नगरके सामने ब्रह्मपुत्र नदीके मध्यमें छोटे चट्टानी द्वीपपर उमानन्द नामक शिवमन्दिर है । यही शक्तिपीठके भैरव हैं । इनका दर्शन करके ही कामाख्या यात्रा पूरी होती है । यहाँ नौकासे जाते हैं ।

आसाममें यहाँ आस-पास सौभार पीठ, श्रीपीठ, रत्नपीठ,

विष्णुपीठ, रुद्रपीठ आदि कई उपासना पीठ हैं । उन सबमें कामाख्यापीठ ही प्रधान है ।

याजपुर

हावड़ा-वाल्टेयर लाइनपर कटकसे ७२ कि.मी. पूर्व ही जाजपुर-क्योंझररोड स्टेशन है । यहाँसे तीर्थ ३१ कि.मी. है । स्टेशनसे मोटर-बस जाती है । यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं ।

जाजपुर नाभिगया क्षेत्र माना जाता है । यहाँ वैतरणी नदी है । श्राद्ध-तर्पण ही यहाँका मुख्य कर्म है । कहते हैं कि ब्रह्माजीने पहिले यहाँ यज्ञ किया था । उस यज्ञ-कुण्डसे विरजादेवीका प्राकट्य हुआ ।

वैतरणी नदीके घाटपर ही मन्दिर हैं । इनमें गणेश, सप्तमातृका, विष्णुमन्दिर आदि हैं । वैतरणी पार करके भगवान् वाराहके मन्दिरमें जाना पड़ता है । यही यहाँका प्राचीन मन्दिर है ।

घाटसे १.५ कि.मी.पर गरुड़ स्तम्भ है । उसके आगे ब्रह्मकुण्डके समीप विरजादेवीका मन्दिर है । कुछ लोग इसे शक्तिपीठ मानते हैं । कहते हैं, सतीकी नाभि यहीं गिरी थी । उससे थोड़ी दूरपर त्रिलोचन शिवमन्दिर है ।

नाभिगया कुण्डके समीप घण्टाकर्ण भैरवकी मूर्ति है ।

भुवनेश्वर

यह उत्कल प्रदेशकी राजधानीका नगर है । स्टेशनसे भुवनेश्वर मन्दिर ५ कि.मी. है । मोटर बसें जाती हैं । देशके प्रमुख नगरसे

यह हवाई-मार्ग से भी जुड़ा है । तीर्थमें कई धर्मशालाएँ हैं ।

पुराणोंमें इसे एकाम्र क्षेत्र कहा गया है । भगवान् शंकरने इसे प्रकट किया, अतः यह शाम्भव क्षेत्र है ।

पुरीके समान यहाँ भी महाप्रसादका माहात्म्य है, किन्तु यहाँ मन्दिरके कोटके भीतर ही महाप्रसादमें स्पर्श-दोष नहीं माना जाता । कोटके बाहर माना जाता है । यात्री प्रायः मन्दिरकी परिधिमें नृत्य-मंडपमें ही प्रसाद ग्रहण करते हैं ।

स्नानके तीर्थ ९ प्रसिद्ध हैं– १-बिन्दु सरोवर, २-पापनाशिनी, ३-गंगा-यमुना, ४-कोटितीर्थ, ५-देवीपापहरा, ६-मेघतीर्थ, ७-अलाबुतीर्थ, ८-अशोक कुण्ड, ९-ब्रह्मकुण्ड । इनमेंसे बिन्दुसरोवर और ब्रह्मकुण्डमें स्नान तथा अन्य तीर्थोंमें मार्जन-तर्पण होता है । ब्रह्मकुण्डके घेरेमें ही अशोक कुण्ड, मेघतीर्थ, अलाबुतीर्थ है । भुवनेश्वर बाजारके समीप बिन्दु सरोवर है । वहाँसे दो फर्लांगपर ब्रह्मकुण्ड है । इसमें बराबर गोमुखसे जल आता तथा अन्य मार्गसे निकलता रहता है । कोटितीर्थ मुख्यमार्गके समीप है और देवी पापहरा तीर्थ मन्दिरमें ही है ।

भुवनेश्वर– इस मन्दिरको यहाँ लिंगराज मन्दिर कहते हैं । बहुत विशाल मन्दिर है । निज मन्दिरमें चपटा अगठित विग्रह है । वस्तुतः यह बुद्बुद् लिंग है । चक्राकार होनेसे हरिहरात्मक माना जाता है । यात्री भीतर जाकर इनकी पूजा कर सकते हैं । यहाँ त्रिशूलके स्थानपर पिनाकको मुख्यायुध माना जाता है ।

इस मन्दिरके तीन भागोंमें तीन मन्दिर हैं । दक्षिण भागको 'निशा' कहते हैं । उसमें गणेशजीकी मूर्ति है । पीछेके भागमें पार्वती की मूर्ति है । उत्तरके भागमें स्वामी कार्तिकेय हैं । मन्दिरके ऊर्ध्वभागमें कीर्तिमुख, नाट्येश्वर, दिक्पालादिकी मूर्तियाँ हैं ।

मन्दिर प्राकारके भीतर बहुतसे छोटे मन्दिर हैं । उनमें महाकाल, लक्ष्मी, नृसिंह, यमेश्वर, विश्वकर्मा, भुवनेश्वरी तथा गोपालिनी (पार्वती) जीके मन्दिर मुख्य हैं । भुवनेश्वरी मन्दिरके समीप ही नन्दी मन्दिरमें विशाल नन्दीकी मूर्ति है ।

भुवनेश्वर मन्दिरोंका नगर है । कभी यहाँ कई सहस्र मन्दिर थे । अब भी बहुत हैं । उनमें मुख्यके नाम ही यहाँ दिये जा रहे हैं–

अनन्त वासुदेव– बिन्दु सरोवरपर मणिकर्णिका घाटपर ऊपरी भागमें है । ये एकाम्र क्षेत्रके अधिष्ठाता देवता हैं । बिन्दु सरोवरके चारों ओर बहुतसे मन्दिर हैं । उनमें पश्चिम तटपर ब्रह्माजी तथा दक्षिण तटपर भवानी-शंकर मन्दिर दर्शनीय हैं ।

रामेश्वर– स्टेशनसे आते समय मार्गमें ।

ब्रह्मेश्वर– ब्रह्मकुण्डके समीप बहुत कलापूर्ण मन्दिर है ।

मेधेश्वर– ब्रह्मकुण्डपर । यहीं भास्करेश्वर मन्दिर भी है ।

राजा-रानी मन्दिर – कटक-भुवनेश्वर सड़कके पास है । पहले यह विष्णु-मन्दिर था । इसमें अब कोई आराध्य मूर्ति नहीं है, किन्तु मन्दिर बहुत सुन्दर है । इसका शिल्प-सौन्दर्य ही आकर्षणका केन्द्र है ।

कथा– काशीमें सब देवताओंके बस जानेपर भगवान् शंकरको एकान्तमें रहनेकी इच्छा हुई । देवर्षि नारदसे इस क्षेत्रकी महिमा सुनकर यहाँ पधारे और यहाँके क्षेत्रेश श्रीअनन्तवासुदेवके अनुरोधपर यहीं विराजमान हो गये ।

श्रीजगन्नाथपुरी (धाम-२)

सतयुगका मुख्यधाम बद्रीनाथ है । त्रेताका रामेश्वर, द्वापरका द्वारिका और कलियुगके लिये मुख्य भगवद्धाम पुरी है । यह नीलाचल-क्षेत्र इस युगमें समस्त पापोंका नाशक एवं पतितोद्धारक है ।

कथा– श्रीकृष्णचन्द्रकी रानियोंने द्वारिकामें माता रोहिणीसे प्रार्थना की कि वे श्यामसुन्दरकी व्रज-लीलाका गोपी-प्रेम सुनावें । माताने सुभद्राजीको द्वारपर नियुक्त कर दिया कि किसीको भीतर न आने दें और द्वार बन्द करके रानियोंको वह प्रेम-चरित सुनाना प्रारम्भ किया ।

श्रीबलराम-कृष्ण वहाँ आने लगे तो बहिन सुभद्राने उन्हें द्वारपर रोक दिया, लेकिन द्वारपर खड़े-खड़े जो भीतरके वर्णनका कुछ अंश सुन पड़ा तो उसीसे तीनोंके शरीर द्रवित होने लगे । इतनेमें देवर्षि नारद पधारे । उन्होंने जो प्रेम विकृत विग्रह तीनोंका देखा तो उसी रूपमें रहनेकी प्रार्थना की । भगवान्ने वरदान दिया–'कलियुगमें हम इस रूपमें रहेंगे ।'

मालव-नरेश इन्द्रद्युम्नको पता लगा कि उत्कलमें नीलाचलपर नील-माधव मूर्ति है । वे उसका दर्शन करने आये; किन्तु वह मूर्ति देवता स्वर्ग ले जा चुके थे । राजाने तप करना प्रारम्भ किया । उन्हें दारु-विग्रहमें भगवत्दर्शन होनेकी आकाशवाणी हुई । एक दिन समुद्रसे एक बड़ा काष्ठ बहकर आया । राजाने उससे मूर्ति बनवाना निश्चय किया । सहसा विश्वकर्मा वृद्ध कारीगरके रूपमें आये । उन्होंने कहा–'मैं मूर्ति बनाऊँगा,परन्तु वह निर्माण-गृह मेरे कहे बिना खोला न जाय ।'

वे बन्द गृहमें मूर्ति बनाने लगे । अनेक दिन बीत गये । महारानीने हठ किया कि गृह खोलना चाहिए । कारीगर भूखा-प्यासा मर न जाय- यह भय लगा । गृह खोला गया तो कारीगर अदृश्य हो गया । मूर्तियाँ अपूर्ण बनी थीं । आकाशवाणी हुई- 'इन्हें इसी रूपमें प्रतिष्ठित करदो ।' अतः उसी रूपमें श्रीबलराम, श्रीकृष्ण और सुभद्राकी मूर्तियाँ स्थापित कर दी गईं । प्रति १२ वर्षपर नवीन मूर्ति वनवाकर स्थापित होती है और पुरानीका विसर्जन हो जाता है ।

मार्ग- आसनसोल, हबड़ा-मद्रास तथा तलचरसे पुरीके लिये सीधी ट्रेनें जाती हैं । दिल्लीसे लगभग २१३५ कि.मी. तथा हावड़ा से ५०० कि.मी. की दूरीपर उड़ीसाके समुद्र तट पर है । कटक, भुवनेश्वर, खुरदा रोडसे पुरीके लिये मोटर-बसें चलती हैं ।

यात्रियोंके ठहरनेके लिये पुरीमें कई धर्मशालाएँ हैं ।

स्नानके स्थान- १-समुद्रमें स्वर्ग-द्वारपर, मन्दिरसे १.५ कि.मी. । २-रोहिणी-कुण्ड- यह मन्दिरके भीतर ही है । ३-इन्द्रद्युम्न सरोवर, मन्दिरसे २.५ कि.मी., गुंडीचा मन्दिरके पास । ४-मार्कण्डेय सरोवर और चन्दन तालाब पास-पास हैं । मन्दिरसे १ कि.मी.पर । ५-श्वेत गंगा सरोवर समुद्रके मार्गमें है । ६-लोकनाथ सरोवर, यह जगन्नाथ मन्दिरसे ३ कि.मी., लोकनाथ मन्दिरके समीप है ।

श्रीजगन्नाथ- यह दो परकोटोंके भीतर बहुत विशाल मन्दिर है । यहाँ पूर्वमें सिंहद्वार, दक्षिण अश्वद्वार, पश्चिम व्याघ्रद्वार और उत्तर हस्तिद्वार हैं । यात्री श्रीजगन्नाथजी तक जाकर दर्शन, प्रदक्षिणा कर सकते हैं ।

घेरेके भीतरके अन्य मन्दिर- मन्दिरके बाहर सामने कोणार्कसे लाकर स्थापित किया अरुणस्तम्भ है । इसकी प्रदक्षिणा करके द्वारमें

जानेपर दाहिनी ओर पतित-पावन जगन्नाथ द्वारमें ही हैं । आगे छोटे मन्दिरमें विश्वनाथलिंग मूर्ति है । इसके आगे क्रमशः अजनाथ गणेश, बटोरमहादेव, पटमंगलादेवी, सत्यनारायण, वटवृक्षके नीचे वालमुकुन्द, सिद्ध गणेश तथा सर्वमंगलादेवीके मन्दिर हैं ।

निज मन्दिर द्वारके सामने ब्रह्मासन मण्डप–मुक्ति मंडपमें ब्राह्मण बैठते हैं । इसके पीछे मुक्ति नृसिंह मन्दिर है । यहाँके क्षेत्रपाल हैं । आगे रोहिणी कुण्डके समीप विमला देवीका मन्दिर है । यह ५१ शक्तिपीठोंमें एक है । यहाँ सतीकी नाभि गिरी थी । जैन लोग इन्हें सरस्वती कहकर पूजन करते हैं ।

इससे आगे सरस्वती, नीलमाधव, काञ्चीगणेश, भुवनेश्वरी मन्दिर हैं । भुवनेश्वरी उत्कलके शाक्तोंकी आराध्या हैं । इसके आगे लक्ष्मी मन्दिर है । इसमें मुख्यमूर्ति लक्ष्मीजीकी है । इसके समीप ही सूर्य मन्दिर है । आगे पातालेश्वर शिव, उत्तरामणि देवी, ईशानेश्वर मन्दिर है । इसके सामने नन्दी मूर्तिके पास अंगुलीसे चोट करनेपर जल निकल आता है । इसे गुप्तगंगा कहते हैं ।

बैकुण्ठ द्वारके बाहर बैकुण्ठेश्वर शिव तथा जय-विजयकी मूर्तियाँ हैं ।

पुरीके अन्य मन्दिर तो बहुत हैं । उनमें मुख्य-मुख्यका ही वर्णन यहाँ दिया जा रहा है–

गुण्डीचा मन्दिर–यहाँ रथयात्राके समय जगन्नाथजी रहते हैं । निजमन्दिरके सभा भवनमें लक्ष्मीजीकी मूर्ति रहती है । इस मन्दिरके पीछे ही सिद्ध हनुमानका प्राचीन मन्दिर है ।

एमारमठ–श्रीरामानुजाचार्यके आराध्य गोपालजी इसमें है ।

श्रीराधाकान्तमठ–समुद्र जानेके मार्गमें है । श्रीचैतन्य महाप्रभु

यहाँ १८ वर्ष रहे हैं । इसे गम्भीरा मन्दिर भी कहा जाता है । महाप्रभुका करवा, चरणपादुका आदि यहाँ हैं ।

सिद्धबकुल– राधाकान्त मठसे पास ही गलीमें यह स्थान है । यहां श्री हरिदासजीकी भजनस्थली है । वकुलवृक्ष यहाँ श्रीमहाप्रभुने लगाया था ।

गोवर्धनपीठ– यह श्रीशंकराचार्य पीठ समुद्र मार्गसे दाहिनी ओर थोड़ी दूर है ।

कबीरमठ– स्वर्गद्वारके पास पाताल गंगा कूपपर है ।

हरिदासजीकी समाधि– स्वर्गद्वारसे १ कि.मी. दाहिने है ।

तोटा गोपीनाथ– हरिदासजीकी समाधिसे १.५ कि.मी. आगे है । यह मूर्ति श्रीमहाप्रभुको रेतमें मिली थी ।

लोकनाथ– तोटा गोपीनाथसे १ कि.मी. और जगन्नाथ मन्दिरसे ३ कि.मी.पर जंगलमें यह मन्दिर है । यहाँ मन्दिरमें बराबर जल भरा रहता है । लोकनाथजी जलमें डूबे रहते हैं । जलके ऊपरसे ही पूजन होता है । केवल शिवरात्रिपर जल निकाला जाता है, तब थोड़े समयको दर्शन होते हैं ।

बेड़ी हनुमान– पुरी रेलवे स्टेशनसे समुद्रकी ओर १ कि.मी.पर । यहाँ हनुमानजीको बेड़ी पड़ी हैं, जिससे वे कहीं जा न सकें और समुद्रको बढ़नेसे रोके रहें ।

चक्रनारायण– बेड़ी हनुमानके सामने यह मन्दिर है । पीछे समुद्र किनारे चक्रतीर्थ है ।

सोनार गौरांग – बेड़ी हनुमानके समीप ही यह मन्दिर है । इसमें चैतन्य महाप्रभुकी स्वर्ण मूर्ति है ।

कानवत हनुमान– श्रीजगन्नाथ मन्दिरसे १ कि.मी.पर समुद्रकी ओर । समुद्र-गर्जनसे श्रीजगन्नाथकी निद्रा भंग न हो, इसलिये हनुमानजी कान दिये स्थित हैं कि यहाँ तक समुद्रकी ध्वनि तो नहीं आती ।

इनके अतिरिक्त पुरीमें सुदामापुरी, पापुड़िया मठ, नृसिंह मन्दिर, नीलकण्ठेश्वर, यमेश्वर, मृत्युञ्जय, विश्वेश्वर, बिल्वेश्वर, श्वेतमाधव आदि अनेकों दर्शनीय मन्दिर हैं ।

बड़े मार्गपर श्रीबल्लभाचार्यकी बैठक है । श्रीजगन्नाथ मन्दिरके सिंहद्वारके सामने ही गुरुनानक देवका स्थान नानकमठ है ।

श्रीमद्भागवतके उत्कल भाषाके पद्यानुवादक श्रीजगन्नाथदासजीका आश्रम, श्रीरायरामानन्दजीका जगन्नाथ बल्लभ मठ, पुरी नरेशकी आराध्या श्यामाकाली मन्दिर, रामानन्द सम्प्रदायका छोटा छत्ता मठ, महात्मा विजयकृष्ण गोस्वामीका समाधि मन्दिर, महात्मा साल वेगकी समाधि आदि पुरीमें ही हैं ।

साक्षी गोपाल

मार्ग– श्रीजगन्नाथ पुरीसे १७ कि.मी. दूर साखी गोपाल स्टेशन है । पुरी या भुवनेश्वरसे मोटर-बसें भी आती हैं । स्टेशनसे मन्दिर १ कि.मी. है । मन्दिरके समीप ही धर्मशाला है ।

पुरी धामकी यात्रा साक्षी गोपालके दर्शन करके ही पूरी मानी जाती है ।

स्नान-स्थल– मन्दिरके बाहर चन्दन तालाब है । मन्दिरके दोनों ओर राधाकुण्ड और श्यामकुण्ड नामके सरोवर हैं ।

श्रीराधिकाजीका मन्दिर है ।

कथा- उत्कलके एक धनी ब्राह्मण तीर्थ-यात्राको निकले । साथमें एक गरीब ब्राह्मण युवकको उन्होंने ले लिया । उस समय पैदल यात्रा करनी थी । युवकने उन वृद्धकी बड़े प्रेमसे सेवा की । वृन्दावन पहुंचनेपर गोपालजीके मन्दिरमें वृद्धने कहा-'लौटकर मैं अपनी पुत्रीका तुमसे विवाह कर दूंगा ।'

यात्रासे लौटनेपर वृद्धके पुत्रोंने अपनी बहिनका विवाह दरिद्र युवकसे करना स्वीकार नहीं किया । उसका अपमान भी किया । उसने पञ्चायत एकत्र की । पञ्चोंने कहा-'इन्होंने किसके सामने कन्या देनेको कहा था ?'

युवक-'गोपालजीके सामने' ।

पञ्चोंको प्रत्यक्ष साक्षी चाहिये थी । युवक फिर वृन्दावन गया । उसने रोकर गोपालजीसे प्रार्थना की । गोपालजी बोल उठे-'तुम आगे आगे चलो । मैं पीछे आ रहा हूँ । जहाँ लौटकर देखोगे, वहीं रह जाऊँगा । तुम्हें मेरी नुपूर-ध्वनि सुनाई देती रहेगी ।'

युवक चल पड़ा । पुल अलसा नामक स्थानपर रेतमें चरण गड़नेसे नुपूर-ध्वनि रुकी तो युवकने लौटकर देखा । गोपालजी वहीं रह गये; किन्तु युवकका काम हो गया ।

कटक नरेश अपनी यात्रामें वह मूर्ति पुरी ले आये । जगन्नाथजीमें गोपालजी आये तो वह पूरे नैवेद्यका भोग पहिले लगा लेने लगे । अतः जगन्नाथजीके स्वप्नादेशके अनुसार राजाने उन्हें यहाँ पुरीसे पाँच कोसपर प्रतिष्ठित किया ।

गोपालजी आये तो श्रीराधाके विना कैसे मन लगता । पुजारी श्रीबिल्वेश्वर महापात्रके घरमें पुत्री रूपसे श्रीराधा अवतीर्ण हुईं । उनका

नाम लक्ष्मी रखा गया ।

लक्ष्मीके युवती होनेपर अद्भुत घटनाएँ होने लगीं । कभी गोपालजीकी माला रात्रिमें उस कन्याकी श्य्यापर मिलती और कभी उसके वस्त्र या आभूषण गोपालजीके वन्द मन्दिरके भीतर मिलते । अन्तमें पण्डितोंने यहाँ श्रीराधामूर्ति स्थापित करवा निश्चित किया ।

मूर्ति बनी । स्थापना-दिवस आया । ठीक प्रतिष्ठाके समय पुजारीकी कन्याका शरीर छूट गया । लोगोंने आश्चर्यसे देखा कि जो श्रीराधामूर्ति वनी थी वह ठीक लक्ष्मीकी मूर्तिके समान थी ।

इस प्रकार साक्षी देने आनेके कारण यहाँ गोपालजीका नाम साक्षी-गोपाल पड़ गया । यहाँ आकर अपनी नित्य अभिन्नाको भी इन्होंने अपने समीप वुला लिया ।

दक्षिण भारत ◎◎◎◎◎◎◎◎◎◎◎◎◎◎

मल्लिकार्जुन (श्रीशैल)

मल्लिकार्जुन संज्ञश्चावतारः शंकरस्य वै ।

द्वितीयः श्रीगिरौ तात भक्ताभीष्टफलप्रदः ॥

श्रीशैलपर मल्लिकार्जुन नामसे भगवान् शंकरका द्वितीय ज्योतिर्लिंग है । यह भक्तोंके अभीष्टको देनेवाला है ।

कथा– 'प्रथम विवाह किसका हो ?' इस प्रश्नको लेकर स्वामी कार्तिक और गणेशजीमें विवाद हो गया । पृथ्वी-प्रदक्षिणा करनेकी बात आई और गणेशजी अपनी बुद्धिसे विजयी हो गये । उनका विवाह हो गया । इससे स्वामी कार्तिक माता-पितासे रूठकर दक्षिण श्रीशैलपर आ गये ।

पुत्र-वियोगसे दुःखी उमा-महेश्वर स्वामी कार्तिकसे मिलने श्रीशैलपर आये; किन्तु उनके आगमनका समाचार पाकर स्वामी कार्तिक तीन योजन दूर कुमार पर्वतपर चले गये । उमा-महेश्वर श्रीशैलपर ही विराजमान हो गये । यहाँ पार्वतीजीका नाम मल्लिका और शंकरजीका नाम अर्जुन है ।

यह द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें द्वितीय माना जाता है । वीर शैव मतके पञ्चाचार्योंमें-से श्रीपति पण्डिताराध्यका आविर्भाव मल्लिकार्जुन लिंगसे माना जाता है ।

मार्ग– मनमाड-काचीगुडा रेलवे लाइनके सिकन्दरा बाद स्टेशनसे एक लाइन द्रोणाचलम् तक जाती है । इस लाइनपर कुर्नूल

टाउन स्टेशन है । वहाँसे मोटर बसें मल्लिकार्जुन तक जाती हैं । २०० किलोमीटर दूरी है । तमिलनाडुके प्रसिद्ध नगर गुण्टूरसे भी बसें जाती हैं । यहाँसे दूरी २१५ किलोमीटर है । तिरुपतिसे भी बसें जाती हैं ।

मन्दिरके समीप यात्रियोंके निवासके लिये धर्मशालाएँ हैं । यात्री-निवास (टूरिस्ट हाउस) भी है और तिरुपतिके समान पृथक-पृथक सभी सुविधायुक्त छोटे मकान भी हैं, जो किरायेपर मिल जाते हैं ।

मन्दिरके बाहर पीपल-पाकरका सम्मिलित वृक्ष है । उसके आस-पास चबूतरा है । दक्षिण भारतके दूसरे मन्दिरोंके समान यहाँ भी मूर्ति तक जानेका टिकट कार्यालयसे लेना पड़ता है । पूजाका शुल्क टिकट भी पृथक होता है । यहाँ लिंग मूर्तिका स्पर्श प्राप्त होता है ।

मल्लिकार्जुन मन्दिरके पीछे पार्वती-मन्दिर है । इन्हें मल्लिका देवी कहते हैं । सभा-मण्डपमें नन्दीकी विशाल मूर्ति है ।

पातालगंगा– मन्दिरके पूर्वद्वारसे लगभग ३ कि.मी.पर पातालगंगा है । मार्ग कठिन है । १.५ कि.मी. उतार और फिर ८५२ सीढ़ियाँ हैं । पर्वतके नीचे कृष्णा नदी है । यात्री स्नान करके वहाँसे चढ़ानेके लिये जल लाते हैं । वहाँ कृष्णा नदीमें दो नाले मिलते हैं । वह स्थान त्रिवेणी कहा जाता है । समीप पूर्वकी ओर एक गुफामें भैरवादि मूर्तियाँ हैं । यह गुफा कई कि.मी. गहरी कही जाती है । अब यात्री मोटर बससे ६.५ कि.मी. आकर कृष्णामें स्नान करते हैं ।

भ्रमराम्बादेवी– मल्लिकार्जुन मन्दिरसे पश्चिम ३ कि.मी.पर यह मन्दिर है । यह ५१ शक्ति-पीठोंमें है । यहाँ सतीकी ग्रीवा गिरी

थी । अम्वाजीकी मूर्ति भव्य है ।

शिखरेश्वर– मल्लिकार्जुनसे ९.५ कि.मी.पर शिखरेश्वर तथा हाटकेश्वर मन्दिर हैं । यह मार्ग कठिन है ।

विल्ववन– शिखरेश्वरसे ६.५ कि.मी.पर एकम्मा देवीका मन्दिर घोर वनमें है । यहाँ मार्ग-दर्शक एवं सुरक्षाके विना यात्रा सम्भव नहीं । हिंसक पशु इधर वनमें वहुत हैं ।

श्रीशैलका यह पूरा क्षेत्र घोर वनमें है । अतः मोटर मार्ग ही है । पैदल यहाँकी यात्रा केवल शिवरात्रिपर होती है ।

अहोबिल

मार्ग– गुंटुर - हुब्ली रेलवे मार्ग पर २७३ कि.मी. पर नन्दयाल स्टेशन है । नन्दयाल स्टेशनसे ३५ कि.मी. अल्लागड्डा तक मोटर-वस और फिर १९ कि.मी. पैदल या वैलगाड़ीका मार्ग है । अब यहाँ यातायातके अन्य साधान भी उपलब्ध हैं ।

यह रामानुज सम्प्रदायका एक आचार्य पीठ है । यहाँके आचार्य शठकोपाचार्य कहे जाते हैं । कहा जाता है कि यहीं प्रगट होकर नृसिंह भगवान्ने प्रह्लादकी रक्षा की । यह दैत्यराज हिरण्यकशिपुकी राजधानी थी ।

यहाँ शृंगवेलकुण्ड है । उसके समीप ही नृसिंह मन्दिर है । वस्तीके समीप पहाड़ी है । उसके मध्यमें तथा शिखरपर भी एक एक मन्दिर है । यहीं भवनाशिनी नदी है । यह नवनृसिंह क्षेत्र है । नृसिंह भगवान्के नौ विग्रह यहाँ हैं– १-ज्वालानृसिंह २-अहोबिलनृसिंह ३– मालोलनृसिंह (लक्ष्मीनृसिंह) ४– क्रोडाकार- नृसिंह ५– कारञ्जनृसिंह ६– भार्गवनृसिंह ७– योगानन्दनृसिंह ८– छत्रवटनृसिंह

९– पावननृसिंह ।

आरसाबिल्ली

मार्ग– हावड़ा विशाखापटनम् लाइनपर श्रीकाकुलम् रोड स्टेशन है । स्टेशनसे १६ कि.मी. पर यह ग्राम है । मोटर-बस जाती है ।

यहाँ सूर्य मन्दिर विशाल घेरेमें है । भारतमें सौर-सम्प्रदायका ठीक, सुपूजित दशामें एकमात्र यही सूर्य मन्दिर है ।

श्रीकूर्मम्

आरसाबिल्लीसे ११ कि.मी. आगे यह स्थान है ।

यह बहुत प्राचीन मन्दिर है । मन्दिरमें कूर्माकार शिला है । देशमें कच्छप भगवान्‌का यही प्राचीन मन्दिर है । समीप ही श्रीगोविन्दराज (भगवान् विष्णु) का मन्दिर है । इसमें श्रीगोविन्दराजका विग्रह है । भगवान्‌के समीप श्रीदेवी और भूदेवी दोनों ओर विराजमान हैं ।

सिंहाचलम्

मार्ग– वाल्टेयरसे ८ कि.मी. पहिले सिंहाचलम् स्टेशन है । स्टेशनसे मन्दिरकी पहाड़ी ४ कि.मी. है । पहाड़ीसे नीचे और ऊपर भी धर्मशालाएँ हैं । पहाड़ीपर जानेको सीढ़ियाँ बनी हैं ।

मन्दिरमें श्रीमूर्ति वाराह जैसी है; किन्तु उसे नृसिंह मूर्ति कहा जाता है । वह चन्दनसे ढँकी रहती है । केवल वैशाख शुक्ला तृतीयाको उसके दर्शन होते हैं । यहाँ पहाड़ीमें गंगाधार नामक झरना है ।

चन्दनाच्छादित मूर्तिकी ही सदा पूजा होती है ।

पीठापुरम्

मार्ग– गुंटूर-विशाखापटनम् लाइनपर विशाखापटनम्से १३८ कि.मी. पर पीठापुरम् स्टेशन है । यहाँ धर्मशाला है ।

भारतमें ५ पितृतीर्थ प्रधान माने जाते हैं– १-गया (गय-शिरःक्षेत्र) २-याजपुर (नाभि-गया) ३-पीठापुरम् (पाद-गया) ४-सिद्धपुर (मातृ-गया) ५-बद्रीनाथ (ब्रह्म-कपाली) ।

पाद गया क्षेत्र होनेसे यात्री यहाँ श्राद्ध-तर्पण करने आते हैं ।

नगरके एक ओर महापाद गया नामक विस्तृत सरोवर है । वहाँ एक घेरेमें पिण्डदान होता है । वहाँ कुक्कुटेश्वर शिव मन्दिर है । सरोवरके समीप मधुस्वामी (नारायण) मन्दिर है । उसके समीप ही माधव तीर्थ सरोवर है ।

द्राक्षारामम्

सामलकोटसे एक रेल लाइन काकीनाडा-पोर्ट जाती है । काकीनाडा पोर्टसे २४ कि.मी. बस-मार्गपर यह स्थान है । यहाँ धर्मशाला मन्दिरके पास ही है ।

यहाँ सप्तगोदावरी तीर्थ नामक विशाल सरोवर है । उसके समीप ही भीमेश्वर मन्दिर है । इसमें शिवलिंग इतना विशाल है कि निचले भागको 'मूल विराट्' कहते हैं । सीढ़ी द्वारा ऊपरकी मंजिलपर जाकर लिंग मूर्तिके शिरो भागका दर्शन होता है ।

कोटिपल्ली

द्राक्षाराममम्से ११ कि.मी. दूर समुद्र किनारे यह गोदावरी-सागर संगम तीर्थ है। मोटर-बसें द्राक्षाराममम्से चलती रहती हैं। यहाँ धर्मशाला है।

गोदावरी-सागर संगमका माहात्म्य पुराणोंमें है। यहाँ स्नानका ही महत्व है। संगमके समीप ही संगमेश्वर मन्दिर है।

राजमहेन्द्री

विजयवाड़ जंक्शनसे १५१ कि.मी. दूरीपर राजमहेन्द्री रेलवे स्टेशन है। राजमहेन्द्रीसे लेकर कोटिपल्ली तक पुराण-प्रसिद्ध सप्त गोदावरी क्षेत्र है।

राजमहेन्द्री रेलवे स्टेशन से ३ कि.मी. दूर गोदावरी स्टेशन पर उतरना ठीक रहता है। गोदावरी स्टेशनके पास गोदावरीकी ४ धाराएँ हो गईं हैं। एक धारा कुछ ऊपर पृथक हुई है और दो धवलेश्वरम्के समीप हैं। इनके नाम हैं– १-तुल्यभागा, २-आत्रेयी, ३-गौतमी, ४– वृद्ध गौतमी, ५-भरद्वाजा, ६-कौशिकी, और ७-वशिष्ठा।

गोदावरी स्टेशनसे १.५ कि.मी. गोदावरीपार कोटितीर्थ है। इसमें कोटिलिंग प्रतिष्ठित है। वहीं देवी मन्दिर है। यह ५१ शक्तिपीठोंमें है। यहाँ सतीका वाम कपोल गिरा था।

भद्राचलम्

राजमहेन्द्रीसे स्टीमर द्वारा जाना पड़ता है। यह इस प्रदेशका

प्रसिद्ध रामतीर्थ है । गोदावरी किनारे श्रीरामका प्राचीन मन्दिर है । कहते हैं कि सन्त रामदास स्वामीने इसे प्रतिष्ठित किया है । मन्दिरमें श्रीराम, लक्ष्मण, जानकीकी मूर्तियाँ हैं । घेरेमें ही हनुमानजी तथा गणेशके मन्दिर भी हैं ।

विजयवाड़ा

यह राजमहेन्द्रीसे १४९ कि.मी.पर प्रसिद्ध नगर है । यह नगर कृष्णा नदीके तटपर बसा है । स्टेशनके पास ही मारवाड़ी धर्मशाला है ।

तीर्थकी दृष्टिसे यहाँ कृष्णा नदीका स्नान मुख्य है । स्टेशनसे १.५ कि.मी. नदीमें स्नानका घाट है । घाटसे पर्वत शिखरपर तीन मन्दिर दीखते हैं । ये मन्दिर कलापूर्ण हैं । ऊपर जानेको सीढ़ियाँ बनी हैं । मुख्य मन्दिर कनक दुर्गाका है । वहाँसे ऊपर ही ऊपर शिवमन्दिरमें जानेका मार्ग है । पर्वतके एक अन्य शिखरपर सत्यनारायण-मन्दिर है ।

पना-नृसिंह

विजयवाड़ासे १४ कि.मी. दूर मंगलगिरि स्टेशन है । स्टेशनसे १ कि.मी.पर नगरमें लक्ष्मी-नृसिंह मन्दिर है । इसे भोगनृसिंह कहते हैं । यहींसे पर्वतपर जानेकी सीढ़ियाँ हैं । नीचेसे ही गुड़ या चीनी तथा नारियल आदि पूजा-सामग्री साथ ले जाना चाहिये । ४४८ सीढ़ी ऊपर पना-नृसिंह मन्दिर है ।

पना (पानक-शर्बत) मन्दिरमें भित्तिमें नृसिंहका धातु मुख है । शंखसे पुजारी भगवान्‌को शर्बत पिलाता है । आधा शर्बत प्रसाद छोड़ देता है ।

चेन्नई (मद्रास)

चेन्नई जाने के लिए रेल एवं वायुमार्ग है । १००-२०० कि.मी. के निकटके क्षेत्रों से यहाँ पहुँचने के लिए मोटर-बस की भी सुविधा है ।

इस महानगरमें अनेकों धर्मशालाएँ तथा होटल हैं । प्रायः प्रत्येक मुहल्लेमें एक-दो मन्दिर हैं । केवल मुख्य मन्दिरोंका यहाँ उल्लेखमात्र किया जा रहा है ।

बालाजी– साहूकार पेठके समीप यह मन्दिर है । निज मन्दिरमें श्रीवैंकटेश्वर भगवान् हैं । परिक्रमामें लक्ष्मी-मन्दिर है । बाहरकी ओर श्रीराम, लक्ष्मण, सीता, राधाकृष्ण तथा लक्ष्मीनारायण मन्दिर हैं ।

अम्बाजी– वालाजीसे थोड़ी दूरीपर चेन्नईकी अधिदेवी 'चेनाम्वा' का मन्दिर है ।

शिवमन्दिर– अम्वाजीसे थोड़ी दूरीपर साधारण दीखने वाला शिवमन्दिर इधर बहुत मान्यता प्राप्त है । यहाँ तीन समय बिना मूल्य अतिथिको भोजन मिलता है । कहते हैं कि महाराज विक्रमादित्यने यहाँ ग्रह-शान्ति कराई थी । इस मन्दिरके देव-विग्रह उन्हींके द्वारा प्रतिष्ठित हैं ।

सुब्रह्मण्यम्– यह स्वामी कार्तिकेयका मन्दिर फ्लावर मार्केटमें है ।

पार्थ-सारथि– ट्रिप्लीकेनमें यह मद्रासका सर्वश्रेष्ठ मन्दिर है । मन्दिर विशाल है । श्रीकृष्ण, बलराम, रुक्मिणी, सात्यकि, प्रद्युम्न तथा अनिरुद्धकी मूर्तियाँ हैं । पृथक् नृसिंह तथा वालाजीकी मूर्तियाँ हैं । समीप ही श्रीराम-मन्दिर है ।

कपालीश्वर– मेइलापुर मुहल्लेमें विशाल सरोवरके समीप है । दक्षिणके मन्दिरोंकीपरम्पराके अनुसार परिक्रमामें अनेक देवमूर्तियाँ हैं । यहाँ प्रधान मन्दिरमें कपालीश्वर शिव-लिंग प्रतिष्ठित है ।

तिरुवत्तियूर

चेन्नईसे १३ कि.मी. दूर छोटा कस्बा है । चेन्नईसे यहाँ मोटर-वस आती है । अन्य सवारियाँ भी मिलती हैं । विशाल घेरेके मध्य आदिपुरीश्वर शिव-मन्दिर है । द्वारके समीप त्रिपुरसुन्दरीका मन्दिर है ।

चेन्नई (मद्रास) नगर बसनेसे भी पूर्वका यह मन्दिर है । यहाँ एक स्थानपर मन्दिरकी दीवारसे कान लगानेपर एक प्रकारकी ध्वनि सुनाई पड़ती है । लोगोंका विश्वास है कि यहाँ अदृश्य रहकर भजन करने वाले किसी ऋपिकी यह जप-ध्वनि है ।

तिरुवल्लूर

अरकोणम् लाइनपर चेन्नईसे ४२ कि.मी.पर तिरुवल्लूर स्टेशन है । तमिलनाडुका सबसे विशाल मन्दिर श्रीवरदराज मन्दिर यहाँ है ।

इस क्षेत्रको पुण्यावर्त क्षेत्र कहते हैं । मन्दिरके समीप हृत्तापनाशन तीर्थ नामक सरोवर है । तीन परकोटोंके भीतर श्रीवीरराघव (विष्णु) मूर्ति है । शेषशायी इस मूर्तिका दाहिना हाथ महर्पि शालिहोत्रके मस्तकपर है । मन्दिरमें ही वसुमती (लक्ष्मी) का पृथक मन्दिर है । इन्हें कनकवल्ली भी कहते हैं ।

सरोवरके समीप विशाल शिव-मन्दिर भी है । इस मन्दिरमें

पृथक पार्वती-मन्दिर है ।

कथा— सतयुगमें शालिहोत्र नामक ब्राह्मणने एक वर्ष तक उपवास करके तप किया । वर्षान्तमें शालि-कणोंको चुनकर नैवेद्य बनाया । भगवान्‌को भोग लगाकर पारण करने जा रहे थे तो एक वृद्ध ब्राह्मण अतिथि आ गये । उन्हें वह प्रसाद शालिहोत्रने आदर पूर्वक अर्पित किया । भोजन करके अतिथिने उनकी कुटियामें विश्रामके लिये प्रवेश किया । जब शालिहोत्र अतिथिकी चरण सेवा करने कुटियामें गये तो देखा कि वहाँ तो साक्षात् शेषशायी नारायण विराजमान हैं । शालिहोत्रने उनसे वहीं रहनेका वरदान मांग लिया ।

वीक्षारण्य नरेश धर्मसेनके यहाँ उनकी पुत्री रूपमें लक्ष्मीजीने अवतार लिया । उनका नाम वसुमती पिताने रखा । युवा होनेपर राजकुमार वेशमें श्रीवीरराघव गये और राजासे प्रार्थना करके उनकी पुत्रीसे विवाह किया । वर-वधू विवाहके पश्चात् मन्दिरमें दर्शन करने आये तो अपने-अपने श्रीविग्रहोंमें लीन हो गये ।

वीरभद्र द्वारा दक्षको मरवा देनेसे शंकरजीको ब्रह्महत्या लगी । यहाँ स्नान करके वे उससे मुक्त हुए । तबसे वे यहाँ सरोवरके तटपर विराजमान हुए ।

भूतपुरी (श्रीपेरुम्भुदूर)

इसका वास्तविक नाम 'श्रीपेरुम्भुदूर' है । त्रिवेल्लोर स्टेशनसे १७.५ कि.मी. दक्षिण यह बस्ती है । मोटर-बसें चेन्नईसे जाती हैं ।

यह श्रीरामानुजाचार्यकी जन्मभूमि है । अनन्त सरोवरके समीप श्रीरामानुजाचार्यका विशाल मन्दिर है ।

दूसरा मन्दिर यहाँ केशव भगवान्‌का है । उसमें शेषशायी

मूर्ति है । उसके भीतर लक्ष्मी मन्दिर तथा अन्य भी छोटे मन्दिर हैं । उससे थोड़ी दूरीपर यहाँका सबसे प्राचीन भूतेश्वर शिव मन्दिर है ।

कथा– भगवान् शिवके नृत्यके समय उनके कुछ पार्षद भूतगण हँस पड़े । शंकरजीने रुष्ट होकर उन्हें अपने पार्षदत्वसे पृथक कर दिया । वे दुःखी होकर ब्रह्माजीकी शरणमें गये । ब्रह्माजीने उन्हें वेंकटगिरिसे दक्षिण सत्यव्रत तीर्थमें भगवान् केशवकी आराधना करनेको कहा । उनकी आराधनासे प्रसन्न होकर भगवान् केशवजीने शंकरजीसे अनुरोध करके उन्हें पार्षदत्व दिला दिया । भगवान्ने वहाँ अनन्त सरोवर प्रगट किया था । भूतोंने उसमें स्नान करके शंकरजीकी पूजा की । तबसे तीर्थका नाम भूतपुरी हो गया ।

पक्षितीर्थ (तिरुक्कुलुक्कुन्नम्)

उत्तरभारतमें जैसे गिरिराज गोवर्धन और कामदगिरि पर्वत ही भगवद्रूप माने जाते हैं, वैसे ही दक्षिण भारतमें तीन पर्वत त्रिदेवोंके स्वरूप माने जाते हैं । इनमें पक्षितीर्थका वेदगिरि ब्रह्माका स्वरूप, अरुणाचलम् शिवस्वरूप और वेंकटाचल (तिरुपति) विष्णुस्वरूप माना जाता है । वेदगिरिकी परिक्रमा लोग करते हैं । परिक्रमा मार्ग अच्छा है ।

पक्षितीर्थका स्थानीय नाम तिरुक्कुलुक्कुन्नम् है । रेलवे स्टेशन चेंगलपटसे यह १५ कि.मी. दूर है । चेन्नईसे चेंगलपट होते बसें जाती हैं ।

तीर्थ– बाजारमें शंखतीर्थ सरोवर है । कहते हैं कि १२ वर्षमें जब गुरु कन्याराशिपर आते हैं तो इस सरोवरमें शंख उत्पन्न होता

है । उस समय यहाँ बड़ा मेला लगता है ।

बाजारके दूसरे किनारे विशाल प्राचीन शिवमन्दिर है । उसमें रुद्रकोटि लिंग प्रतिष्ठित है । अभिरामनायकी नामक पार्वती-मन्दिर उसके भीतर ही है । समीपमें रुद्रकोटि तीर्थ सरोवर है ।

बाजारसे ही पक्षितीर्थ जानेके लिये वेदगिरिपर सीढ़ियाँ बनी हैं । ५०० सीढ़ी चढ़ना पड़ता है । शिखरपर शिव-मन्दिर है । मार्ग संकीर्ण है । परिक्रमा करते मन्दिरमें जाना पड़ता है । कदली स्तम्भके समान दक्षिणामूर्ति (आचार्य-विग्रह) लिंग यहाँ है ।

दर्शन करके परिक्रमा करते लौटनेपर संकीर्ण गलीमें छोटे द्वारसे जाकर कुछ नीचे गुफामें पार्वती मूर्ति है ।

मन्दिरसे कुछ नीचे थोड़ी सीढ़ियाँ उतरकर समतल खुली भूमि है । यहीं लोग पक्षीके दर्शन करते हैं । एक ऊँची शिला है और समीप गृद्धतीर्थ नामक कुण्ड है ।

पुजारी दस बजे दोपहरमें आता है । वह शिलापर कटोरी-तश्तरी पटककर बार-बार संकेत करता है । पक्षियोंके आनेका समय दस बजेसे दो बजेके मध्य है । इस बीच वे कभी भी आते हैं । दो काँक (चमरगीधा) जातिके पक्षी हैं । कभी वे बारी-बारीसे आते हैं और कभी साथ आ जाते हैं । पुजारीके हाथसे भोजन करते हैं और पानी पीकर उड़ जाते हैं ।

पुजारी इन पक्षियोंको ब्रह्माके मानसपुत्र वतलाता है जो शिवके शापसे इस योनिमें आये; किन्तु यह कथा शास्त्रीय नहीं है । यहाँ तीर्थ या पुण्य पक्षि-दर्शन नहीं है । पर्वत ही तीर्थ है । पुण्य-दर्शन मन्दिर है ।

कथा– भगवान् शिवकी आज्ञासे नन्दीश्वरने कैलासके तीन

शिखर पृथ्वीपर स्थापित किये । उनमें एक यहाँ वेदगिरि है । एक श्रीशैल और तीसरा कालहस्तीमें है । इन तीनोंपर शंकरजीका नित्य-निवास है ।

यहाँ बहुत अधिक शिव-भक्तोंने तप किया है । वेदगिरिके पूर्वमें इन्द्रतीर्थ, अग्निकोणमें रुद्रकोटितीर्थ, दक्षिणमें वशिष्ठतीर्थ, नैर्ऋत्यमें अगस्त्यतीर्थ, मार्कण्डेयतीर्थ, तथा विश्वामित्रतीर्थ पश्चिम-नन्दी एवं वरुणतीर्थ तथा वायव्यमें अकलिकातीर्थ हैं ।

महाबलीपुरम्

पक्षितीर्थसे १४.५ कि.मी. दूर समुद्र किनारे यह स्थान है । पक्षितीर्थसे मोटर बसें जाती हैं ।

यह ६.५ कि.मी. तक फैला गुफा-मन्दिरोंका क्षेत्र है । कभी यह सुन्दर तीर्थ स्थल था; किन्तु अब तो भग्न-मन्दिर एवं मूर्तियाँ ही इस क्षेत्रमें स्थान-स्थानपर हैं ।

तिरुपति-बालाजी

सर्वयज्ञतपोदानतीर्थस्नाने तु यत्फलम् ।
तत्फलं कोटिगुणितं श्रीनिवासस्य सेवया ॥

सब यज्ञ, तपस्या, दान तथा तीर्थस्नान करनेका जो फल है, उससे करोड़ों गुणा फल भगवान् श्रीनिवासकी सेवाका है ।

मार्ग– रेणिगुण्टा जंकशनसे एक लाइन जाती है । इसमें तिरुपति स्टेशन है । चेन्नई, चेंगलपट आदिसे मोटर-बसें भी यहाँ तक आती हैं ।

यहाँ स्टेशनके समीप, बालाजीके मार्गमें तथा ऊपर बालाजीके पास भी देवस्थानम् ट्रस्टकी धर्मशालाएँ हैं ।

पूरा पर्वत भगवत्स्वरूप माना जाता है । ऊपर जूता ले जाना उचित नहीं माना जाता । पर्वतपर, गोपुरके पास तथा बसके कार्यालयमें भी जूते छोड़ देनेकी व्यवस्था है ।

पैदलका मार्ग ११ कि.मी.का है । इसमें ८ कि.मी. कड़ी चढ़ाईका मार्ग है । दूसरा मार्ग मोटर बसोंका है । देवस्थानम्‌की बसें ऊपर तक जाती हैं ।

यात्राक्रम– पहिले कपिल तीर्थमें स्नान करके कपिलेश्वरका दर्शन करना चाहिये । फिर ऊपर जाकर भगवान् वेंकटेशके दर्शन करना चाहिये । वहाँसे नीचे आकर गोविन्दराज तथा तिरुञ्चानूरमें पद्मावतीदेवीके दर्शन करने चाहिये ।

कपिलतीर्थ– यह पैदल मार्गमें है । मोटर-बसकी यात्रामें नहीं मिलता । यह सरोवर है । सीढ़ियाँ बनी हैं । पूर्व भागमें कपिलेश्वर शिव-मन्दिर है ।

श्रीबालाजी जहाँ हैं, उस पर्वतका नाम वेंकटाचल है और ऊपरकी बस्तीको तिरुमलै कहते हैं । कहते हैं कि भगवान् शेष ही यहाँ पर्वत रूपमें हैं । पैदल मार्गमें तिरुपतिसे ६.५ कि.मी. दूर नृसिंह-मन्दिर तथा आगे श्रीरामानुजाचार्यका मन्दिर मिलता है । नीचे जो शहर है, उसका नाम तिरुपति है । मोटर-बसोंका मार्ग २४ कि.मी. का है । वे मन्दिरसे थोड़ी दूरपर खड़ी होती हैं ।

कल्याणकट्ट– तीर्थराज प्रयागकी भांति वेंकटाचलपर भी मुण्डन-संस्कार प्रधान मानां जाता है । सौभाग्यवती स्त्रियाँ भी एक लट कटवा देती हैं । इसके लिये कल्याणकट्ट नामक यह स्थान

है । कार्यालयमें निश्चित शुल्क देकर चिट्ठी लेनी पड़ती है । तब यहाँ नियुक्त नाई मुण्डन करते हैं ।

स्वामि पुष्करिणी— श्रीबालाजीके मन्दिरके समीप ही यह विस्तृत सरोवर है । इसमें स्नान करके ही मन्दिरमें दर्शन करने जाते हैं । कहा जाता है कि वाराहावतारके समय भगवान् वाराहके आदेशसे गरुड़जी वैकुण्ठसे यह पुष्करिणी उनके स्नानार्थ ले आये । इसका स्नान समस्त पाप-नाशक है । पुष्करिणीके मध्यके मण्डपमें दशावतारोंकी मूर्तियाँ खुदी हैं ।

वराह-मन्दिर— नियम यह है कि पहिले भगवान् वराहका दर्शन करके तब बालाजीका दर्शन किया जाय । स्वामि पुष्करिणीके पश्चिम पुष्करिणी घेरेमें ही यह मन्दिर है । इसके समीप ही एक श्रीराधाकृष्णका मन्दिर भी है ।

श्रीबालाजी (वेंकटेश्वर) — यह मन्दिर तीन परकोटोंके भीतर है । जगमोहनसे ४ द्वार पार करनेपर पाँचवेंमें श्रीबालाजी (वेंकटेश्वर स्वामी) की मूर्ति है । शंख, चक्र, गदा पद्मधारी यह ७ फुट ऊँची मूर्ति है । दोनों ओर श्रीदेवी तथा भूदेवी हैं ।

द्वितीय द्वारको पार करनेपर प्रदक्षिणामें योगनृसिंह श्रीवरदराज स्वामी (विष्णु), श्रीरामानुजाचार्य, सेनापति-निलय, गरुड़ तथा रसोईमें बकुलमलिकाके मन्दिर है ।

श्रीबालाजीका एक दर्शन प्रभातमें, एक मध्याह्नमें तथा एक रात्रिमें होता है । इन सामुहिक दर्शनोंके अतिरिक्त अन्य दर्शन हैं— जिनमें अर्चना होती है । उनका शुल्क निश्चित है ।

विशेष— श्रीबालाजीकी मूर्तिपर एक स्थानपर चोटका चिह्न है । वहाँ दवा लगाई जाती है । कहते हैं कि एक भक्त नीचेसे

प्रतिदिन दूध लाता था। वृद्ध होनेपर वह असमर्थ हो गया तो स्वयं बालाजी चुपचाप जाकर उसकी गायका दूध पी आते थे। गायको दूध न देते देख भक्तने छिपकर देखा और मानववेषमें बालाजी दूध पीने लगे तो डंडा मारा। उसी समय प्रगट होकर उसे भगवान्‌ने दर्शन दिये। मूर्तिमें वह डंडा लगनेका चिह्न अभी है। मन्दिरमें मध्याह्न दर्शनके पश्चात् प्रसाद बिकता है। दर्शनार्थीको भात-प्रसाद निःशुल्क मिलता है।

अन्यतीर्थ– आकाश गंगा बालाजीसे ३ कि.मी. पर एक झरनेका जल कुण्डमें एकत्र होता है। उसमें स्नान किया जाता है।

पापनाशन तीर्थ– आकाशगंगासे १.५ कि.मी. आगे। यहाँ एक प्रपात है। जंजीर पकड़कर स्नान करना पड़ता है।

वैकुण्ठ तीर्थ– बालाजीसे ३ कि.मी. पूर्व पर्वतमें वैकुण्ठ गुफासे जलधारा निकलती है।

पाण्डव तीर्थ– बालाजीसे ३ कि.मी. उत्तर-पश्चिम एक झरना है। यहाँ द्रोपदी सहित पाण्डवोंकी मूर्तियाँ हैं।

जाबलि तीर्थ– पाण्डव तीर्थसे १.५ कि.मी. आगे झरना के पास हनुमानजीकी मूर्ति है।

तिरुपति– तिरुमलैपर श्रीबालाजीके दर्शन करके नीचे उतर आनेपर तिरुपति बाजारमें श्रीगोविन्दराजका विशाल मन्दिर है। इसमें मुख्य मूर्ति शेषशायी नारायणकी है। इसकी प्रतिष्ठा श्रीरामानुजाचार्यने की है। यहाँ श्रीरामानुजाचार्यकी गद्दी है। यहाँके आचार्य श्रीवेंकटाचार्य कहलाते हैं।

मन्दिरमें भीतर १५ छोटे मन्दिर और हैं। इन्हींमें श्रीगोदा

अम्बाका मन्दिर है । तिरुपति बाजारमें दूसरा बड़ा मन्दिर श्रीकोदण्डराम मन्दिर है ।

तिरुच्चानूर– तिरुपतिसे ५ कि.मी.पर यह बस्ती है । इसे मंगापट्टनम् भी कहते हैं । पद्म-सरोवर नामका यहाँ पुण्य-तीर्थ है । उसके समीप ही पद्मावती (लक्ष्मीजी) मन्दिर है । उनको यहाँ अलवेलु मंगम्मा कहते हैं ।

कथा– आकाशराजने पुत्री रूपमें स्वयं लक्ष्मीजीके जन्म लेने पर पाला । पद्मसरोवरमें वे कमल पुष्पमें प्रगट हुईं । आकाशराजने उन्हें केवल पुत्री रूपमें पाला । बड़ी होनेपर उनका विवाह श्रीवेंकटेश स्वामी (बालाजी) के साथ हुआ ।

श्रीकालहस्ती

रेणीगुण्टासे २४ कि.मी.पर श्रीकालहस्ती स्टेशन है । तिरुपतिसे यहाँ मोटर-बसें भी चलती हैं ।

स्टेशनसे १.५ कि.मी.पर स्वर्ण रेखा नदी है । उसमें जल थोड़ा ही रहता है । नदीके तटपर ही श्रीकालहस्तीश्वर मन्दिर है । दक्षिणके पञ्चतत्त्व लिंगोंमें यह वायु तत्त्वलिंग माना जाता है ।

मन्दिर विशाल है । लिंगमूर्ति वायुतत्त्व मानी जाती है, अतः पुजारी भी उसका स्पर्श नहीं कर सकता । मूर्तिके पास स्वर्णपट्ट स्थापित है । उसीपर माला आदि चढ़ाई जाती है । इस मूर्तिमें मकड़ी, सर्पफण तथा हाथी दांतके चिह्न स्पष्ट दीखते हैं । सर्व प्रथम इन्हींने इस लिंगकी आराधना की है ।

मन्दिरके भीतर ही पार्वतीका पृथक मन्दिर है । परिक्रमामें गणेश, कई शिवलिंग, कार्तिकेय, चित्रगुप्त, यमराज, धर्मराज,

चण्डिकेश्वर, नटराज, सूर्य, बालसुब्रह्मण्य, लक्ष्मी-गणपति, बाल गणपति, वेंकटेश्वर, सीताराम, हनुमान, कनक दुर्गा, भूत-गणपति, कालभैरवादिकी मूर्तियाँ हैं ।

मन्दिरमें ही भगवान् पशुपति तथा धनुर्धर अर्जुनकी मूर्तियाँ हैं ।

मन्दिरके समीप पहाड़ी है । कहा जाता है कि उसीपर तप करके अर्जुनने शंकरजीसे पाशुपतास्त्र प्राप्त किया था । ऊपर जो शिवलिंग है, वह अर्जुन द्वारा स्थापित है । पीछे कणप्प भीलने उसकी आराधना की ।

पहाड़ीपर जानेके लिये सीढ़ियाँ नहीं हैं । मार्ग अटपटा है । पत्थरोंपर उतरते-चढ़ते जाना पड़ता है । लगभग आधा कि.मी. चढ़ाई है ।

कथा— भीलकुमार नील आखेट करते हुए अपने भाई फणीशके साथ पहाड़ीपर पहुंचा तो वहाँ शिवलिंग देखकर रुक गया । भाई लौट गया । रात्रि भर नील मूर्तिका पहरा देता रहा । दूसरे दिन प्रातः वनमें जाकर पशुमारकर उसने मांस भूना, मुखामें जल भरा और केशमें फूल खोंसे । एक हाथमें धनुष लिये लौटा । पैरसे मूर्तिपरसे चढ़े फूल हटाये, कुल्ला करके स्नान कराया, केशोंके फूल चढ़ाये और दोनेका मांस भोग लगाया । रात्रि भर पहरा देता रहा ।

प्रातः पुजारीको मन्दिरकी दशा देखकर बड़ा दुःख हुआ । नील वनमें चला गया था । उन्होंने मन्दिर धोकर पूजा की । उनके जानेपर नील लौटा, उसने अपने ढंगसे पूजा की । कई दिन यह क्रम चला । नित्य मन्दिर भ्रष्ट होते देख पुजारी बहुत दुःखी हुए तो उन्हें छिपकर देखनेका स्वप्न हुआ ।

इस दिन नील लौटा तो मूर्तिके नेत्रसे रक्त जा रहा था। वह पहिले तो जड़ी-बूटी ले आया। उनके रस लगाता रहा। रक्त न रुका तो वाणसे अपना नेत्र निकालकर वहाँ लगा दिया। रक्त रुक गया,पर दूसरे नेत्रसे रक्त जाने लगा। नीलने अपना दूसरा नेत्र निकालना चाहा तो शंकरजी प्रगट हो गये। कण्ण (नेत्र) देनेसे उसका नाम कण्णप्प पड़ा।

शक्तिपीठ– श्रीकालहस्ती बस्तीके दूसरे छोरपर एक छोटी पहाड़ीपर सामान्य-सा एक देवी-मन्दिर है। यह ५१ शक्तिपीठोंमें है। यहाँ सतीका दक्षिण स्कन्ध गिरा था।

अरुणाचलम् (तिरुवण्णमलै)

तत्र देवः स्वयं शम्भुः पर्वताकारतां गतः।
अरुणाचलसंज्ञावानस्ति लोकहितावहः॥

यहाँ भगवान् शंकर स्वयं अरुणाचल पर्वतके रूपमें लोककल्याणके लिये स्थित हैं।

दक्षिणके पञ्चतत्त्व लिंगोंमें अरुणाचलपर अग्नितत्त्व लिंग माना जाता है। कार्तिक-पूर्णिमासे कई दिन पूर्वसे पूर्णिमातक पर्वत शिखरपर एक बड़े पात्रमें ढेरका ढेर कपूर जलाया जाता है। उसकी ऊँची अग्निशिखाको अग्नि-तत्त्वलिंग मानते हैं।

इस पूरे पर्वतकी प्रदक्षिणाका पक्का मार्ग बना है।

मार्ग– विल्लुपुरम् जंकशनसे ६० कि.मी. पर तिरुवण्णमलै स्टेशन है। स्टेशनसे अरुणाचलम्का मन्दिर लगभग १ कि.मी. है काञ्ची या तिरुपतिसे मोटर बस भी जाती हैं। यहाँ कई धर्मशालाएँ

हैं ।

पर्वतके नीचे उससे लगा हुआ अरुणाचलेश्वरका विशाल मन्दिर है । कहा जाता है कि दक्षिणके मन्दिरोंमें इसका गोपुर सबसे चौड़ा है । दस मंजिल ऊँचे चार बाहरी गोपुर चारों ओर हैं ।

मन्दिरमें गोपुरके भीतर क्रमशः तीन आंगन हैं । पहिले आँगनमें सरोवर है । उसमें यात्री स्नान करते हैं । उसके पास सुब्रह्मण्य स्वामीका मन्दिर है । दूसरे आंगनमें भी सरोवर है; किन्तु उसका जल पीनेके काम आता है । उसमें स्नान नहीं करते ।

तीसरे आंगनमें निज मन्दिर है । इसके पाँच द्वारोंमें पाँच शिवलिंग प्रतिष्ठित हैं । परिक्रमामें पार्वती, गणेश, नवग्रह, दक्षिणामूर्ति, नटराज आदि हैं । मन्दिरके घेरेमें ही उत्तर पार्वतीजीका बड़ा मन्दिर है । कई घेरोंके भीतर पार्वतीजी हैं ।

महर्षि रमणका आश्रम– मन्दिरसे ३ कि.मी.पर अरुणाचलम्की परिक्रमामें यह आश्रम है । आश्रममें महर्षि द्वारा स्थापित देवीकी भव्य मूर्ति है । वहाँ अनेकों साधक रहते हैं । पर्वतपर कई स्थानोंपर जहाँ-जहाँ महर्षिने साधना की उनके चित्र स्थापित हैं । वे स्थान चढ़ाईपर हैं । आश्रममें महर्षिकी समाधि है ।

पांडिचेरी

विल्लुपुरम् जंकशनसे एक लाइन पांडिचेरी तक जाती है । समुद्रके किनारे यह स्वच्छ-विशाल नगर है ।

यहाँ समुद्र-स्नान निरापद नहीं है, क्योंकि समुद्री सर्प यहाँ पाये जाते हैं ।

नगरमें कोई धर्मशाला नहीं है । अरविन्दाश्रममें पूर्व प्राप्त अनुमतिके बिना नहीं ठहर सकते । नगरमें होटल हैं ।

श्रीअरविन्दाश्रम ही यहाँका आकर्षण है । समुद्र किनारे पृथक-पृथक असम्बद्ध कई भवनोंमें आश्रम है । इनमें-से ही एक भवनमें श्रीअरविन्दकी समाधि है । इसी भवनमें श्रीअरविन्दने २५ वर्ष साधनामय जीवन व्यतीत किया था ।

अरविन्दाश्रमके समीप ही अत्यन्त प्राचीन गणेशजीका छोटा मन्दिर है । नगरमें कालहस्तीश्वर और वेदपुरीश्वर दो शिव मन्दिर हैं । पाण्डिचेरीसे ८ कि.मी. पर विल्लियनोरमें श्रीत्रिकामेश्वर विशाल शिव-मन्दिर है । यह इस ओरका तीर्थ-स्थल है । भीतर ही पार्वती-मन्दिर भी है ।

काञ्ची (पुरी-५)

नेत्रद्वयं महेशस्य काशीकाञ्चीपुरीद्वयम् ।

काशी और काञ्ची ये दोनों पुरियाँ भगवान् शिवके नेत्रोंके समान हैं ।

मोक्षदायिनी सप्तपुरियोंमें अयोध्या, मथुरा और द्वारिका वैष्णवपुरी हैं । हरिद्वार, काशी और उज्जैन शैवपुरी हैं; किन्तु काञ्ची हरिहरात्मक पुरी है । इसके शिवकाञ्ची और विष्णुकाञ्ची दो भाग ही हैं ।

यहाँ ब्रह्माजीने कठिन तप करके श्रीदेवीका दर्शन प्राप्त किया था ।

मार्ग– चेंगलपट्टू जंकशनसे अरकोणम् लाइनपर ३५ कि.मी.

दूर काञ्चीपुरम् स्टेशन है। चेन्नई, चेंगलपट्टू, तिरुपति, तिरुवण्णमलै आदिसे यहाँ मोटर-बसें आती हैं।

शिवकाञ्ची और विष्णुकाञ्ची दोनोंमें ही यात्रीके ठहरनेके लिये धर्मशालाएँ हैं।

शिवकाञ्ची— स्टेशनसे लगभग १.५ कि.मी. दूर नगरके इस भागमें सर्वतीर्थ सरोवर है। यही स्नानका मुख्य स्थान है। सरोवरके मध्य एक छोटा मन्दिर है। सरोवरपर लोग मुण्डन तथा श्राद्ध भी करते हैं। सरोवरके चारों ओर कई मन्दिर हैं। उनमें काशी-विश्वनाथ मन्दिर मुख्य है।

एकाम्रेश्वर— यही शिवकाञ्चीका मुख्य मन्दिर है। मन्दिर विशाल है। द्वारके दोनों ओर सुब्रह्मण्य (कार्तिक) तथा गणेशके मन्दिर हैं। दूसरी कक्षामें शिवगंगा सरोवर है। तीन द्वारोंके भीतर एकाम्रेश्वर लिंग है। लिंगमूर्तिके पीछे उमा माहेश्वरकी मूर्ति है। यहाँ जल नहीं चढ़ता। चमेलीका तेल चढ़ता है। पञ्चतत्त्व लिंगोंमें यह भूतत्त्व लिंग है।

पहिली परिक्रमामें गणेश, १०८ लिंग, नन्दीश्वर, चण्डिकेश्वर लिंग तथा चन्द्रकण्ठ वालाजी हैं। दूसरी परिक्रमामें कालिका, कोटिलिंग तथा शिव-पार्वतीकी स्वर्ण प्रतिमा वाला कैलास मन्दिर है। एक पृथक मन्दिरमें पार्वतीजी हैं। दूसरे मन्दिरमें स्वर्णकामाक्षी हैं।

एकाम्रेश्वरके आँगनमें आमका प्राचीन वृक्ष है। इसकी यात्री परिक्रमा करते हैं। इसके नीचे तपोनिरत कामाक्षी हैं।

कथा— पार्वतीने एक बार घोर अन्धकार उत्पन्न किया। इससे रुष्ट होकर शंकरजीने उन्हें त्याग दिया। यहाँ वालुकलिंग एकाम्रेश्वर बनाकर तप करके उन्होंने फिर शंकरजीको प्रसन्न किया।

कामाक्षी– एकाम्रेश्वरसे दो फर्लांगपर यह दक्षिण भारतका सर्वप्रधान शक्तिपीठ है । यह ५१ शक्तिपीठोंमें है । यहाँ सतीका कंकाल (अस्थि-पंजर) गिरा था । इस मन्दिरको कामकोटि कहते हैं ।

यह विशाल मन्दिर है । भीतर ही अन्नपूर्णा तथा शारदा मन्दिर है । आद्यशंकराचार्यकी मूर्ति है । कामाक्षीके निजद्वारपर कामकोटि यन्त्र है ।

वामन मन्दिर– कामाक्षी मन्दिरसे थोड़ी दूरीपर यह है । इसमें त्रिविक्रम भगवान्‌की विशाल मूर्ति है । यह दस हाथ ऊँची मूर्ति है । एक चरण ऊपर गया है । चरणके नीचे बलिका मस्तक है । लम्बे बाँसमें मशाल लगाकर पुजारी दर्शन कराता है ।

सुब्रह्मण्य– वामन मन्दिरसे थोड़ी दूर यह स्वामी कार्तिकका मन्दिर इधर बहुत मान्यता प्राप्त है ।

विष्णुकाञ्ची– शिवकाञ्चीसे लगभग दो कि.मी. दूर है । यहाँ १८ विष्णु-मन्दिर कहे जाते हैं; किन्तु मुख्य मन्दिर श्रीवरदराज मन्दिर ही है ।

श्रीवरदराज मन्दिर विशाल है । भीतर कोटितीर्थ सरोवर है । यह पक्का है । इसके पश्चिम तटपर वराह मन्दिर तथा सुदर्शन मन्दिर है, जिसमें योग नृसिंहकी मूर्ति सुदर्शनके पीछे है ।

श्रीरामानुजाचार्यके आठ पीठोंमेंसे एक पीठ यहाँ है । यहाँके आचार्य प्रतिवादिभयंकर कहे जाते हैं ।

प्रथम घेरेमें गरुड़स्तम्भ तथा श्रीरामानुजाचार्यका मन्दिर है । दूसरे घेरेमें लक्ष्मीजीका मन्दिर है । तीसरे घेरेमें आँगनके मध्य श्रीदेवराज (भगवान् विष्णु) का मन्दिर है । चबूतरेमें सामने छोटे

मन्दिरमें योग नृसिंह मूर्ति है । इसकी परिक्रमा करके पीछेसे २४ सीढ़ी चढ़कर जगमोहन है । वहाँ तीन द्वारोंके भीतर श्रीवरदराज भगवान् विराजमान हैं । उनके कण्ठमें शालिग्रामोंकी माला है ।

नीचे आनेपर आण्डाल, धन्वन्तरि, गणेशादिकी मूर्तियाँ मिलती हैं ।

विष्णुकाञ्चीमें ही श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है ।

देवाधिराज– यह शेषशायी मूर्ति जलमें डूबी रहती है । २० वर्षमें एकबार जलसे बाहर लाई जाती है ।

शंकराचार्य पीठ– विष्णुकाञ्चीमें ही शंकराचार्यका कामकोटि पीठ है ।

चिदम्बरम्

चिदम्बरम् बिल्लुपुरम् से ८५ कि.मी. दूर स्टेशन है । सुप्रसिद्ध नटराज शिव मूर्ति यहीं है । दक्षिणके पञ्चतत्त्व लिंगोंमें-से यहाँ आकाश तत्त्वलिंग है । मन्दिर स्टेशनसे १.५ कि.मी. पर है । यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं ।

नटराज शिव-मन्दिर सौ बीघे घेरेमें है । तीसरे घेरेमें दक्षिण द्वारकी ओर गणेश मन्दिर है । उत्तर नन्दीकी विशाल मूर्ति एक मन्दिरमें है ।

नटराजका मन्दिर पाँचवें घेरेमें है । यह आँगनके मध्यमें है । इसमें नृत्य करते शंकरजीकी बड़ी सुन्दर मूर्ति है ।

नटराजकी दाहिनी ओर काली भित्तिमें एक यन्त्र खुदा है . वहाँ स्वर्ण मालाएँ लटकती रहती हैं । यह नीला शून्याकार ही

आकाशतत्त्व लिंग है। यहाँ पर्दा पड़ा रहता है। दिनमें तथा रात्रिमें अभिषेकके समय दर्शन होते हैं। अभिषेकके समय ही नीलमके तथा स्फटिकके लिंगोंका दर्शन होता है।

नटराज-मन्दिरके सामने जहाँसे दर्शन करते हैं, वहीं बाईं ओर श्रीगोविन्दराज-मन्दिरमें शेषशायी नारायण मूर्ति है। उसके बगलमें श्रीलक्ष्मीजीका पृथक मन्दिर है। यहाँ लक्ष्मीजीका नाम पुण्डरीकवल्ली है।

नटराज मन्दिरके चौथे घेरेमें पार्वतीको गोदमें लिये शिवकी मूर्ति है। चाँदीकी हनुमान मूर्ति है। नवग्रह तथा ६४ योगिनियोंके मन्दिर हैं। इसी घेरेमें पार्वतीजीका बड़ा मन्दिर है। उसके दक्षिण नाट्येश्वरी मूर्ति है।

नटराज-मन्दिरके बाहर चौथे घेरेमें उत्तर एक सभा मंडपयुक्त मन्दिर है। इसमें कई ड्योढ़ी भीतर शिवलिंग है। चिदम्बरम्का मूल विग्रह यही है। इसकी अर्चा महर्षि पतञ्जलि तथा महर्षि व्याघ्रपादने की। उनकी आराधनासे प्रसन्न होकर प्रगट हुए और शंकरजीने ताण्डव नृत्य किया। उस नृत्यके स्मारक रूपमें नटराजकी स्थापना हुई। इस मन्दिरके एक ओर पार्वतीजीकी मूर्ति है।

नटराज मन्दिरके दो घेरोंके बाहर बहुत बड़ा शिवगंगा सरोवर पूर्वकी ओर है। इसके पश्चिम शिव काम-सुन्दरी (पार्वती) का विशाल मन्दिर है। इसमें तीन ड्योढ़ी भीतर पार्वतीजी विराजमान हैं।

पार्वती मन्दिरके समीप ही सुब्रह्मण्य मन्दिर है। मन्दिरमें स्वामी कार्तिककी भव्यमूर्ति है।

चिदम्बरम् स्टेशनके पूर्व विश्वविद्यालयके समीप तिरुवेट्कलम् शिव-मन्दिर है। इसमें पार्वती मन्दिर पृथक है।

आसपासके तीर्थ

१-**वेदनारायण मन्दिर**—चिदम्बरम्से २६ कि.मी.पर वरेमादेवी स्थानमें वेदनारायण मन्दिर है। इसमें जो पृथक लक्ष्मी मन्दिर है उसमें लक्ष्मीजीको वरेमा देवी कहते हैं।

२-**वृद्धाचलम्**— वरेमादेवीसे २१ कि.मी. पश्चिम है। यह स्टेशन है। यहाँ शिव-मन्दिर हैं। पृथक पार्वती मन्दिर तो उसमें है ही— सात कालीकी और २१ ऋषियोंकी मूर्तियाँ हैं।

३-**श्रीमुष्णम्**— कहा जाता है कि वाराहावतार यहीं हुआ। वाराह भगवान्का मन्दिर है। यहाँ वालकृष्ण मन्दिर अम्वुजवल्ली (लक्ष्मी) तथा कात्यायनी मन्दिर हैं।

४-**काट्टुमन्नारगुडी**— चिदम्वरम्से २६ कि.मी. दक्षिण है। यहाँ वीरनारायण मन्दिर है। मतंग ऋपिने यहाँ तप किया था।

५-**शियाली**— चिदम्वरम्से २६ कि.मी.पर यह स्टेशन है। स्टेशनके पास 'ताडारम्' विष्णु मन्दिर है। वहाँसे १.५ कि.मी.पर ब्रह्मपुरीश्वर शिव-मन्दिर है। इसमें पार्वतीका सुन्दर मन्दिर है। यह तिरुज्ञान सम्बन्ध शैवाचार्यकी जन्मभूमि है, जो कार्तिकेयके अवतार माने जाते हैं। माता पार्वतीने उन्हें स्तनपान कराया। उनका जन्मका घर शहरमें सुरक्षित है।

६-**वैदीश्वरन कोइल**— चिदम्बरम्से २६ कि.मी.पर स्टेशन है। स्टेशनसे १.५ कि.मी. दूर बहुत बड़ा वैद्येश्वर शिव-मन्दिर है। पार्वतीजीका मन्दिर भीतर ही है। अलग सुब्रह्मण्य मन्दिर है।

७-**तिरुवेन्काडु**— यह श्वेतारण्य है। चिदम्बरम्से २४ कि.मी.। यहाँ मन्दिरमें भगवान् शिवकी अघोर (रुद्र) मूर्ति है।

कथा– जलन्धरके पुत्र मारुत्वासुरके उपद्रवसे पीड़ित देवताओंकी प्रार्थनासे शंकरजीने नन्दीको भेजा। नन्दीने उसे समुद्रमें फेंक दिया। उसने शंकरजीकी ही आराधना करके उनसे त्रिशूल प्राप्त कर नन्दीकी पूंछ तथा सींग काट दिये, तब शिवने अघोर रूप ले उसे मारा।

मायूरम्

स्टेशनका नाम मायावरम् है। तमिलमें इसका नाम तिरुमयिलाड्डुतुरै है। यह नगर कावेरी तटपर है। यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं।

यहाँका मुख्य मन्दिर मयूरेश्वर है। मन्दिरमें ही अभयाम्बा (पार्वती) का मन्दिर है। मन्दिरके घेरेमें बड़ा सरोवर है।

कथा– दक्षयज्ञमें रुद्रगण जब यज्ञध्वंस करने लगे तो एक मयूर सतीकी शरणमें आगया। देह-त्यागके समय उस मयूरका स्मरण रहनेके कारण सती मयूरी होकर उत्पन्न हुईं। उन्होंने शंकरजीकी आराधना की। भगवान् शिवने प्रकट होकर दर्शन दिये। सतीने मयूरी देह त्यागकर हिमालयके यहाँ अवतार धारण किया। मयूरको अभय देनेके कारण देवीका नाम अभयम्बिका है।

यहाँके अन्य तीर्थ

वृषभ तीर्थ– कावेरी तटपर। यहाँ नन्दीश्वरने तप किया था।

ब्रह्मतीर्थ– मयूरेश्वर मन्दिरमें। मन्दिरमें ही अगस्त्य तीर्थ (चतुष्कोण कूप)।

दक्षिणामूर्ति मन्दिर– कावेरीके उत्तर । यहाँ आचार्य रूपमें भगवान् शिवने नन्दीश्वरको उपदेश किया था ।

सप्तमातृका मन्दिर– मयूरेश्वरसे उत्तर सड़कपर ।

ऐय्यारप्पर– यह शिव-मन्दिर मयूरेश्वर मन्दिरके पश्चिम है ।

इनके अतिरिक्त मारियम्मन (शीतला देवी) ऐमनार (शास्ता) के मन्दिर हैं । स्टेशन मार्गमें शारंगपाणि मन्दिर तथा मयूरेश्वरसे १.५ कि.मी. पर काशी विश्वनाथ मन्दिर है । कावेरी पार श्रीरंगनाथजीका मन्दिर है ।

आसपासके तीर्थ

१-**वाजूर**– मायूरमसे ८ कि.मी. । यहाँ शंकरजी विराटेश्वर रूपमें हैं । कथा है कि ऋषियोंने एक मायागज शंकरजीकीपरीक्षाके लिये भेजा । शिवने उसको मारकर उसका चर्म धारण कर लिया । पार्वतीजी स्कन्दको गोदमें लिये यहाँ समीप खड़ी हैं । हाथी भी नन्दीके समीप है ।

२-**तिरुक्कडयूर**– मायूरमसे १९ कि.मी. दक्षिण यह शैवमतका गढ़ है । यहाँ अमृतकेश्वर शिव-मन्दिर है । यहीं मार्कण्डेयकी यमराजसे रक्षाके लिये शंकरजी लिंग-मूर्तिसे प्रगट हुए थे ।

तिरुच्चेन्गाट्टंगुडि– मायूरम्से २४ कि.मी. । यहाँ गणेशजी मानव मुख हैं । गजमुखासुरको इसी रूपसे उन्होंने यहाँ वध किया । सन्त शिरुतोण्डनायनारकी यह निवास भूमि है ।

तिरुवारूर

मायावरम– कारैक्कुडी लाइनपर तिरुवारूर स्टेशन है । स्टेशनसे मन्दिर १.५ कि.मी. है । मन्दिरके पास धर्मशाला है ।

यहाँ त्यागराज-शिव मन्दिर है । मन्दिरमें पृथक नीलोत्पलाम्बिका-पार्वती मन्दिर है । सन्त त्यागराज, मुत्थुस्वामी दीक्षितर तथा श्यामा शास्त्रीका जन्म यहीं हुआ था ।

इस स्थलके उत्तर दक्षिण दो नदियाँ बहती हैं । यह त्यागराज मन्दिर दक्षिण भारतमें वहुत प्रसिद्ध है । इस मन्दिरका गोपुर दक्षिणके मन्दिरोंमें सवसे चौड़ा है ।

गोपुरके भीतर गणेश तथा कार्तिकेयकी मूर्तियाँ हैं । यहाँकी नन्दी मूर्ति पशुरोगोंकी निवारक मानी जाती है । आगे 'कमलाम्बाल' नामक चतुर्भुज तपस्विनी पार्वती मूर्ति है । इसेपराशक्ति पीठ मानते हैं । इनकी परिक्रमामें अक्षर पीठ है ।

इससे आगे गणेश, स्कन्द, चण्डिकेश, सरस्वती, चण्डभैरवादि मूर्तियाँ हैं । समीप ही शंख-सरोवर है ।

अचलेश्वर शिव मन्दिर भीतर ही है । घेरेमें ही हाटकेश्वर, आनन्देश्वर, सिद्धेश्वरादि कई मन्दिर हैं ।

मुख्यमूर्ति त्यागराज है । कहते हैं कि यह मूर्ति महाराज मुचुकुन्द स्वर्गसे ले आये थे । यह मूर्ति भगवान् शिवकी नृत्य करती मूर्ति है ।

त्यागराजके रथके पास एक शिव मन्दिर है । समीप ही दण्डपाणि, तिरुनीलकण्ठ आदि कई मन्दिर हैं ।

मन्दिरके समीप कमलालय-सरोवर मुख्यतीर्थ है । इसमें ६५

घाट हैं । उसमें मुख्य देवीतीर्थ घाट है•।

आसपासके तीर्थ

१-**नागपत्तनम्**– तिरुवारूरजंसे २४ कि.मी. पर नागप्पट्टिणम् स्टेशन और बन्दरगाह है । स्टेशनसे धर्मशाला दो कि.मी. है । नगरमें एक विशाल शिव-मन्दिर तथा दूसरा विष्णु (सुन्दरराज) मन्दिर है । समुद्र तटपर 'पेरुमल स्वामी' ब्रह्माजीका मन्दिर तथा नीलायताक्षी देवीका मन्दिर है ।

दक्षिण भारतमें त्यागराजके सात पीठस्थल हैं । उनमें भगवान् शिवकी नृत्य करती मूर्तियाँ हैं । नृत्योंके विभिन्न नाम हैं । १-तिरुवारूर (मुख्यपीठ) में अजपाटनम् नृत्य । २-तिरुनल्लारुमें उन्मत्तनटनम् ३-तिरुनागैक्कारोणम्में पारावारतरंगनटनम् ४-तिरुक्कारायिल्में कुक्कुटनटनम् ५-तिरुक्कुवलैमें भृंगनटनम् ६-तिरुवायमूरमें कमलनटनम् ७-वेदारण्यम्में हंसपादनटनम् ।

मन्नारगुडि

तंजौर या तिरुवारूरसे नीडामंगलम् जंकशन जाना चाहिये । वहाँसे एक लाइन मन्नारगुडि जाती है । तंजौरसे मोटर-बसें भी आती हैं । यहाँ पाम्बणि नदी है । कई धर्मशालाएँ हैं ।

यह चम्पकारण्य क्षेत्र दक्षिण-द्वारिका कहा जाता है । यहाँका मुख्य मन्दिर श्रीराजगोपाल स्वामी (विष्णु) का है । इसमें सात प्राकार तथा १६ गोपुर हैं । मन्दिरमें ही चम्पक-लक्ष्मीका पृथक मन्दिर है । पश्चिम भागमें श्रीराम-लक्ष्मण, सीताकी मूर्तियाँ हैं ।

यहाँ ६ मुख्य तीर्थ हैं– १-**गोप्रलयतीर्थ**– मन्दिरसे दक्षिण १·

कि.मी. पर सरोवर है । यहाँ गोभिल ऋषिने तप किया था । २-**रुक्मिणी तीर्थ**– मन्दिरसे दक्षिण दो फर्लांगपर । ३-**कृष्ण-तीर्थ**– मन्दिरके अग्निकोणमें । इसके पास शंख तीर्थ, चक्रतीर्थ तथा दुर्वासा तीर्थ है । ४-**हरिद्रानदी**– यह विस्तृत सरोवर है । कहते हैं कि यहाँ श्रीकृष्णने हल्दी लेकर क्रीड़ा की थी । इसके मध्यमें श्रीकृष्ण मन्दिर है । ५-**क्षीर-समुद्र**– स्टेशनसे १ कि.मी. पर नदी किनारे सरोवर है । ६-**गोपीनाथ तीर्थ**– कन्याके सूर्य होनेपर बुधवारको यहाँ स्नानका माहात्म्य है ।

कुम्भकोणम्

कुम्भस्य घोणतो यस्मिन् सुधापूरं विनिसृतम् ।
तस्मात्तु तत्पदं लोके कुम्भघोणं वदन्ति हि ॥

क्षीर सागरसे निकला अमृत कुम्भ यहाँ रखा गया । तो उसके घोण (टोंटी) से यहाँ अमृत गिरा । अतएव इस स्थानका नाम 'कुम्भघोणम्' पड़ गया ।

यह मुख्य लाइनपर मयिलादुतुरै जं० से ३२ कि.मी. पर कुम्भकोणम् स्टेशन है । प्रति बारहवें वर्ष यहाँ दक्षिण-भारतका कुम्भमेला लगता है । नगर कावेरीके तटपर है; किन्तु कावेरीमें जल कम ही रहता है ।

महामघम् सरोवर– कावेरीमें जल न होनेपर इसमें यात्री स्नान करते हैं । स्टेशनसे २.५ कि.मी.पर नगरके उत्तर कावेरी है । वहाँ पक्के घाट हैं । तटपर महाकालेश्वर तथा अनेक मन्दिर हैं ।

कामकोटि मठसे दक्षिणके मार्गपर दाहिने इन्द्रका और बायें

महामायाका मन्दिर है । महामाया मूर्ति स्वयम्भू मानी जाती है ।

महामघम् सरोवरमें कुम्भके समय स्नान होता है । अन्य समय जल प्रायः स्वच्छ नहीं रहता । सरोवरके घाटोंपर १६ मन्दिर हैं । इनमें काशी-विश्वनाथ मन्दिर मुख्य है । नगरके मुख्य मन्दिर निम्न हैं–

नागेश्वर– कुम्भेश्वर मन्दिरके मार्गमें यह मन्दिर है । शिवलिंग मुख्य पीठपर है । पार्वती मन्दिर भीतर है । यहाँ एक सूर्य-मन्दिर भी है, कहते हैं कि यहाँ सूर्यने शिवकी आराधना की थी । इस मन्दिरमें उच्छिष्ट गणपतिकी भी मूर्ति है ।

कुम्भेश्वर– तीर्थका यह मुख्य मन्दिर नागेश्वरसे थोड़ी दूरीपर है । यहाँका शिवलिंग कुम्भाकार है । मंगलाम्विका (पार्वती) मन्दिर भीतर ही है । गणेश, कार्तिकादिकी मूर्तियाँ भी हैं ।

रामस्वामी– कुम्भेश्वरसे थोड़ी दूरीपर है । इसमें श्रीराम, जानकी, लक्ष्मणकी मूर्तियाँ हैं । दीवारोंपर सुन्दर रंगीन चित्र श्रीराम-चरितके लगे हैं । खम्भोंमें श्रीलीलाव्यञ्जक मूर्तियाँ हैं । मन्दिर अपनी कलाके लिये प्रसिद्ध है ।

शांर्गपाणि– कुम्भेश्वर मन्दिरके लगभग पीछे ही है । इसमें शेषशायी नारायणकी मूर्ति है । परिक्रमामें लक्ष्मीजीका मन्दिर है । मुख्य मन्दिर रथके आकारका है, जिसमें घोड़े-हाथी जुते हैं ।

कथा– भृगुने जब नारायणके वक्षपर पद-प्रहार किया तो नारायणने ऋषिको दण्ड नहीं दिया । इससे रूठकर लक्ष्मीजी यहाँ आ गई और हेम ऋषिके यहाँ कन्याके रूपमें प्रगट हुईं । भगवान् नारायणने आकर उस ऋषि कन्यासे विंवाह किया ।

सोमेश्वर— शारंगपाणि मन्दिरके समीप ही यह छोटा मन्दिर है। भिन्न-भिन्न दो मन्दिरमें शिवलिंग तथा पार्वतीजीकी प्रतिष्ठा है।

चक्रपाणि— यह मन्दिर बाजारके दूसरे सिरेपर है। भगवान् विष्णुकी इसमें खड़ी मूर्ति है। समीप ही चबूतरेपर लक्ष्मीजीका मन्दिर है।

वेद नारायण— यह मन्दिर नगरके समीप ही है। कहा जाता है कि ब्रह्माने यहाँ नारायणका पूजन किया था।

कामकोटिपीठ— श्रीशंकराचार्यका यह पीठ काञ्चीसे यहाँ आ गया था और अब यहीं यह गद्दी है।

कथा— पुराण-प्रसिद्ध कामकोष्णी पुरी कुम्भकोणम् ही है। ब्रह्माजीके यज्ञमें भगवान् यहाँ अमृत घट लेकर प्रगट हुए थे। प्रलयके समय ब्रह्मा एक घटसे सृष्टिके मूल उपादान यहाँ रख देते हैं।

आसपासके तीर्थ

१-**तिरुविडैमरुदूर**— (मध्यार्जु क्षेत्र) यह स्टेशन है कुम्भकोणम्से ९ कि.मी. पूर्व। स्टेशनके पास ही कावेरी तटपर महालिंगेश्वर मन्दिर है। दक्षिण भारतमें यह चिदम्बरम्के समान पवित्र माना जाता है। १०८ शैव दिव्य देशोंमेंसे है। यह क्षेत्र मानस रोगोंसे मुक्ति देता है। चोल नरेशकी यहाँ ब्रह्महत्यासे मुक्ति हुई।

२- **तिरुनागेश्वरम्**— यह स्टेशन कुम्भकोणम्से ५ कि.मी. पूर्व है। यहाँ उप्पली अप्पन (महाविष्णु) का विशाल मन्दिर है। मन्दिरमें ही अलमेलुमंगा (लक्ष्मीजी) का मन्दिर है। यह वैष्णव दिव्य देश तिरुपतिके समान पवित्र माना जाता है।

३– **दारासुरम्**– कुम्भकोणम्से दक्षिण पश्चिम ३ कि.मी. पर यहाँका ऐरावतेश्वर मन्दिर इधरके प्रसिद्ध १८ मन्दिरोंमें है । यहाँ यम-तीर्थ सरोवर है । यह सर्वपापहारी है । मन्दिरमें यमराजकी भी मूर्ति है । यह मन्दिर यमराज द्वारा स्थापित है ।

४– **तिरुवलंचुलि**– दारासुरम्से ५ कि.मी.पर कावेरी तटपर है । यहाँ भगवान् कपर्दीश्वर तथा बृहन्नायाजी (पार्वती) मन्दिरमें हैं । कहा जाता है कि देवता अमृत-मन्थनके समय गणपति-पूजन भूल गये थे । अमृतके स्थानपर विष निकला, तब भूल मालूम होनेपर उन्होंने यहाँ श्वेत गणपतिकी स्थापना की । वे नन्दीश्वरके सामने हैं । यहाँ प्रतिवर्ष विनायक चतुर्थीको मेला लगता है ।

५– **स्वामीमलै**– कुम्भकोणम्से ७ कि.मी. पर यह स्टेशन है । दक्षिणके मुख्य सुब्रह्मण्य तीर्थोंमें यह है । विशाल मन्दिरमें नीचे सुन्दरेश्वर लिंग तथा मीनाक्षी (पार्वती) हैं । सीढ़ियोंसे ऊपर जानेपर स्वामी कार्तिकका मन्दिर है ।

६– **उप्पिलि अप्पन् कोइल**– कुम्भकोणम्से दक्षिण-पूर्वमें ६.५ कि.मी. पर यह स्थान है । यहाँ श्रीनिवास-मन्दिरमें भगवान्के वक्षस्थलमें लक्ष्मीजीका स्पष्ट दर्शन होता है । कहते हैं कि यहाँ लक्ष्मीजी मार्कण्डेय ऋषिकी पुत्री रूपमें प्रगट हुईं । नारायणने आकर उनसे विवाह किया ।

७– **तिरुनागेश्वरम्**– ऊपरके श्रीनिवास मन्दिरसे १ कि.मी. पर यह शिवमन्दिर है । इसमें नागेश्वर-लिंग तथा बृहदीश्वरी (पार्वती) हैं । यह जम्बकारण्य क्षेत्र है । पेरिया-पुराणके कर्ता श्रीसेक्किलरकी यह निवास भूमि है ।

८– **नल्लूर**– पापनाशम् रेलवे स्टेशनसे यह ५ कि.मी. पूर्व

है । यहाँ कल्याण-सुन्दरेश मन्दिर है । शिव-विवाहके समय यहींसे महर्षि अगस्त्यने उस छटाके दर्शन किये । उसका यह स्मारक तीर्थ है ।

तंजौर (तंजावूर)

तंजावूर प्रसिद्ध शहर तथा स्टेशन है, जो कुम्भकोणम्से ३८ कि.मी. दूर है । स्टेशनके समीप चोल्ट्रीमें किरायेपर ठहरनेको कमरे मिलते हैं ।

बृहदीश्वर मन्दिर ही यहाँ मुख्य है । स्टेशनसे यह मन्दिर १ कि.मी. पर है । राजराजेश्वर चोल नरेशको स्वप्नमें आदेश होनेपर कावेरीमें-से यह मूर्ति लायी गयी । स्वप्नादेशके अनुसार ही नन्दी मूर्ति ६४० कि.मी. दूरसे लाई गई है ।

यहाँके नन्दीश्वर १६ फुट लम्वे, १३ फुट ऊँचे, ७ फीट मोटे एक ही शिलाके वने हैं । यह मूर्ति ७०० मन भारी है और इसी रूपमें ६४० कि.मी. से लाई गई है ।

बृहदीश्वर मन्दिरका शिखर २०० फुट ऊँचा है । शिखरपर स्वर्णकलश जिस पत्थरपर है, २२०० मनका एक पत्थर है ।

मन्दिरमें विशाल बृहदीश्वर लिंग है । दक्षिणमें गणेश तथा पश्चिमोत्तरमें सुब्रह्मण्यम्के मन्दिर हैं ।

पूर्वोत्तर चण्डी मन्दिर है । नन्दी मण्डपके उत्तर पार्वतीजीका पृथक मन्दिर है ।

तंजौरमें दूसरा तीर्थ अमृत वापिका सरसी है । उसके किनारे महर्षिपराशरका स्थान है ।

नगरमें भगवान् विष्णु, श्रीराजगोपाल, रामजी तथा नृसिंह एवं कामाख्यादेवीके मन्दिर हैं ।

तंजौरका सरस्वती-भवन पुस्तकालय प्रसिद्ध है । इसमें संस्कृतकी २५ हजार प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकें हैं ।

कथा— यह पाराशर क्षेत्र है । पहिले यह तञ्जन् नामक असुरका स्थान था । देवासुर संग्राममें भगवान्‌ने उसे मारा तो उसने मरते समय वरदान माँगा—'यह स्थान मेरे नामसे प्रसिद्ध रहे ।' अतः इसका नाम तञ्जावूर पड़ा । यह तञ्जपुरका तमिल रूप है ।

तिरुवाडी

तंजौर स्टेशनसे ११ कि.मी. पर कावेरीके वाम तटपर है । यहाँ पञ्चनंदीश्वर मुख्य मन्दिर हैं । इसे स्वम्भूलिंग माना जाता है । सूर्यवंशी राजा सुरथने यह मन्दिर बनवाया । भीतर ही धर्म संवर्धिनीदेवी (पार्वती) का मन्दिर है । सन्त त्यागराजने अपना अधिकांश जीवन यहीं व्यतीत किया । यहाँ सूर्यपुष्करिणी, गंगातीर्थ, अमृतनाडी या चन्द्रपुष्करिणी, पालारु और नन्दी-तीर्थ ये पाँच पवित्र तीर्थ माने जाते हैं जो नन्दीके अभिषेकके लिये आविर्भूत हुए ।

श्रीरंगम्-तिरुच्चिराप्पल्ली

त्रिरुच्चिराप्पल्ली रेलवे केन्द्र है । इसे लोग प्रायः 'त्रिची' कहते हैं । इसका प्राचीन नाम है । वह है त्रिशिरः पल्ली । इसे त्रिशिरा राक्षसने बसाया था ।

स्टेशनके समीप, नगरमें तथा श्रीरंगम् द्वीपमें कई धर्मशालाएँ

हैं ।

गणेश मन्दिर– त्रिचनापल्लीमें यह मन्दिर तथा तेप्पकुलम् सरोवर दर्शनीय है । यह मन्दिर स्टेशनसे २.५ कि.मी. पर कावेरीके समीप २३५ फीट ऊँची वृपभाकार चट्टानपर है । इसके मध्य भागमें नीचेसे ऊपर तक मन्दिर हैं । इस शिलाको दक्षिण कैलास कहते हैं ।

गोपुरमें प्रवेश करनेपर सीढ़ियाँ हैं । प्रथम गणेशजी हैं । ८६ सीढ़ी ऊपर शिव मन्दिर है । इसमें सुगन्धिकुन्तला (पार्वती) मन्दिर है । इस मन्दिरमें छतके नीचे सुन्दर तिरंगे चित्र हैं । पत्थरकी जंजीरें बनी हैं । यहाँ अनेक देव-मूर्तियाँ हैं ।

आगे ८६ सीढ़ी ऊपर दो मार्ग हैं । सामनेके मार्गसे २०८ सीढ़ी चढ़नेपर गणेशजीकी भव्य मूर्ति है ।

श्रीरंगम्– कावेरीका पुल पार करके श्रीरंगद्वीपमें पहुंचना होता है । श्रीरंगम् स्टेशन है । त्रिचनापल्लीसे मोटर बसें भी आती हैं । यह द्वीप कावेरीके मध्य २७ कि.मी. लम्बा तथा ५ कि.मी. चौड़ा है ।

श्रीरंग-मन्दिर भारतका सबसे बड़े विस्तार वाला मन्दिर है । इसमें १८ गोपुर हैं । सात प्राकार हैं । प्रथम घेरेमें बाजार है । दूसरे घेरेमें पण्डोंके घर हैं । तीसरे घेरेमें भी ब्राह्मणोंके घर हैं । चौथे घेरेमें सहस्रस्तम्भ मण्डप तथा अन्य मण्डप हैं ।

पांचवें घेरेमें गरुड़जी सामने हैं । आगे गरुड़ स्तम्भ है । ईशानकोणमें चन्द्रपुष्करिणीमें यात्री स्नान करते हैं । उसके समीप महालक्ष्मी मन्दिर है । पास ही कल्पवृक्ष, श्रीराममूर्ति तथा श्रीवैकुण्ठनाथका स्थान है । यही 'कम्ब मण्डप' है, जहाँ कवि कम्बने

जनताको अपनी रामायण सुनाई ।

छठे घेरेमें मण्डप है । सातवें घेरेमें श्रीरंगजीका निज मन्दिर है । मन्दिरके पीछे छतमें अनेकों देवता हैं । पीछे एक कूप है तथा एक मन्दिरमें श्रीरामानुजाचार्य, विभीषण हनुमानजी आदि हैं । दालानमें एक पीतल खंड जड़ा है, वहाँसे शिखरपर स्थित श्रीवासुदेव मूर्तिके दर्शन होते हैं । शिखर तक जानेको सीढ़ियाँ बनी हैं । वहाँ जाकर भी श्रीवासुदेवके दर्शन किये जाते हैं । श्रीरंगजीकी मूर्ति शेषशायी है । समीप श्रीलक्ष्मीजी तथा विभीषण हैं ।

कथा– स्वयं भगवान् नारायणने अपना श्रीविग्रह ब्रह्माजीको दिया था । वैवस्वत मनुके पुत्र इक्ष्वाकुने तप करके विमानके साथ वह मूर्ति ब्रह्माजीसे प्राप्त की । तभीसे श्रीरंगजी अयोध्यामें इक्ष्वाकुवंशके आराध्य हुए ।

त्रेतामें चोल नरेश धर्मवर्मा महाराज दशरथके अश्वमेध यज्ञमें अयोध्या गये तो श्रीरंगजीमें उनका चित्त लग गया । लौटकर वे उन्हें प्राप्त करनेको तप करने लगे ।

श्रीराम-राज्याभिषेकके पश्चात् विभीषणने श्रीरघुनाथजीसे श्रीरंगजीको मांग लिया । वह इन्हें लेकर लंका जा रहे थे, रंगद्वीपमें रखकर स्नान-पूजन किया । फिर रंगजी उठाये नहीं उठे । अनशन करने लगे तो स्वप्नादेश हुआ 'कावेरीका यह द्वीप मुझे प्रिय है । मैं लंकाकी ओर मुख करके स्थित होऊँगा । तुम यहीं दर्शन कर जाया करो ।' तबसे श्रीरंगजी यहीं विराजमान हैं ।

जम्बुकेश्वर– श्रीरंग-मन्दिरसे १.५ कि.मी. पूर्व यह श्रीरंग-मन्दिरसे भी प्राचीन मन्दिर है । शंकरजीके पञ्चतत्त्व लिंगोंमें यह आपोलिंगम् (जलतत्त्व लिंग) है ।

यह मन्दिर भी विशाल है । इसमें तीन आँगन हैं । एक आंगनमें तेप्पाकुलम् सरोवर है । दूसरे आंगनमें सहस्रस्तम्भ मंडप है ।

पाँचवें घेरेमें जम्वुकेश्वर लिंग है । यह एक जल प्रवाहपर स्थापित है । मूर्तिके नीचेसे बराबर जल ऊपर आता रहता है । निज-मन्दिरमें जल भरा रहता है । मन्दिरके पीछे चवूतरेपर जामुनका वृक्ष है ।

मन्दिरके वाहरी मण्डपमें नटराज, सुब्रह्मण्यम्, दक्षिणा मूर्ति आदि देवमूर्तियाँ हैं । तीसरी परिक्रमामें सुब्रह्मण्य मन्दिर है । इस मन्दिरमें अनेकों मण्डप हैं । उनमें ९ तो मुख्य मण्डप हैं । इनमें भी सोमास्कन्द मण्डपकी कला दर्शनीय है । परिक्रमामें एक राजराजेश्वर मन्दिर है । उसमें पञ्चमुख लिंग है ।

इस मन्दिरके प्रांगणमे बाईं ओर एक द्वारसे जानेपर अखिलाण्डेश्वरी (भवानी) का मन्दिर मिलता है । इसमें निज मन्दिरके ठीक सामने गणेशजीका मन्दिर है । देवी-मन्दिरकी कला भव्य है ।

कथा– यहाँ आसपास जामुनके वृक्ष थे । उनमें जम्बू ऋषि तप करते थे । उन्हें दर्शन देकर भगवान् शिव यहाँ लिंग रूपमें विराजे ।

एक कथा यहाँ मण्डपमें चित्रांकित है कि जम्वुकेश्वर लिंगपर एक मकड़ी प्रतिदिन जाला बना देती थी । एक हाथी सूंड़में जलभर कर चढ़ाता तो जाला टूट जाता । एक दिन मकड़ी हाथीकी सूंडमें घुस गई । दोनों मर गये और उन्हें शिवलोक मिला ।

आसपासके तीर्थ

१– **श्रीनिवास**– प्रत्येक कावेरी द्वीपके श्रीरंग-मन्दिरसे कुछ दूरीपर श्रीनिवास मन्दिर अवश्य है । श्रीरंग द्वीपसे १९ कि.मी. पर कोणेश्वरम्में श्रीनिवास मन्दिर है । इसमें भगवान् विष्णुकी खड़ी मूर्ति है । मन्दिर छोटा है ।

२– **समयपुरम**– श्रीरंगम्से ६.५ कि.मी. दूर है । वस जाती है । यहाँ मारीअम्मन् (महामाया) मन्दिर है । विशाल मन्दिर है । कहा जाता है कि इनकी स्थापना राजा विक्रमादित्यने की थी ।

ओरैयूर– श्रीरंगम्से ५ कि.मी. । यहाँ महालक्ष्मी मन्दिर है ।

पलणी

दींडिगुल– कोयमबटोर लाइनपर पलणी स्टेशन है । दक्षिण भारतमें जो ६ मुख्य सुब्रह्मण्य पीठ हैं, उनमें यह एक है । यहाँ अच्छा बाजार और धर्मशालाएँ हैं ।

इस क्षेत्रका वर्णन पुराणोंमें है । यहाँ लक्ष्मी देवी, भूदेवी, सूर्य तथा अग्निने भगवान्की आराधना की है ।

यह मन्दिर वाराहगिरि पर्वतपर है । देवताओंने जब महर्षि अगस्त्यको विन्ध्यावरोधके लिये बुलाया तो उन्हें आवासके लिये यह पर्वत दे दिया ।

पर्वतपर जानेको सीढ़ियाँ बनी हैं । ऊपर स्वामी कार्तिक (सुब्रह्मण्य) का भव्य मन्दिर है ।

रामेश्वरम् (धाम-३)

सेतुं रामेश्वरं लिंगं गन्धमादनपर्वतम् ।
चिन्तयन् मनुजः सत्यं सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥

सेतुबन्ध, रामेश्वरलिंग तथा गन्धमादन पर्वतका चिन्तन करके मनुष्य सब पापोंसे छूट जाता है, यह बात सत्य है ।

रामेश्वर चेन्नई, मदुरै, तिरुचि, तंजौर आदिसे रेल-मार्ग द्वारा जुड़ा है । बससे जानेके भी साधन हैं । यहाँकी यात्रा सर्दियोंमें करना ठीक है जब वहाँका तापक्रम ३० डि.ग्री. से २५ डि.ग्री. रहता है । गर्मी यहाँ ४८ डि.ग्री. तक पड़ती है ।

श्रीरामेश्वर धाम है । यह ज्योतिर्लिंग है द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें । रामेश्वर लगभग १८ कि.मी. लम्वा ११ कि.मी. चौड़ा द्वीप है । यहाँ ठहरनेके लिये अच्छी धर्मशालाएँ हैं ।

कथा– एक कथा तो यही है कि समुद्रपर सेतु बँध जानेपर श्रीरामने यहाँ शंकरजीकी स्थापना की ।

दूसरी कथा कल्पान्तरकी है । लंका-विजयके पश्चात् रावण-वधके प्रायश्चित स्वरूप श्रीरामने यहाँ शिव स्थापनकी इच्छा की । श्रीहनुमानजीको कैलास दिव्यलिंग लाने भेजा । उनको वहाँ शंकरजीके दर्शनोंके लिये थोड़ा तप करना पड़ा । आनेमें विलम्ब हुआ । इधर मुहूर्त व्यतीत हो रहा था । ऋषियोंके आदेशसे श्रीजानकीजीने वालूका लिंग बना दिया । उसीकी श्रीरामने स्थापना कर दी ।

श्रीहनुमानजी दो लिंग-विग्रह लेकर लौटे । यहाँ स्थापना हुई देख उदास हुए तो उन्हें रामजीसे स्थापित लिंग हटा देनेको कहा ।

उसे वे पूंछमें लपेट कर उखाड़ने लगे तो स्वयं दूर जा गिरे । अन्तमें श्रीरामने उन्हें समझाया । उनका लाया एक लिंग हनुमदीश्वर नामसे स्थापित कर दिया । दूसरा रामेश्वरके पार्श्वमें बिना स्थापना विश्वनाथ लिंग है । हनुमदीश्वरके दर्शन करके ही रामेश्वर दर्शनकी विधि है ।

यात्रा क्रम– यात्राका शास्त्रीय क्रम यह है कि यात्रीको पहिले उप्पूरमें जाकर गणेशजीका दर्शन करना चाहिये । रामनाथपुरम्से ३२ कि.मी. उत्तर यह ग्राम है । यहाँ श्रीराम द्वारा स्थापित श्रीविनायकका मन्दिर है ।

देवीपत्तन– उप्पूरके पश्चात् देवीपत्तन जाना चाहिये । रामनाथपुरसे यह १९ कि.मी. है । श्रीरामने यहाँ नवग्रह स्थापन किया था । सेतुबन्ध यहींसे प्रारम्भ हुआ, अतः यह मूल सेतु है । यहीं देवीने महिषासुरका वध किया था । यहाँ धर्मने तप करके शिव-वाहनत्व प्राप्त किया है । उनके द्वारा निर्मित धर्म पुष्करिणी है । महर्षि गालवकी यह तपोभूमि है ।

यहाँ समुद्रके समीप धर्म-पुष्करिणी सरोवर है । समुद्र उथला है । उसमें नौ पत्थरके छोटे स्तम्भ हैं । ये नवग्रहके प्रतीक हैं । सरोवरमें स्नान करके तब समुद्रमें इनकी परिक्रमा की जाती है । यहाँ कुछ दूरीपर महिष-मर्दिनी देवीका मन्दिर है । बाजारमें शिव-मन्दिर है ।

दर्भशयनम्– देवीपत्तनम्के पश्चात् दर्भशयन जाकर समुद्रमें स्नान तथा मन्दिरमें दर्शन करना चाहिये । यह स्थान रामनाथपुरम्से १० कि.मी. है । समुद्र ५ कि.मी. आगे है । मन्दिरके पास धर्मशाला है । मन्दिरमें दर्भपर सोये हुए श्रीरामकी मूर्ति है । विशाल है । मन्दिर-परिक्रमामें कई मूर्तियाँ हैं । समुद्र-तटपर हनुमानजीका मन्दिर

है ।

रामनाथपुरम्से यात्रीको पम्बन जाकर भैरव तीर्थमें स्नान करना चाहिये । विधि तो इसके पश्चात् धनुष्कोटि जानेकी है; किन्तु धनुष्कोटि तीर्थका मन्दिर समुद्री तूफानमें नष्ट हो गया । वैसे वहाँ जानेका मार्ग अब भी है । वहाँ समुद्रमें ३६ बार स्नान तथा बालूका पिण्ड देकर तब रामेश्वर जाना चाहिये । धनुष्कोटि स्थान (अन्तरीप) है । रामेश्वरसे बस जाती है । अब ट्रेन नहीं जाती ।

रामेश्वरके तीर्थ– रामेश्वर जाकर यात्री पहिले लक्ष्मण-तीर्थमें स्नान करते हैं । यह रामेश्वर मन्दिरसे सीधे १.५ कि.मी. पश्चिम है । सरोवर पक्का है । वहाँ लक्ष्मणेश्वर शिव-मन्दिर है । यहाँ मुण्डन तथा श्राद्ध भी होता है । यहाँसे लौटते समय सीता-तीर्थ कुण्ड मिलता है । वहाँ श्रीराम तथा पंचमुखी हनुमान मूर्ति है । उससे कुछ आगे रामतीर्थ नामक बड़ा सरोवर है । जल खारा है । किनारे श्रीराम-मन्दिर है ।

श्रीरामेश्वर मन्दिरमें २२ तीर्थ हैं । बाहर समुद्र अग्नि-तीर्थ कहा जाता है और उसके समीप अगस्त्य-तीर्थ वापी है । मन्दिरमें प्रायः सब तीर्थ कूप हैं । केवल शिव-तीर्थ छोटा सरोवर है और माधव-तीर्थ बड़ा सरोवर है । महालक्ष्मी-तीर्थ और अगस्त्य-तीर्थ बावलियाँ हैं । शेष १८ कूप हैं । इनके नाम उन कूपोंपर अंकित हैं । पंडोंके नौकर रस्सी बाल्टी लेकर साथ हो लेते हैं और तीर्थों से जल खींचकर यात्रीको स्नान या मार्जन कराते जाते हैं ।

रामेश्वर-मन्दिर बहुत विस्तार वाला है । पश्चिम द्वारसे भीतर जानेपर पहिले शंख, माला, टोकरियोंका बाजार है । सामने माधव तीर्थके समीप सेतु-माधव मन्दिर है । आगे ६ मन्दिर बाहरी परिक्रमामें

हैं ।

प्रदक्षिणा मार्गसे चलनेपर रामलिंगम् प्रतिष्ठाका दृश्य है । शेषफणके नीचे लिंग है । श्रीराम-जानकी उसे स्पर्श किये हैं । वहाँ ऋषि वानर-गण हैं ।

दूसरे घेरेमें चक्रतीर्थके पास सुब्रह्मण्य मन्दिर है । आगे कार्यालय है । वहाँ गंगाजल विक्रयके लिये रहता है । गंगाजल चढ़ाने तथा पूजानादिकी रसीद लेनी पड़ती है । जल चढ़ानेको जो ताँबे या पीतलका बर्तन दिया जाता है, वह लौटता नहीं है ।

रामेश्वर मन्दिरके सामने विशाल नंदी है । यह मृण्मय मूर्ति १३ फुट ऊँची, ८ फुट लम्बी, ९ फुट मोटी है । नन्दीके सामने महोदधि तथा हरबोला खाड़ीकी मूर्तियाँ हैं । बायें बाल- रूप हनुमानजीकी मूर्ति है ।

रामेश्वर निज-मन्दिर द्वारके पार्श्वोमें गणेश तथा सुब्रह्मण्यम्के विग्रह हैं । आंगनके वाम भागमें विश्वनाथ मन्दिर है । रामेश्वर मन्दिरसे सटा विश्वनाथ (हनुमदीश्वर) मन्दिर है । पहिले इनका दर्शन-पूजन करके तब रामेश्वर-दर्शन करना चाहिए ।

तीन द्वारोंके भीतर शेषजीके फणोंके छत्रके नीचे रामेश्वर ज्योतिर्लिंग है । इसपर पुजारी ही यात्रीका लाया गंगाजल चढ़ाता है ।

रामेश्वरजीके वाहनोंका दर्शन और आभूषण-दर्शन निर्धारित शुल्क देकर होता है । पंच मूर्ति उत्सव और रथोत्सव कभी भी कोई एक भक्त निश्चित शुल्क देकर एक दिन पूर्व सूचना देकर करा सकता है ।

स्फटिक लिंग– यह बड़ा सुन्दर लिंग है । इसके दर्शन प्रातः ४.३० से ५ बजे तक होते हैं । मन्दिर खुलते ही इसकी पूजा होती है ।

जगमोहनमें छड़ोंके पास दो छोटे मन्दिर गन्धमादनेश्वर तथा अगस्त्येश्वर हैं । ये अनादि स्वयम्भू लिंग हैं । ये रामेश्वरसे पूर्वके हैं । दक्षिण ओर यहीं श्रीराम-जानकी मन्दिर है ।

परिक्रमामें कई देवता हैं । उत्तरकी ओर विशालाक्षी मन्दिर है ।

रामेश्वर-मन्दिरके दक्षिण पार्वती-मन्दिरंका द्वार है । इन्हें पर्वतवर्द्धिनी कहते हैं । यह भी विशाल मन्दिर है । ती ड्योढ़ी भीतर मूर्ति है । पार्वती-मन्दिरकी परिक्रमामें सन्तान गणेश हैं । यहाँ आगे मंडपमें नटराज, देवी, सुब्रह्मण्य, गणेश, हनुमानजी आदिके कई छोटे मन्दिर हैं ।

रामेश्वर-मन्दिरके पूर्व द्वारके समीप हनुमानजीका मन्दिर है । इन्हें नारियल चढ़ानेकी कार्यालयसे रसीद लेनी पड़ती है । इनके अतिरिक्त मन्दिरकी परिक्रमामें कुण्डोंके समीप अनेकों मन्दिर हैं ।

गन्धमादन (राम-झरोखा) – यह रामेश्वरसे २.५ कि.मी. है । इसके मार्गमें क्रमशः सुग्रीवतीर्थ, अंगदतीर्थ, जाम्बवानतीर्थ, और अमृततीर्थ मिलते हैं । सुग्रीवतीर्थ सरोवर है । शेष कूप हैं । आगे हनुमानजीके बाल रूपका मन्दिर है । यहाँ प्रत्येक यात्रीको चना प्रसाद दिया जाता है । यहाँ पीने योग्य जल है ।

रामझरोखा मन्दिर टीलेपर है । सीढ़ियाँ बनी हैं । मन्दिरमें भगवान्के चरण-चिह्न हैं ।

दूसरे मार्गसे लौटें तो धर्मराज, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेवके

नामके तीर्थ तथा ब्रह्मतीर्थ मिलते हैं । ब्रह्मतीर्थ कुण्ड है । पासमें भद्रकाली मन्दिर है । द्रौपदी तीर्थपर द्रौपदी-मूर्ति है । समीप ही बगीचेमें काली-मन्दिर है । इसके पास हनुमानतीर्थ है ।

आसपासके तीर्थ

१-**साक्षी विनायक**– पाम्बन् मार्गपर ३ कि.मी. दूर यहाँ 'वन-विनायक' मन्दिरमें साक्षी-विनायककी मूर्ति है ।

२- **जटातीर्थ**– यह रामेश्वर से ३ कि.मी. पर है । कहा जाता है कि लंका-विजयके बाद यहाँ श्रीरामने जटाएँ धोयीं थीं ।

३-**सीताकुण्ड**– रामेश्वरम्से ८ कि.मी. समुद्र तटपर मीठे जलका कूप है ।

४-**एकान्तराम मन्दिर**– रामेश्वरम्से ६.५ कि.मी. पर यहाँ श्रीराम-लक्ष्मण-जानकीका श्रीविग्रह बातचीतकी मुद्रामें हैं ।

५- **नविनायकी अम्मन्**– रामेश्वरम्से ३ कि.मी. पर नविनायकी अम्मन देवीका मन्दिर है । यहींके जलाशयसे रामेश्वरम्को जल आता है नलों में ।

६- **कोदण्डरामस्वामी**– रामेश्वरसे ८ कि.मी. उत्तर समुद्र तटपर । रेतके मैदानमें पैदल मार्ग है । यहाँ श्रीरामने विभीषणको तिलक किया था ।

७-**विल्लूराणि-तीर्थ**– तंकच्चिमठम् स्टेशनके पूर्व पासमें ही समुद्र जलके बीचमें मीठे पानीका सोता है । वहाँ एक कुण्ड-सा बना दिया गया है । समुद्रमें भाटेके समय जलके हट जानेपर यह तीर्थ मिलता है । कहते हैं सीताजीको प्यास लगनेपर रघुनाथजीने धनुषकी नोंकसे

पृथ्वीको दबाया तो जल निकल आया ।

मदुरा

तिरुच्चिराप्पल्ली- तूतीकोरिनी लाइनपर तिरुच्चिराप्पल्ली से १५५ कि.मी. पर मदुरै जं. रेलवे स्टेशन है । यही मदुरा है ।

इसका प्राचीन नाम 'मधुरा' है । इसे 'दक्षिण-मथुरा' कहते हैं । स्टेशनके समीप धर्मशाला तथा पान्थशाला (चोल्ट्री) है । पान्थशालाओंमें कमरे किरायेपर मिलते हैं ।

यह नगर वेगा नदीके तटपर है । यहाँ स्टेशनसे १.५ कि.मी. दूर मीनाक्षी-मन्दिर है, जो अपनी कलाके लिये प्रख्यात है । यह बहुत विशाल मन्दिर है ।

पूर्व दिशामें जो गोपुर है कहते हैं कि यहीं इन्द्र वृत्रहत्याके भयसे कमलनालमें छिपे थे और हत्या उनकी प्रतीक्षामें गोपुरपर खड़ी थी । अतः इस गोपुरको छोड़कर पार्श्वके मार्गसे मन्दिरमें जाया जाता है ।

गोपुरसे आगे दूकानोंको छोड़कर अष्टशक्ति मण्डपमें खम्भोंके स्थानपर आठ लक्ष्मियोंकी मूर्तियाँ हैं । द्वारके दाहिने सुब्रह्मण्य तथा गणेश बायें हैं । इससे आगे अँधेरे मण्डपमें मोहिनी रूप, शिव, ब्रह्मा तथा विष्णु एवं अनुसूयाकी कलापूर्ण मूर्तियाँ हैं ।

आगे 'पोत्तामरै-कुलम्' सरोवर है । इसके चारों ओर मण्डप हैं । इनमें तीन ओर भित्तियोंपर शंकरजीकी ६४ लीलाओंके चित्र लगे हैं । एक मण्डपमें पाण्डव मूर्तियाँ हैं । एक ओर पिंजड़ोंमें पक्षी पाले गये हैं ।

निज-मन्दिरके द्वारके समीप सुब्रह्ममण्य मन्दिर है । आगे कई

द्वारोंके भीतर मीनाक्षी देवीकी भव्य मूर्ति है । परिक्रमामें अनेक देवमूर्तियाँ हैं । निज-मन्दिरकी परिक्रमामें ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति और बलशक्तिकी मूर्तियाँ हैं ।

यहाँसे सुन्दरेश्वर मन्दिरकी ओर चलनेपर मध्यमें गणेशजीकी विशाल मूर्ति है । यह सरोवर खोदते समय भूमिमें मिली थी ।

सुन्दरेश्वर शिव-मन्दिरमें प्रथम द्वारपालोंकी धातु प्रतिमाएँ हैं । आगे नटराज है । मूर्तिपर चांदीका आवरण चढ़ा है । निज मन्दिरमें भीतर स्वर्ण त्रिपुण्ड मन्दिर सुन्दरेश्वर स्वयम्भू लिंग है ।

जगमोहनमें आठ स्तम्भोंपर शंकरजीकी विभिन्न लीलाओंकी बहुत ही कलापूर्ण मूर्तियाँ हैं । द्वारके समीप एक मण्डपमें पत्थरकी शृंखला बनी है । यहीं वीरभद्र तथा अघोर भद्रकी विशाल उग्र मूर्तियाँ हैं । इस मण्डपमें शंकरजीके नृत्यकी अद्‌भुत कलापूर्ण विशाल मूर्ति है । एक पद कान तक पहुंचा है । उतनी ही विशाल कालीमूर्ति है । एक ओर एक शिवभक्तोंकी मूर्ति है ।

नवग्रहोंकी मूर्तियाँ एक मण्डपमें हैं । निज मन्दिरकी परिक्रमामें गणेश, हनुमानजी, दण्डपाणि, सरस्वती, दक्षिणामूर्ति, सुब्रह्मण्य अनेक देवता हैं । परिक्रमामें एक कदम्ब वृक्षका अवशेष सुरक्षित है । वहीं दुर्गाजीका छोटा मन्दिर है । इस कदम्बके नीचे ही सुन्दरेश्वरने मीनाक्षीका पाणिग्रहण किया था ।

उत्सव मण्डपमें मीनाक्षी-सुन्दरेश्वर, गंगा, पार्वती आदिकी स्वर्ण मूर्तियाँ हैं । परिक्रमामें एक चन्दनमय महालिंग है । मन्दिरके सम्मुख नन्दी मूर्ति है । यहाँसे सहस्र स्तम्भ मण्डपमें जाते हैं । इसमें विशाल देव-देवियोंकी मूर्तियाँ स्तम्भोंमें बनी हैं । वीणाधारिणी सरस्वतीकी मूर्ति इसमें कलापूर्ण है । इस मण्डपमें श्याम नटराज तथा कणप्पकी मूर्ति

है ।

शत स्तम्भ मण्डपमें नायकवंशके राजा-रानियोंकी मूर्तियाँ हैं । द्वारके समीप पशुओं तथा शिकारियोंकी मूर्तियाँ हैं । समीप ही मीनाक्षी-कल्याण-मण्डप है । चैत्रमें यहाँ मीनाक्षी-विवाह महोत्सव होता है । यहाँ उस समय अनेक वर-वधुओंका विवाह हो जाता है ।

पूर्व द्वारके समीप पुदुमण्डपमें घुड़सवारों, सेवकोंकी मूर्तियाँ हैं । भीतर पूरे मानवाकारमें शिव-पार्वती पाणिग्रहणकी मूर्ति तथा नटराज मूर्ति है ।

समीप सप्तसमुद्र सरोवर है । मीनाक्षीकी माताकी समुद्र-स्नानकी इच्छा हुई तो शंकरजीने इसमें सातों समुद्र प्रकट किये ।

कथा– यहाँ कदम्बवनमें कदम्बके नीचे सुन्दरेश्वर लिंग था । पाण्ड्यनरेश मलयध्वजने पता लगनेपर वहाँ मन्दिर बनवाया । दिनमें एक सर्पने आकर वहाँ नगर बसानेकी सीमाका निर्देश किया । पाण्ड्यनरेशके सन्तान नहीं थी । पत्नी सहित दीर्घकाल तक तप करनेपर शंकरजीने दर्शन देकर कन्या होनेका वरदान दिया । भगवती पार्वती उनकी पुत्री रूपमें उत्पन्न हुईं । उनका नाम यहाँ मीनाक्षी पड़ा । राजा कैलासवासी हो गये । रानीने शासन सम्हाला । युवती होनेपर भगवान् सुन्दरेश्वरने मीनाक्षीसे विवाह किया ।

सुन्दरराज पेरुमाल– यह विष्णु मन्दिर स्टेशन तथा मीनाक्षी मन्दिर दोनोंसे आधे कि.मी.पर नगरमें है । मन्दिरमें रामायणके कथा-प्रसंगोंके सुन्दर चित्र भित्तिपर हैं । विष्णु मीनाक्षी-विवाहमें पधारे थे, तबसे यहाँ हैं ।

मन्दिरमें भगवान् नारायणकी चतुर्भुज मूर्ति है । मन्दिरके शिखरपर जानेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं । ऊपर सूर्यनारायणकी मूर्ति

है। मन्दिरमें नृसिंह मूर्ति भी है। भीतर ही पृथक मन्दिरमें मधुवल्लीजी (लक्ष्मी) की भव्य मूर्ति है ।

श्रीकृष्ण-मन्दिर– मीनाक्षी मन्दिरसे सुन्दरराज पेरुमाल आते समय थोड़े पहिले यह मन्दिर मिलता है। इसमें श्रीकृष्णचन्द्रकी बड़ी सुन्दर मूर्ति है ।

आसपासके तीर्थ

१– **तिरुप्परंकुन्नम्**– यह मदुरासे १२ कि.मी. पर तिरुपरंकुण्ड्म स्टेशन है। मदुरासे बसें भी आती हैं। स्टेशनसे २ फर्लांगपर पर्वतमें अत्यन्त विशाल गुफा बनाई है। यह मन्दिर है। इसमें निज मन्दिरमें सुब्रह्मण्य स्वामी हैं। मन्दिरमें महाविष्णु शिव-पार्वती, गणेश आदिकी मूर्तियाँ भी हैं । एक ही मण्डपमें एक पंक्तिमें मयूर, मूषक तथा नन्दीकी मूर्तियाँ हैं। कहा जाता है कि यहीं स्वामी कार्तिकका विवाह हुआ। तीन फर्लांग दूर शरश्रवण तालाब है । यह तीर्थ है। किनारे गणेश-मन्दिर है ।

२– **आनमलै**– मदुरासे १४ कि.मी. पर यह विष्णु मन्दिर है। यहाँ शेषशायी मूर्ति है। मन्दिरमें वृन्दा, मोहिनी आदिकी मूर्तियाँ हैं । भीतर पृथक लक्ष्मी मन्दिर है ।

३– **अलगरकोइल (वृषभाद्रि)**– यहाँ एक पुराने किलेमें सुन्दरराजका विशाल मन्दिर है। मुख्य मन्दिरमें श्रीनारायणकी मूर्ति है। समीपमें नूपुर गंगा स्रोता है । उसमें स्नान करके सुन्दरराजका दर्शन-अर्चन किया जाता है। यम- धर्मराजने वृष रूप धारण करके यहाँ महाविष्णुकी आराधना की। इससे यह पर्वत वृषभाद्रि कहलाया । भगवान्‌के प्रगट होनेपर उनके नूपुरोंसे यह स्रोत प्रगट हुआ। इस

क्षेत्रकी महिमा अग्नि, वाराहादि कई पुराणोंमें है ।

मन्दिर अत्यन्त प्राचीन है । पाण्डव द्रौपदीके साथ यहाँ आये थे ।

श्रीविल्लीपुत्तूर

विरुदुनगर जंक्शनसे ४२ कि.मी. पर यह स्टेशन है । स्टेशनसे नगर २.५ कि.मी. है ।

यह श्रीविष्णुचित्ति स्वामी (पेरिल्वार) की जन्म स्थली है । उन्हींकी पुत्री आंडाल (गोदाम्बा) हुईं, जिनको लक्ष्मीजीका अवतार माना जाता है ।

यहाँ श्रीरंगजीका मन्दिर है । दीवारोंपर देवताओं तथा भगवल्लीलाके सुन्दर चित्र बने हैं । एक मन्दिरमें श्रीराम, लक्ष्मण, जानकीकी मूर्ति है । निज मन्दिरमें गोदाम्बाके साथ रंगमन्ना (विष्णु) की मूर्ति है ।

इससे लगा हुआ दूसरा मन्दिर है । उसमें नीचे भगवान् नृसिंहकी मूर्ति है । उसी मन्दिरमें ऊपर शेषशायी नारायणकी मूर्ति है । ऊपर ही वटपत्रशायी बालमुकुन्दकी मूर्ति है । इनके अतिरिक्त गरुड़ तथा दुर्वासादि अनेक ऋपियोंकी मूर्तियाँ हैं ।

इस मन्दिरसे १.५ कि.मी. दूर शंकरजीका प्राचीन मन्दिर है । वहाँ रुद्र सरोवर है । मन्दिरमें ही पृथक पार्वतीजीका मन्दिर है ।

आसपासके तीर्थ

१– **श्रीवेंकटेश्वर मन्दिर**– यहाँसे ५ कि.मी. पश्चिमोत्तर

श्रीवेंकटेश्वर पहाड़ीपर मन्दिर है । इसमें श्रीदेवी-भूदेवीके साथ श्रीबैंकटेश भगवान्‌की मूर्ति विराजमान है ।

२– **शंकरनायनारकोइल**– विल्लीपुत्तूरसे ४४ कि.मी. दूर शंकरन कोविल स्टेशन है । स्टेशनसे आधे कि.मी.पर शंकर-नारायण मन्दिर है । इसमें एक मूर्तिमें आधा भाग शिवका आधा नारायणका है । इसके एक ओर शिव तथा दूसरी ओर नारायण मूर्ति है ।

गोमतीने यहाँ तप किया था । उसे शिव-विष्णु दोनोंने दर्शन दिया । फिर दोनों एकाकार हो गये ।

३– **स्वयंप्रभातीर्थ**– शंकरकोविल २१ कि.मी. पर कडयनल्लुर स्टेशन है । वहाँसे १ कि.मी. पर श्रीराम-मन्दिर है । यहाँ एक हनुमानजीकी विशाल मूर्ति है । समीपमें सरोवर है । उसके पास पर्वतमें ६० फुट लम्बी गुफा है । कहा जाता है कि सीतान्वेषणके समय प्याससे व्याकुल वानर यहीं आये थे । इसी गुफामें उन्होंने तपस्विनी स्वयंप्रभाको देखा था ।

तेनकाशी

विरुदनगर जं. से १२३ कि.मी. तथा कडयनल्लूरसे १६ कि.मी. पर तेनकाशी जं. प्रसिद्ध स्टेशन है । इसे दक्षिण काशी कहते हैं । स्टेशनसे १ कि.मी. पर काशी-विश्वनाथ मन्दिर है । भीतर एक मण्डपमें वीरभद्र, भैरव, कामदेव, रति, वेणुगोपाल, नटराज, शिव-ताण्डव तथा काली ताण्डवकी मूर्तियाँ हैं । कालीकी दो सहचरियोंकी ऊँची सुन्दर मूर्तियाँ हैं ।

निज मन्दिरमें विश्वनाथ लिंग है । पार्श्वमें पार्वती-मन्दिर है । इसकी परिक्रमामें गणेशादि देवताओंकी मूर्तियाँ हैं ।

कुत्तालम् प्रपात— तेनकाशीसे ६ कि.मी. पर है। मोटर-बसें जाती हैं। पहाड़ीसे जलधारा गिरती है। नीचे कुण्ड है। पासमें विशाल कुत्तालेश्वर मन्दिर है। पार्श्वमें पार्वती मन्दिर है। परिक्रमामें अनेक देवताओंकी मूर्तियाँ हैं।

तिरुनेलवेली (तिन्नेवली)

मणियानी- शेंगोट्ट रेलवे मार्गपर मणियानीसे ३२ कि.मी पर तिरुनेलवेली टाउस स्टेशन है। ताम्रपर्णी नदीके किनारे यह अच्छा नगर है। ताम्रपर्णीमें स्नान करके स्टेशनके समीप भगवान् शंकरका मन्दिर है। भीतर ही पार्वती मन्दिर है। नगरके मध्यमें श्रीवरदराज (विष्णु) मन्दिर है। उसमें लक्ष्मी-मन्दिर भीतर ही है। बस स्टेशनके समीप सुब्रह्मण्यम् मन्दिर है।

नगरका दूसरा भाग १.५ कि.मी. दूर है। इसमें नीलप्पेश्वर शिव मन्दिर है। इसके पूरे आधे भागमें पार्वती-मन्दिर है। भीतर तेप्पकुलम् सरोवर है। उसके पास नन्दीकी विशाल मूर्ति है। निज मन्दिरमें भूमिस्तरसे कुछ नीचे ताम्रेश्वर लिंग है। सामने नटराज हैं। बगलके दूसरे मन्दिरमें नीलप्पेश्वर स्वयम्भू लिंग है। द्वारपर गणेशजी हैं। उनके समीप ही शेषशायीकी विशाल मूर्ति है। परिक्रमामें रावण, महालक्ष्मी तथा नटराज हैं।

मन्दिरका दूसरा भाग पार्वती मन्दिर है। उसमें भी सरोवर है। निज मन्दिरमें पार्वतीजी हैं। परिक्रमामें चण्डेश्वर, सुब्रह्मण्य आदि हैं। यहाँ बाहर उपवनमें दक्षिणा मूर्ति, गणपति, नन्दी तथा सुब्रह्मण्यम् हैं।

तिन्नेवलीसे कन्याकुमारीको मोटर-बसें जाती हैं।

आसपासके तीर्थ

१– **पापनाशन तीर्थ**– तिरुनेलवेली जं. से ३५ कि.मी. पर दूर अम्बासमुद्रम् स्टेशन है । वहाँसे ८ कि.मी.पर ताम्रपर्णी नदीका प्रपात है । नदी पर्वतसे ८० फुट नीचे गिरती है । नीचे कुण्ड है । इसे पाप-नाशन तीर्थ या कल्याण तीर्थ कहते हैं । समीप ही शंकरजीका मन्दिर है । कूर्मपुराणमें इस तीर्थका माहात्म्य है ।

२– **श्रीवैकुण्ठम्**– तिरुनेलवेलीसे एक रेलवे लाइन तिरुचेन्दूर जाती है । इसपर २९ कि.मी. पर यह स्टेशन है । मोटर बसें भी बराबर चलती हैं । ठहरनेकी व्यवस्था है ।

स्टेशनसे १.५ कि.मी.पर मन्दिर है । उसमें शेषशायी नारायण हैं । परिक्रमामें लक्ष्मीजीका मन्दिर है । आगे आण्डाल मन्दिर है । एक विशाल मण्डपमें बालाजीकी मूर्ति है ।

३– **आल्वार तिरुनगरी**– श्रीवैकुण्ठम्से ४ कि.मी. पर यह स्टेशन है । यहाँ भगवान् विष्णुका विशाल मन्दिर है । ठहरनेकी व्यवस्था है । यह श्रीनम्माल्वारका क्षेत्र है । यहाँ एक प्राचीन इमलीका वृक्ष है, जिसके कोटरमें श्रीशठकोप स्वामी दीर्घकाल तक रहे थे ।

निज मन्दिरमें चतुर्भुज नारायणकी खड़ी मूर्ति है । उनके समीप लक्ष्मीजी तथा आण्डाल हैं । परिक्रमामें अनेकों देव-मूर्तियाँ हैं ।

४– **तीरुचेन्दूर**– आल्वार तिरुनगरीसे २९ कि.मी. पर यह स्टेशन समुद्र तटपर है । दक्षिण-भारतके ६ सुब्रह्मण्य तीर्थोंमें यह प्रधान तीर्थ है ।

समुद्र तटपर सुब्रह्मण्य स्वामीका यह विशाल मन्दिर है । बड़ी भव्य मूर्ति निज-मन्दिरमें है । परिक्रमामें सुब्रह्मण्यके कई रूप तथा

अनेक देव-मूर्तियाँ हैं ।

तोताद्रि (नांगनेरी)

तिन्नेवलीसे कन्याकुमारी सीधी बसें भी जाती हैं पर उसमें तीर्थ नहीं हैं । मार्गके तीर्थोंका दर्शन करते भी बसोंसे जा सकते हैं । यह स्थान तिन्नेवलीसे ३२ कि.मी. है । कस्बेका नाम नांगनेरी है । मन्दिरके समीप धर्मशाला है । यहां श्रीरामानुजाचार्यकी मूल तोताद्रि गद्दी है । इसे मूलपीठ कहते हैं । यहाँ आचार्यका उपदण्ड, पीठ तथा शंख-चक्र मुद्राएँ सुरक्षित हैं ।

बस्तीके एक ओर क्षीराब्धि पुष्करिणी है । इसीसे प्रकट मूर्ति मन्दिरमें है । मन्दिरमें स्वर्ण-मण्डित विशाल गरुड़ है । निज मन्दिरमें शेषके फण-छत्रके नीचे श्रीनारायण विराजमान हैं ।

यहाँ तैलाभिषेक होता है । यहाँ की मूर्ति अनेक विषौषधियोंसे बनी है । अभिषेकका तेल एक कुण्डमें जाता है । इसमें वर्षोंसे तेल एकत्र होता है । यात्री जितना तेलसे अभिषक कराता है, उसका आधा तेल उसे कुण्डसे प्रसाद रूपमें दिया जाता है । अभिषेकके लिये तेल शुल्क देकर मन्दिरसे लेना पड़ता है । प्रसादका तेल अनेक चर्मरोगों तथा वायुके दर्दको लाभ करता है ।

मार्गके तीर्थ

१-**लम्बे नारायण**— नागनेरीसे १४ कि.मी. पर तिरुक्कलंकुडि ग्राम है । बस आती है । यहाँ मन्दिरमें भगवान् परिपूर्ण सुन्दर (विष्णु) की मूर्ति है । लम्बे होनेसे उनका नाम लम्बे नारायण पड़ गया है । इस अनादि सिद्ध क्षेत्रका माहात्म्य वाराहपुराणमें है ।

२-**छोटे नारायण**– लम्बे नारायणसे १४ कि.मी. पर पन्नगुडी ग्राम है। यहाँ धर्मशाला है। पक्के घाटका सुन्दर सरोवर सड़कसे लगा है।

अद्‌भुत बात यह कि छोटे नारायणका मन्दिर शिव-मन्दिर है। निजमन्दिरमें रामलिंगेश्वर विग्रह है। इनकी स्थापना महर्षि गौतमने की थी। पार्श्वमें पार्वती मन्दिर है। मन्दिरके बाहरी घेरेमें बगीचेमें छोटेसे मण्डपमें छोटीसी सुन्दर नारायण मूर्ति है। यही छोटे नारायण हैं। समीप ही श्रीदेवी और भूदेवीकी भी मूर्तियाँ हैं।

३-**पडलूर**– छोटे नारायणसे १४ कि.मी.। यह कन्याकुमारीके मार्गसे हटकर है। यहाँ पृथक बसमें जाना पड़ता है।

यहाँ शिवमन्दिरमें नटराज मूर्ति है। मन्दिरके भीतर ही पार्वती मन्दिर है। यात्री यहाँ डमरू तथा शृंग बजाते हैं।

कन्याकुमारी

ततस्तीरे समुद्रस्य कन्यातीर्थमुपस्पृशेत् ।
तत्तोयं स्पृश्य राजेन्द्र सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥

समुद्रतटपर कन्यातीर्थमें स्नान करे। वहाँ स्नान करके मनुष्य सब पापोंसे छूट जाता है।

छोटे नारायणसे कन्याकुमारी ८३ कि.मी.। वैसे तिन्नेवलीसे सीधे दूरी ९६ कि.मी. है; किन्तु तोताद्रि आदि होकर आनेसे दूरी बढ़ जाती है।

यह कुमारी अन्तरीप भारतकी अन्तिम सीमा है। यहाँ सरकारी धर्मशाला है। यात्रीको भोजन बनानेको बर्तन भी मिलते हैं।

यह हिन्दमहासागर, अरब सागर तथा बंगालकी खाड़ीका संगम स्थल है । स्नानके लिये समुद्रमें सुरक्षित घेरा बना है । वहाँ पक्का घाट है । ऊपर एक मण्डप है । इसमें यात्री श्राद्ध करते हैं ।

चैत्र पूर्णिमाको सायंकाल बादल न हों तो यहाँसे एक साथ अरब सागरमें सूर्यास्त तथा बंगालकी खाड़ीमें चन्द्रोदयका दर्शन होता है । दूसरे दिन प्रातः सूर्योदय एवं चन्द्रास्त भी एक साथ दृश्य होता है ।

बंगालकी खाड़ीमें यहाँ समुद्रमें ही गायत्री, सावित्री, सरस्वती, कन्या, विनायक आदि कई तीर्थ हैं । देवी मन्दिरके दक्षिण मातृ तीर्थ, पितृ तीर्थ, भीमातीर्थ हैं । थोड़ी दूर पश्चिममें स्थाणु तीर्थ है । शुचीन्द्रममें मूर्तिपर चढ़ा जल भूमिके भीतर होकर यहाँ समुद्रमें मिलता है ।

समुद्रतटपर घाटके समीप गणेशजीका छोटासा मन्दिर है । इनका दर्शन करके देवीके दर्शनको जाना चाहिए । द्वितीय प्राकारके भीतर 'इन्द्रकान्त विनायक' हैं । इनकी स्थापना इन्द्रने की है ।

कुमारी देवी कई द्वारोंके भीतर हैं । उनके एक हाथमें माला है । इस निज मन्दिरके उत्तर अग्रहारके बीचमें भद्रकालीका मन्दिर है । ये कुमारी देवीकी सखी हैं । यह ५१ शक्तिपीठोंमें है । यहाँ सतीका पृष्ठ भाग गिरा था । मन्दिरकी परिक्रमामें और भी देव-विग्रह हैं ।

मन्दिरसे उत्तर थोड़ी दूरीपर पाप विनाशनम् पुष्करिणी है । यह समुद्रतटपर ही मीठे जलकी बावली है ।

समुद्रतटपर लाल तथा काली रेत मिलती है । ठीक चावलके समान रेत भी मिलती है ।

कथा– वाणासुरके तपसे प्रसन्न होकर शंकरजीने उसे वरदान दे दिया कि 'कुमारी शक्ति ही तुम्हें मार सकती हैं ।'

असुरके उत्पात-पीड़ित देवताओंकी प्रार्थनासे उनके यज्ञम कुण्डकी ज्वालासे दुर्गाजी कन्या रूपमें प्रकट हुईं । वे प्रगट होकर शिवजीको पति रूपमें पानेके लिये तप करने लगीं । उनके तपसे सन्तुष्ट होकर शंकरजीने उनसे विवाह करना स्वीकार कर लिया । देवता चिन्तित हुए कि विवाह हो गया तो असुर मारा ही नहीं जा सकेगा । अतः देवताओंकी प्रार्थनापर नारदजीने कैलाससे आते-शंकरजीको शुचीन्द्रम्में इतनी देर अटका लिया कि सबेरा हो गया । विवाहका मुहूर्त टल जानेसे शंकरजी वहीं स्थाणु रूपमें रह गये । विवाहके लिये प्रस्तुत अक्षतादि समुद्रमें डाल दिये गये । वे ही रेतके रूपमें मिलते हैं । देवी असुरको मारकर फिर तप करने लगीं । अब कलियुग बीत जानेपर उनका विवाह सम्पन्न होगा ।

अन्य मन्दिर– यहाँ ग्राममें दो शिव-मन्दिर हैं । उत्तरकी ओर काशी-विश्वनाथ मन्दिर है । वहीं चक्रतीर्थ है ।

समुद्र तटपर गान्धी-स्मृति-मन्दिर है । स्नानके घाटके ऊपर स्वामी विवेकानन्द औरपरमहंस रामकृष्णके दो मन्दिर हैं । समुद्रमें विवेकानन्द शिलापर स्वामी विवेकानन्द भव्य स्मारक बना है । कन्याकुमारी आनेपर स्वामीजी तैरकर उसपर गये और तीन दिन निर्जल रहकर आत्म चिन्तन करते रहे थे ।

शुचीन्द्रम्

कन्याकुमारीसे त्रिवेन्द्रम जानेके मार्गमें कन्याकुमारीसे १३ कि.मी. पर यह स्थान है । इसे ज्ञानवन क्षेत्रम् कहते हैं । महर्षि

गौतमके शापसे इन्द्रको यहीं मुक्ति मिली । शापसे इन्द्रके पवित्र होनेके कारण इसका नाम शुचीन्द्रम् पड़ा ।

सड़कके समीप ही सरोवर है । उसके पास ही भगवान् शिवका विशाल मन्दिर है । गोपुरके भीतर शिव तथा विष्णुके समान विशाल मन्दिर है । शिव-मन्दिरमें जो लिंग मूर्ति है, उसे स्थाणु कहते हैं । इसके ऊपर मुखाकृति बनी है । मन्दिरके सामने नन्दी मूर्ति है ।

विष्णु मन्दिरमें श्रीदेवी एवं भूदेवी सहित विष्णु भगवान्की मूर्ति है । इसके सामने गरुड़ मूर्ति है । इस मन्दिरमें एक ओर हनुमानजीकी बहुत बड़ी मूर्ति है । देशमें हनुमानजीकी अब अनेकों मूर्तियाँ बन चुकी हैं, जिनमें सतनाके रामवन और शुकतालका हनुमद्धाम भी है ।

शिव मन्दिरमें पार्वती, सुब्रह्मण्य, नटराज तथा गणेशकी मूर्तियाँ हैं । विष्णु मन्दिरमें लक्ष्मीजीकी मूर्ति है । घेरेमें ही ब्रह्माजीका भी पृथक मन्दिर है ।

मार्गके तीर्थ

१– **नागर कोइल**– शुचीन्द्रमसे ५ कि.मी. । यह बड़ा नगर है । यहाँसे त्रिवेन्द्रम, तिन्नेवली तथा आस-पासके स्थानोंको बसें जाती हैं । नगरमें शेषनाग तथा नागेश्वर शिवके मन्दिर हैं ।

२– **तिरुवट्टार (आदिकेशव)**– यह और आगेके तीर्थ भी त्रिवेन्द्रम्के सीधे मार्गमें नहीं हैं; किन्तु मोटर बसें यहाँ जाती हैं । नागर कोइलसे ३२ कि.मी. और त्रिवेन्द्रमसे १९ कि.मी. है । यहाँ धर्मशाला है ।

ताम्रपर्णीके किनारे आदि-केशव मन्दिर है। यहाँ शेषशय्यापर लेटी नारायणकी १६ फुटकी मूर्ति है। एक द्वारमेंसे मुख, दूसरेसे वक्ष तथा तीसरेसे चरणोंके दर्शन होते हैं। शेषशय्याके नीचे एक राक्षस दबा है।

कथा– तपो-निरत ब्रह्माजीसे एक राक्षसने भोजन मांगा, ब्रह्माने उसे कदली बन भेजा। वहाँ वह ऋषियोंको कष्ट देने लगा। ऋषियोंकी प्रार्थनापर नारायणने उसे मारा तो उसने मरते समय वरदान माँगा– 'मेरे शरीरपर आप स्थित रहें।' अतः राक्षसपर शेषजीको स्थापित करके भगवान् स्थित हैं।

३– **नियाटेकरा**– तिरुवट्टारसे २९ कि.मी.पर ताम्रपर्णीके किनारे यह बाजार है। यहाँ नदीके किनारे श्रीकृष्णका भव्य मन्दिर है।

४– **कुमार कोइल**– नियाटेकरा या तिरुवट्टारसे यहाँ जा सकते हैं। यह सुब्रह्मण्य क्षेत्र है। बड़े घेरेके भीतर कुछ ऊँचाईपर स्वामी कार्तिकका मन्दिर है। मन्दिरके समीप ही सरोवर है।

त्रिवेन्द्रम्

इसका शुद्ध नाम तिरुअनन्तपुरम् है। पुराणोंमें इसका अनन्तवनम्के नामसे उल्लेख है। सीधे मार्गसे यह कन्याकुमारीसे ८२ कि.मी. है। बहुत बड़ा नगर है। केरलकी राजधानी है। यहाँ गुजराती धर्मशाला तथा राजाकी चोल्ट्री (पान्थशाला) है।

स्टेशनसे १ कि.मी. पर नगरके मध्यमें किला है। उसके सामने ही मोटर-बसोंका मुख्य केन्द्र है। किलेके द्वारमें जाते ही विस्तृत सरोवर है। यात्री उसमें स्नान करते हैं। भीतर ही भगवान् पद्मनाभका मन्दिर है।

पद्मनाभ मन्दिर बहुत विशाल है । निज मन्दिरमें शेषशायी मूर्ति है । यह वहुत विशाल मूर्ति है । भगवान्का दाहिना हाथ शिवलिंगपर है । तीन द्वारोंमें एकसे श्रीमुख, मध्यसे वक्ष तथा तीसरे द्वारसे चरण-दर्शन होते हैं ।

मन्दिरकी प्रदक्षिणामें अनेकों मूर्तियाँ हैं । बाहर दक्षिण भागमें शास्ता (हरिहरपुत्र) का छोटा मन्दिर है । पश्चिम भागमें श्रीकृष्ण मन्दिर है । दक्षिण द्वारके पास शिशु मूर्ति है ।

कथा– महाभारत, ब्रह्माण्ड पुराणादिमें इस क्षेत्रका माहात्म्य है । दिवाकर नामक एक भक्त तपस्वी ब्राह्मणके यहाँ भगवान् बालक रूपमें कुछ दिन रहे । एक दिन यह कहकर अदृश्य हो गये– 'मुझे देखना हो तो अनन्तवनम् आइये ।'

दिवाकर अनन्तवनमें ढूंढते चले । वनमें उन्हें शास्ता और श्रीकृष्णका मन्दिर मिला । ये दोनों मन्दिर भीतर हैं । वहीं एक कनक वृक्षके कोटरमें प्रवेश करते एक बालक दीखा । वहाँ दिवाकरके पहुंचते ही वृक्ष गिर पड़ा । वृक्षमें अनन्तशायी नारायणके उनको दर्शन हुए । वह मूर्ति ६ कोस लम्बी थी । उसी वृक्ष-काष्ठसे वह मूर्ति जो देखी थी, बनवाकर दिवाकरने स्थापित की । कालान्तरमें मन्दिर तथा मूर्तिके जीर्ण हो जानेपर वर्तमान मन्दिर बना और 'कटुशर्करायोग' से बारह हजार शालग्राम भीतर रखकर वर्तमान श्रीमूर्ति निर्मित हुई । बचे अंशसे वह शिशु मूर्ति बनी जो दक्षिण द्वारके पास है ।

वाराह मन्दिर– पद्मनाभ मन्दिरसे १ कि.मी. पर किलेके पीछेके मार्गपर वाराह-मन्दिर है । समीप ही सरोवर है । यह मन्दिर तथा आंगन भी भूमि स्तरसे कुछ नीचे है । इसका घेरा विस्तृत है ।

बीचमें भगवान् वाराहका निज मन्दिर है ।

शास्ता– हरिहरकापुत्रका यह मन्दिर पद्मनाभ मन्दिरसे थोड़ी ही दूरीपर मुख्य मार्गपर स्टेशनकी ओर है ।

मत्स्य-तीर्थ– त्रिवेन्द्रम्से ५ कि.मी. पर तिरुत्तलम् गाँव है । मोटर-बसें जाती हैं । यहाँ मत्स्य-तीर्थ सरोवर है । घेरेके भीतर भगवान्के मुखारविन्दके दर्शन हैं । पासमें मत्स्यावतार, ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथापरशुरामजीके छोटे-छोटे मन्दिर हैं । यहींपरशुरामजीने श्राद्ध किया था ।

जनार्दन

त्रिवेन्द्रम् सेन्ट्रलसे ४१ कि.मी. पर बरकला स्टेशन है । स्टेशनसे जनार्दन बस्ती दो कि.मी. है । तांगे जाते हैं । यहाँ गुजराती धर्मशाला है । जनार्दनमें धूपकी खदान है । यह धूप रामेश्वर तक बिकती है । कहते हैं कि इसे जलानेसे प्रेतबाधा, बच्चोंको नजर लगना आदि दूर हो जाते हैं ।

मन्दिरसे थोड़ी दूरीपर समुद्र है । पाससे आती एक छोटी नदी समुद्रमें मिलती है । उसके संगमपर स्नान किया जाता है । यहाँ लहरोंका वेग अधिक रहता है । पासमें कगारसे कई झरने गिरते हैं । उनमें भी स्नान किया जाता है । ये ५ मीठे पानीके झरने थोड़ी-थोड़ी दूर हैं । इन्हें पापमोचन, ऋण मोचन, सावित्री, गायत्री और सरस्वती तीर्थ कहा जाता है । समुद्र-स्नानके पश्चात् इसमें स्नान होता है ।

लौटनेपर मन्दिरके समीप एक सरोवर है । सीढ़ियोंके पास चक्रतीर्थ कुण्ड है । इनमें भी स्नान-मार्जन होता है ।

सीढ़ियोंसे ऊपर जनार्दन मन्दिर है। इसकी परिक्रमामें शास्ता तथा शंकरजीकी मूर्तियाँ तथा वट-वृक्ष है ।

नीचे उतरनेपर शास्ताका पृथक मन्दिर है । बाजारसे दो फर्लांगपर श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है ।

कथा– यहाँ ब्रह्माजी यज्ञ कर रहे थे । साधु वेशमें नारायणने आकर भोजन मांगा । ब्रह्मा भोजन देने लगे और साधु अंजलिमें लेकर खाने लगे । भोजन सामग्री समाप्त होनेपर ब्रह्मा चौंके । अथितिके चरणोंपर गिर पड़े । भगवान् प्रकट हो गये । ब्रह्माने उनसे यहीं स्थित रहनेका वरदान लिया । ब्रह्माके यज्ञस्थलसे ही धूप निकलती है ।

कालड़ी

कोचीन-शोरानूर लाइनपर अंगमालि स्टेशन है । यहाँसे कालड़ी ८ कि.मी. दूर है । स्टेशनसे मोटर बसें जाती हैं । यहाँ सरकारी धर्मशाला है ।

यह स्थान आद्यशंकराचार्यकी जन्म-भूमि है । यहाँ श्रीशंकराचार्य तथा उनकी माताका मन्दिर है । ये दोनों मन्दिर पेरियार नदीके तटपर हैं ।

त्रिचूर

कोचीन जाने वाली लाइनपर यह स्टेशन है । इसेपरशुराम क्षेत्र कहते हैं ।परशुरामजीने समुद्रसे स्थान लेकर यह क्षेत्र बसाया है । यहाँ 'वादुकुन्नाथ' शिव-मन्दिर बहुत विशाल है । नगरमें धर्मशाला है ।

गुरुवायूर

त्रिचूर रेलवे स्टेशनसे यह स्थान ३२ कि.मी. दूर है। मोटर-बसें चलती हैं ।

कथा– भगवान् श्रीकृष्णने उद्धवको देवगुरु वृहस्पतिंके समीप यह सन्देश देकर भेजा–'समुद्र द्वारिका डुबा दे', इसके पूर्व आप मेरे पिता द्वारा पूजित नारायण मूर्ति किसी सुरक्षित पवित्र स्थानमें स्थापित कर दें। कलियुगमें यह मूर्ति भक्तोंके लिये अत्यन्त कल्याणप्रद होगी ।

देवगुरुको भूतलपर आनेमें बिलम्ब हुआ। भगवान् श्रीकृष्णके स्वधाम जानेपर समुद्रमें द्वारिका डूब चुकी थी। लेकिन वृहस्पतिने वायुदेवको आज्ञा दी। उन्होंने समुद्रमेंसे मूर्ति निकाली। पवित्रं स्थल ढूंढते वर्तमान स्थानपर आये तो यहाँ उमा-महेश्वर उस मूर्तिकी प्रतीक्षा कर रहे थे। अतः शिव-पार्वतीकी आज्ञासे मूर्ति स्थापित हुई। गुरु तथा वायु द्वारा स्थापित होनेसे स्थानका नाम गुरुवायूर पड़ा ।

इस स्थानके समीप ही ममीयूर स्थानमें धर्मराज द्वारा प्रतिष्ठित भगवान् शिवका मन्दिर है। यह बहुत ही कलापूर्ण मन्दिर है ।

५ सौ वर्ष पूर्व पाण्डवनरेशको ज्योतिषीने सर्पदंशसे मरनेकी तिथि बतलाई। राजाने तीर्थ यात्रा प्रारम्भ की। वहाँ आये तो मन्दिरको अत्यन्त जीर्ण देखकर जीर्णोद्धार कराने लगे। निश्चित तिथि बीतनेपर ज्योतिषीसे पूछा गया तो उन्होंने कहा–'आपको सर्पने काटा है। उसका घाव अपने पैरमें देख लें। जिनके मन्दिरका आप जीर्णोद्धार करानेमें व्यस्त थे, उनकी कृपासे आप मृत्युसे बच गये।'

भगवान् नारायणने ब्रह्माजीको अपनी दो मूर्तियाँ दी थीं। एक

तपस्या करके राजा इक्ष्वाकुने प्राप्त की जो श्रीरंगजी हैं । दूसरी मूर्ति ब्रह्माने प्रजापति सुतपाको दिया । वह मूर्ति धौम्य ऋषिको प्रजापतिनेपरलोक जाते समय दे दी और जब वसुदेव रूपमें जन्मे तो धौम्य ऋषिसे अपने आराध्यको प्राप्त किया ।

द्वापरान्तमें सर्प यज्ञके पश्चात् राजा जन्मेजयको कुष्ठ हो गया था । यहाँ आकार आराधना करके वे रोग मुक्त हुए । आदि शंकराचार्य यहाँ कुछ काल रुके थे । उन्होंने पूजा-पद्धतिमें कुछ संशोधन किये थे । श्रीविल्वमंगलकी आराधनाका बहुत काल यहीं बीता था ।

सींग लगे नारियल– एक किसान फसलके पहिले नारियल भगवान् गुरुवायूरको चढ़ाने आ रहा था । मार्गमें डाकू मिल गये । किसानने प्रार्थना की–'सब कुछ ले लो; किन्तु भगवान्को चढ़ानेके नारियल मत लो ।'

डाकूने व्यंग किया–'गुरुवायूरके नारियलोंमें क्या सींग लगे हैं ?'

सचमुच उन नारियलोंमें सींग निकल आये । डाकू डरकर भाग गया । ये नारियल मन्दिरमें सुरक्षित हैं ।

मेलचिदम्बरम्

कोयम्बतूर स्टेशनसे ६.५ कि.मी. दूर पेरूर नामक स्थानमें मेलचिदम्बरम् मन्दिर है । कोयम्बतूर ये यहाँ तक बसें चलती हैं ।

इस तीर्थकी महत्ता चिदम्बरम्से अधिक मानी जाती है । मन्दिर विशाल है । निज मन्दिरमें शिवलिंग प्रतिष्ठित है । घेरेमें ही मरकतवल्ली (पार्वती) मन्दिर है ।

मन्दिर द्वारके समीप ध्वजस्तम्भ है । उसके समीप गोस्तन बना है । वहाँ दूध डालनेपर वह स्तनोंसे निकलता है और मन्दिरोंमें भीतर शिवलिंगपर गिरता है । यह अद्‍भुत शिल्प कौशल है ।

सुब्रह्मण्य-क्षेत्र

इसे कौमार क्षेत्र भी कहते हैं । स्कन्द-पुराणमें इसकी बहुत महिमा है । यह मैसूर राज्यके दक्षिण कनाडा जिलेमें है । निकटतम रेलवे स्टेशन मंगलौरसे १०७ कि.मी. है । वहाँसे बसें जाती हैं । लेकिन वर्षामें मार्ग कठिन हो जाता है ।

यहाँ मयूर-वाहन भगवान् सुब्रह्मण्यका विशाल मन्दिर है । देवालयके मुख्य भागमें ऊपरी चबूतरेपर सुब्रह्मण्यकी षडानन मूर्ति है । मध्य भागमें वासुकी नाग तथा निम्न भागमें शेषनाग प्रतिष्ठित हैं ।

भैरव मन्दिर—यह मुख्य मन्दिरके दक्षिण है । मुख्य मन्दिरके उत्तर-पूर्व आँगनमें उमा-महेश्वर मन्दिर है । इसमें सूर्य, अम्बिका, गणेश, महेश्वर तथा नृसिंहकी मूर्तियाँ हैं । प्रमुख मन्दिरके भीतरी आंगनमें दक्षिण पूर्व श्रीवेदव्यास-सम्पुट और नृसिंह-मन्दिर है । मुख्य मन्दिरके प्रांगणमें बाहरकी ओर होसलीगम्मा मन्दिर है ।

बंगलौर

यह प्रसिद्ध नगर है । दक्षिण-भारतकी यात्रा करके मद्रास न लौटना हो तो यात्रीको यहाँ आना पड़ता है । नगरमें अनेकों मन्दिर हैं । तीर्थके रूपमें यहाँ शृंगेरीके शंकराचार्यका एक मठ है । उसमें शंकराचार्यकी सुन्दर मूर्ति है । नगरमें सत्यनारायण-मन्दिर तथा

किलेसे १.५ कि.मी. पर गंगाधरेश्वर मन्दिर दर्शनीय हैं ।

शिवसमुद्रम्

बंगलौर-मैसूर लाइनपर बंगलौर सिटीसे ७५ कि.मी पर मद्दूर स्टेशन है । वहाँसे मडवल्ली बाजार २७ कि.मी. है । वहाँ तक मोटर-बस जाती हैं । मडवल्लीसे १९ कि.मी. पर शिवसमुद्रम् है । मोटर-बसें जाती हैं ।

कावेरीके मध्यमें पड़ने वाले तीन द्वीप हैं । तीनों ही रंगद्वीप माने जाते हैं और पवित्र तीर्थ हैं । ये हैं श्रीरंगपट्टन, शिवसमुद्रम् और श्रीरंगम् । शिवसमुद्रम्को मध्यरंगम् कहा जाता है ।

शिवसमुद्रम् द्वीप तीन कि.मी. लम्बा और पौन कि.मी. चौड़ा है । द्वीपके अन्तिम किनारे कावेरीकी दोनों धाराएँ २०० फुट नीचे गिरकरपरस्पर मिलती हैं । यह सुन्दर प्रपात है । यहाँ पश्चिमवाली धाराको गगन तीर्थ माना जाता है । पूर्व वाली शाखाका प्रपात फैला हुआ है । उसमें कई धारा हो गई हैं । अतः उसे सप्तधारा तीर्थ कहते हैं ।

शिवसमुद्रम्में श्रीरंग-मन्दिर है । शेषशायी नारायण मूर्ति है ।

यहाँसे ५ कि.मी. पर दक्षिण विडिगिरि रंग पर्वत है । पर्वतपर चम्पकारण्य क्षेत्रमें श्रीनिवास मन्दिर है । इसमें भगवान् विष्णुकी खड़ी मूर्ति है । प्रत्येक श्रीरंग मन्दिरका एक श्रीनिवास मन्दिर उससे एक योजनके भीतर होता ही है, यह बात स्मरण रखना चाहिये । यहाँ श्रीनिवासके समीप भार्गवी नदी है । परशुरामने यहाँ तप किया था ।

सोमनाथपुर

मडवल्ली बाजारसे १९ कि.मी. दक्षिण-पश्चिम यह स्थान है। मोटर-बसें जाती हैं।

यहाँ तीन मन्दिर हैं– १-प्रसन्नचेन्नकेशव, २-गोपाल-मन्दिर, ३-जनार्दन मन्दिर।

सोमनाथपुर, हालेविद तथा वेलूरके मन्दिर देशमें कलाकी दृष्टिसे सर्वोत्तम कोटिके हैं। सोमनाथपुरके तीनों मन्दिरमें अत्यन्त बारीक कलाकृतियाँ हैं। मन्दिरके बहिर्भागमें महाभारत, रामायण तथा भागवतकी बहुत-सी घटनाएँ सैकड़ों अच्छी बड़ी भव्य मूर्तियों द्वारा दिखलाई गई हैं। यहाँ प्राचीन विशाल शिव-मन्दिर है।

श्रीरंगपट्टन

मैसूरसे १५ कि.मी. पर यह स्टेशन है। समीप ही मन्दिर, कावेरी नदी तथा पान्थशाला (चोल्ट्री) है।

श्रीरंगपट्टन कावेरीके मध्य पड़नेवाला प्रथम द्वीप है। इसे आदिरंगम् कहते हैं। यह द्वीप ५ कि.मी. लम्बा, १.५ कि.मी. चौड़ा है। स्टेशन चौड़ाईके मध्य है, अतः दोनों ओर कावेरीकी धाराएँ हैं।

यहाँ श्रीरंगम् जैसी ही शेषशायी मूर्ति है; किन्तु वहाँ से छोटी है। महर्षि गौतमने यहाँ तप किया था। मूर्ति उन्हींके द्वारा स्थापित है।

श्रीरंग-मन्दिरके सामने ही लक्ष्मी-नृसिंह मन्दिर है। इस मन्दिरका पृष्ठ भाग रंग-मन्दिरके सम्मुख पड़ता है।

श्रीनिवास– श्रीरंगपट्टनसे ५ कि.मी. पूर्व बिडिगिरिरंग पर्वतपर श्रीनिवास-मन्दिर है । इसमें भगवान् नारायणकी खड़ी मूर्ति है । यह मन्दिर छोटा ही है ।

मैसूर

यह कर्नाटकका प्रसिद्ध महानगर है । रेलवे तथा मोटर बसोंका केन्द्र है । नगरमें पान्थशाला तथा होटल हैं । कई मठ हैं, जिनमें यात्री ठहर सकते हैं ।

मैसूर स्टेशनसे ५.५ कि.मी. दूर चामुण्डा-पार्वत है । पर्वतके ऊपर चामुण्डा देवीका मन्दिर है पर्वतपर जानेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं । मोटर-बसका मार्ग भी ऊपर तक है । पर्वतकी पैदल चढ़ाई सीढ़ियोंसे १.५ कि.मी. है ।

पर्वतपर एक घेरेमें महिषासुरकी मूर्ति है । उसके कुछ आगे चामुण्डादेवीका मन्दिर है । कई द्वार भीतर महिष-मर्दिनी चामुण्डाकी मूर्ति है । इंस मन्दिरसे थोड़ी दूरीपर प्राचीन शिव मन्दिर है, इस मन्दिरके भीतर ही पार्वती-मन्दिर भी है । परिक्रमामें अन्य देव मूर्तियाँ है ।

ऊपरसे सीढ़ियोंके मार्गसे लगभग एक तिहाई उतरनेपर नन्दीकी विशाल मूर्ति मिलती है । यह १६ फुटकी मूर्ति अपनी कलाके लिये प्रसिद्ध है ।

वृन्दावन उपवन– यह मैसूरसे ५ कि.मी. दूर है । नदीको रोककर धारा उपवनमें पहुँचाई गई है । फुहारोंमें रंगीन बत्तियाँ लगाकर अद्‌भुत सौन्दर्य उत्पन्न किया गया है । रविवारका रात्रिमें ८ बजेके लगभग ये प्रकाश फुहारोंको रंगकी वर्षाका विचित्र रूप

दे देते हैं ।

नंजनगुड

मैसूरसे २६ कि.मी. पर नंजनगुड-टाउन स्टेशन है । स्टेशनसे एक कि.मी. दूर मन्दिर है ।

यह विख्यात शिवक्षेत्र है । १०८ शैव दिव्य देशोंमें इसकी गणना है । इसे गरलपुरी कहा जाता है ।

यह स्थान कव्यानी तथा गुण्डल नदियोंके तटपर बसा है । चामुण्डा पर्वतसे केवल ३ कि.मी. दूर है ।

नञ्जुडेश्वर (नीलकण्ठ) शिवका यहाँ विशाल मन्दिर है । मुख्य स्थानपर लिंग मूर्ति है । एक ओर पार्वती-मन्दिर है । परिक्रमामें गणेश, कार्तिकादि अनेक देवताओंकी मूर्तियाँ हैं ।

प्रति महीने पूर्णिमाको यहाँ रथ-यात्रा उत्सव होता है । इनमें चैत्र तथा मार्गशीर्ष पूर्णिमाके उत्सव बड़े होते हैं ।

मेलूकोटे (यादवगिरि)

मैसूरसे ४८ कि.मी. और पाण्डवपुरा स्टेशनसे २९ कि.मी. दूर यह स्थान है । दोनों स्थानोंसे बसें मिलती हैं । यहाँ अच्छी धर्मशाला है ।

दक्षिणमें श्रीरामानुज-सम्प्रदायके चार मुख्य वैष्णव क्षेत्र हैं– १-श्रीरंगम् २-तिरुपति, ३-काञ्ची, ४-मेलूकोटे श्रीरामानुजाचार्यने ही इस तीर्थका जीर्णोद्धार किया । वे यहाँ १६ वर्ष रहे ।

यहाँ सम्पत्कुमार स्वामीका विशाल मन्दिर है । मन्दिरमें भगवान्

नारायणकी मूर्ति है । इस मन्दिरकी उत्सव मूर्तिका नाम सम्पत्कुमार है ।

मन्दिरके समीप कल्याण तीर्थ सरोवर है । उसके समीप ही परिधान शिला है । कहा जाता है कि भगवान् दत्तात्रेयने इस शिलापर संन्यास लिया था । श्रीरामानुजाचार्यने इस शिलापर काषाय वस्त्र तथा दण्ड रखकर फिरसे उन्हें ग्रहण किया । संन्यासी यहाँ जानेपर इसपरम्पराका पालन करते हैं ।

यहाँ पर्वतपर योगनृसिंहका मन्दिर है । नीचे श्रीनारायण-मन्दिरके समीप बेरका एक प्राचीन वृक्ष है । उसकी पूजा की जाती है ।

यहाँ ज्ञानाश्वत्थ, पञ्चभागवत-क्षेत्र, वाराह-क्षेत्र तथा अष्ट तीर्थ हैं । इनमें दर्शन तथा स्नान किया जाता है ।

कथा– श्रीरामानुजाचार्य अपने प्रवास कालमें इधर आये और तोण्डनूर (भक्तपुरी) में ठहरे । उनके समीप तिलक करनेकी श्वेतमृत्तिका (तिरुमण) का अभाव हो गया । उसके सम्बन्धमें सोचते सोये । रात्रिमें स्वप्नमें देखाकि श्रीनारायण कह रहे हैं–'मेरे समीप बहुत तिरुमण है ।'

प्रातः उठकर आचार्यने वहाँके नरेश तथा सेवकोंको साथ लिया । स्वप्नमें निर्दिष्ट स्थानपर भूमि खोदनेसे श्रीनारायणकी मूर्ति तथा बहुत-सी श्वेत मृत्तिका मिली । वही मूर्ति मन्दिरमें प्रतिष्ठित है ।

एक कथा सम्पत्कुमारके सम्बन्धमें भी कही जाती है कि आचार्य उसे दिल्लीके बादशाहसे ले आये; किन्तु यह कथा प्रामणिक नहीं है । आचार्यके जीवन कालमें दिल्लीमें यवनं शासन ही नहीं हुआ था ।

बाणावर

बंगलौर–पूना लाइनपर अरसीकेरे जं. से १६ कि.मी. पर बाणावर स्टेशन है । यहाँ एक घेरेमें होयसलेश्वर मन्दिर है । मन्दिरमें विशाल शिवलिंग है । पार्वतीकी मूर्ति भी है ।

समीप ही केदारेश्वर मन्दिर है । ये दोनों मन्दिर सोमनाथपुरके समान ही कलापूर्ण हैं ।

बेलूर (बेलापुर)

वाणावर स्टेशनसे यह २९ कि.मी. दक्षिण-पश्चिम है । यह स्थान मोटर बसोंका केन्द्र है । वाणावरसे वसें यहाँ आती हैं । ठहरनेके लिये डाकबंगला है । समीप ही मागची नदी बहती है ।

यहाँका मुख्य मन्दिर चेन्नकेशवका है । यह नक्षत्राकृति बना है । भगवान् चेन्नकेशवकी सात फुट ऊँची चतुर्भुज मूर्ति इसमें है ।

चेन्नकेशव मन्दिरके दक्षिण चेन्निंगराय मन्दिर है । इसमें गणेश, सरस्वती, लक्ष्मी-नारायण, लक्ष्मी-श्रीधर और महिषमर्दिनीकी मूर्तियाँ हैं । ये देशकी सुन्दरतम सजीवसी मूर्तियाँ हैं । वेणु गोपालकी भी एक मूर्ति इसमें है ।

मन्दिरके पिछले एवं पार्श्वभागमें विविध अवतार कथाओंकी सैकड़ों कलापूर्ण मूर्तियाँ हैं ।

मन्दिरके घेरे में ही कई और मन्दिर हैं । उनमें-से एक लक्ष्मी-मन्दिर और एक शिव-मन्दिर है । शिव-मन्दिरमें सात फुट ऊँची लिंग मूर्ति है ।

हालेबिद

वाणावर स्टेशनसे २९ कि.मी. और बेलूरसे १६ कि.मी. पर यह छोटा ग्राम है । मोटर-बसें आती हैं । यहाँ भी डाक बंगला है । इस स्थानका प्राचीन नाम द्वारसमुद्र है ।

एक घेरेके भीतर ऊँचे चबूतरेपर यहाँका मुख्य मन्दिर हायसलेश्वरका है । यह मन्दिर दो भागोंमें विभाजित है । उत्तरके भागमें संतलेश्वर लिंग है । दक्षिण भागमें हायसलेश्वर लिंग है । मन्दिरके आगे नंदी है । नन्दी मण्डपके दक्षिणके मण्डपमें सूर्यकी मूर्ति है ।

इनके अतिरिक्त श्रीकेदारेश्वरका छोटा मन्दिर है । इन तीनों ही मन्दिरोंकी कलाकृतियोंकी तुलना अन्यत्र नहीं पायी जाती ।

हायसलेश्वर मन्दिरसे दो फर्लांग दूर तीन जैन मन्दिर है । इनमें पश्चिम पार्श्वनाथ मन्दिरमें २४ तीर्थंकरोंकी मूर्तियाँ हैं । मध्यमें आदिनाथका और पूर्वमें शान्तिनाथजीका मन्दिर है ।

हरिहर

बंगलौर– हुबली लाइनपर हुबलीसे १२९ कि.मी. पर हरिहर स्टेशन है । यह नगर तुंगभद्राके तटपर वसा है । स्टेशनसे मन्दिर १ कि.मी. है । मन्दिरके पीछे ही नदी है । इस क्षेत्रका प्राचीन नाम गुहारण्य है ।

मन्दिरके आस-पास कई शिला लेख हैं । मन्दिरमें हरिहरात्मक मूर्ति है । समीप ही देवीका मन्दिर है ।

यहाँ तुंगभद्रामें ११ तीर्थ हैं– १-ब्रह्मतीर्थ, २-भार्गवतीर्थ, ३-नृसिंहतीर्थ, ४-वह्नितीर्थ, ५-गालवतीर्थ, ६-चक्र-तीर्थ, ७-रुद्रपादतीर्थ, ८-पापनाशनतीर्थ, ९-पिशाचमोचन, १०-ऋणमोचन और ११-वटच्छायातीर्थ ।

कथा– यहाँ ब्रह्माके वरदानसे अजेय बना गुह राक्षस रहता था । देवता उसके अत्याचारसे तंग आकर ब्रह्माजीके साथ वैकुण्ठ गये । विष्णु भगवान्ने अपने दाहिने भागमें शंकरजीको स्थित किया और हरिहर रूपसे उसे मारा । मरते समय गुहने भगवान्से इसी रूपमें स्थित रहनेकी प्रार्थना की ।

शृंगेरी

बंगलौर– पूना लाइनपर विरूर स्टेशनसे शृंगेरी ९५ कि.मी. है । विरूर, चिकमंगलूर या मंगलौरसे बसें यहाँ तक आती हैं । यहाँ धर्मशाला है ।

यह छोटा-सा नगर तुंगा नदीके किनारे बसा है । श्रीशंकराचार्यके मुख्यपीठोंमें यह है ।

तुंगा नदीपर पक्के घाट हैं । घाटपर ही श्रीशंकराचार्यका मठ है । इस मठके घेरेमें शारदाजी तथा विद्यातीर्थ महेश्वरके मन्दिर हैं ! इन दोनोंकी स्थापना आदिशंकराचार्यने की थी ।

बस्तीके पासमें एक छोटी पहाड़ी है । उसपर जानेको सीढ़ियाँ बनी हैं । ऊपर विभाण्डकेश्वर शिव-मन्दिर है । शृंगी ऋषिके पिता विभाण्डक मुनिका यहाँ आश्रम ग । उन्होंने यह मूर्ति स्थापित की है ।

शृंगगिरी– शृंगेरीसे १५ कि.मी. पश्चिम यह पर्वत शृंगी ऋषिकी जन्मभूमि है । इस पर्वतमें विभिन्न स्थानोंपर तुंगा, भद्रा, नेत्रावती तथा वाराही नदियोंके उद्गम हैं । इनके उद्गम स्थान पवित्र तीर्थ माने जाते हैं ।

उदीपी

शृंगेरीसे उदीपीको मोटर बसें चलती हैं; किन्तु यह मार्ग वहुत लम्बा है । उदीपीसे निकटतम रेलवे स्टेशन मंगलौर ६० कि.मी. दूर है । वहाँसे मोटर-बसें बरावर चलती हैं ।

पश्चिमीघाट तथा अरब सागरके मध्य जो संकरा भूभाग कन्याकुमारीसे गोकर्ण तक है, यह पूरापरशुरामक्षेत्र है । इसी क्षेत्रके अन्तर्गत उदीपी है । इसका प्राचीन नाम उडुपा था । इसका अर्थ है नक्षत्र पालक चन्द्रमा । यहाँ चन्द्रमाने तप करके भगवान् शिवके मस्तकपर स्थान प्राप्त किया था । यहाँ मध्वाचार्यके ८ मठ हैं । उनमें यात्री ठहरते हैं ।

द्वैतमंतके प्रतिष्ठाता श्रीमध्वाचार्यकी जन्मभूमि उदीपीसे १० कि.मी. दूर वेल्ले ग्राम है । उदीपीमें उन्होंने श्रीअनन्तेश्वर मन्दिरके अच्युत प्रकाशाचार्यसे दीक्षा ली थी ।

श्रीकृष्ण मठ– यही यहाँका मुख्य मन्दिर है । द्वारमें प्रवेश करते ही मध्व सरोवर है । इसमें स्नान करके मन्दिरमें प्रवेश करनेपर पहिले मध्वाचार्यकी मूर्ति है । मुख्य मन्दिरमें गरुड़का मन्दिर है और ठीक उसकी विपरीत दिशामें मुख्य प्राणका मन्दिर है । श्रीवादिराज स्वामी ये मूर्तियाँ अयोध्यासे ले आये थे ।

मुख्य मन्दिरमें दाहिने हाथमें मथानी लिये श्रीकृष्णकी अत्यन्त

सुन्दर मूर्ति है । बायें हाथमें मन्थन रज्जु है । मन्दिरमें श्रीमध्वाचार्यके द्वारा जलाया प्रदीप अखंड जल रहा है ।

मध्व सरोवरके बीचके मंडपमें गंगामूर्ति है । वहाँ तक पुल बना है ।

अनन्तेश्वर– श्रीकृष्णमठके बाहर यह मन्दिर है । इसके पूर्व चन्द्रमौलीश्वर मन्दिर है । रथ यात्राके दिन अनन्तेश्वर और चन्द्रमौलीश्वर एक ही रथमें विराजते हैं ।

श्रीमध्वाचार्यके आठ शिष्योंके आठ मठ उदीपीमें हैं । श्रीअडमार मठमें कालिय-मर्दन श्रीकृष्ण हैं । पुत्तिगे मठमें श्रीविट्ठल हैं । शिरूर मठमें भी विट्ठल हैं । इनके अतिरिक्त पालीमार मठ, श्रीकृष्णपुर मठ, सोड़ेमठ, कणियूर मठ तथा पेजावर मठ– ये मुख्य मठ हैं । दूसरे भी आठ और मठ हैं ।

अब्जारण्य तीर्थ– यहाँ चन्द्रमाने तप किया था ।

इन्द्राणी– उदीपीसे ५ कि.मी. पूर्व । यहाँ शचीने तप किया था । यहाँ दुर्गाका मन्दिर है । उसमें ५ स्वयम्भू शालग्राम हैं । नीचे झरनेके पास मारुति-मन्दिर है ।

उदीपीके चारों ओर ३ कि.मी. या कम दूरीपर चार दुर्गा मन्दिर हैं । चारों कोणोंपर चार सुब्रह्मण्य-मन्दिर हैं ।

६ कि.मी. दूर समुद्र तटपर मध्वाचार्य द्वारा स्थापित बलरामजीका मन्दिर बडाभाण्डेश्वरमें हैं ।

शालग्राम-क्षेत्र

उदीपीसे बस द्वारा कुन्दापुर आते समय मार्गमें शालग्राम बाजार

मिलता है । यह प्राचीन शालग्राम क्षेत्र है । यहाँ बाजारमें भगवान् नारायणका विशाल मन्दिर है । दूसरा मन्दिर कोटीश्वर महादेवका है ।

पंचाप्सरस-क्षेत्र

कुन्दापुरसे बस द्वारा गंगोली बाजार आना चाहिये । गंगोलीका अर्थ है गंगावली– कई नदियोंका संगम । यह पुराण प्रसिद्ध पञ्चाप्सरस तीर्थ है; किन्तु अब लुप्त प्रायः है । केवल पासके लोग श्राद्ध करने यहाँ आते हैं । कोई मन्दिर नहीं है ।

मूकाम्बिका

कुन्दापुरसे ४८ कि.मी. पर कुल्लूर स्थान है । यहाँ कुन्दापुर या चिकमंगलूरसे मोटर-बसमें आ सकते हैं ।

यहाँ मूकाम्बिका देवीका मन्दिर है ।परशुरामजी द्वारा स्थापित सात मुक्ति क्षेत्रोंमें यह एक है । मन्दिर विशाल है । यह सौपर्णी नदीके तटपर है । मन्दिरमें ही स्वर्ण रेखांकित शिवलिंग है ।

अम्बुतीर्थ

बीरूर– तालगुप्प लाइनके शिमोगा स्टेशनसे यह स्थान ७० कि.मी. है । मोटर-बसें चलती हैं । यात्री श्रीराम-मन्दिर तथा धर्मशाला में ठहरते हैं ।

अभिषेक सरोवर है । इससे बहती हुई नदी जोगकूप नामक स्थानपर गिरती है । इसे जोग-निर्झर भी कहते हैं ।

जोगप्रपात— इसे जरसोपा या जोगफाल कहते हैं । विश्वके यह बड़े प्रपातोंमें है । शरावती नदीका जल १ कि.मी. की चौड़ाईमें ९६० फुट ऊँचेसे १३२ फुट गहरे कुण्डमें गिरता है ।

यहाँ ४ प्रपात हैं । इनमें पहिला सबसे बड़ा है । दूसरेको गर्जने वाला प्रपात कहते हैं । तीसरा अग्निवाण (राकेट) प्रपात है इसमें जलधारा फुहारा बनकर गिरती है । चौथा सुकुमार प्रपात बहुत सुन्दर दीखता है ।

गोकर्ण

अथ गोकर्णमासाद्य त्रिषुलोकेषु विश्रुतम् ।
समुद्रमध्ये राजेन्द्र सर्वलोकनमस्कृतम् ।।

तीनों लोकोंमें प्रसिद्ध सर्वलोक नमस्कृत गोकर्ण-तीर्थ समुद्रके लगभग बीचमें जैसा है ।

मार्ग— बंगलौर-पूना लाइनपर हुबली स्टेशन ही यहाँ जानेका उपयुक्त स्टेशन है । यहाँसे गोकर्ण १६० कि.मी. है । लेकिन सीधी मोटर-बसें जाती हैं ।

गोकर्णमें भगवान् शंकरका आत्म-तत्त्व लिंग है । यात्रीको मन्दिरमें केवल अरघा दीखता है । उसके भीतर आत्मतत्त्वलिंगका शिरोभाग मात्र दीखता है । उसीकी पूजा होती है । प्रति बीस वर्षमें अष्टबन्धन महोत्सव होता है । तब सप्तपीठों और अष्टबन्धोंको निकालकर नवीन अष्टबन्ध बैठाये जाते हैं । उसी समय आत्म-तत्त्वलिंगका स्पष्ट दर्शन होता है । यह मूर्ति मृगशृंगके समान है । इसका नाम महाबलेश्वर है ।

पातालमें तपस्या करते हुए भगवान् रुद्र गोरूप धारिणी पृथ्वीके कर्णरन्ध्रसे यहाँ प्रगट हुए । इनके समीप ही कलकलेश्वर लिंगमूर्ति है ।

बाहर सभा मण्डपमें गणेशजी तथा पार्वतीकी मूर्तियाँ हैं । उनके मध्यमें नन्दी-मूर्ति है । महाबलेश्वर तथा चन्द्रशालाके मध्य शास्त्रेश्वर लिंग है । उसके पूर्व वीरभद्र हैं । मुख्य मंन्दिरके समीप सिद्ध गणपति हैं । इनके मस्तकपर रावण द्वारा आघात करनेका चिह्न है । लिंग दर्शनसे पूर्व इनका पूजन होता है ।

मन्दिरके अग्निकोणमें कोटितीर्थ है । वहाँ सप्तकोटीश्वर लिंग तथा नन्दी-मूर्ति है । पश्चिममें काल भैरव मन्दिर है । समीप ही शंकर-नारायणका छोटा मन्दिर है । उसके पास वैतरणी तीर्थ है ।

कोटितीर्थके दक्षिण अगस्त्यमुनिकी गुफा है । उसके आगे भीमगदा-तीर्थ, ब्रह्मतीर्थ, तथा विश्वामित्रेश्वर लिंग-मूर्ति एवं विश्वामित्र-तीर्थ है ।

पासमें ताम्राचल पर्वतसे ताम्रपर्णी नदी निकली है । नदीके पास ताम्रगौरीका छोटा मन्दिर है । उसके उत्तर रुद्रभूमि-श्मशान स्थली है ।

गोकर्ण ग्राममें श्रीवेंकटेश्वर-रमण भगवान्‌का मन्दिर है । ये पुरीके रक्षक माने जाते हैं । क्षेत्रदेवी भद्रकाली हैं । इनका मन्दिर गोकर्णके द्वारदेशपर है । वहाँ दुर्गा कुण्ड, कालीह्रद तथा खंडगतीर्थ है ।

समुद्र किनारे शतशृंग पर्वत है । वहाँ कमंडलु-तीर्थ, गरुड़-तीर्थ, अगस्त्य-तीर्थ, गरुड़-मण्डप, अगस्त्य-मंडपं तथा समुद्रतटपर कोटितीर्थ एवं विधूतपाप-स्थली तीर्थ हैं ।

गोकर्ण क्षेत्रकी परिक्रमा की जाती है । परिक्रमामें पचाससे भी अधिक तीर्थ हैं । इनमें अधिकांश समुद्र तटपर हैं ।

कथा– गोकर्णकी कथा गोला गोकर्णनाथके वर्णनमें (पृ०-५७पर) दी जा चुकी है । एक कथा यह है कि रावणकी माता कैकसी बालुका लिंगका पूजन करती थी । समुद्र तटपर पूजन करते समय बालुका लिंग लहरोंसे बह गया । इससे माताको दुःखी देख रावण कैलास गया और तप करके शंकरजीसे आत्मतत्त्व लिंग उसने प्राप्त किया । कैलाससे चलकर रावण यहाँ सन्ध्याके समय पहुँचा । एक ब्राह्मणको वह मूर्ति देकर शौचादि कर्ममें लगा । ब्राह्मण तो गणेशजी बने थे, उन्होंने मूर्ति भूमिपर रख दी । रावण लौटा तो मूर्ति उठी नहीं । खीझकर गणेशके मस्तकपर उसने चोटकी और निराश होकर लंका चला गया ।

कुमारस्वामी

बंगलौर– पूना लाइनके स्टेशन हुबलीसे मोटर-बसें सुण्डूर तक जाती हैं । सुण्डूरसे आगे १० कि.मी. पैदल मार्ग हैं ।

यहाँ क्रौञ्चगिरिपर स्वामी कार्तिकका भव्य मन्दिर है । दक्षिण भारतके ६ प्रधान सुब्रह्मण्य तीर्थोंमें यह प्रधान माना जाता है ।

मन्दिर विशाल है । पाँच गोपुर पार करनेपर विस्तृत प्रांगण है । उसके बाद एक गोपुर पार करके निज मन्दिर है । मन्दिरके आसपास गणेशजीके तथा अन्य भी तीन-चार मन्दिर हैं ।

गणेशजीसे विवादमें हारकर स्वामी कार्तिक कैलाससे श्रीशैलपर आ गये । उमा-महेश्वर जब पुत्रसे मिलने वहाँ आये तो ये यहाँ क्रौञ्चगिरिपर आ बसे । पुत्र स्नेहवश शिव-पार्वती श्रीशैलपर ही रह

गये और स्वामी कार्तिकका मुख्य स्थान यह पर्वत बन गया ।

हम्पी (किष्किन्धा)

हुबली-बैजवाड़ा लाइनपर होसपेट प्रसिद्ध स्टेशन तथा नगर है । यहाँ तुंगभद्रका प्रसिद्ध बाँध है । होसपेटसे हम्पीका केन्द्रस्थल १४ कि.मी. है । मोटर-बसें चलती हैं ।

विजय नगरकी प्राचीन राजधानीको अब हम्पी कहा जाता है । यह भग्न मन्दिरोंका महानगर है । इसका घेरा ३८ कि.मी. में है । अतः यहाँ संक्षिप्त वर्णन ही दे पाना सम्भव है ।

विरूपाक्ष मन्दिर– मोटर-बसोंके उतारनेके स्थानसे कुछ दूर वाम ओर मन्दिरकी मुख्य सड़क है । यहाँ यात्री मन्दिरके घेरेमें ठहर सकते हैं । मन्दिरके बाहर दुकानें हैं ।

मन्दिरके सामने काष्ठके दो रथ हैं । मन्दिरके आँगनमें तुंगभद्राकी नहर है । वहाँ पश्चिम गणेश तथा पार्वती मन्दिर हैं । छोटे गोपुरसे भीतर जानेपर मण्डपों तथा भवनोंमें विभिन्न देवताओंकी मूर्तियाँ हैं । निज मन्दिर सभा-मण्डपसे लगा है । उसमें विरूपाक्ष लिंग है । उसपर स्वर्णकी शृंगार मूर्ति स्थापित रहती है ।

इस मन्दिरके उत्तर मण्डपमें भुवनेश्वरी, पार्वती, गणेश तथा नवग्रह मूर्तियाँ हैं । मन्दिरके पश्चिमके आँगनमें एक द्वारसे भीतर जाकर कुछ सीढ़ी चढ़कर मन्दिरके पीछे दो आंगन हैं । एकमें स्वामी विद्यारण्यकी समाधि है । वहीं श्रीमाधवाचार्य (विद्यारण्य स्वामी) की मूर्ति है ।

बाहर– मन्दिरके पिछले भागके द्वारसे बाहर जानेपर पक्के घाटका सरोवर है । वहाँ शिव-मन्दिर है ।

मन्दिरके सम्मुख द्वारसे लौटकर चलें तो तुंगभद्रा तटपर जाते हैं । मार्गमें दाहिनी ओर एक सरोवर है । तुंगभद्रामें स्थान-स्थानपर शिलाएँ हैं । उनमें एक शिलापर नन्दी मूर्ति है ।

विरूपाक्ष मन्दिरके उत्तर हेमकूट पर्वतपर कई मन्दिर हैं । विरूपाक्ष मन्दिरसे अग्निकोणमें ऊँची भूमिपर मंडपमें १२ हाथ ऊँची गणेश मूर्ति है । यह देशकी एक पत्थरकी विशालतम गणेश मूर्ति है ।

बड़े गणेशसे पश्चिम ऊँची पहाड़ी है । वहाँ गुफाके भीतर जानेपर कोठरियाँ तथा आंगन है । वहाँ महात्मा शिवरामकी समाधि है । उनकी मूर्ति भी है । इस गुफाके आंगनके एक द्वारसे जानेपर एक सरोवर है । दूसरे द्वारसे कुछ सीढ़ी उतरें तो रामशिला वेदी है । यहाँ बहुत चौड़ा स्थान है ।

बड़े गणेशसे दूर दक्षिण-पश्चिम एक मंडपमें गणेशकी भग्न मूर्ति है । इनसे ५० गजपर श्रीकृष्ण मन्दिर है । पर इसमें अब मूर्ति नहीं है । यहाँसे एक मार्ग विजय नगरके राजभवनको जाता है । वहाँ विशाल गोपुर, प्राकार आदि हैं ।

राजभवनसे दक्षिण-पश्चिम खेतोंके किनारे थोड़ी दूर जानेपर नृसिंहकी विशाल मूर्ति है । मस्तकपर शेषनागका फण छत्र है । यह मूर्ति १५ हाथ ऊँची है । सिंहासन तथा शेषतक एक पत्थरमें बनी है ।

नृसिंह-मन्दिरके पास उत्तर एक छोटे मन्दिरमें प्रणवांकित विशाल शिवलिंग है । इसका अरघा भूमिसे ६ फुट ऊँचा है । अरघेके चारों ओर जल भरा रहता है ।

माल्यवान पर्वत (स्फटिक शिला)– यह विरूपाक्ष मन्दिरसे ६.५

कि.मी. पूर्वोत्तर है । इसका एक नाम प्रवर्षणगिरि है । होसपेटसे यहाँ तक सीधी सड़क है । मोटर-बससे सीधे यहाँ आ सकते हैं । श्रीराम-लक्ष्मणने यहाँ ४ मास व्यतीत किये थे ।

सड़कके पाससे पहाड़ीपर जानेका मार्ग है । गोपुरके भीतर आँगनके मध्य सभामण्डप है । मन्दिरमें श्रीराम, लक्ष्मण, जानकीकी बड़ी मूर्तियाँ हैं । सप्तर्षियोंकी भी मूर्तियाँ हैं । यह मन्दिर एक शिलामें गुफा बनाकर बना है । मन्दिरके दक्षिण-पश्चिम रामकचहरी मण्डप है । पासमें जलकुण्ड है । कहते हैं कि इसे श्रीरामने बाण मारकर प्रगट किया था । मन्दिरके पिछले भागमें कुछ ऊँचाईपर लक्ष्मण नामक एक दरार है । उसमें जल रहता है । इसे श्रीरामके श्राद्ध करनेके लिये लक्ष्मणने प्रगट किया । पासमें शिला पिण्डियाँ हैं । एक छोटे गुफा-मन्दिरमें शिवलिंग है । मन्दिरके पूर्व भागमें शिखरपर रामझरोखा तथा लक्ष्मण झरोखा नामक छोटे मंडप हैं । इस मन्दिरसे पक्की सड़कसे १.५ कि.मी. भर दूर सुग्रीवका मधुवन है ।

ऋष्यमूकपर्वत– विरूपाक्ष-मन्दिरके सामनेकी सड़कसे चलें तो मार्ग ऊँचा-नीचा होता ऋष्यमूक पर्वत तक जाता है । तुंगभद्राका प्रवाह धनुषाकार यहाँ है । अतः नदीमें चक्रतीर्थ माना जाता है । नदी यहाँ गहरी है । उसमें घड़ियाल भी यहाँ हैं ।

यहाँ पहाड़ीके नीचे श्रीराम-मन्दिरमें राम, लक्ष्मण, सीताकी मूर्तियाँ हैं । मन्दिरके समीपकी पहाड़ी मतंग पर्वत है । इसपर मतंग ऋषिका आश्रम था । ऊपर एक मन्दिर है । तुंगभद्राके उस पार यहाँ दुन्दभि पर्वत है ।

चक्रतीर्थसे आगे– कुछ दूरीपर गन्धमादनके नीचे मण्डपकी भित्तिमें विष्णु मूर्ति खुदी है । समीपसे पर्वतपर जानेका मार्ग है ।

ऊपर एक गुफामें शेषशायी श्रीरंगनाथकी मूर्ति है ।

आगे चलकर सीताकुण्डके तटपर सीताजीके चरण-चिह्न हैं । लंकासे लौटकर श्रीजानकीने यहाँ स्नान किया था । एक शिलापर साड़ीका चिह्न है । गुफामें श्रीराम, लक्ष्मण, जानकीकी मूर्तियाँ हैं ।

विट्ठल मन्दिर— सीताकुण्डसे आगे नदी तटपर ऊँचाईपर श्रीविट्ठलके चरण-चिहन हैं । इससे कुछ पूर्व हम्पीक्षेत्रका सबसे विशाल एवं कलापूर्ण विट्ठल मन्दिर है । यहाँ पत्थरका गजरथ, अनेकों मंडप तथा मन्दिर हैं ।

राजभवन— विरूपाक्ष मन्दिरसे ५ कि.मी. दक्षिण है । इसकी निर्माण-कला दर्शनीय है ।

हजार राम मन्दिर— राजभवनसे उत्तर थोड़ी दूरीपर बहुत बड़े घेरेमें है । दीवारोंपर रामचरितकी पूरी लीला मूर्तियोंमें है । श्रीकृष्णावतार तथा अन्य देवताओंकी मूर्तियाँ भी दीवारोंपर है । वैसे मन्दिरमें पूज्य मूर्ति कोई नहीं है । हम्पीके पूरे क्षेत्रमें प्रायः भग्न मन्दिर हैं ।

किष्किन्धा— विट्ठल-मन्दिरसे १.५ कि.मी. पूर्व मार्ग उत्तर मुड़ता है । कुछ दूर आगे तुंगभद्रा नदीकी तीव्र धाराको चमड़ेसे मढ़े टोकरेमें बैठकर पार करना पड़ता है । एक टोकरेमें ४-५ आदमी वैठते हैं । नदीपार १ कि.मी. पर अनागुन्दी ग्राम है । इसीको प्राचीन किष्किन्धा कहते हैं । गाँवके दक्षिण तुंगभद्राके तटपर कुछ मन्दिर हैं । इनमें बालिकी कचहरी, लक्ष्मी-नृसिंह मन्दिर तथा चिन्तामणि गुफा मन्दिर मुख्य हैं ।

इससे आगे सप्तताल़ वेधका स्थान है । एक शिलापर श्रीरामके बाण रखनेका चिह्न है । इसके सामने तुंगभद्राके पार बालि-वधका

स्थान है । उसी पार तारा, अंगद तथा सुग्रीव पर्वत हैं ।

सप्तताल वेधसे पश्चिम एक गुफा है । वहाँ श्रीरामने वालि-वधके पश्चात् विश्राम किया था । उसके पीछे हनुमान पहाड़ी है ।

पंपासर– अनागुंदी ग्रामसे एक सड़क पश्चिम जाती है । उससे पम्पासर ३ कि.मी. है । पहिले मार्गमें सड़कसे कुछ दूर पहाड़के मध्यभागमें गुफामें श्रीरंगजी तथा सप्तर्षियोंकी मूर्तियाँ हैं ।

इसके आगे पर्वतके पास ही पंपासर है । यह छोटा-सा सरोवर है । इसके समीप पर्वतपर कई जीर्ण-मन्दिर हैं । उनमें एकमें लक्ष्मी-नारायण मूर्ति है । एकमें चरण चिह्न हैं । उसी पर्वतपर शबरी-गुफा है ।

सच बात है कि जहाँ आज होसपेट नगर है वहाँ पम्पासर था । ऊँचाईसे देखनेपर नगर भूमि स्पष्ट नीची दीखती है ।

अंजनी पर्वत– पम्पासरसे १.५ कि.मी. दूर है । ऊपर एक गुफा मन्दिरमें माता अंजनी तथा हनुमानजीकी मूर्ति है । लेकिन चढ़नेका मार्ग बहुत अटपटा है ।

दक्षिण मध्य भारत ◉◉◉◉◉◉◉◉◉◉◉

वाई

बंगलौर-पूना लाइनपर मीरजसे १३८ कि.मी. दूर वाठर स्टेशन है । वहाँसे वाई ३२ कि.मी. है । मोटर-बसें जाती हैं । यह पुराण प्रसिद्ध क्षेत्र कृष्णा नदीके किनारे है । यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं ।

वृहस्पतिके कन्याराशिमें रहनेपर यहाँ स्नान वर्ष भर पुण्यप्रद माना जाता है ।

कृष्णानदीके पेशवाघाटपर यज्ञेश्वर शिव तथा मारुति-मन्दिर है । समीपमें काशी-विश्वनाथ मन्दिर है । आगे भानुघाट तथा जोशीघाट हैं । कुछ उत्तर उमा-महेश्वरका भव्य मन्दिर है । इसमें चारों दिशामें सूर्य, गणेश, लक्ष्मी तथा नारायणकी मूर्तियाँ हैं । इससे थोड़ी दूरीपर कालाराम मन्दिर है । आगे मुरलीधर मन्दिर है ।

गंगपुरी मुहल्लेमें वहिरोबा मन्दिर तथा दत्तमन्दिर हैं । कटिंजन घाटपर (सत्यपुरीमें) एक मंडपमें गणपति, विष्णु तथा महिषमर्दिनी मूर्ति हैं । पासके घाटपर ओंकारेश्वर मन्दिर है । समीप ही राम मन्दिर तथा काशीविश्वेश्वर मन्दिर हैं ।

गणपतिआली मुहल्लेके घाटपर गंगा-रामेश्वर तथा भुवनेश्वर मन्दिर हैं । यहाँ गणपति मन्दिरमें गणेशजीकी ७ फीट ऊँची मूर्ति है । इसके पास १४ शिखरों वाला विश्वेश्वरका विशाल मन्दिर है । मुहल्लेमें गोविन्द, रामेश्वर, मुरलीधर, दत्त आदिके कई मन्दिर हैं ।

धर्मपुरीमें घाटपर रामेश्वर मन्दिरके पास बादामीकुण्ड है । समीप ५ कुण्ड और हैं । यहाँ मारुति मन्दिर, कृष्णा-मन्दिर तथा त्रिशूलेश्वर मन्दिर हैं । नरहरिका स्थान, अष्ट विनायक मूर्ति तथा हरिहरेश्वर एवं दत्त मन्दिर एक क्रममें यहाँ हैं । दत्त मन्दिरके पश्चिम पञ्चमुख मारुति तथा नागोवा मन्दिर हैं । इस मुहल्लेमें व्यंकटेश, श्रीराम, महालक्ष्मी तथा महाविष्णु मन्दिर हैं ।

जूनी वाईमें ब्राह्मण शाही मुहल्लेके घाटपर चक्रेश्वर शिव मन्दिर, मारुति मन्दिर, हरिहरेश्वर तथा कालेश्वर मन्दिर हैं । विठोवा तथा गणपति मन्दिर घाटपर ही हैं । कुछ दूर प्राचीन गणपति मन्दिर है । आसपास काल-भैरवेश्वर, मारुति, बिन्दुमाधव, काशीविश्वेश्वर, भवानी, कौरवेश्वरादि मन्दिर हैं ।

रामदोह मुहल्लेके घाटपर रामेश्वर मन्दिर है । मन्दिरके दक्षिण रामकुण्डमें कन्याके गुरु होनेपर गंगाकी धारा प्रगट होती है । कुण्डके पास देवी तथा वागेश्वर मन्दिर हैं ।

रविवारपेठमें घाटपर भीमाशंकर मन्दिरके सामने भीमकुण्ड तीर्थ है । बाजारमें विशाल विठोवा मन्दिर तथा मारुति-मन्दिर है ।

इसका प्राचीन नाम वैराज क्षेत्र है ।

महाबलेश्वर

वाठर स्टेशनसे यह स्थान ६४ कि.मी. तथा पूनासे १२५ कि.मी. है । मोटर बसें दोनों स्थानोंसे जाती हैं । यहाँ वर्षा बहुत होती है ।

यह स्थान कृष्णा नदीका उद्गम होनेसे पवित्र तीर्थ है । पर्वतसे धारा एक कुण्डमें आती है । वहाँसे गोमुखसे निकलती है ।

यहाँ मूल महाबलेश्वर तथा नवीन महाबलेश्वर मन्दिरोंमें ५ कि.मी. का अन्तर है । तीसरा मन्दिर कोटीश्वरका है ।

कथा– ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनोंने यहाँ तप किया । ब्रह्माके यज्ञमें अतिबल तथा महाबल नामक असुरोंने विघ्न डाला । अतिबल को भगवान् विष्णुने मारा । महाबल पुरुष द्वारा अवध्य था, अतः उसे देवीने मारा ।

यहाँ महाबलेश्वर रूपसे भगवान् शिव, अतिबलेश्वर रूपसे विष्णु तथा कोटीश्वर रूपसे ब्रह्माजी स्थित हैं ।

यहाँ पाँच नदियोंका उद्गम है– १-सावित्री, २-कृष्णा, ३-वेण्या, ४-ककुद्मती (कोयन) ५-गायत्री ।

महाबलेश्वर मन्दिरमें लिंग मूर्तिपर रुद्राक्षके समान छिद्र हैं । ये जलसे भरे रहते हैं । उनसे बराबर जल निकलता रहता है । उसीसे पांचों नदियाँ निकलती हैं । मूर्तिपर आवरण चढ़ाकर तब शृंगार करते हैं, जिससे वह भीग न जाय । मन्दिरके बाहर कालभैरव मूर्ति है । ब्रह्माजीकी यज्ञस्थली महाबलेश्वर मन्दिरसे ५ कि.मी. दूर वनमें हैं । इसे ब्रह्मारण्य कहते हैं । वन भयावना है ।

यहाँ कृष्णाबाईका प्राचीन मन्दिर है । समीप बलभीम मन्दिरमें समर्थ रामदास स्वामी द्वारा स्थापित मारुति हैं । पास ही रुद्रेश्वर मन्दिर, रुद्रतीर्थ, हंसतीर्थ, चक्रतीर्थ, पितृमुक्ति तीर्थ, मलापकर्ष तीर्थ आदि कई तीर्थ हैं ।

कृष्णाबाई मन्दिरमें ब्रह्मकुण्ड तीर्थमें पांचों नदियोंका प्रवाह आता है । इस कुण्डका स्नान महापुण्यप्रद है ।

पण्ढरपुर

वम्बई-पूना-रामचूर लाइनपर कुर्डूवाडी स्टेशनसे मिरज लाइनपर पंढरपुर स्टेशन है । स्टेशनसे पंढरपुर २.५ कि.मी. है । यहाँ कई धर्मशालाएँ तथा आश्रम हैं, जहाँ यात्री ठहर सकते हैं ।

महाराष्ट्रका यह प्रधान तीर्थ है । संत तुकाराम, नामदेव, रांका-बाँका नरहरिजी आदिकी यह निवास भूमि है । यह नगर भीमा नदीके तटपर है । यहाँ नदीको चन्द्रभागा कहते हैं ।

श्रीविट्ठल मन्दिर यहाँका मुख्य मन्दिर है । यह विशाल है । निज मन्दिरमें कमरपर हाथ रखे श्रीपण्डरीनाथ खड़े हैं । घेरेमें ही रुक्मिणीजी, बलरामजी, सत्यभामा, जाम्बवती तथा श्रीराधाके मन्दिर हैं ।

मन्दिरमें प्रवेश करते समय द्वारके समीप भक्त चोखा मेलाकी समाधि है । प्रथम सीढ़ीपर ही नामदेवजीकी समाधि है । द्वारके एक ओर अखा भक्तकी मूर्ति है ।

चन्द्रभागाके किनारे चन्द्रभागा तीर्थ, सोमतीर्थ आदि नदीमें ही हैं । यहाँ अनेक मन्दिर हैं । इसे नारद मुनिकी रेती कहते हैं । नारदजीका मन्दिर हैं । गोपालजी, जनाबाई, एकानाथ, नामदेव, ज्ञानेश्वर तथा तुकारामजीके यहाँ मन्दिर हैं ।

यहाँ श्रीविट्ठल मन्दिरमें यात्री भगवान्के श्रीविग्रहके चरणोंपर मस्तक रखता है ।

पंढरपुरमें कोदण्डराम तथा लक्ष्मीनारायणके मन्दिर हैं । चन्द्रभागाके पार श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है । ५ कि.मी. दूर एक गाँवमें जनाबाईका मन्दिर है और वह चक्की है, जिसे

भगवान्‌ने चलाया था ।

कथा– भक्त पुण्डरीक माता-पिताके परम सेवक थे । वे माता-पिताकी सेवामें लगे थे, उस समय श्रीकृष्णचन्द्र उन्हें दर्शन देने पधारे । पुण्डरीक पिताके चरण दबाते रहे । भगवान्‌को खड़े होनेके लिये उन्होंने ईंट सरका दी; किन्तु उठे नहीं । भगवान् कमरपर हाथ रखे ईंटपर खड़े रहे । सेवासे निवृत्त होनेपर पुण्डरीकने भगवान्‌से इसी रूपमें यहाँ स्थित रहनेका वरदान मांग लिया ।

नरसिंहपुर

कुर्डूवाड़ी स्टेशनसे २७ कि.मी. पर नरसिंहपुर गाँव है । यह गाँव भीमा और नीरा नदियोंके संगमपर है । उस स्थानको प्रयाग माना जाता है ।

इधरके लोगोंका विश्वास है कि यह स्थान प्रह्लादजीकी जन्मभूमि है ।

यहाँ विशाल नृसिंह मन्दिर है । उसमें प्रह्लादजीकी भी मूर्ति है । परिक्रमामें अनेकों देव-मूर्तियाँ हैं । मन्दिरके पूर्व मण्डपमें गरुड़की बड़ी उग्र मूर्ति है । मन्दिरके उत्तर शंकरजीका मन्दिर है । इसमें धातुकी बनी दशावतार मूर्तियाँ हैं ।

वार्सी

कुर्डूवाड़ीसे ३४ कि.मी. पर वार्सीटाउन स्टेशन पंढरपुरसे विपरीत दिशामें है । स्टेशनसे मन्दिर १.५ कि.मी. दूर है ।

यहाँ भगवान् नारायणका विशाल मन्दिर है । मन्दिरमें राजा

अम्बरीषकी मूर्तिपर भगवान्‌का एक हाथ है ।

उत्तरेश्वर शिवका भी यहाँ बड़ा मन्दिर है । यहाँकी लिंग मूर्ति अष्ट लिंगोंमें मानी जाती है ।

भक्त भाऊ साहबकी यहीं समाधि है । पास ही मल्लिकार्जुन तथा नीलकण्ठ शिव मन्दिर है ।

इस स्थानको राजा अम्बरीषकी राजधानी कहते हैं ।

कोल्हापुर

क्षेत्रं वै करवीराख्यं क्षेत्रं लक्ष्मीविनिर्मितम् ।

तत्क्षेत्रं हि महत्पुण्यं दर्शनात् पापनाशनम् ॥

श्रीलक्ष्मीजी द्वारा निर्मित करवीर क्षेत्र (कोल्हापुर) महान पुण्यप्रद है । इसके दर्शनसे पाप नष्ट होते हैं ।

मिरजसे कोल्हापुर स्टेशन ४८ कि.मी. है । यह महालक्ष्मी क्षेत्र है । यहाँका महालक्ष्मी मन्दिर ५१ शक्तिपीठोंमें है, जिसे अम्बाजीका मन्दिर भी कहते हैं । यहाँ सतीके नेत्र गिरे थे ।

महालक्ष्मी मन्दिर विशाल है । समीप ही पद्मसरोवर, काशीतीर्थ, मणिकर्णिका तीर्थ हैं ।

यहाँ विश्वनाथ, जगन्नाथ आदि कई मन्दिर हैं ।

समीप ज्योतिबा पहाड़ी है । उसपर अनेकों मन्दिर हैं । कई गुफाएँ भी हैं । समीप ही पावलाकी बौद्ध-गुफा है ।

मोरेगाँव (मोरेश्वर-क्षेत्र)

बम्बई-रायचूर लाइनपर पूनासे ५४ कि.मी. पर केडगाँव स्टेशन है। वहाँसे २६ कि.मी. मोटर-बसका मार्ग है। करहा नदीके तटपर मोरेगाँव है। देशमें यह गाणपत्य सम्प्रदायका मुख्य पीठ है। इसे भूस्वानन्द मोरेश्वर क्षेत्र कहते हैं।

यहाँ गणेश कुण्डको अंकुशतीर्थ कहते हैं। गणेशजीने अंकुशके आघातसे इसे प्रगट किया है। दूर-दूरसे लोग इसमें अस्थि विसर्जन करने आते हैं। ब्रह्म कमण्डलु गंगा (करहा) नदीका यही उद्गम है।

यहाँ कुण्डके समीप गणेशजीका मन्दिर है। करहा नदीमें गया तीर्थ, ओंकारतीर्थ, ऋषितीर्थादि कई तीर्थ हैं।

यहाँसे ८ कि.मी. पश्चिम करहा नदीके तटपर गणेश गया नामक पितृतीर्थ है। वहीं १८ पदांकित गणेश शिला है, जहाँ श्राद्ध होता है।

धृष्णेश्वर (धुश्मेश्वर)

यह द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें से एक है। यह भारतकी प्रसिद्ध इलोरा गुफाओंके समीप है।

मार्ग– मध्यरेलवेकी काचेगुडा-मनमाड लाइनपर औरंगाबाद स्टेशन है। यह बड़ा नगर है। धर्मशालाएँ हैं। बसोंका यह केन्द्र है। यहाँसे इलोरा जाना सुविधाजनक होता है। औरंगाबादसे यह स्थान २९ कि.मी. है।

इलोराका ठीक नाम वेरूल है। गाँवके समीप धृष्णेश्वर मन्दिर

एक घेरेमें है । समीप ही सरोवर है । मन्दिरके पास यात्रियोंके ठहरनेकी व्यवस्था है । पंडोंके घर भी यात्री ठहरते हैं ।

कथा– देवगिरिके समीप सुधर्मा ब्राह्मणने पहिली पत्नीसे सन्तान न होनेपर दूसरा विवाह किया । दूसरी पत्नी धुश्मा प्रतिदिन १०८ पार्थिव लिंगका पूजन करके उन्हें सरोवरमें विसर्जित कर देती थी । उसके पुत्र हुआ । उसकी सौत सुदेहाने ईर्षावश बालकको मारकर सरोवरमें फेंक दिया । धुश्मा जब पूजन करके पार्थिव लिंग सरोवरमें डालने गई तो मृतपुत्र जीवित होकर उसे मिल गया । धुश्माने ही भगवान् शंकरसे वहाँ नित्य विराजनेकी प्रार्थना की । तबसे यह धुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग यहाँ है ।

इलोरा

इन गुफाओंका नाम वेरूल है । ये धुश्मेश्वरसे १ कि.मी. दूर हैं । ये पर्वत काटकर बनाई गई ३८ गुफाएँ हैं । इनमें १ से १३ तक बुद्ध धर्मके महायान सम्प्रदायकी हैं । इनमें बुद्धकी मूर्तियाँ हैं । १४ से २९ तक पौराणिक गुफाओंका समुदाय है । ३० से ३४ जैन गुफाएँ हैं ।

पूरे पर्वतको काटकर मन्दिर, प्रांगण आदि बनाये गये हैं । इन गुफाओंमें कैलास-मन्दिर बहुत प्रसिद्ध है । इसमें शंकरजीकी लीला मूर्तियाँ तथा अवतार चरितकी मूर्तियाँ खुदी हैं । रामेश्वर तथा सीतानहानी गुफाओंकी कला भी उत्कृष्ट है ।

इन्द्र गुफा, छोटा कैलास तथा जगन्नाथ-सभा भी विशेष दर्शनीय है । इलोरामें पूज्य मूर्ति कोई नहीं है । सब भग्न हैं ।

दौलताबाद

औरंगाबादसे १० कि.मी. पर इलोराके मार्गमें ही यहाँका किला है । इसका पुराना नाम देवगिरि है । किलेमें पहाड़ीके ठेठ ऊपर जनार्दन स्वामीकी समाधि है ।

अजन्ता

दिल्ली बम्बई लाइनपर जलगाँव स्टेशनसे मोटर बससे जाया जा सकता है । और औरंगाबादसे भी मोटर बसें यहाँ आती हैं । दोनों ओर से ६० कि.मी. की लगभग समान दूरी है ।

पर्वत अर्धचन्द्राकार है । नीचे बाधोरा नदी वहती है । शिखर तथा पादतलके बीचमें पर्वत काटकर २९ गुफाएँ बनाई गई हैं । इनमेंसे ९, १०, १९ और २६ नम्बरकी गुफाएँ चैत्य हैं, शेष बौद्ध गुफा विहार हैं । हैं सब बौद्ध गुफाएँ ही ।

अजन्ताकी गुफाएँ भित्ति-चित्रोंके लिये प्रसिद्ध हैं । भित्तिपर लेप करके रंगीन चित्र बनाये गये हैं । इनमेंसे १, २, ९, १०, १२, १६, १७, १९, तथा २६ नम्बरकी गुफाएँ विशेष दर्शनीय हैं । यहाँ विद्युत-प्रकाशकी सुविधा गुफा-दर्शनमें प्राप्त करनेके लिये पहिलेसे लिखा-पढ़ी करनी पड़ती है ।

पैठण

औरंगाबादसे पैठण ५० कि.मी. है । मोटर-बसें जाती हैं । यह नगर गोदावरीके तटपर है । यहाँ धर्मशाला है ।

संत एकनाथजीका घर यहाँ अभी है । इसमें एकनाथजीके आराध्य भगवान् हैं । जल भरनेका वह कुण्ड तथा वह चन्दनकी चौकी है, जिसमें भगवान् श्रीखण्ड्या नामसे सेवक बनकर जल भरते तथा चन्दन घिसते थे ।

गोदावरीके नाग घाटपर उस भैंसे की मूर्ति है जिसके मुखसे सन्त ज्ञानेश्वरने वेद-मन्त्रोंका उच्चारण कराया था ।

संत श्रीकृष्णदयार्णवजीका मकान, उनका आराध्य विग्रह तथा उनकी समाधि यहाँ है ।

यहाँ गोदावरीके मध्य ब्रह्माजी द्वारा प्रतिष्ठित सिद्धेश्वर शिव-मन्दिर है । दूसरा ढोलेश्वर मन्दिर है । इसे जंजीर बाँधकर तोड़नेका प्रयत्न यवन शासकने किया था । मूर्तिमें जंजीरका चिह्न है ।

अवढ़ा नागनाथ (नागेश)

द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें दारुकावनमें स्थित नागेश ज्योतिर्लिंग यही है ।

मार्ग– परभनी जंक्शनसे परली-बैजनाथ जानेवाली लाइनपर धोंडी स्टेशन है । वहाँसे यह स्थान १९ कि.मी. है । स्टेशनसे बसें चलती हैं । यहाँ धर्मशाला है ।

नागनाथ (नागेश) मन्दिर विशाल है । निज मन्दिरमें ४ सीढ़ी उतरनेपर शिवलिंगके दर्शन होते हैं । दर्शन सीढ़ियोंपरसे ही करना पड़ता है । मन्दिरके समीप ही सरोवर है ।

यहाँ नन्दीकी मूर्ति मन्दिरके पीछे है । यहाँ नील-कण्ठेश्वर तथा भण्डारेश्वरके और पाण्डवोंके भी मन्दिर हैं । इस क्षेत्रमें ६८

तीर्थ थे । उनमें बहुत से लुप्त हो गये । अब २६ तीर्थ हैं । यह सब १.५ कि.मी. के भीतर ही हैं ।

समीपके वन में कनकेश्वरी, खाण्डेश्वरी तथा पद्मावतीके मन्दिर हैं । नगरमें बलेश्वर मूर्ति है जो दारुका वनके रक्षक माने जाते हैं ।

कथा– दारुका नामक एक राक्षसीने तप करके पार्वतीजीसे वरदान पाया कि वह अपना निवास-स्थान साथ ले जा सकेगी । इससे वह अपना स्थान जनपदोंपर उतारकर उनका नाश करने लगी । एक बार उसने एक शिवभक्त वैश्यको पकड़कर बन्दी कर दिया । वह बन्दीगृहमें भी मानसिक शिवार्चन करता था । राक्षसी उसे मारने दौड़ी तो शंकरजीने उसे मार दिया । भक्तकी प्रार्थनापर यहाँ ज्योतिर्लिंग रूपमें स्थित हुए ।

आसपासके तीर्थ

नान्देर– परभनी लाइनपर यह स्टेशन है । स्टेशनसे बाजार ३ कि.मी. है । यह सिख तीर्थ है । गुरुगोविन्द सिंहका शरीर यहीं छूटा था । गुरुद्वारेमें गुरुका सिंहासन (समाधि) है ।

पुरली-बैजनाथ

परभनीसे य[illegible] रेल लाइन है । स्टेशनसे १ कि.मी. पर पर्वतके नीचे बैजनाथ मन्दिर है । मन्दिरके पास ही धर्मशाला है । [illegible]धरके लोग इसे वैद्यनाथ ज्योतिर्लिंग मानते हैं ।

मन्दिर विशाल है । उसके एक ओर पुरली बाजार तथा दूसरी

ओर सरोवर एवं एक नदी है । बाजारमें कई मन्दिर हैं ।

पूना

महाराष्ट्रका यह प्रसिद्ध नगर है । स्टेशनके पास ही धर्मशाला है । नगरमें भी ठहरनेकी सब आधुनिक सुविधाएँ हैं ।

पूनामें मोटा और मूला नदियोंका संगम है । वहाँ संगमके समीप कई देव-मन्दिर हैं । बुधवार पेठके तुलसीबागमें श्रीराम-मन्दिर और बेलबागमें लक्ष्मी नारायण-मन्दिर हैं ।

पार्वती-मन्दिर– पूनासे ६.५ कि.मी. दूर पर्वतपर है । ऊपर तक जानेके लिये सीढ़ियाँ हैं । विशाल मन्दिरके प्रांगणमें विष्णु, सूर्य, दुर्गा, स्कन्दके छोटे मन्दिर हैं । निज मन्दिरमें भगवान् शंकरकी चांदीकी मूर्ति है । उनकी गोदमें एक ओर गणेश तथा दूसरी ओर स्वर्ण निर्मित पार्वती हैं । पर्वतके नीचे सरोवर है ।

आलन्दी

पूनासे आलन्दी २१ कि.मी. है । मोटर-बस जाती है । संत ज्ञानेश्वरने यहाँ जीवित समाधि ली थी । उनका समाधि-मन्दिर यहाँ है । वह दीवार भी नगरसे बाहर है– जिसे चांगदेवसे मिलनेके लिये ज्ञानेश्वरने चलाया था ।

आलन्दीमें पुण्यतोया इन्द्रायणी नदी है । बस्तीमें धर्मशाला है ।

देहू

पूनासे २४ कि.मी. पर देहू-रोड स्टेशन है । वहाँसे देहू ५

कि.मी. है । पूनासे यहाँ मोटर-बसें भी आती हैं । बस-मार्गसे देहू २१ कि.मी. है ।

देहू संत तुकारामकी जन्मभूमि है । यहाँ श्रीतुकारामजी द्वारा प्रतिष्ठित बिठोबा-मन्दिर है ।

भीमशंकर

यह द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें है । वैसे आसाममें गोहाटीके पास ब्रह्मपुत्रमें पहाड़ीपर जो शिव-मन्दिर है, उसे उधरके लोग भीमशंकर ज्योतिर्लिंग कहते हैं ।

भीमशंकर मन्दिर जंगलमें डाकिनी पर्वतके शिखरपर है ।

पूनासे भीमशंकरके लिये प्रातः मोटर-बस चलकर शाम तक लौट आती है । दूरी १२२ कि.मी. है । यहाँ की आबादी बहुत थोड़ी है, अतः जरूरत की वस्तुएँ नहीं मिलती हैं । पंडोंके झोंपड़ियोंके ३-४ घर हैं ।

भीमशंकरसे १ फर्लांग पहिले शिखरपर देवी-मन्दिर है । थोड़ा नीचे उतरकर भीमशंकर मन्दिर है । मन्दिर बहुत प्राचीन है । मन्दिरके समीप एक कुण्ड है ।

भीमशंकर मन्दिरसे थोड़ी ही दूरीपर भीमा नदीका उद्‌गम है ।

कथा– यहाँ भीमक नरेश तपस्या कर रहे थे । त्रिपुरका ध्वंस करके शंकरजीने यहाँ विश्राम किया और उन्हें दर्शन दिया । उनकी प्रार्थनापर यहाँ ज्योतिर्लिंग रूपमें स्थित है ।

नासिक-पंचवटी

ततो गोदावरीं प्राप्य नित्यसिद्धनिषेविताम् ।

राजसूयमवाप्नोति वायुलोकं च गच्छति ॥

नित्य सिद्ध जिस गोदावरीका सेवन करते हैं, वहाँ जाकर पुरुष राजसूयका फल पाता है और मरकर स्वर्ग जाता है ।

मध्य रेलवेका नासिक रोड प्रसिद्ध स्टेशन है । स्टेशनसे नासिक ६ कि.मी. है और पञ्चवटी ८ कि.मी. । दोनोंके मध्य केवल गोदावरीकी धारा है ।

नासिकमें और पञ्चवटीमें भी अनेकों धर्मशाला हैं । देवालयोंमें और पंडोंके घर भी यात्री ठहर सकते हैं । यात्री प्रायः पञ्चवटीमें ठहरते हैं ।

गोदावरी– पञ्चवटीमें गोदावरी स्नान होता है । धारा तेज है; किन्तु ज़ल कम है । गोदावरीपर दो पुल हैं । वैसे नीचेसे भी धाराको पार करनेकी सुविधा है ।

गोदावरीमें रामकुण्ड, सीताकुण्ड, लक्ष्मणकुण्ड, धनुषकुण्ड आदि तीर्थ हैं । स्नानका मुख्य स्थान रामकुण्ड है । यहाँसे वायव्य कोणपर अरुणा नदी गोदावरीमें गिरिती है । समीप ही सूर्य, चन्द्र तथा अश्विनी तीर्थ हैं । यात्री यहाँ मुण्डन कराके श्राद्ध करते हैं ।

रामकुण्डके पीछे सीताकुण्ड है । वहाँ दो मुख वाले हनुमान (अग्निदेव) की मूर्ति है । आगे दशाश्वमेध-तीर्थ है । नारोशंकर मन्दिरके सामने राम-गयातीर्थ है । पेशवाकुण्डमें गोदावरीमें वरुणा, सरस्वती, गायत्री, सावित्री तथा श्रद्धा नदियाँ गुप्त रहकर मिलती

कही जाती हैं । आगे भी कई कुण्ड हैं ।

अरुणा नदीके किनारे इन्द्र-कुण्ड है । यहाँ स्नान करके इन्द्र गौतम ऋषिके शापसे मुक्त हुए थे । इसके बाद मुक्तेश्वर कुण्ड है । यहाँ मेधातिथि-तीर्थ तथा कोटि-तीर्थ हैं । ये सब कुण्ड गोदावरीमें ही हैं ।

मन्दिर– गोदावरीके दोनों तटोंपर ही अधिकांश मन्दिर हैं । रामकुण्डपर गंगा-मन्दिर तथा गोदावरी मन्दिर है । गोदावरी मन्दिर १२ वर्षमें वृहस्पतिके सिंह राशिमें आनेपर ही खुलता है और वर्षभर खुला रहता है । इसके सामने वाणेश्वर लिंग है । पीछे विट्ठल मन्दिर है । रामकुण्डपर ही राम मन्दिर, शिव-मन्दिर दोनों हैं । वहाँसे ५० सीढ़ी ऊपर कपालेश्वर मन्दिर है ।

काला राम मन्दिर– गोदावरीसे २ फर्लांगपर पञ्चवटी बाजारके इस मुख्य मन्दिर में श्रीराम-लक्ष्मण-सीताकी मूर्तियाँ है ।

पञ्चवटी– काला राम मन्दिरसे आगे पांच वटवृक्ष हैं । इसीको लोग पंचवटी कहते हैं । वहाँ एक भूगर्भ कमरेमें सीताराम-लक्ष्मणकी मूर्तियाँ हैं । इसे सीतागुफा कहा जाता है । इस स्थान से समीप ही शारदा, चन्द्रमौलीश्वर मन्दिर है । इसमें नटराज मूर्ति है ।

गोदावरी तटपर रामगया तीर्थके समीप रामेश्वर मन्दिर है । पञ्चवटीमें श्रीबल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है ।

सुन्दरनारायण मन्दिर पुलके पास नासिक वाले भागमें है । यहाँसे सामने गोदावरी पार कपालेश्वर मन्दिर है । यहाँ गोदावरीमें ब्रह्मतीर्थ है । पास ही बदरिका-संगम तीर्थ है । सुन्दरनारायणसे आगे उमा-महेश्वर मन्दिर है । रामकुण्डके सामने दूसरे तटपर नीलकण्ठेश्वर मन्दिर है । कहते हैं कि इसकी स्थापना महाराज जनकने की है ।

इससे ४८ सीढ़ी ऊपर पंचमुख पञ्चरत्नेश्वर मन्दिर है और उसके पास गोराराम मन्दिर, मुरलीधर मन्दिर, लक्ष्मीनारायण मन्दिर तथा तारकेश्वर मन्दिर हैं । समीप तिल भाण्डेश्वर मन्दिरमें पाँच फुट परिधिके दो शिवलिंग हैं ।

भद्रकाली– नासिकमें यह बिना शिखरका मन्दिर है । इसमें नव दुर्गा मूर्तियोंके मध्य भद्रकाली मूर्ति है । इनके अतिरिक्त नासिकमें मुक्तेश्वर, बालाजी, मोदकेश्वर गणेश, एकमुखीदन्त, मुरुडेश्वर आदि कई मन्दिर हैं ।

तपोवन– पञ्चवटीसे डेढ़ कि.मी.पर गोदावरीमें कपिला नदी मिलती है । कपिला-संगम तीर्थपर ही तपोवन है । यह महर्षि गौतमकी तपःस्थली है । यहीं लक्ष्मणने शूर्पणखाकी नाक काटी थी ।

यहाँ आठ तीर्थ हैं– ब्रह्मतीर्थ, शिवतीर्थ, विष्णुतीर्थ ये सटे हुए तीन निर्जल कुण्ड हैं । एकसे दूसरेमें जानेका मार्ग है । मार्ग संकीर्ण है । यात्री उनमें से निकलते हैं ।

अग्नितीर्थ गहरा कुण्ड है । यहीं सीताजी अग्निमें अन्तर्हित हुई थी । समीप कपिला नदी तीर्थ है । इनके अतिरिक्त सीता तीर्थ, मुक्तितीर्थ और संगमतीर्थ हैं ।

पञ्चवटीके मार्गमें लक्ष्मणजीका, लक्ष्मीनारायणका, गोपालका, विष्णुका और श्रीरामका मन्दिर है । कई और भी मन्दिर हैं ।

त्र्यम्बकेश्वर

नासिकसे २७ कि.मी. दूर पहाड़की तलहटीमें त्र्यम्बकेश्वर बस्ती है । नासिकसे मोटर बसें आती हैं । यहाँ धर्मशाला है ।

गोदावरी उद्गम– महर्पि गौतमने तपस्या करके शंकरजीको प्रसन्न किया और गोदावरी प्राप्त किया। गोदावरी पहिले ब्रह्मगिरिपर प्रगट होकर गुप्त हुईं, नीचे गंगाद्वारपर प्रगट होकर गुप्त हो गईं। नीचे महर्षि गौतमने कुशोंके द्वारा गोदावरी प्रवाहको रोका। यह स्थान कुशावर्तके नामसे कहा गया। गोदावरीका दृश्य उद्गम चक्रतीर्थ है। यह त्र्यम्बकसे १० कि.मी. दूर वनमें गहरा कुण्ड है। मार्गदर्शकके बिना यहाँ आना सम्भव नहीं। इस कुण्डसे निरन्तर जलधारा निकलती रहती है।

कुशावत– त्र्यम्बकेश्वर मन्दिरसे थोड़ी दूर यह सरोवर है। नीचेसे इसमें गोदावरीका जल आता है। सरोवरमें स्नान नहीं होता। जल लेकर बाहर स्नान किया जाता है।

स्नान करके नीलगंगा संगमपर संगमेश्वर, कनकेश्वर, कपोतेश्वर, त्रिसन्ध्यादेवी तथा त्रिभुवनेश्वरके दर्शन करके तब त्र्यम्बकेश्वरके दर्शनार्थ जाना चाहिये।

त्र्यम्बकेश्वर– यह द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें है। पूर्वद्वारसे प्रवेश करके सिद्ध विनायक, नन्दिकेश्वरके दर्शन करके निज मन्दिरमें जाना चाहिये। वहाँ सामान्यतः अरघा ही दीखता है। ध्यानसे देखनेपर तीन छोटे लिंग दीखेंगे जो ब्रह्मा, विष्णु और शिव रूप हैं। यह दर्शन प्रातः पूजनके समय होता है। पीछे उसपर चाँदीका या सोनेका (दोनों हैं) पञ्चमुख चढ़ा दिया जाता है। दिनमें तथा रात्रितक उसीके दर्शन होते हैं।

अन्य मन्दिर-कुशावर्तके पास गंगा मन्दिर तथा श्रीकृष्ण मन्दिर हैं। बस्तीमें लक्ष्मी-नारायण, श्रीराम, तथापरशुरामके मन्दिर हैं।

कुशावर्तके पास केदारेश्वर, इन्द्रालयके पास इन्द्रेश्वर,

त्र्यम्बकेश्वरके पास गायत्री एवं त्रिसन्ध्येश्वर, काञ्चनतीर्थके पास काञ्चनेश्वर और ज्वरेश्वर, कुशावर्तके पीछे बल्लालेश्वर, गौतमालयके पास गौतमेश्वर एवं रामेश्वर, महादेवीके पास मुकुन्देश्वर, काशी विश्वेश्वर, भुवनेश्वरी तथा त्रिभुवनेश्वर मन्दिर हैं ।

निवृत्तिनाथकी समाधि– संत ज्ञानेश्वरके गुरु तथा बड़े भाई निवृत्तिनाथजीकी समाधि बस्तीके किनारे पर्वतके नीचे है ।

यहाँ अनेकों तीर्थ हैं । मुख्य हैं– गंगासागर निवृत्तिनाथकी समाधिके पास । इन्द्रतीर्थ कुशावर्तके पास, कनखल-कुशावर्तसे पूर्व । प्रयाग तीर्थ– त्र्यम्बकेश्वरसे १.५ कि.मी. पर नासिक-मार्गमें । अहल्या-संगम– त्र्यम्बकेश्वरसे २ फर्लांगपर जटिला नदी गोदावरीमें मिली है । गौतमालय सरोवर के तटपर गौतमेश्वर-मन्दिर है ।

यहाँ ब्रह्मगिरि, नीलगिरि तथा गंगाद्वार ये तीन पवित्र पर्वत हैं । यात्री प्रायः केवल गंगाद्वार जाते हैं ।

ब्रह्मगिरि– ५०० सीढ़ियाँ चढ़कर ऊपर पुराना किला है । ऊपर एक जल-पूरित कुण्ड है । समीप ही त्र्यम्बकेश्वर मन्दिर है । गोदावरीका मूल उद्गम पास ही है । शिलाओंपर शंकरजीके जटा फटकारनेका चिह्न है । यह शिवस्वरूप पर्वत है । इसके पाँच शिखर सद्योजात, वामदेव, अघोर, तत्पुरुष और ईशान हैं ।

नीलगिरि– ब्रह्मगिरिकी बाम पार्श्वमें है । इसपर २५० सीढ़ियाँ हैं । ऊपर नीलाम्बिका देवीका मन्दिर है । समीप ही दत्तात्रेय मन्दिर तथा नीलकण्ठेश्वर मन्दिर है ।

गंगाद्वार– इसे कौलगिरि भी कहते हैं । ७५० सीढ़ी चढ़कर जाना पड़ता है । ऊपर गोदावरीका मन्दिर है । मूर्तिके चरणोंके

पास बूंद-बूंद जल निकलता और एक कुण्डमें एकत्र होता है । यह कुण्ड पञ्चतीर्थोंमें-से है ।

इस गंगाद्वारसे उत्तर कौलाम्बिका देवीका मन्दिर है । थोड़ी दूरपर पर्वतमें गुफाएँ हैं । उनमेंसे एक गोरखनाथजीकी गुफा है । एक गुफामें श्रीराम-लक्ष्मणकी मूर्तियाँ हैं जो वाराह गुफा कही जाती हैं ।

सीढ़ियोंपर आधेसे कुछ अधिक ऊपर दाहिने मार्गसे जानेपर अनोपान शिला है । यह शिला गोरखनाथजीके सम्प्रदायमें अत्यन्त पवित्र मानी जाती है । इसपर अनेक सिद्धोंने तप किया है ।

गंगाद्वारसे आधा मार्ग उतरनेपर मार्गमें श्रीराम-लक्ष्मण कुण्ड मिलता है । यात्री यहाँ मार्जन-आचमन करते हैं ।

सम्पूर्ण त्र्यम्बकेश्वर क्षेत्र सिद्धों, तपस्वियोंकी साधना भूमि रही है । यहाँ ज्योतिर्लिंग एवं गोदावरी उद्गम एकत्र होकर इसे महातीर्थ बना देते हैं ।

मुम्बई

भारतवर्षकी यह महानगरी मुम्बई है । यहाँ धर्मशालाएँ कम हैं नगर-विस्तारकी दृष्टिसे; किन्तु हैं । होटल बहुत हैं ।

मन्दिर– मुम्बईके प्रसिद्ध मन्दिरोंका केवल नामोल्लेख किया जा रहा है । माधव बागमें लक्ष्मीनारायण मन्दिर प्रसिद्ध है । महालक्ष्मी– परेलसे दक्षिण समुद्रतटपर । बालकेश्वर– मलाबार हिलके दक्षिणमें पश्चिमी किनारेपर । यहाँ वाणगंगा सरोवर तीर्थ है । हनुमानजी माटुंगामें । मुम्बादेवी– कालबादेवी रोडके पास ।

कालबादेवी– स्वदेशी बाजारके पास ।

योगेश्वरी गुफा– बम्बईसे २४ कि.मी. पर ये गुफाएँ हैं । इनके मध्यमें देवी मन्दिर है । गुफाओंमें मूर्तियाँ जीर्ण होकर लुप्तप्राय हैं ।

योगेश्वर गुफा– गोरे गाँवसे ३४ कि.मी. दक्षिण अम्बोली गाँवके पास । यह बहुत बड़ा गुफा मन्दिर है । मध्यमें महादेवजीका मन्दिर है । यहाँसे १० कि.मी. उत्तर मगथानाकी गुफा है ।

मण्डपेश्वर– बोरीवली स्टेशनसे १.५ कि.मी. पर कृष्णगिरिमें मण्डपेश्वर गुफा मन्दिर है । यहाँ तीन गुफाएँ हैं, पहिलीके बाहर जलसे भरा कुण्ड है । दूसरीमें कई कोठरियाँ हैं ।

कन्हेरी– बोरीवली स्टेशनसे ६.५ कि.मी. सड़क और ३ कि.मी. पैदलका मार्ग है । यहाँ बौद्ध गुफाएँ, चैत्य तथा भिक्षु आवास हैं । कुल १०९ गुफाएँ हैं ।

धारापुरी (एलीफेन्टा)– यह समुद्रमें द्वीपपर है । 'भाऊचा धक्का' बन्दरगाहसे स्टीमर जाता है । स्टीमर लगनेके स्थानसे १.५ कि.मी. गुफाएँ हैं । यहाँ ५ गुफा मन्दिर थे; किन्तु एक ध्वस्त हो गया ।

इनमें त्रिमूर्ति गुफा मुख्य है । यह विशाल है । ब्रह्मा, विष्णु, शिवकी मूर्तियाँ हैं । द्वारपाल मूर्तियाँ १३ फुट ऊँची हैं । एक कमरेमें १६ फुट ऊँची अर्धनारीश्वर शिवकी मूर्ति है । दाहिने कमलासनपर ब्रह्मा और बायें गरुड़पर बैठे नारायण हैं । पश्चिम कक्षमें शिव-पार्वतीकी बड़ी मूर्तियाँ हैं । एक कमरेमें शिव-विवाहकी मूर्तियाँ हैं । एकमें शिवलिंग है । पश्चिम कपालधारी शिवकी विशाल मूर्ति है ।

एक ओर रावणके कैलास उठाने तथा दक्षयज्ञ विध्वंसकी मूर्तियाँ हैं । व्याघ्र मन्दिर गुफाके दोनों ओर बाघ बने हैं । भीतर

शिवलिंग तथा देवमूर्तियाँ हैं । इस द्वीपकी दूसरी पहाड़ीपर भी एक गुफा है । सर्वत्र मूर्तियाँ तोड़ी हुई ही हैं । पूज्य मूर्ति यहाँ नहीं हैं ।

सूरत

प्रसिद्ध स्टेशन है । नगरमें धर्मशाला है । इस स्थानका तीर्थकी दृष्टिसे महत्त्व यह है कि सात पवित्र नदियोंमेंसे ताप्ती सूरतके समीप ही सुगमतासे मिलती है ।

अश्विनीकुमार घाट— सूरत स्टेशनसे ५ कि.मी. पर यहाँ तापी स्नान किया जाता है । सूरतसे मोटर-बसें चलती हैं । सूरतका पुराना नाम सूर्यपुर है । तापी सूर्य पुत्री हैं ।

कथा— एक बार यमुना और तपती झगड़ पड़ीं । दोनों बहिनोंने एक दूसरीको जल रूप होनेका शाप दे दिया । सूर्यने वरदान दिया— 'यमुनाजल गंगाके समान और तपतीका जल नर्मदाके समान पवित्र होगा ।'

देववैद्य अश्विनी कुमारोंने यहाँ तप किया था । इनके द्वारा स्थापित अश्विनी कुमारेश्वर शिवलिंग यहाँ है । उस मन्दिरको वैद्यराज महादेव भी कहते हैं । पासमें एक देवी-मन्दिर तथा अन्य कई मन्दिर हैं । एक अक्षयवट मन्दिर थोड़े पूर्व है ।

सूरतमें अम्बाजी रोडपर अम्बाजीका विशाल मन्दिर है । यह कमलाकार पीठपर विराजमान मूर्ति चार सौ वर्ष पूर्व अहमदाबादसे एक स्वप्नादेशके अनुसार लाई गई थी । दाहिने गणेश तथा शिव और बायें बहुचरा देवीकी मूर्ति है ।

भरुच

यह पश्चिम रेलवेका स्टेशन है। प्रसिद्ध नगर है। इसे भृगु क्षेत्र कहते हैं। यहाँ महर्षि भृगुका आश्रम था। राजा बलिने यहाँ दस अश्वमेध यज्ञ किये थे। यहाँ नमर्दाके किनारे किनारे ५५ तीर्थ हैं।

महारुद्र– भरुचसे ३ कि.मी. पर नर्मदा तटपर शांकरी देवीका मन्दिर, शाक्तकूप, पिंगलेश्वर और भूतेश्वर मन्दिर तथा देवखात सरोवर है।

महारुद्रसे आगे क्रमशः शंखोद्धार, गौतमेश्वर, दशाश्वमेध, सौभाग्यसुन्दरी, वृषादकुण्ड, धूतपाप, एरंडी-तीर्थ, कनकेश्वरी मन्दिर, ज्वालेश्वर मन्दिर, चन्द्रप्रभास-सोमेश्वर मन्दिर, वारांह-तीर्थ, द्वादशादित्य, सिद्धेश्वर एवं सिद्धेश्वरी मन्दिर, कपिलेश्वर तथा समीपमें सप्ततपः स्थलियाँ एवं पञ्चतीर्थ, देवतीर्थ, वैष्णव-तीर्थ, हंस-तीर्थ, भास्कर-तीर्थ, प्रभातीर्थ, भग्वीश्वर एवं श्रीकण्ठेश्वर, शूलेश्वर, शूलेश्वरी मन्दिर दारुकेश्वर, सरस्वती-तीर्थ, गोनागोनी तीर्थ, सरस्वती एवं अश्विनी तीर्थ, सावित्रीतीर्थ, वालखिल्येश्वर मन्दिर, नर्मदेश्वर तथा मत्स्येश्वर मन्दिर, मातृतीर्थ, कोटेश्वर एवं कोटेश्वरी मन्दिर, ब्रह्मतीर्थ– क्षेत्रपाल-तीर्थ– ढुंढेश्वर मन्दिर और कुररी-तीर्थ हैं।

इनमें दशाश्वमेध घाटपर नर्मदा मन्दिर एवं महर्षि भृगुके आश्रमपर भृग्वीश्वर मन्दिर मुख्य हैं। यहाँ नर्मदामें प्रतिदिन ज्वार भाटा आता है।

शुल्क तीर्थ– यह स्थान भरुचसे १६ कि.मी. दूर नर्मदा तटपर है। मोटर बसें आती हैं।

नर्मदामें यहाँ तीन कुण्ड थे–पर वे लुप्त हो गये । यहाँ शुक्लनारायण मन्दिर ही प्रधान है । मन्दिरमें नारायणकी मूर्ति तथा पटेश्वर और सोमेश्वर लिंग स्थापित हैं । नारायणके दोनों ओर ब्रह्मा तथा शंकरजीकी मूर्तियाँ हैं ।

यहाँका दूसरा मन्दिर ओंकारेश्वर (हुंकारेश्वर) है । उसके समीप ही शूलपाणीश्वर मन्दिर तथा आदित्येश्वर तीर्थ है । नगरमें गंगनाथ मन्दिर है । यहाँ जाबालि ऋषिने तप किया था ।

कबीर वट– शुक्ल तीर्थसे १.५ कि.मी. दूर नर्मदाके द्वीपमें कबीर वट है । संत कबीरदासने यहाँ दातौन गाड़ दी थी । जो वृक्ष बन गया । अब यह वटवृक्षोंका लगभग १.५ कि.मी. विस्तार वाला समुदाय हो गया है । यहाँ कबीरदासजीका मन्दिर है ।

बड़ौदा

गुजरातका यह प्रसिद्ध नगर है । नगरमें विट्ठलनाथ, खंडोबा, स्वामिनारायण, सिद्धनाथ, कालिकादेवी, रघुनाथजी, नृसिंह, गोवर्धननाथ, बलदेव, काशी-विश्वनाथ, गणपति, बहुचराजी आदि बहुतसे मन्दिर हैं ।

माँडवीके समीप अम्बा-माताका मन्दिर है । कहते हैं– महाराज विक्रमादित्य यहीं मरे थे । इससे वेताल देवीकी ओर पीठ करके बैठा है ।

चाँपानेर (पावागढ़)

बड़ौदासे ३७ कि.मी. पर चांपानेर रोड स्टेशन है । यहाँसे

एक लाइन पावागढ़ स्टेशन जाती है स्टेशनसे पावागढ़ बस्ती १.५ कि.मी. है। बड़ौदासे मोटर-बसें भी आती हैं। बस्तीमें तथा पर्वतपर भी धर्मशाला है।

पावागढ़ पर्वतकी चढ़ाई ५ कि.मी. है। मार्ग अच्छा है। मार्गमें सात द्वार हैं। छठे द्वारके पश्चात् दूधिया तालाब है। यात्री इसमें स्नान करते हैं। यहींसे महाकाली शिखरकी चढ़ाई प्रारम्भ है। १५० सीढ़ी ऊपर महाकाली मन्दिर है। मूर्ति ऐसी है मानो भूमिमें प्रविष्ट हो रही हो। गुजरातके चार देवी स्थानोंमें यह एक है।

भद्रकाली– महाकाली शिखरसे उतरकर १ कि.मी. दूसरी ओर जानेपर एक छोटे शिखरपर भद्रकाली मन्दिर है।

जैन तीर्थ– पावागढ़ सिद्ध क्षेत्र है। ५ करोड़ मुनि यहाँसे मोक्ष गये हैं। पाँचवे द्वारसे लेकर दूधिया तालाब तक जैन-मन्दिर है। महाकाली शिखरपर एक ओर मुनियोंके निर्वाण स्थान हैं।

चाणोद

मार्ग– बड़ौदासे डभोई और डभोईसे चाणोद रेल मार्ग है।

चाणोद नर्मदा तटपर स्टेशनसे १ कि.मी. दूर है। धर्मशाला है। नगरमें शेषनारायण तथा बालाजीके मन्दिर हैं। यहाँ सात तीर्थ हैं–

१-चण्डादित्य– चण्ड-मुण्डन दैत्योंने यहाँ सूर्योपासना की थी। नर्मदातटपर यह मन्दिर है। **२-चण्डिकादेवी**– चण्ड-मुण्डको मारनेवाली देवीका मन्दिर समीप ही है। **३-चक्रतीर्थ**– यहाँ नारायणने

तालेमेघ दैत्यको मारकर चक्र धोया था । इसके समीप जलशायी नारायणका मन्दिर है । **४-कपिलेश्वर** – यहाँ भगवान् कपिलने तप किया था । **५-ऋणमुक्तेश्वर**– बस्तीमें है । **६-पिंगलेश्वर**– संगमके समीप नन्दा तीर्थके पास यह अग्निदेवका तपःस्थान है । **७-नन्दाह्रद**– यहाँ देवी मन्दिर है ।

आसपासके तीर्थ

ओर नदीका नर्मदामें संगम है । १-कर्नाली और नदी पार (ओरमें घुटनों तक जल रहता है) है । नवीन मन्दिर बहुत हैं । प्राचीन सोमनाथ मन्दिर है । यहाँ चन्द्रमाने तप किया था । यहाँ से २ फर्लांगपर नर्मदा तटपर कुबेरेश्वर मन्दिर है । इन्हें लोग 'कुबेर भण्डारी' कहते हैं । आगे पावकेश्वर मन्दिर तथा नर्मदामें पावकेश-तीर्थ हैं ।

२-गंगनाथ– नर्मदा-प्रवाहकी ओर उत्तर तटपर चाणोदसे ३ कि.मी. । यहाँ नन्दिकेश्वर मन्दिर है । नदौरिया ग्राममें नर-नारायण तीर्थ है । गंगनाथमें शिव मन्दिर तथा गुफामें पार्वती-मन्दिर है ।

चाणोदसे १.५ कि.मी. पर नर्मदाके दक्षिण तटपर यमहास तीर्थ, ३ कि.मी. आगे नरवाड़ी, ५ कि.मी. आगे रुंड और १.५ कि.मी. आगे शुकदेवजीकी तप-स्थलीपर शुकेश्वर तथा मार्कण्डेश्वर मन्दिर हैं । कर्णेश्वर एवं रणछोड़जीके मन्दिर भी हैं ।

नर्मदाके उत्तर तटपर गंगनाथसे १.५ कि.मी. पर मालेथामें कोटेश्वर तीर्थ है । यह महर्षि याज्ञवल्क्यकी तपोभूमि है । उससे ६.५ कि.मी. पर बरकला ग्राममें व्यास तीर्थ ठीक शुकेश्वर के सामने है । यहाँ बलराम जी ने तप किया था । संकर्षण-तीर्थ तथा यज्ञवट

है । थोड़ी दूरीपर सूर्य पत्नी प्रभाकी तपोभूमिपर प्रेमेश्वर मन्दिर है । यहाँ व्यासेश्वर मन्दिर है । यह व्यासाश्रम था । यह स्थान नर्मदामें द्वीप है । नर्मदाकी एक धारा इसके पीछेसे वहती है ।

मही-सागर संगम्

मही-सागर तीर्थके माहात्म्यसे प्रायः सम्पूर्ण कुमारिका खण्ड (स्कन्द पुराण) भरा है । बहुत अद्‌भुत कथाएँ वहाँ हैं ।

मही नदी बहुत ही पवित्र मानी जाती है । इसके किनारे नौ नाथ मन्दिर बहुत बहुत प्रसिद्ध है । १-वासदगाँवमें विश्वनाथ, २-वेरामें धारनाथ ३-सारसामें बैजनाथ और ४-वारिनाथ, ५-भादरवामें भूतनाथ ६-सोमनाथ ७-खानपुरमें कामनाथ ८-बाँकानेरमें त्र्यम्बकनाथ ९-शीलीमें सिद्धनाथ ।

महीके तटपर शत्रुघ्नी माताका स्थान बहुत प्रसिद्ध है ।

सागर-संगम– खम्भातके समीप मही नदी समुद्रमें मिलती है । यह स्थान धर्मारण्य है जो आजकल धमारण कहा जाता है । बड़ौदासे यहाँ तक बसें चलती हैं ।

खम्भात (स्तम्ब तीर्थ)

बड़ौदासे बसें जाती हैं । खम्भात रेलवे स्टेशन भी है । यह पुराण प्रसिद्ध तीर्थ जलदस्युओंके बार-बार आक्रमणसे नष्टप्राय हो गया यहाँ घरोंमें मन्दिर है । यहाँसे ६.५ कि.मी. पर त्रम्बावती ही स्तम्ब-तीर्थ थी । वहाँ कोटेश्वर शिव-मन्दिर तथा कोटितीर्थ- कुण्ड है ।

डाकोर

आनन्द-गोधरा लाइनपर डाकोर स्टेशन है। स्टेशनसे नगर १.५ कि.मी. है। कई धर्मशालाएँ हैं।

तीर्थ– यहाँ १ कि.मी. लम्बा गोमती तालाब है। पक्के घाट हैं। एक ओर कुछ दूर तक पुल-सा बँधा है। उसके एक किनारे रणछोड़रायकी चरण पादुकाएँ हैं। तालाबके ईश्वर-घाटपर श्रीङंकनाथ तथा गणपतिके मन्दिर और रणछोड़रायकी तुलाका स्थान है।

श्रीरणछोड़राय– यही मुख्य मन्दिर है। यह तालाबसे समीप ही है। विशाल मन्दिरमें भीतर चतुर्भुज मूर्ति है।

गोमती सरोवरके किनारे माखणियो आरो तथ लक्ष्मीजीका मन्दिर है।

कथा– श्रीविजय सिंह बोडाणा और उनकी पत्नी गंगाबाई वर्षमें दो बार हाथमें तुलसी लेकर द्वारिका जाते थे। ७२ वर्षकी आयु तक यह क्रम चला। जब शरीर यात्रा योग्य नहीं रहा तो भगवान्‌ने कहा– 'तुम अब मत आओ। मैं तुम्हारे यहाँ चलूँगा।'

भगवान्‌के आदेशसे बैलगाड़ी लेकर बोडाणा द्वारिका गये। रणछोड़रायजी उसमें विराजे और कार्तिक पूर्णिमा सम्वत् १२१२ को डाकोर पधारे। बोडाणाने मूर्ति सरोवरमें छिपा दी।

द्वारिकाके पुजारी मूर्ति न देखकर आये, किन्तु लोभवश रणछोड़रायके बराबर स्वर्ण लेकर लौट जानेपर राजी हो गये मूर्ति तौली गई; किन्तु वह तो बोडाणाकी पत्नीकी नथके बराबर हो गई। पुजारियोंको स्वप्न हुआ 'लौट जाओ। ६ महीने बाद श्रीवर्धिनी बावलीसे मेरी मूर्ति मिलेगी।' द्वारिकामें अब वही मूर्ति है।

आसपासके तीर्थ

१-**सीमलज**– डाकोरके पास यह गाँव है । यहाँ बोडाणाकी गाड़ी आनेपर रणछोड़रायने नीमकी एक डाल पकड़ ली । नीमका वह वृक्ष यहाँ है । पूरे वृक्षकी पत्तियाँ कड़वी हैं, किन्तु उस डालकी मीठी हैं ।

२-**गलतेश्वर**– डाकोरसे १६ कि.मी. पर अंगाड़ी स्टेशन है । वहाँसे ३ कि.मी. पैदल मार्ग है । पासमें गलतेश्वरका प्राचीन मन्दिर है । यह स्थान राजा चन्द्रहासकी राजधानी थी । मन्दिरका शिखर टूट गया है; किन्तु मन्दिर कलापूर्ण है ।

अहमदाबाद

यह गुजरातकी राजधानीका महानगर है । अनेकों धर्मशालाएँ तथा होटल हैं ।

यह नगर साबरमती नदीके तटपर है । यहीं महात्मा गांधीका साबरमती आश्रम है ।

सबसे प्रसिद्ध जगन्नाथ मन्दिर है । कालूपुर श्मशानमें दुग्धेश्वर मन्दिर है । श्मशान भी यहाँका दर्शनीय है । साबरमतीके किनारे कैम्पमें भीमनाथ मन्दिर है । कैम्पमें ही खड्गधारेश्वर प्राचीन मन्दिर है । यहाँका हनुमान मन्दिर प्रसिद्ध है ।

कालूपुर द्वारसे २ कि.मी. पर नीलकण्ठेश्वर मन्दिर तथा श्रीवल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है । तीन दरवाजेके सामने किलेमें भद्रकाली मन्दिर है । हाजांपटेलकी पोलमें श्रीराम-मन्दिर है । रायपुरमें श्रीराधाबल्लभजीका मन्दिर है ।

इनके अतिरिक्त यहाँ स्वामीनारायण मन्दिर, बहुचराजीका मन्दिर, नृसिंह मन्दिर, रणछोड़जीका मन्दिर आदि अनेकों दर्शनीय मन्दिर तथा आश्रम हैं ।

आसपासके तीर्थ

खेडब्रह्मा– अहमदाबादसे यहाँ तक एक रेल लाइन आती है । हिरण्याक्षी नदीके तटपर ब्रह्माजीका मन्दिर तथा एक कुण्ड है ।

वहाँसे १ कि.मी. पर क्षीरजाम्बा देवी मन्दिर तथा मानसरोवर तालाब है । पास ही हिरण्याक्षी, कोसम्वी एवं भीमाक्षी नदियोंका संगम है । नदी पार भृगु-आश्रम है । ५ कि.मी. दूर चामुण्डा देवीका मन्दिर है ।

२-**कोटयर्क**– खेडब्रह्मा लाइनपर प्रान्तीज स्टेशन है । वहाँसे १९ कि.मी. पर खेडायत ग्राम है । मोटर-बसें आती हैं । साबरमती नदीके तटपर सूर्य मन्दिर है । ग्राममें १९ देवी-मन्दिर हैं ।

३-**शामलाजी**– खेडब्रह्मा लाइनपर ईडर स्टेशनसे ४८ कि.मी. दूर है । मोटर-बसें आती हैं । मन्दिरके समीप कई धर्मशालाएँ हैं ।

मेश्वा नदीके तटपर यह स्थान है इसे गदाधरपुरी, हरिश्चन्द्रपुरी तथा कराम्बुक-तीर्थ कहते हैं ।

शामलाजी गदाधर भगवान्‌का मन्दिर है । आसपास रणछोड़राय, गिरिधारीलाल तथा काशी-विश्वनाथ मन्दिर हैं । यह विश्वनाथ मन्दिर भूगर्भमें है । टेकरीपर भाई-बहिन मन्दिर है । मेश्वानदीमें नागधारा-तीर्थ है । भूगर्भमें गंगा-मन्दिर तथा राजा हरिश्चन्द्रकी यज्ञवेदी दर्शनीय हैं । समीप ही सर्वमंगला देवीका मन्दिर है ।

बेट द्वारिका

सुरेन्द्रनगर- ओखा लाइनका ओखा स्टेशन यहाँ जानेके लिये है। स्टेशनसे लगभग १.५ कि.मी. पर समुद्री खाड़ीपर पक्के घाट हैं। यहाँसे नौकाएँ बेट द्वारिका जाती हैं। दूसरे तटपर भी पक्का घाट है।

बेट द्वारिका ११ कि.मी. लम्बा द्वीप है। वहाँ धर्मशालाएँ हैं। यात्री पंडोंके घर भी ठहर सकते हैं।

श्रीकृष्ण-महल– एक बड़े चौकमें तीन दुमंजिले और पाँच तीन मंजिलके भवन हैं। द्वारमें पूर्व जानेपर दाहिने श्रीकृष्ण-मन्दिर है। पूर्व प्रद्युम्न-मन्दिर है। मध्यमें रणछोड़रायका और दूसरी ओर त्रिविक्रमजीका मन्दिर है। एक ओर पुरुषोत्तमजी, देवकी माता तथा माधवजीके मन्दिर हैं। कोटके दक्षिण-पश्चिम अम्बाजी तथा गरुड़के मन्दिर हैं। रणछोड़जीके मन्दिरके पास सत्यभामा तथा जाम्बवतीके मन्दिर हैं। पूर्वमें साक्षी गोपाल, उत्तरमें रुक्मिणी तथा श्रीराधाके मन्दिर हैं। जाम्ववती मन्दिरके पूर्व लक्ष्मीनारायण तथा रुक्मिणी-मन्दिरके पूर्व गोवर्धननाथजीके मन्दिर हैं।

अन्य मन्दिर– बेट द्वारिकामें रणछोड़-सागर, रत्न-तालाब, कचारी- तालाबादि कई जलाशय हैं। मुरली मनोहर, हनुमान, टेकरी, देवी मन्दिर, नवग्रह मन्दिर, नील कण्ठेश्वर आदि कई देव मन्दिर हैं।

शंखोद्धार– मुख्य मन्दिरसे १ कि.मी. पर यह सरोवर है। यहाँ शंखनारायण मन्दिर है। श्रीकृष्णने यहाँ शंखासुरको मारा था। यहीं महाप्रभु वल्लभाचार्यकी बैठक है।

परिक्रमा– समुद्रतटपर-चरणगोमती, नवग्रह चरण, पद्मतीर्थ, पंचकूप कल्पवृक्ष, कालियनाग होते शंख-नारायणका दर्शन करके परिक्रमा पूर्ण होती है ।

आसपासके तीर्थ

१-**गोपीतालाब**– नौकासे ओखा न उतरकर मेंदरडाग्राम उतरें तो ३ कि.मी. पर गोपी तालाब है । ओखासे तथा द्वारिकासे मोटर बसें भी आती हैं । गोमती द्वारिकासे २१ कि.मी. है । यह कच्चा सरोवर है । सरोवरकी पीली मिट्टीको गोपी-चन्दन कहते हैं । समीपमें धर्मशाला, गोपीनाथजी और राधाकृष्णके मन्दिर तथा श्रीवल्लभाचार्यकी बैठक है ।

२-**नागनाथ**– गोपीतालाबसे ५ कि.मी. और गोमती द्वारिकासे १६ कि.मी. है । मोटर-बसें चलती हैं । यहाँ नागनाथका छोटा मन्दिर है । कुछ लोग इसे द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें मानते हैं ।

३-**पिंडारा**– द्वारकासे ३२ कि.मी. है । मोटर-बसें जाती हैं । यह प्राचीन पिण्डारक क्षेत्र है । यहाँ एक सरोवर है । उसके तटपर श्राद्ध करके पिण्ड सरोवरमें डाल देते हैं; किन्तु वे जलमें डूबते नहीं, तैरते हैं । यह कपाल-मोचनेश्वर, मोटेश्वर तथा ब्रह्माजीके मन्दिर हैं ।

नारायणसर

कच्छ प्रदेशका यह पुराण-प्रसिद्ध तीर्थ है । बम्बई या द्वारिका अथवा ओखा पोर्टसे जहाज द्वारा माण्डवी और वहाँसे कच्छकी राजधानी भुज जाना चाहिये । वहाँसे नारायणसर १२८ कि.मी. है । मोटर-बसें भुजसे जाती हैं ।

नारायणसरमें धर्मशालाएँ हैं। आदिनारायण, लक्ष्मीनारायण, गोवर्धननाथ, टीकमजी आदिके मन्दिर और महाप्रभु वल्लभाचार्यकी बैठक है।

नारायणसरसे ३ कि.मी. पर कोटेश्वर मन्दिर है। ३८ कि.मी. दूर मोटर मार्गपर आशापुरी देवीका प्रधान पीठस्थान मन्दिर है।

द्वारिका धाम (पुरी-६)

पांसवो द्वारकाया वै वायुना समुदीरिताः ।

पापिनां मुक्तिदाः प्रोक्ताः किं पुनर्द्वारकाभुवि ।।

द्वारिकाकी वायुसे उड़ाई गई धूलि भी पापियोंको मुक्त करने वाली कही गई है, द्वारिका धामका तो क्या कहना।

द्वारिका धाम भी है और मोक्षदायिनी सप्त-पुरियोंमें एक पुरी भी है।

मार्ग– सुरेन्द्र नगर-ओखा लाइनपर ओखासे २९ कि.मी. पहिले ही द्वारिका स्टेशन है। यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं।

गोमती– मुख्य मन्दिरके पीछे पश्चिम-दक्षिण एक बड़ा खाल है। इसमें समुद्रका जल भरा रहता है। इसीको गोमती कहते हैं। इसपर संगमघाट, नारायणघाट, वासुदेवघाट, गऊघाट, पार्वतीघाट, पाण्डवघाट, ब्रह्माघाट, सुरधनघाट और सरकारी घाट ये नौ घाट हैं। संगम-घाटपर संगमनारायण, वासुदेवघाटपर हनुमानजी और नृसिंहदेवके मन्दिर हैं।

निष्पाप सरोवर– गोमतीमें ही सरकारी घाटके पास है। पहिले इसमें स्नान किया जाता है। यहाँ सांवलियाजी तथा गोवर्धननाथके

मन्दिर तथा महाप्रभु बल्लभाचार्यकी बैठक है । आगे मीठे जलके ५ कूप हैं । इनके जलसे आचमन-मार्जन किया जाता है ।

श्रीरणछोड़राय– यह द्वारिकाका मुख्य मन्दिर है । इसे द्वारिकाधीश मन्दिर भी कहते हैं । यह सात मंजिलका है । चारों ओरपरकोटा है । इस मन्दिरकी ध्वजा भारतकी सबसे बड़ी ध्वजा होती है ।

मुख्य मन्दिरमें रणछोड़रायकी चतुर्भुज मूर्ति है । निश्चित दक्षिणा देकर इनके चरण-स्पर्श होते हैं । मन्दिरके ऊपर चौथी मंजिलमें अम्बाजीकी मूर्ति है ।

भीतर ही रणछोड़-मन्दिरके दक्षिण त्रिविक्रम मन्दिर है । वहाँ राजा बलि, सनकादि कुमार तथा गरुड़की मूर्ति है ।

उत्तरमें प्रद्युम्न मन्दिर है । समीपमें अनिरुद्ध मूर्ति है । सभा मण्डपमें बलदेवजीकी मूर्ति है । यहाँ निश्चित दक्षिणा देनेपर चरण-पादुकाकी छाप पुजारी लगा देता है । इसके पूर्व दुर्वासाजीका छोटा मन्दिर है ।

उत्तर मोक्षद्वारके समीप कुशेश्वर शिव-मन्दिर है । इनके दर्शन किये बिना द्वारिकाकी यात्रा पूरी नहीं होती । निचाईमें कुशेश्वर लिंग तथा पार्वतीकी मूर्ति है ।

पश्चिम दीवारके पास अम्बाजी, पुरुषोत्तमजी दत्तात्रेय, माता देवकी, लक्ष्मीनारायण तथा माधवजीके मन्दिर हैं । पूर्वकी दीवारके पास सत्यभामा मन्दिर तथा शंकराचार्यकी गद्दी, जाम्बवती, श्रीराधा और लक्ष्मीनारायण मन्दिर हैं ।

शारदामठ– मन्दिरके पूर्व घेरेके भीतर ही जगद्गुरु शंकराचार्यका शारदापीठ मठ है ।

अन्य मन्दिर– कोटके बाहर लक्ष्मी-नारायण मन्दिर, वासुदेव-मन्दिर और स्वर्ण-द्वारिकाका दर्शनीय स्थान हैं ।

परिक्रमा स्थान– गोमतीके घाटोंसे संगम तक जाकर उत्तर घूमनेपर समुद्रमें चक्रतीर्थ है । आगे रत्नेश्वर, सिद्धनाथ, ज्ञानकुण्ड, जूनीरामबाड़ी, दामोदर कुण्ड (यहाँ भगवान्‌ने नरसी मेहताकी हुंडी स्वीकारी थी) ये क्रमशः हैं । एक कि.मी.पर रुक्मिणी मन्दिर अच्छा भव्य है । पासमें भागीरथी धारा है । लौटनेपर कृकलास कुण्ड (गिरगिट बने राजानृग इसीमें गिरे थे) सूर्यनारायण मन्दिर, भद्रकाली, जय-विजय, निष्पाप कुण्ड होते रणछोड़रायके दर्शन करके परिक्रमा पूर्ण हो जाती है । इसमेंसे भद्रकाली मन्दिरको कुछ लोग शक्तिपीठ मानते हैं ।

द्वारिकासे ५ कि.मी. पर राम-लक्ष्मण मन्दिरमें श्रीवल्लभाचार्यकी बैठक है । वहाँसे ३ कि.मी. पर सीता वाड़ी है । द्वारिकाके पास भेखड़खेड़ी गुफा है, वहाँ भड़केश्वर शिव-मूर्ति है ।

कथा– सतयुगमें यहाँ महाराज रैवतने कुश बिछाकर यज्ञ किया । इससे इस स्थानका नाम कुशस्थली पड़ा । पीछे यहाँ कुश नामक दानव बहुत उपद्रवी हो गया । उसे मारनेके लिये ब्रह्माजी सुतललोकमें जाकर राजा बलिसे कहकर भगवान् त्रिविक्रमको ले आये । दानव जब शस्त्रोंसे नहीं मरा तब उसे भूमिमें गाड़कर भगवान्‌ने उसके ऊपर उसीका उपास्य कुशेश्वर लिंग स्थापित कर दिया । भगवान्‌ने उसे वरदान दिया–'जो द्वारिका आकर कुशेश्वरके दर्शन नहीं करेगा, उसका आधा पुण्य उस दानवको मिलेगा ।

एक बार द्वारिकामें दुर्वासाजी पधारे । अकारण ही रुष्ट होकर उन्होंने रुक्मिणीको श्रीकृष्ण-वियोगका शाप दे दिया । भगवान्‌ने

रुक्मिणीको आश्वासन दिया कि वियोगकालमें वे उनकी मूर्तिका पूजन कर सकेंगी । वही रुक्मिणीजी द्वारा पूजित मूर्ति श्रीरणछोड़रायजी हैं । इनकी प्रतिष्ठा वज्रनाभ द्वारा हुई है ।

श्रीकृष्णचन्द्रके स्वधान जानेपर द्वारिका समुद्रमें डूब गई । केवल उनका निज भवन नहीं डूबा । वहीं वज्रनाभने मूर्तिकी स्थापना की ।

पोरबन्दर (सुदामापुरी)

भगवान् श्रीकृष्णके मित्र सुदामाका यह धाम है । महात्मा गांधीकी जन्मभूमि होनेसे अब भारतका राष्ट्रीय तीर्थ है ।

मार्ग– सुरेन्द्रनगर-भावनगर रेल लाइनके धोला स्टेशनसे पोरबन्दर तक रेल लाइन गई है । द्वारिकासे जाना हो तो जामनगर-राजकोट-जेतलसर होकर जाना चाहिये ।

स्टेशनसे नगर तथा समुद्र दोनों थोड़ी ही दूर हैं । यहाँ ठहरनेके लिये धर्मशाला है ।

तीर्थ– सुदामा-मन्दिर नगरसे बाहरी भागमें है । इसमें सुदामाजी और उनकी पत्नीकी मूर्तियाँ हैं । पासमें जगन्नाथजीका छोटा मन्दिर है । मन्दिरके बाहर भूमिपर चूनेकी पक्की लकीरोंसे चक्रव्यूह बना है ।

यहाँ समीपमें विल्वेश्वर मन्दिर, गायत्री मन्दिर, हिंगलाज भवानी मन्दिर तथा गिरिधरलालजीके मन्दिर हैं ।

सुदामा-मन्दिरके पास केदारकुण्डपर केदारेश्वर मन्दिर है । नगरमें श्रीराम, राधाकृष्ण, जगन्नाथ, पञ्चमुखी महादेव तथा

अन्नपूर्णाजीके मन्दिर हैं ।

पोरबन्दर नगरमें महात्मा गाँधीका कीर्ति-मन्दिर है । उसमें वह कमरा सुरक्षित है, जिसमें उनका जन्म हुआ था ।

आसपासके तीर्थ

१-**मूल द्वारिका**— पोरबन्दरसे २६ कि.मी. पर बिसवाड़ा ग्राम है । यहाँ मूलद्वारिका कही जाती है । एक कुण्ड है । उसके पास एक घेरेमें श्रीरणछोड़रायका मन्दिर है । घेरेमें आसपास कई और मन्दिर हैं । पोरबन्दरसे यहाँ तक मोटर जाती है ।

२-**हर्षद माता**— मूल द्वारिकासे १३ कि.मी. दूर समुद्रकी खाड़ीके किनारे मियाँगाँव है । वहाँसे ३ कि.मी. समुद्री खाड़ी नौकासे पार करके हर्षद (हरसिद्धि) देवीका मन्दिर है । देवीका पुराना मन्दिर पर्वतपर है । अब मन्दिर नीचे है ।

कहा जाता है कि मूल मूर्ति पर्वतपर थी तो जहाँ तक समुद्रमें देवीकी दृष्टि जाती थी, वहाँ तक दृष्टि सीमामें आते ही जहाज डूब जाते थे । गुजरातके प्रसिद्ध दानवीर झगडू शाहने अपनी आराधनासे देवीको सन्तुष्ट करके नीचे उतारा । जब झगडू शाह अपनी बलि देनेको उद्यत हुए तो देवीका उग्ररूप शान्त हो गया ।

महाराज विक्रमादित्य आराधना करके देवीको उज्जैन ले गये । उज्जैनमें हर सिद्धि मन्दिरमें देवी दिनमें और यहाँ रात्रिमें रहती हैं । ऊपर पर्वतपर भी देवी मूर्ति है ।

प्रभास (वेरावल या सोमनाथ)

प्रभासं च परिक्रम्य पृथिवीक्रमसम्भवम् ।
फलं प्राप्नोति शुद्धात्मा मृतः स्वर्गे महीपते ॥

शुद्ध चित्त पुरुष प्रभासकी परिक्रमा करके पृथिवी परिक्रमाका फल पाता है । यहाँ मरकर स्वर्ग जाता है ।

प्रभास क्षेत्र वह पावन तीर्थ है जहाँ श्रीकृष्णने पूरे यादव कुलको मरणासन्न जानकर जानेकी प्रेरणा दी । यहाँ सोमनाथलिंग द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें है ।

मार्ग– पश्चिमी रेलवेकी राजकोट-वेरावल या खिजडिया-वेराबल लाइनसे वेरावल जा सकते हैं । यह समुद्र तटपर बन्दरगाह है । वेरावल स्टेशनसे प्रभासपाटण ५ कि.मी है । स्टेशनसे बसें चलती हैं । स्टेशनके पास धर्मशाला है ।

तीर्थ– प्रभास नगरके बाहर समुद्रको अग्नितीर्थ कहते हैं । यहाँ स्नान करके तब प्राची त्रिवेणीमें स्नान करने जाना चाहिये ।

प्राची त्रिवेणी– यह नगरसे १ कि.मी. दूर है । नगरसे जायें तो मार्गमें ब्रह्मकुण्ड बावली पहिले मिलती है । उसके पास ब्रह्मकमण्डलकूप तथा ब्रह्मेश्वर मन्दिर है । आगे आदि-प्रभास और जल-प्रभास दो कुण्ड हैं । नगरके पूर्व कपिला नदी सरस्वतीमें, सरस्वती हिरण्यामें और हिरण्या समुद्रमें मिलती है ।

प्राची त्रिवेणीसे थोड़ी दूरीपर सूर्य मन्दिर है । आगे एक गुफामें हिंगलाज भवानी और सिद्धनाथ शिव हैं । समीप ही वट वृक्षके नीचे बलदेवजीका मन्दिर है । यहाँसे बलदेवजी शेष रूपसे पाताल

गये । इसके पास बल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है ।

इसे देहोत्सर्ग तीर्थ कहते हैं । भालक तीर्थमें श्रीकृष्णके चरणोंमें बाण लगा और यहाँसे वे स्वधाम गये । यहाँ त्रिवेणी माता, महाकालेश्वर, श्रीराम, श्रीकृष्ण तथा भीमेश्वर मन्दिर हैं ।

यादव स्थली– देहोत्सर्गसे आये हिरण्या नदीके किनारे है । यदुवंशी परस्पर युद्ध करके यहीं मरे । यहाँसे नगरमें लौटते समय नृसिंह-मन्दिर मिलता है ।

बाण-तीर्थ– वेराबल स्टेशनसे सोमनाथ आते समय मार्गमें समुद्र किनारे है । यहाँ शशिभूषण शिवका पुराना मन्दिर है । इसके पश्चिम समुद्र तटपर चन्द्रभागा-तीर्थ तथा रेतमें कपिलेश्वर स्थान है ।

भालक तीर्थ– कुछ लोग बाणतीर्थको ही भालक तीर्थ कहते हैं । लेकिन बाणतीर्थसे २.५ कि.मी. पश्चिम भालुपुर ग्राममें भालक तीर्थ है । यहाँ भालकुण्ड सरोवर है । उसके पास पद्मकुण्ड है । समीप ही मोक्ष पीपलके नीचे प्रकटेश्वर (भालेश्वर) शिवका स्थान है । यहीं बैठे श्रीकृष्णके चरणमें जरा नामक व्याधने बाण मारा था । चरणमें लगा बाण निकाल कर भालकुण्डमें फेंका गया । उसके पास दुर्गकूट गणेश मन्दिर है । पास ही कर्दमकुण्ड तथा कर्दमेश्वर शिव-मन्दिर है ।

सोमनाथ– यह मन्दिर बार-बार बना, बार-बार नष्ट हुआ । अब नवीन मन्दिर प्राचीन मन्दिरके स्थानपर ही बना । यह मन्दिर समुद्र किनारे है ।

अहिल्याबाईका मन्दिर– नवीन सोमनाथ मन्दिरसे थोड़ी ही दूरीपर यह अहिल्याबाई द्वारा बनवाया गया सोमनाथ मन्दिर है । यहाँ सोमनाथ लिंग भूमिके नीचे है । वहाँ भूगर्भमें पार्वती, लक्ष्मी,

गंगा, सरस्वती और नन्दीकी मूर्तियाँ हैं। इसके ठीक ऊपरी भागमें अहिल्येश्वर लिंग है। मन्दिरके घेरेमें ही एक ओर गणेशजीका मन्दिर और द्वारके पास आघोर-लिंग मूर्ति है।

अन्य मन्दिर– अहिल्याबाईके मन्दिरके पास ही महाकाली मन्दिर है। नगरमें गणेश, भद्रकाली तथा दैत्यसूदन मन्दिर हैं। नगर द्वारके पास गौरीकुण्ड सरोवर है।

कथा– सोमनाथ अनादि तीर्थ है। प्रजापति दक्षने अपनी २७ कन्याएँ चन्द्रमासे ब्याह दी थीं, किन्तु चन्द्रमाका प्रेम केवल रोहिणीसे था। इस पक्षपातसे रुष्ट दक्षने चन्द्रमाको क्षय होनेका शाप दिया। यहाँ सोमनाथकी आराधना करके चन्द्रदेव शापमुक्त हुए।

सृष्टिके प्रारम्भमें ब्रह्माजीको भूमि खोदनेपर कुक्कुटाण्ड बराबर स्वयम्भू स्पर्श-लिंग सोमनाथके दर्शन हुए। उस लिंगको मधु तथा दर्भसे ढककर ब्रह्माने उसपर ब्रह्मशिला रख दी। उसके ऊपर वृहत्सोमनाथ लिंगकी स्थापना की। चन्द्रमाने उस वृहत् लिंगका ही पूजन किया। मूल लिंग मनुष्य, देवता सबके लिये अस्पृश्य है। उस स्थानपर स्थापित लिंगको सोमनाथ ज्योतिर्लिंग माना जायगा, यह मर्यादा सृष्टिकर्ताने भविष्य समझकर उसी समय निर्धारित कर दी।

सोमनाथ मन्दिर ज्ञात इतिहासमें पाँच बार बना और नष्ट हुआ। छठी बार अहिल्याबाईने वहाँसे थोड़ी दूर हटकर सोमनाथ मन्दिर बनवाया। वर्तमान मन्दिरकी नींव सरदार पटेल द्वारा स्वाधीन भारतमें रखी गई। यह मन्दिर पूर्वके स्थानपर ही स्थित है।

गिरिनार-जूनागढ़

गिरिनार अत्यन्त पवित्र पर्वत है । इसका प्राचीन नाम रैवत गिरि तथा उज्जयन्त है । श्रीबलरामजीने यहाँ द्विविदको मारा था । यह यादवोंकी क्रीड़ाभूमि थी । योगियोंकी यह प्रिय तपोभूमि है । भगवान् दत्तात्रेय यहाँ गुप्तरूपसे रहते हैं । यह उज्जयन्त पर्वत जैनोंके पाँच पवित्र पर्वतोंमें है तथा वस्त्रापथ सिद्ध-क्षेत्र है । कहा जाता है–

गया पिण्ड दीन्हें नहीं, चढ़े न गिरि गिरिनार ।
श्रवण सुने नहिं भागवत, जाये जननी भार ॥

मार्ग– राजकोट-वेरावल लाइनपर जूनागढ़ स्टेशन वेरावलसे कई स्टेशन पहले पड़ता है । स्टेशनके समीपसे ही जूनागढ नगर प्रारम्भ हो जाता है । यहाँ ठहरनेके लिये कई धर्मशालाएँ हैं ।

जूनागढ़– यह नगर भक्तश्रेष्ठ नरसी मेहताकी जन्म-भूमि है । नगरमें नरसी मेहताका घर है । नरसीके आराध्य श्रीश्यामसुन्दरका वहाँ मन्दिर है । आँगनमें नृसिंह चबूतरा है । एक छोटा शिव-मन्दिर भी है ।

ऊपर कोट –गिरिनार मार्गके समीप यह पुराना किला है । प्रवेश द्वारके समीप श्रीहनुमानजीकी विशाल मूर्ति है । भीतर गुफाओंमें बौद्ध मूर्तियाँ हैं ।

दातार शिखर– गिरिनार द्वारसे एक ओर यह शिखर है । यहाँ एक पवित्र जल स्रोत है । गुफामें दातार-स्थान है । नीचे कई जलाशय हैं । लोगोंका विश्वास है कि यहाँ रहनेसे कुष्ठ मिट जाता है, अतः यहाँ कोढ़ी रहते हैं ।

गिरिनार– स्टेशनसे २.५ कि.मी. पर जूनागढ़का गिरिनार द्वार है। द्वारके बाहर एक ओर दातार शिखरके नीचे बाघेश्वरी देवी, वामनेश्वर शिव, कुछ आगे मुचुकुन्देश्वर शिव मन्दिर है। यहाँ अशोकका शिला-लेख है।

दामोदर-कुण्ड– गिरिनारकी तलहटीमें स्वर्णरेखा नामक छोटी नदी बहती है। उसे बाँधकर यह सरोवर बना है। कहते हैं कि यहाँ ब्रह्माने यज्ञ किया था। इस कुण्डमें लोग अस्थिविसर्जन करते हैं। कुण्डपर राधा-दामोदर मन्दिर है।

रेवती कुण्ड– दामोदर-कुण्डके आगे है। यहाँ महाप्रभु वल्लभाचार्यकी बैठक है। समीप ही भवनाथेश्वर मुचुकुन्देश्वर मन्दिर हैं। मुचुकुन्देश्वरकी परिक्रमामें गणेश, देवी, पञ्चमुखी हनुमान, नीलकण्ठ महादेव तथा गुफामें कालीकी मूर्ति है। यहाँ पास ही मृगीकुण्ड है। उसके पास मेघभैरव तथा वस्त्रापथेश्वर लिंग है।

लम्बे हनुमान– यह मन्दिर भवनाथेश्वरसे आगे है। यहाँ श्रीराम-मन्दिरमें यात्री रात्रिको ठहरते हैं जिससे बड़े सवेरे गिरिनार चढ़ सकें। यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं। स्टेशनसे यह स्थान ५.५ कि.मी है। यहींसे गिरिनारकी चढ़ाई प्रारम्भ है।

भर्तृहरि गुफा– लगभग ढाई हजार सीढ़ियाँ चढ़नेपर यह गुफा है। इसमें भर्तृहरि तथा गोपीचन्दकी मूर्तियाँ हैं।

जैन मन्दिर– तलहटीसे लगभग ३ कि.मी. ऊपर जैन-मन्दिर मिलने लगते हैं। यहाँ ये कई मन्दिर हैं। मुख्य मन्दिर श्रीनेमिनाथका है। समीप ही कोटके भीतर गुफामें पार्श्वनाथकी मूर्ति है। चारों ओर तीर्थंकरोंके २४ स्थान हैं। एक मन्दिरमें २० सीढ़ी नीचे श्रीआदिनाथकी मूर्ति है। इसके पीछे सूर्यकुण्ड तथा भीमकुण्ड हैं।

यहाँ जैन धर्मशाला है ।

राजुलजीकी गुफा–कोटके बाहर १०० सीढ़ी बाद एक मार्ग इस गुफाको जाता है । वहाँ राजुलकी मूर्ति तथा श्रीनेमिनाथके चरण-चिह्न हैं । गुफामें बैठकर घुसना पड़ता है । मुख मार्गमें श्रीनेमिनाथजीका मन्दिर तथा जटाशंकर सनातनधर्म धर्मशाला है ।

सातपुड़ा-कुण्ड– जटाशंकर धर्मशालासे थोड़ी ही आगे यह कुण्ड है । यहाँ सात शिलाओंके नीचेसे जल आता है । एक कुण्ड से अलग जल लेकर स्नान किया जाता है । इसे तीर्थ मानते हैं । पासमें गंगेश्वर तथा ब्रह्मेश्वर मन्दिर हैं ।

इससे आगे दत्तात्रेय, सत्यनारायण भगवान्के मन्दिर हैं । हनुमानजी, भैरवजीके स्थान हैं । महाकाली मन्दिर है, जिसे साचा काकाका स्थान कहते हैं ।

अम्बिका-शिखर– सातपुड़ा कुण्डसे यह स्थान बहुत दूर नहीं है । हजार-डेढ़ हजार सीढ़ी ऊपर है । यह प्रथम शिखर है । यहाँ देवीका विशाल मन्दिर है । इधरके लोग ५१ शक्ति पीठों में मानते हैं । जैन भी यहाँ दर्शन करने आते हैं और इसे अपना मन्दिर मानते हैं ।

गोरख-शिखर– अम्बिका-शिखरसे कुछ दूर समान चलकर थोड़ी सीढ़ियोंके ऊपर यह शिखर है । यहाँ गोरखनाथजीने तप किया था । यहाँ उनकी धूनी तथा चरण-चिह्न हैं । श्रीनेमिनाथके चरण-चिह्न भी हैं । एक योनिशिला है । उसके नीचेसे लेटकर यात्री निकलते हैं ।

दत्त-शिखर– गोरख शिखरसे ६०० सीढ़ी उतरकर फ़िर ८०० सीढ़ी चढ़ना पड़ना है । यहाँ गुरु दत्तात्रेयका तपःस्थान है । उनकी

चरणपादुकाएँ हैं, एक बड़ा घण्टा लगा है । जैन इसे नेमिनाथजीका मोक्ष-स्थान मानते हैं ।

नेमिनाथ-शिखर– गोरख शिखरसे उतरकर दत्त-शिखर जानेसे पूर्व जैन यात्री इसपर जाते हैं । इसपर चढ़नेको सीढ़ियाँ नहीं हैं । इस शिखरपर नेमिनाथजीकी मूर्ति और चरण-चिह्न हैं । यहाँ की चढ़ाई कठिन है । गोमुख-कुण्डसे उत्तर दाहिनी ओर सहसावन है । वहाँ श्रीनेमिनाथजीने दीक्षा ली थी ।

कमण्डलु-कुण्ड– दत्त शिखर चढ़नेसे पूर्व एक मार्ग अलग नीचे दाहिनी ओर जाता है । यह सीधे कमण्डलु-कुण्डपर जाता है ।

महाकाली शिखर– कमण्डलु-कुण्डसे एक पगदण्डी जाती है । गुफामें महाकालीकी मूर्ति और उनका खप्पर है । कम ही यात्री यहाँ तक आ पाते हैं ।

आसपासके तीर्थ

१- कमण्डलु-कुण्डसे एक मार्ग पाण्डव गुफा जाता है । रास्ता बहुत खराब है ।

२- सातपुड़ा कुण्डसे एक मार्ग दाहिनी ओर जाता है । इस मार्गमें सेवादासजीका स्थान और पत्थर-चट्टी है । दोनोंपर ठहर सकते हैं । इसपर जैनोंका सहसावन और आगे सीतामढ़ी है । वहाँ श्रीराम-मन्दिर तथा रामकुण्ड और सीताकुण्ड हैं ।

३- सीतामढ़ीसे आगे पोला (खोखला) आमवृक्ष है । उसकी जड़में सदाजल भरा रहता है । यह जल औषधि रूप है ।

४- सहसावनके आगे भरतवनमें राम-मन्दिर है ।

५- **हनुमानधारा**–सहसावनके बायें मार्गसे जानेपर कुछ दूरीपर हनुमानजीकी मूर्ति है । उनके मुखसे जल-धारा निकलती है । एक हनुमान मन्दिर भी है ।

६- **जटाशंकर**– सहसावनकी धर्मशालाके पाससे एक इस मार्गमें जटाशंकर मन्दिर है । वहाँसे भवनाथेश्वर होकर नगरमें आ सकते हैं ।

७- **इन्द्रेश्वर**–जूनागढ़ स्टेशनसे ८ कि.मी. दुर यह शिव मन्दिर जंगलमें है । सड़क जाती है । यहाँ तक कुण्ड भी है । कुछ साधु रहते हैं । नरसी मेहताने यहाँ कई दिन अनशन किया । यहाँ उन्हें प्रगट होकर शंकरजीने दर्शन दिया । जिस लिंगसे भगवान् शिव प्रकट हुए, वह फटा लिंग है । समीपमें दूसरी लिंग मूर्ति है । यहाँ देवराज इन्द्रने तप किया था ।

वडनगर-हाटकेश्वर

आनर्तविषये रम्यं सर्वतीर्थमयं शुभम् ।
हाटकेश्वरजं क्षेत्रं महापातकनाशनम् ॥

आनर्त देशमें सर्वतीर्थमय शुभ महापातक नाशक हाटकेश्वर क्षेत्र है ।

हाटकेश्वर ज्योतिर्लिंग है । वैसे मूल हाटकेश्वर लिंग तो पातालमें है; किन्तु नागर ब्राह्मणोंके कुलदेवता ये हाटकेश्वर पृथ्वीमें ज्योतिर्लिंग स्वरूप हैं ।

मार्ग– मेहसाणा-तारंगाहिल लाइनपर मेहसाणासे ३४ कि.मी. पर वडनगर स्टेशन है । स्टेशनसे ग्राम लगा हुआ है ।

कहते हैं कि भगवान् वामनने त्रिलोकी नापते समय प्रथम पद यहीं रखा था । श्रीकृष्णचन्द्र यहाँ आये थे ।

तीर्थ– यहाँका मुख्य मन्दिर हाटकेश्व वडनगर ग्रामके पश्चिम में है । ग्रामके पूर्व अमथेर मातादेवी मन्दिर है ।

हाटकेश्वरके सामने ही विश्वामित्र-सरोवर है । वहाँ सप्त ऋषियोंकी मूर्तियाँ हैं । गाँवसे थोड़ी दूरपर पुष्करतीर्थ-कुण्ड है । गौरीकुण्ड भी है । यहाँ कपिला नदीमें केवल वर्षामें जल रहता है । नृसिंह मन्दिर और अजपाल मन्दिर प्राचीन हैं ।

गाँवमें बालाजी, श्रीराम, स्वामीनारायण, लक्ष्मी-नारायण, नर-नारायण, द्वारिकाधीश, तुलसी, बलदेव, कुशेश्वर, ओंकारेश्वर, महाकाली, बहुचरा, शीतला, वाराही, भुवनेश्वरी आदिके मन्दिर हैं ।

गाँवके आसपास शर्मिष्ठा-सरोवर, कुम्भेश्वर, महाकालेश्वर, जालेश्वर, सोमनाथके मन्दिर हैं । रामटेकरी, नरसीबाव, पिठोर माताका मन्दिर आदि कई मन्दिर तथा कुण्ड हैं ।

सिद्धपुर

पुराणोंमें धर्मारण्य क्षेत्र प्रसिद्ध है । उसका केन्द्र सिद्धपुर है । यह मातृगयाका स्थान है । इसका प्राचीन नाम सिद्धस्थल है । यहीं महर्षि कर्दमका आश्रम था । भगवान् कपिलकी यह अवतार-स्थली है ।

मार्ग– पश्चिम रेलवेकी अहमदाबाद-दिल्ली लाइनपर सिद्धपुर स्टेशन है । स्टेशनसे बिन्दुसरोवर १ कि.मी. और सरस्वती नदी १.५ कि.मी. दूर है । स्टेशनके पास धर्मशाला है ।

तीर्थ– यात्री पहिले सरस्वतीमें स्नान करते हैं । इसकी धारा समुद्रमें न मिलकर कच्छके मरुस्थलमें लुप्त हो जाती है । अतः यह कुमारिका मानी जाती है ।

तटपर पीपलका वृक्ष है । यहाँ ब्रह्माण्डेश्वर मन्दिर है । यात्री यहाँ भी श्राद्ध करते हें ।

बिन्दु-सरोवर– सरस्वती तटसे १.५ कि.मी. है । मार्गमें गोविन्दजी और माधवके मन्दिर हैं ।

यहाँ तीन जलाशय हैं- १-अल्पा-सरोवर, २-बिन्दुसरोवर और ३- ज्ञानवापी । पहिले अल्पा-सरोवरमें स्नान करके फिर बिन्दु सरोवरमें स्नान करते हैं । अन्तमें ज्ञानवापीमें स्नान या मार्जन करके यहाँ माताके लिये पिण्डदान करते हैं । पिण्ड अल्पा-सरोवरमें विसर्जित होते हैं ।

बिन्दु सरोवरके किनारे छोटे मन्दिरोंमें महर्षि कर्दम, माता देवहूति, महर्षि कपिल तथा गदाधर भगवान्‌की मूर्तियाँ हैं । समीप ही लक्ष्मी-नारायण, श्रीराम, सिद्धेश्वर शिवके मन्दिर तथा वल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है ।

रुद्रमहालय– सरस्वतीके समीप सोलंकी सिद्धराज जयसिंह द्वारा निर्मित यह मन्दिर है, जिसे अलाउद्दीनने तोड़कर मस्जिद बना दिया । अब भी शिखरदार मन्दिर, सभा-मंडप तथा कुण्ड है ।

सिद्धपुरमें सिद्धेश्वर, हाटकेश्वर, गोविन्द-माधव, भूतनाथ, राधाकृष्ण, रणछोड़जी, नीलकण्ठेश्वर, सहस्रकलादेवी, अम्बामाता, कनकेश्वरी, आशापुरी आदि अनेकों मन्दिर हैं ।

कथा– १-समुद्र-मन्थनके पश्चात् लक्ष्मीजी प्रगट होकर यहीं बैठी थीं ।

२- महर्षि कर्दमकी इस तपोभूमिमें भगवान् कपिलने अवतार लिया। भगवान् नारायणके नेत्रसे कृपाश्रु बिन्दु सरोवरमें गिरा। माता देवहूतिका देह अन्तमें जल बन गया। वह ज्ञानवापी है। माताकी सखी अल्पाका शरीर भी द्रव हो गया। वह अल्पा-सरोवर है। यह अल्पा ब्रह्माजीकी पुत्री थी।

३- पिताकी आज्ञासे परशुरामने माताका वध किया। यहाँ स्नान तथा मातृ-तर्पण करके वे मातृ-वधके पापसे मुक्त हुए।

आबू

इसका प्राचीन नाम अर्बुद गिरि है। इसे हिमालयका पुत्र कहते हैं।

मार्ग–अहमदाबाद दिल्ली लाइनपर आबूरोड स्टेशन है। वहाँसे आबू २७ कि.मी. है। मोटर-बसका मार्ग है।

पैदल मार्गमें– ऋषिकेश मन्दिर है। यहाँ श्रीकृष्णने विश्राम किया था। आगे महाराज अम्बरीषकी तपोभूमि है। मार्गमें धर्मशाला है। मणिकर्णिका-कुण्ड तथा सूर्य-कुण्ड और कर्णेश्वर मन्दिर है।

वशिष्ठाश्रम– यह आबूके सड़क मार्गमेंसे ७५० सीढ़ी नीचे उतरनेपर है। यहाँ वशिष्ठ कुण्डमें गोमुखसे जल गिरता है। महर्षि वशिष्ठकी यह तपोभूमि है। मन्दिरमें वशिष्ठजी तथा अरुन्धतीकी मूर्तियाँ हैं।

गौतमाश्रम– वशिष्ठाश्रमसे ३०० सीढ़ी नीचे नागकुण्ड है। ध्यानस्थ ऋषि मूर्ति, कामधेनु तथा बछड़ेकी मूर्ति और अर्बुदादेवी मूर्ति है। मन्दिरमें महर्षि गौतमकी मूर्ति है।

कथा– गौतमजीके शिष्य उत्तंग गुरुपत्नीको गुरु दक्षिणा देनेके लिये राजा सौदासकी रानीके कुण्डल मांग लाये । उन्हें चुराकर तक्षक नाग पाताल चला गया । उत्तंगने भूछिद्र द्वारा पाताल तक उसका पीछा किया और कुण्डल लौटा लाये । महर्षि वशिष्ठने वह छिद्र भरवा दिया । वहीं नागकुण्ड है ।

नखी तालाब– यह आबू बाजारके पीछे विस्तृत झील है । देवताओंने अपने नखोंसे इसे खोदा है । इस सरोवरके समीप दुलेश्वर मन्दिर, रघुनाथजीका मन्दिर, चम्पागुफा, रामकुण्ड, रामगुफा, कपिलातीर्थ, कपालेश्वर मन्दिर आदि हैं । रामकुण्ड दक्षिणमें है । यह एक शिखरपर सरोवर तथा मन्दिर है । पासमें रामगुफा है ।

अर्बुदा देवी– नखी तालाबके उत्तर शिखरपर गुफामें देवीकी मूर्ति है । बाहर शिव-मन्दिर है ।

देलवाड़ा जैनमन्दिर– आबू सिविल स्टेशन १.५ कि.मी. पर देलवाड़ामें ५ जैन मन्दिर हैं । ये विमलशाहके बनवाये मन्दिर अपनी कलाके लिये प्रख्यात हैं । इनमें मध्यमें चौमुखा मन्दिर है । इसमें आदिनाथकी चतुर्मुख मूर्ति है । यह तीन मंजिला मन्दिर है । इसके उत्तरमें आदिनाथका दूसरा मन्दिर तथा पश्चिममें विमलशाहका बनवाया मन्दिर है । वास्तुपाल एवं तेजपालके बनवाये मन्दिर पासमें हैं । देवरानी-जेठानीके मन्दिर और ढूँढ़िया मन्दिर भी हैं ।

यज्ञेश्वर– देलवाड़ाके पास ही तीन पुरानी मठी हैं । इन्हें कुवाँरी कन्याका मन्दिर कहते हैं । पासमें पंगुतीर्थ, अग्नितीर्थ, पिण्डारक-तीर्थ तथा यज्ञेश्वर मन्दिर हैं ।

कनखल– देलवाड़ासे ६.५ कि.मी. ओरिया गाँवमें यह तीर्थ है । यहाँ तीर्थंककर महावीर स्वामी मन्दिरके पास चक्रतीर्थ एवं

चक्रेश्वर शिव-मन्दिर है ।

गुरुदत्त– ओरियासे आगे जावई ग्राममें नागतीर्थ है । आगे केदार-कुण्ड, केदारेश्वर मन्दिर है । फिर कठिन चढ़ाई है । शिखरपर गुरुदत्तके चरण-चिह्न हैं तथा घंटा बँधा है ।

अचलेश्वर– ओरिया ग्रामसे १.५ कि.मी. पर तीर्थंकर शान्तिनाथका मन्दिर है । पासमें अचलेश्वर-शिव मन्दिर है । इसमें पञ्चधातुकी मूर्ति है । उसके पादांगुष्ठकी पूजा होती है । मन्दिरके पीछे मन्दाकिनी-कुण्डपर अर्जुन तथा महिषासुरकी मूर्तियाँ हैं । थोड़ी दूरीपर रेवती कुण्ड है । उसके १.५ कि.मी. पर गोमती-कुण्ड है । इसे भृगु आश्रम कहते हैं । शंकरजीका मन्दिर तथा ब्रह्माकी मूर्ति है ।

अचलगढ़ जैन मन्दिर–अचलेश्वरके पाससे कोटका प्रवेश द्वार है । द्वारके पास हनुमानजीकी मूर्ति है । भीतर कर्पूरसागर-सरोवर तथा धर्मशाला है । ऊपर चौमुखीजीके मुख्य मन्दिरकी मूर्ति १२० मनकी है । यह पञ्चधातुकी है । दूसरा मन्दिर श्रीनेमिनाथका है । समीप दो कुण्ड तथा भर्तृहरि गुफा है ।

आसपासके तीर्थ

१- **आरासुर अम्बाजी**–आबूरोड बाजारसे आरासुर ३८ कि.मी. है । मोटर-बस जाती है । यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं । यहाँ अम्बाजीका मन्दिर है । मन्दिरमें मूर्ति नहीं है । आलेमें यन्त्रपर शृंगार किया रहता है कि सिंहपर बैठी देवीके दर्शन होते हैं । मन्दिरके पीछे सरोवर है ।

२- **कोटेश्वर**–आरासुरसे ५ कि.मी. पर यह शिव-मन्दिर है ।

पर्वतमें गोमुखसे निकलकर सरस्वती नदी कुण्डमें गिरती है। सरस्वती उद्गम होनेसे यह पवित्रतीर्थ है ।

उत्तर-मध्य भारत ◉◉◉◉◉◉◉◉◉◉◉

नाथद्वारा

मारवाड़-मावली रेल लाइनपर नाथद्वारा रोड स्टेशन है। वहाँसे नाथद्वारा नगर ११ कि.मी. है । यहाँ कई धर्मशालाएँ हैं ।

यहाँका मुख्य मन्दिर श्रीनाथजीका है। यह बल्लभ-सम्प्रदायका प्रधान पीठ है । बस्तीके पास ही बनास नदी है ।

श्रीनाथजीकी सेवा बड़े भावसे होती है। दर्शन समय-समयपर खुलते हैं। यहाँ मन्दिरमें आसपास नवनीतलालजी, विठ्टलनाथजी, कल्याणरायजी, मदन-मोहनजी, वनमालीजी तथा मीराबाईके मन्दिर हैं। श्रीहरिरायजीकी बैठक है ।

श्रीनाथजीका प्रसाद यहाँ बाजारमें बिकता है ।

श्रीनाथजीकी मूर्ति ब्रजमें गोवर्धनपर बल्लभाचार्यजीके सम्मुख प्रकट हुयी थी । ब्रजमें यवन उपद्रवकी आशंका होनेपर यह मूर्ति मेवाड़ लाई गयी । वर्तमान स्थानपर पीपलके नीचे उस गाड़ीके पहिये भूमिमें धँस गये, जिसमें श्रीनाथजी थे । अतः यहीं मन्दिर बना ।

काँकरौली

काँकरौली स्टेशनसे ५ कि.मी. और नाथद्वारासे मोटर मार्गसे १७ कि.मी. है । स्टेशनके पास तथा नगरमें धर्मशालाएँ हैं ।

यहाँका मुख्य मन्दिर द्वारिकाधीशका है । कहते हैं कि महाराज अम्बरीष इनकी आराधना करते थे । मन्दिरके समीप रायसागर नामक झील है ।

चारभुजाजी

काँकरौलीसे मोटर मार्गसे ९.५ कि.मी. है । सड़कसे हटकर गाँवमें चारभुजाजीका मन्दिर है ।

एकलिंगजी

नाथद्वारा-उदयपुर मोटर बसके मार्गमें उदयपुरसे १९ कि.मी. पर यह स्थान है । यहाँ धर्मशाला है ।

एकलिंगजीका मन्दिर विशाल है । एकलिंग मूर्ति चतुर्मुख मूर्ति है । मन्दिरके विशाल घेरेमें बहुतसे छोटे-बड़े मन्दिर हैं । इनमें अधिकांशमें शिवलिंग हैं ।

मन्दिरके पास इन्द्रसागर-सरोवर है । सरोवर बड़ा है । उसके समीप गणेश, लक्ष्मी, डुंटेश्वर, धारेश्वरादि मन्दिर हैं । एकलिंग मन्दिरसे थोड़ी दूरीपर वनवासिनी देवीका मन्दिर है ।

श्रीएकलिंगजी मेवाड़के राणाओंके आराध्य देव हैं । महाराणा कुम्भा द्वारा वर्तमान मन्दिरका जीर्णोद्धार हुआ ।

चित्तौड़गढ़

अजमेर-खंडवा लाइनपर चित्तौड़गढ़ स्टेशन है । स्टेशनके समीप धर्मशाला है ।

चित्तौड़ भारतका वीरतीर्थ है, सती-तीर्थ है और मीराबाईके कारण भक्तितीर्थ है । यहाँका कण-कण बलिदानी वीरों तथा सतियोंके रक्तसे सिञ्चित है ।

चित्तौड़ दुर्ग स्टेशनसे ५ कि.मी. है । मार्गमें एक नदी है । दुर्गमें जानेका एक ही मार्ग है ।

दुर्गके भीतर एक ओर चारभुजाजीका मन्दिर है । यह चतुर्भुज श्रीरघुनाथजीका मन्दिर है । रघुनाथजीका चतुर्भुज मन्दिर देशमें यहीं है । महाराणा प्रतापका जन्म स्थान, मीरा-मन्दिर, रानी पद्मिनीका महल, पन्नाधायका स्थान, कीर्ति-स्तम्भ, जयस्तम्भ, जटाशंकर मन्दिर, गोमुख-कुण्ड तथा सतियोंके स्थान और कालिका मन्दिर दर्शनीय हैं ।

मीराबाईके गिरिधर गोपालके मन्दिरके समीप ही देवी-मन्दिर है । दुर्गमें जयमल-फत्ताके बलिदानके स्मारक स्थल हैं ।

चारभुजा रघुनाथजी भक्त श्रीभवनजीके आराध्य हैं । वहीं श्रीमुरलेश्वर शिव मन्दिर भी है ।

उदयपुर

उदयपुर राजस्थानका प्रसिद्ध नगर है । यह स्टेशन है और बसोंका भी केन्द्र है ।

उदयपुर वीरतीर्थ है । महाराणा प्रतापकी यह निवास-भूमि थी । उनके खड्ग, कवच, भाला तथा शस्त्र यहाँ सुरक्षित हैं । महाराणाके प्रिय अश्व चेतककी जीन है । सबसे महत्वपूर्ण है बप्पा रावलका खड्ग । यह सब यहाँ संग्रहालयमें सुरक्षित हैं ।

सती तीर्थ–झीलके किनारे महासती स्थान है । मेवाड़का तो

कण-कण सती-तीर्थ है ।

मन्दिर– श्रीबाईजीराज-कुण्डपर श्रीनवनीतरायजीका मन्दिर है । ये आचार्य श्रीनारायणशरण देवाचार्यके आराध्य हैं । निम्बार्क सम्प्रदायकी महंत-गादी उदयपुरमें ही है ।

यहाँ श्रीजगन्नाथजीका विशाल मन्दिर है । समीप ही बल्लभ सम्प्रदायके तीन मन्दिर हैं ।

ओंकारेश्वर

ओंकारेश्वर ज्योर्तिलिंग है । इसकी एक विशेषता है कि यहाँ दो ज्योतिर्लिंग हैं । ओंकारेश्वर और अमलेश्वर दोनोंको एक ही गिना जाता है ।

नर्मदाके बीचमें महाराज मान्धाताकी तपोभूमि मान्धाता टापू है । यह कुल १.५ वर्ग कि.मी. क्षेत्रफलका है । इसपर ओंकारेश्वर हैं और नर्मदाके पार अमलेश्वर हैं । मान्धाता द्वीप प्रणवाकार है । विन्ध्यपर्वत यहाँ ओंकार यन्त्र रूपमें स्थित है । विन्ध्य पर्वतकी आराधनासे भगवान् शिव प्रगट हुये और पर्वतकी प्रार्थनापर ज्योतिर्लिंग युग्मके रूपमें स्थित हैं ।

मार्ग– अजमेर-खंडवा लाइनपर ओंकारेश्वर रोड स्टेशन है । यहाँसे ओंकारेश्वर ११ कि.मी. है । मोटर-बसें जाती हैं ।

नर्मदाकी धारा स्टेशनके पास ही है । वहाँ तक सड़क जाती है । स्टेशनपर एक धर्मशाला है । ओंकारेश्वरमें कई धर्मशालाएँ हैं ।

ओंकारेश्वर– नर्वदा किनारे विष्णुपुरी तक मोटर-बस जाती है ।

पक्का घाट है । नौका द्वारा नर्वदा पार करके मान्धाता द्वीपमें पहुँचते हैं । यहाँ घाटपर नर्मदामें कोटितीर्थ-चक्रतीर्थ हैं । स्नान करके सीढ़ियोंसे ऊपर जाकर मुख्य मन्दिर है ।

मन्दिरके नीचेके भागमें अनगढ़ ओंकारेश्वर लिंग है । यह शिखरके नीचे न होकर एक ओर हटकर है । मूर्तिके चारों ओर जल भरा रहता है । द्वार छोटा है । पासमें पार्वतीजीकी मूर्ति है । सीढ़ियाँ चढ़कर दूसरी मंजिलपर महाकालेश्वर तथा तीसरी मंजिलपर वैद्यनाथेश्वर लिंग है । मन्दिरके घेरेमें पञ्चमुख गणेशजी हैं । इस मन्दिरकी परिक्रमामें रामेश्वर, गौरी तथा सोमनाथके मन्दिर हैं । मन्दिरके पास ज्वालेश्वर, अविमुक्तेश्वर, केदारेश्वर आदि कई मन्दिर हैं ।

मान्धाता टापूकी एक परिक्रमा ३ दिनकी है । दूसरी एक दिनकी । इसमें यहाँके सभी तीर्थ आ जाते हैं । यह टापू तीर्थों और मन्दिरसे परिपूर्ण है ।

अमलेश्वर–मान्धाता टापूसे लौटकर विष्णुपुरीमें यह मन्दिर है । मन्दिर अहिल्याबाईका बनवाया है । अमलेश्वरकी प्रदक्षिणामें वृद्धाकालेश्वर, वाणेश्वर, मुक्तेश्वर, कर्दमेश्वर, तिलभाण्डेश्वर मन्दिर हैं ।

अन्य मन्दिर–विष्णुपुरीमें स्वामि कार्तिक, अघोर गणपति, मारुति, नृसिंहटेकरी, गुप्तेश्वर, ब्रह्मेश्वर, लक्ष्मी-नारायण, विश्वनाथ, शरणेश्वर, कपिलेश्वर, गंगेश्वर और भगवान् कृष्णके दर्शन करनेसे परिक्रमा पूरी होती है । यहाँ कपिल, वरुण, वरुणेश्वर, नीलकण्ठ, कर्दमेश्वर, मार्कण्डेय शिला और मार्कण्डेश्वर हैं ।

विष्णुपुरीमें अमलेश्वर तथा विष्णु मन्दिर मुख्य हैं । मान्धाता

द्वीपमें ओंकारेश्वर तथा संगमपर रणमुक्तेश्वर एवं सिद्धेश्वर प्राचीन मुख्य मन्दिर हैं ।

आसपासके स्थान

मान्धाता द्वीप परिक्रमामें २४ अवतार स्थान है । वहाँसे १.५ कि.मी. पर कुवेरेश्वर मन्दिर तथा च्यवनाश्रम है । उससे ५ कि.मी. दूर नर्मदापार सप्तमातृकाओंके मन्दिर हैं ।

अवन्तिकापुरी- उज्जैन (पुरी ७)

उज्जैनका पुराना नाम अवन्तिकापुरी है । यह मोक्षदायिनी सप्तपुरियोंमें है । इसे पृथ्वीका नाभिस्थान कहा जाता है । द्वादश ज्योतिर्लिंगोंमें एक महाकाल लिंग यहाँ है और ५१ शक्तिपीठोंमें एक शक्तिपीठ है । भगवान् श्रीकृष्णने यहाँ विद्याध्ययन किया है । महाराज विक्रमादित्यकी यह राजधानी थी । वृहस्पति सिंहराशिमें होनेपर बारह वर्षोंमें यहाँ कुम्भ लगता है ।

उज्जैन रेलवेका केन्द्र और बड़ा नगर है । यहाँ ठहरनेके लिये कई धर्मशालाएँ हैं ।

तीर्थ– उज्जैन स्टेशनसे २.५ कि.मी. दूर शिप्रा नदी है । कहते हैं कि यह भगवान् विष्णुके शरीरसे उत्पन्न हुई है । इसपर घाट हैं । नरसिंहघाट, रामघाट, पिशाचमोचन-घाट, छत्रीघाट, गान्धर्वतीर्थ मुख्य हैं । इन घाटोंपर मन्दिर बने हैं । गान्धर्व-तीर्थसे आगे शिप्रापर पुल है । पुलपार दत्त-अखाड़ा, केदारेश्वर, रणजीत तथा हनुमानजीके स्थान हैं । इसीपार शमशानके आगे दुर्गादास राठौरकी छत्री है । आगे ऋणमुक्तेश्वर हैं ।

महाकाल– उज्जैनका यह मुख्य मन्दिर है। यह स्टेशनसे १.५ कि.मी. है। मन्दिरका प्रांगण विशाल है। मध्यमें मन्दिर है। इसमें दो खण्ड हैं। सतहपर मन्दिरमें ओंकारेश्वर लिंग है। इसके ठीक नीचे सीढ़ियोंसे जानेपर महाकाल लिंग है। यह विशाल लिंग मूर्ति नाग परिवेष्टित तथा चाँदीके अरघेमें है। यहीं पार्वती, गणेश, स्वामिकार्तिक्की मूर्तियाँ हैं। एक घृत एवं एक तैलदीप बराबर जलता है। सामने कुण्ड है। यह कोटितीर्थ है।

मन्दिरके प्रांगणमें ऊपर अनादिकालेश्वर, वृद्धकालेश्वरके विशाल मन्दिर हैं। महाकाल मन्दिरके सामने मंडपमें श्रीराम-मन्दिर हैं। उसके पीछे अवन्तिका देवी हैं।

बड़े गणेश– महाकाल मन्दिरके पास ही यह मन्दिर है। समीप ही पञ्चमुख हनुमानजीका मन्दिर है। इसमें मूर्ति सप्तधातुकी है। इस मन्दिरमें और देव मूर्तियाँ हैं।

हरसिद्धि देवी– रुद्र सरोवरके पास बड़े गणेशसे थोड़ी दूरपर यह चहारदीवारीसे घिरा मन्दिर है। यह ५१ शक्तिपीठोंमें है। यहाँ सतीकी कुहनी गिरी थी। मन्दिरमें मुख्यपीठपर श्री-यन्त्र है। मूर्ति नहीं है। पीछे अन्नपूर्णा मूर्ति है। ये महाराज विक्रमादित्यकी आराध्य देवी हैं। इस मन्दिरके पीछे अगस्त्येश्वर मन्दिर है।

चौबीस खम्भा– महाकाल मन्दिरसे बाजारकी ओर है। यहाँ भद्रकाली मन्दिर है।

गोपाल मन्दिर– यह बाजार में है।

गढ़कालिका– नगरसे १.५ कि.मी. दूर है। कहते हैं कि इन्हींकी आराधना करके महाकवि कालिदासमें कवित्वशक्ति आई थी। इसके समीप गणेश, हनुमानजी, भगवान् विष्णु तथा गौर-भैरव मन्दिर

हैं ।

भर्तृहरि गुफा–कालिकासे दो फर्लांग उत्तर खेतमें है । एक संकीर्ण मार्गसे भूगर्भमें जाना पड़ता है ।

काल भैरव–नगरसे ५ कि.मी. दूर भैरव गढ़ बस्तीमें एक टीलेपर मन्दिर है ।

सिद्धवट–कालभैरवसे पूर्व शिप्राके दूसरे तटपर है । यहाँ नारायण बलि आदि होती है ।

अंकपाद–गोपाल मन्दिरसे ३ कि.मी. मंगलेश्वरके मार्गमें यह महर्षि संदीपनिका आश्रम है । यहीं श्रीकृष्ण-बलरामने शिक्षा पाई थी । गोमती सरोवर कुण्ड तथा संदीपनिकी गद्दी है । वल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है । पास ही विष्णुसागर, पुरुषोत्तमसागर, चित्रगुप्त मन्दिर तथा जनार्दन मन्दिर है ।

उज्जैन क्षेत्र विस्तृत है । इसमें २८ तीर्थ, १२ मुख्य शिव मन्दिर, सप्तसागर, अष्ट महाभैरव, एकादश रुद्र, चतुर्दश देवी स्थान तथा ८४ मुख्य लिंग है ।

इस क्षेत्र की नित्य यात्रा, अष्टाविंशति तीर्थ यात्रा, महाकाल यात्रा, नगर प्रदक्षिणा, द्वादश यात्रा, सप्त सागर यात्रा आदि कई प्रकार की यात्राएँ होती हैं ।

पुष्कर

यथा सुराणां सर्वेषामादिस्तु पुरुषोत्तमः ।
तथैव पुष्करं राजंस्तीर्थानामादिरुच्यते ॥

जैसे देवताओंमें सबके आदि भगवान् पुरुषोत्तम हैं, वैसे ही

तीर्थोंमें सब तीर्थोंके आदि पुष्कर हैं ।

प्रयाग तीर्थराज हैं और पुष्कर तीर्थोंके गुरु हैं । पंचतीर्थ और पञ्च सरोवरोंमें पुष्करकी गणना है ।

पंचतीर्थ– १-पुष्कर, २-कुरुक्षेत्र, ३-गया, ४-गंगा, ५-प्रभास

पंचसरोवर– १-मानसरोवर (तिब्बत), २-पुष्कर, ३-बिन्दु सरोवर (सिद्धपुर), ४-नारायण-सर (कच्छ), ५-पम्पा-सरोवर ।

मार्ग– अहमदाबाद-दिल्ली लाइनपर अजमेर प्रसिद्ध स्टेशन है । यहाँसे पुष्कर १० कि.मी. है । मोटर-बसें चलती हैं ।

अजमेरमें तथा पुष्करमें भी कई धर्मशालाएँ हैं ।

तीर्थ– पुष्करमें तीन सरोवर हैं । ज्येष्ठ (प्रधान) पुष्कर, मध्य (बूढ़ा) पुष्कर, ३-कनिष्ठ पुष्कर । इनके देवता क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव हैं ।

प्रधान पुष्कर ही स्नानका मुख्य स्थान है । इसमें जल रहता है । शेष दोमें स्नानको जल रहना उस वर्षकी वर्षापर निर्भर है ।

मुख्य पुष्कर– इसके किनारे पक्के घाट हैं । गौघाट, ब्रह्माघाट, कपालमोचन-घाट, यज्ञघाट, बदरीघाट, रामघाट तथा कोटितीर्थ घाट हैं ।

यहाँका मुख्य मन्दिर ब्रह्माजीका मन्दिर है । ब्रह्माजीके दाहिने सावित्री और बायें गायत्री देवी हैं । एक ओर सनकादिकी मूर्तियाँ हैं । एक मन्दिरमें नारदजी, एकमें गजारूढ़ कुबेर तथा नारद हैं ।

पुष्करका दूसरा बड़ा मन्दिर बदरीनारायणका है । प्राचीन वाराह मन्दिर यवनोंने नष्टकर दिया था । वाराह मन्दिर फिर बना है । नगरके बाहर आत्मेश्वर (कपालेश्वर) मुख्य मन्दिरोंमें है । इन्हें

अटपटेश्वर भी कहते हैं । गुफाके समान सँकरे मार्गसे भीतर जाना पड़ता है ।

रमावैकुण्ठ मन्दिर (श्रीरंग मन्दिर) विशाल है । सरोवरके दूसरे किनारे बल्लभाचार्य महाप्रभुकी बैठक है । पुष्करकी प्रदक्षिणामें यह आती है । वहाँ गया कुण्डपर लोग श्राद्ध करते हैं ।

पुष्करके एक ओर गायत्री पर्वत है । उसपर गायत्री देवी मन्दिर है । यह ५१ शक्तिपीठोंमें है । उसपर सतीका मणिबन्ध (कलाई) गिरा था । दूसरी ओर सावित्री पर्वतपर सावित्री देवीका मन्दिर है । ये दोनों पर्वत ऊँचे हैं । चढ़ाई कड़ी है ।

पुष्करसे कुछ दूर लगभग २ कि.मी. पर यज्ञ पर्वत है । इसके समीप अगस्त्याश्रम है । यहाँ अगस्त्य-कुण्डमें स्नान करके ही पुष्करकी यात्रा पूर्ण मानी जाती है । इस पर्वतके ऊपरसे गोमुखसे निकलने वाले जलस्रोतका दर्शन ही परम पवित्र है । पर्वतके नीचे नाग-तीर्थ है । पासमें सूर्य-कुण्ड, चक्र-कुण्ड, पद्मकुण्ड तथा गंगा-कुण्ड हैं ।

पुष्करमें सरस्वती नदीके पाँच नाम हैं- सुप्रभा, काञ्चना, प्राची, नन्दा और विशालिका । इसमें स्नानका बड़ा महत्त्व है ।

मुख्य पुष्करसे मध्यम (बूढ़ा) पुष्कर जाते समय मार्गसे हटकर लगभग १.५ कि.मी. रेतमें चलकर गया तीर्थ तथा कनिष्ठ पुष्कर है । मुख्य पुष्करसे मध्यम पुष्कर ३ कि.मी. है । यदि वर्षा ठीक हुई हो तो सरोवर विशाल और गहरा है ।

पुष्कर तीर्थकी अन्तर्वेदी परिक्रमा १० कि.मी. की है । मध्यवेदी परिक्रमा १६ कि.मी. की प्रधान वेदी परिक्रमा ३८ कि.मी. की और वहिर्वेदी परिक्रमा ७७ कि.मी. की है ।

पुष्करसे १९ कि.मी. दूर प्राची सरस्वती और नन्दा नदीका संगम तीर्थ है ।

पुष्करके समीप नाग पर्वतपर बहुत-सी गुफाएँ हैं । इनमेंसे भर्तृहरि गुफा विशाल तथा दर्शनीय है ।

कथा– पहिले यहाँ बज्रनाभ राक्षस रहता था । ब्रह्माजीने उस शिशु-घातक राक्षसको अपने हाथका कमल फेंककर मार दिया । वह कमल जहाँ गिरा वहाँ पुष्कर सरोवर बना ।

यहाँ ब्रह्माने विस्तृत यज्ञ-वेदी बनाई । उस वेदीमें तीन पुष्कर तीर्थ बनाये । उस यज्ञमें आये ऋषियोंने आसपास अपने आश्रम बना लिये । देवता तथा भगवान् शिव भी यज्ञमें पधारे ।

यज्ञारम्भमें ब्रह्माकी पत्नी सावित्रीने आनेमें देर की । तब गायत्री नामक गोप-कन्यासे विवाह करके ब्रह्माने उन्हें यज्ञमें साथ बैठाया । सावित्री आईं तो गायत्रीको देखकर रूठकर पर्वतपर चली गईं । वहाँ उन्होंने दूसरा यज्ञ किया ।

करौली

बम्बई-दिल्ली लाइनपर हिंडौन स्टेशन है । यहाँसे करौली मोटर बस जाती है । नगरमें धर्मशाला है । यहाँ राजमहलमें श्रीमदनमोहनजीका मन्दिर है । ये यवन उपद्रवके समय वृन्दावनसे यहाँ आये थे । पास ही श्रीराधा-कृष्ण मन्दिर है । नगरसे बाहर कैलासी देवीका मन्दिर है ।

कैलामाता– करौली से २९ कि.मी. दूर जंगलमें पर्वतपर मन्दिर है । देवीका सिद्धपीठ माना जाता है । पर्वतमें यहाँ एक बड़ी गुफा है । यहाँ धर्मशाला है ।

जयपुर

यह राजस्थानका प्रसिद्ध नगर और वर्तमान राजधानी है। नगरमें धर्मशालाएँ हैं, होटल हैं। नगरके चारों ओर कोट है। उसमें बाहर जानेके ७ द्वार हैं।

मन्दिर–तीर्थभूत मन्दिर श्रीगोविन्ददेवजीका है। राजमहलके सामने उत्तरमें यह मन्दिर है। वृन्दावनमें आततताइयोंका उपद्रव बढ़नेपर यह विग्रह जयपुर लाया गया।

श्रीगोकुलनाथजी– यह श्रीमूर्ति बल्लभाचार्यजीको यमुना किनारे रेतमें मिली थी। गोकुलमें इसकी प्रतिष्ठा हुई। वहाँ विधर्मी उपद्रव बढ़नेपर जयपुर लाई गयी।

इनके अतिरिक्त मदनमोहन, गोपीनाथ, राधा-दामोदर, श्रीराम, विश्वेश्वर महादेव आदि अनेकों मन्दिर जयपुरमें दर्शनीय हैं।

गलताजी– जयपुरके सूर्य पोलसे बाहर पूर्वकी पहाड़ियोंमें यह स्थान है। यह श्रीपयहारीजीका स्थान एवं उनकी धूनी है। एक कुण्ड है जिससे सदा गरम पानी बहता रहता है। यही गलता-तीर्थ है।

गालव ऋषिने यहाँ तप किया था। कुण्डके बाहर पयहारीजीकी गुफामें दो मन्दिर हैं।

मन्दिर दो पहाड़ियोंके मध्यसे ऊपर जानेको मार्ग है। इस मार्गमें गऊधार-कुण्ड है। उसके आगे ऊपर वाले मार्गसे जानेपर पर्वतके शिखरपर सूर्य-मन्दिर मिलता है।

श्रीकरणीदेवी

मारवाड़–बीकानेर रेलवे लाइनपर देशनोक स्टेशन है । उसके समीप ही करणीदेवीका मन्दिर है । ये महामायाकी अवतार मानी जाती है ।

इस मन्दिरमें बहुत चूहे हैं । वे इतने अधिक हैं कि पैरके नीचे न आ जायें, यह बचाकर चलना पड़ता है । यात्री इन्हें पवित्र मानते और भोजन देते हैं । यदि कोई चूहा दबकर मर जाय तो मन्दिर में चांदीका चूहा बनाकर चढ़ना पड़ता है । चूहोंको यहाँ 'काबा' कहते हैं ।

कथा–जोधपुरके सुआप ग्रामके देवी भक्त चारण मेहोजीके ६ पुत्रियाँ थीं, पर पुत्र नहीं था । पुत्र-प्राप्तिकी इंच्छासे उन्होंने हिंगलाज जाकर देवीकी आराधना की । देवीने दर्शन देकर वरदान माँगनेको कहा तो उन्होंने माँगा- 'मेरा नाम चले' उन्हें वरदान मिला । देवी उनकी सप्तम पुत्रीके रूपमें अवतीर्ण हुईं । बालिकाका नाम रिधुबाई तथा दूसरा नाम करणी था । युवा होनेपर पिताने साठी ग्रामके दीपोजीसे विवाह कर दिया । करणीजीने पतिको देवी रूपमें दर्शन देकर दूसरा विवाह करनेकी आज्ञा दी । अतः दीपोजीने उनकी बहिन गुलाबसे विवाह कर लिया । उससे चार पुत्र हुए ।

एक अकालके समय गायोंके साथ करणी देवी साठी ग्रामसे नेड़ी (देशनोकके पास) आयीं । वहाँ उन्होंने अपनी नेड़ी (मथानी) गाड़ दी । वह हरी हो गई और अब खेजड़ी (शमी) वृक्षके रूपमें है । वहाँसे वे देशनोक आईं और ५० वर्ष रहीं ।

जैसलमेर नरेशने पीठके फोड़ेसे तंग आकर देवीको बुलवाया ।

देवीने इस यात्रामें चारणबास गाँवके समीप सरोवरमें स्नान करके देह त्याग दिया । वहाँ उनका स्मारक है । देवीकी आज्ञासे एक सुथारने उनकी मूर्ति बनाकर देशनोक पहुँचाई जो मन्दिरमें स्थापित है । ये बीकानेर नरेशकी कुलदेवी हैं ।

केशवराय पाटण

बम्बई-दिल्ली लाइनके कोटा जंक्शनसे यह स्थान ८ कि.मी. है । बूंदी रोड स्टेशनसे ५ कि.मी. है । यहाँसे मोटर-बसें जाती हैं । यहाँ धर्मशाला है ।

चर्मण्वती (चंबल) नदीके तटपर यह प्राचीन जम्बू अरण्य क्षेत्र है । नदीपर १.५ कि.मी. तक पक्के घाट हैं ।

केशवराय– नदीमें विष्णु-तीर्थ है । वहाँसे लगभग ८० सीढ़ी ऊपर मन्दिर है । इसमें केशवरायकी चतुर्भुज मूर्ति है । एक छोटे मन्दिरमें चार भुजाजी हैं । मन्दिरके चारों ओर गणेश, शेष, अष्टभुजा तथा सूर्य आदि देवता हैं ।

जम्बुमार्गेश्वर– केशवराय मन्दिरके पास ही यह यहाँका सबसे प्राचीन शिव-मन्दिर है । इस मन्दिरके पास हनुमानजी तथा अञ्जनी माताके मन्दिर हैं ।

इस क्षेत्रकी परिक्रमा ५ कोसकी है । इस परिक्रमामें स्थान-स्थानपर मन्दिर तथा तीर्थ मिलते हैं । इसमें नदीके दोनों ओरके तीर्थ हैं । नौकासे नदी पार करना पड़ता है । नदीके मध्यमें नीलकण्ठेश्वर मन्दिर है ।

कथा– कहा जाता है कि पाण्डव बनवासके समय यहाँ रुके थे । उन्होंने श्रीजम्बूमार्गेश्वरके समीप पाँच लिंग और स्थापित किये ।

यहाँ उनकी यज्ञशाला तथा दो मन्दिर हैं । उन मन्दिरोंमें ही पाँचों लिंग हैं ।

महाराज रन्तिदेव एक स्वप्नादेशके अनुसार यहाँ आये । उन्हें दो शिलाएँ मिलीं । उनको तोड़नेपर एकमें चार भुजाजीकी श्यामवर्ण मूर्ति और दूसरेमेंसे केशवरायकी श्वेतवर्ण मूर्ति निकली । महाराजने मन्दिर बनवाकर इनकी स्थापना कर दी ।

यहाँ परशुरामजीने तथा अनेकों ऋषियोंने तप किया है । बटपुरके पर्वतपर रहने वाले महात्मा धूंधलाजीने किसी कारण धूलि वर्षा करके पुराने नगरको नष्ट कर दिया । वहाँ पर्वतपर उनकी मूर्ति है ।

वर्तमान मन्दिर सत्रहवीं सदीके अन्तका बना है । पुराने मन्दिरसे लाकर श्रीकेशवराय तथा चारभुजाजीकी मूर्तियाँ यहाँ राजा शत्रुशल्यजीने स्थापित की हैं । राजा रन्तिदेवका पुराना मन्दिर अभी है । उसमें दूसरी प्रतिमा स्थापित कर दी गयी है ।

लोहार्गल

पश्चिम रेलवे सवाई-माधोपुर-लोहारू लाइनमें सीकर स्टेशन है । वहाँसे ३२ कि.मी. दूर यह स्थान है । ऊँटोंकी सवारी मिलती है । यहाँ ठहरनेके लिये स्थान तथा अन्नसत्र भी है ।

तीर्थ– लोहार्गलसे ३ कि.मी. पहिले चेतनदासकी बावलीपर ५२ भैरव स्थापित हैं । आगे ज्ञानवापी तीर्थपर भीमेश्वर मन्दिर है । बावड़ीके सामने दुर्गाजीका मन्दिर है । ऊपर कई गुफाएँ हैं । यहाँ आसपास कई मन्दिर हैं ।

यहाँ लोहार्गलका मुख्य तीर्थ पर्वतसे निकलने वाली सात धाराएँ हैं । कहा जाता है कि पर्वतके नीचे ब्रह्महृद है । उससे ये धाराएँ निकली हैं ।

यहाँका प्रधान मन्दिर सूर्य-मन्दिर है । पासमें शिव-मन्दिर है । दोनोंके मध्य सूर्यकुण्ड है । आसपास ४५ मन्दिर और हैं । पर्वतपर अत्यन्त दुर्गम स्थानमें वनखण्डीनाथकी छतरी तथा कुण्ड है ।

लोहार्गलसे १.५ कि.मी. पर पर्वतपर मालकेतु मन्दिर है । मार्ग सुगम है । यह बहुत सुन्दर मन्दिर है ।

कथा– ब्रह्महृद तीर्थ देवताओंको प्रिय था । कलियुगके लोग इसे दूषित न करें, यह अनुरोध उन्होंने ब्रह्माजीसे किया । ब्रह्माकी प्रेरणासे हिमालयके पुत्र केतुने आकर तीर्थको ढक दिया । तीर्थ लुप्त हो गया, किन्तु उसकी सात धाराएँ पर्वतके नीचेसे प्रवाहित होने लगीं ।

महाभारतके पश्चात् पाण्डव तीर्थ यात्रा करने निकले । यहाँ आकर भीमसेनकी अष्टधातुकी गदा पानी हो गई । श्रीकृष्णने यही कहा था कि जहाँ भीमकी गदा गल जाय वहाँ समझ लेना कि तुम युद्धकी हिंसासे शुद्ध हो गये । पाण्डव सभी तीर्थोंमें अपने शस्त्र धोते थे ।

इस क्षेत्रकी परिक्रमा सूर्यकुण्डमें स्नान करके प्रारम्भ होती है । वहाँसे कोटितीर्थ जानेपर सरस्वतीमें दो कुण्ड हैं । उनमेंसे एकमें गर्म जल रहता है । मार्गमें अनेकों मन्दिर तथा तीर्थ मिलते हैं । परिक्रमाके मध्यमें तीन रात्रि-विश्राम होता है ।

लोहार्गल राजस्थानका प्रसिद्ध क्षेत्र है । यहाँ लोग अस्थि-विसर्ज़न करने आते हैं ।

अमरकण्टक

पुण्या कनखले गंगा कुरुक्षेत्रे सरस्वती ।

ग्रामे वा यदि वाऽरण्ये पुण्या सर्वत्र नर्मदा ॥

गंगाजी क़नखलमें पवित्र हैं और सरस्वती कुरुक्षेत्रमें, किन्तु नगर हो या व़न नर्मदा सर्वत्र पवित्र हैं ।

अमरकण्टक नर्मदाका उद्‌गम क्षेत्र है । अतः यह तीर्थ परम पवित्र है । इस पर्वतका नाम मेकल है । अतः नर्मदाको मेकलसुता कहते हैं । यहाँ भगवान् शंकर, राजा मेकल तथा अनेकों महर्षियोंने तप किया है ।

मार्ग– इलाहाबाद-मुम्बई रेल लाइनपर सतना स्टेशन उतरकर मोटर-बसका मार्ग रीवा ५१ कि.मी. तक है । रीवासे अमरकण्टक तक मोटर-बस जाती है । कटनी-विलासपुर लाइनमें अनूपपुर स्टेशन उतरें तो भी रीवासे आने वाली बस मिल जाती है । अमरकण्टकमें धर्मशालाएँ हैं । ५ कि.मी. पहिले गौरेला ग्राममें कई धर्मशालाएँ हैं ।

तीर्थ– नर्मदा उद्‌गमपर ११ कोणका पक्का कुण्ड है । इसमें चारों ओर सीढ़ियाँ हैं । इसे कोटितीर्थ कहते हैं । यहींसे नर्मदा निकली हैं । इसके उत्तर नर्मदेश्वर तथा अमरकण्टकेश्वर मन्दिर हैं । पास ही नर्मदा तथा अमरनाथके मन्दिर हैं । दूसरे भी १६ छोटे मन्दिर वहाँ हैं ।

अमरकण्टक बस्तीमें कई मन्दिर हैं । इनमेंसे केशव-नारायण तथा मत्स्येन्द्रनाथके प्राचीन हैं ।

आसपासके तीर्थ

१- नर्मदा उद्‌गमसे १ कि.मी. अग्नि कोणमें मार्कण्डेय ऋषिकी तपोभूमि है । एक चबूतरेपर थोड़ी देव मूर्तियाँ हैं ।

२- **शोणभद्राका उद्‌गम**–अमरकण्टकसे २.५ कि.मी. पर वनमें शोणभद्र नदीका उद्‌गम है । मार्ग घने जंगलका है । उद्‌गम स्थानपर छोटा कुण्ड तथा शोणेश्वर मन्दिर है ।

३- **कबीर-चौतरा**–नर्मदा प्रवाहकी ओर ५ कि.मी. पर यह स्थान है । संत कबीरदास यहाँ कुछ काल रहे थे । यह भी घोर वनके मध्य है । यहाँ तक सड़क है ।

४- **ज्वाला नदीका उद्‌गम**–अमरकण्टकसे ६.५ कि.मी. उत्तर यह स्थान है । यहाँ ज्वालेश्वर मन्दिर है । वनका मार्ग है ।

मैहर (शारदादेवी)

इलाहाबाद-मुम्बई लाइनपर मैहर स्टेशन है । स्टेशनसे २.५ कि.मी. दूर पहाड़ीपर शारदा देवीका स्थान है । यहाँ नीचे यात्रियोंके ठहरनेके स्थान हैं ।

शारदादेवीकी पहाड़ीपर ऊपर तक जानेके लिये सीढ़ियाँ बनी हैं । अब मोटर मार्ग भी ऊपर तक जाता है । मोटरसे जानेपर ५०-६० सीढ़ियाँ चढ़ना पड़ता है ।

ऊपर देवीका मन्दिर है । देवीके मन्दिरके पीछेकी ओर कुछ देवस्थान तथा धूनी है ।

यह ५१ शक्तिपीठोंमें-से है । यहाँ सतीका दाहिना स्तन गिरा था ।

रामवन

इलाहाबाद-मुम्बई लाइनमें सतना स्टेशन उतरें तो सतना-रीवा रोडपर सतनासे रामवन १६ कि.मी. है ।

मोटर-बसें बराबर चलती हैं । यहाँ यात्रियोंके ठहरनेके लिये अतिथिशाला है ।

रामवन आधुनिक कालका तीर्थ है । यह गोस्वामी तुलसीदाजसीके रामचरितमानसके आधारपर निर्मित तीर्थ है । यहाँ 'मानस' मूर्तियोंमें निर्माण हो रहा है । साथ ही यह 'मानस-संघ' का केन्द्र है । यहाँसे एक पत्रिका 'मानस-मणि' निकलती है ।

मुख्य भव्य द्वारसे ही वाणि-विनायकके दर्शन होते हैं । यह मूर्ति 'मानस' के प्रथम श्लोकपर बनी है । द्वारके वाम पार्श्वमें कवीश्वर-कपीश्वर, श्रीजानकी, श्रीराम आदिकी मूर्तियाँ हैं । यह बालकाण्डके कुछ पृष्ठोंका लेखन है ।

यहाँसे द्वारमें भीतर जाकर बायें कृष्ण-कुञ्ज है । इसमें श्रीकृष्णोपासक सम्प्रदायके आचार्य, विष्णुस्वामी, बल्लभाचार्य, निम्बार्काचार्य, मध्वाचार्य, चैतन्यमहाप्रभु, श्रीहित हरिवंशजीकी मूर्तियाँ उनके आराध्योंके साथ पृथक-पृथक कुटियोंमें हैं । पास ही गोवर्धन तथा यमुनाका दृश्य है । प्रांगणमें श्रीशंकराचार्य, श्रीरामानुजाचार्य आराध्यके साथ तथा श्रीरामानन्दाचार्य आराध्यके साथ अपनी कुटियामें हैं ।

इसके आगे वाल्मीकि आश्रममें १४ कुटियाँ हैं । वाल्मिकजीने श्रीरामको १४ निवास-स्थान बतलाये थे । वे लक्षण जिनमें मिलते हैं, उनकी मूर्तियाँ इनमें हैं । इसी घेरेमें तुलसी-संग्रहालय है । इसमें

प्राचीन मूर्तियाँ तथा पुस्तकोंका संग्रह है ।

इससे निकलकर सीधे चलें तो विशाल अर्धमें सर्ववेष्टित विशाल लिंगके भीतर अर्धनारीश्वर मूर्ति है । उसके आगे दक्षिण मूर्ति शिव हैं । ये दोनों मूर्तियाँ 'मानस' के प्रारम्भिक श्लोकोंके आधारपर हैं ।

इसके आगे स्वस्तिकाकार मानस-सर है । इसके चार घाटोंपर मानसके चारों-वक्ता श्रोताओंके मन्दिर-मंडप हैं । उत्तर काकभुशुण्डि-गरुड़, पूर्व तुलसीदासजी, दक्षिण याज्ञवल्क-भरद्वाज तथा पश्चिम उमामहेश्वर पूरे सरोवरपर एकादश रुद्र लिंग तथा नन्दी मूर्ति है । चार ओर मानसके प्रमुख व्याख्याताओंकी मूर्तियाँ हैं ।

शिवमन्दिरके पीछे अत्रि आश्रम है । इसमें एक कमरेमें महर्षि अत्रि तथा श्रीराम-लक्ष्मण हैं, दूसरेमें अनुसूया और सीताजी हैं । समीप ही अत्रेय-आवास पहाड़ी है । इसकी तीन गुफाओंमें महर्षि अत्रिके तीनों पुत्र चन्द्रमा, दत्त और दुर्वासा हैं । इसके पीछे ही शरभंग आश्रम है । वहाँ चितापर शरभंग मुनि तथा कुटियाके सामने श्रीराम, जानकी, लक्ष्मण हैं । इसके उत्तर ओर पंचवटी है । वहाँ एक कुटियामें सीताराम तथा एकमें लक्ष्मणजी हैं ।

रामवनका मुख्य मन्दिर श्रीमारुति मन्दिर इसके आगे ऊँचे चबूतरेपर है । श्रीमारुतिकी बैठी हुई भव्य मूर्ति इसमें है । उनके सामने सभामण्डपसे लगा राम-नाम मन्दिर है । इसमें डेढ़ अरब लिखे राम नाम हैं । ऊपर ही नौ द्वारका भक्ति भवन है ।

मारुति-मन्दिरसे उतरकर द्वारकी ओर चलें तो देवी-मन्दिर है । उसके आगे भण्डार घर छोड़ दें तो एक घेरेके भीतर दस फुटके पीठपर खड़ी २६ फुटकी श्रीहनुमानजीकी मूर्ति है । इस घेरेमें द्वारके वाम पार्श्वमें किष्किन्धा काण्ड और दक्षिणपार्श्वमें सुन्दरकाण्डकी मूर्तियाँ

बनी हुयीं हैं ।

रामवनमें साधकोंकी कुटियाँ, गोशाला आदि हैं । यह सांस्कृतिक केन्द्र एवं तुलसी-शोधपीठ हैं ।

परिशिष्ट

विदेशोंके तीर्थस्थान

१- कैलास-मानसरोवर तिब्बतमें है और तिब्वत चीनके अधिकारमें है । कैलास-मानसरोवरको सनातन धर्मी, बौद्ध, जैन सभी तीर्थ मानते हैं; किन्तु अब वहाँ जाया नहीं जा सकता । अतः मार्ग-विवरण नहीं दिया जा रहा है ।

२- पश्चिमी-पाकिस्तानमें कई हिन्दू और सिख-तीर्थ पड़ गये हैं । विशेष अवसरपर प्रयत्न विशेषसे उन तक जाना सम्भव है । ये तीर्थ निम्न हैं-

पञ्जासाहब – यह लाहौर-पेशावर लाइनपर हसन-अब्दाल स्टेशन से ३ कि.मी. में दक्षिण में है । यह सिख तीर्थ है । यहाँ गुरु नानकने जलधारा प्रगट की है । विशाल शिला खण्डपर उनके पंजेका चिह्न है । पासमें विशाल गुरुद्वारा है ।

ननकाना साहब – यह गुरु नानकदेवका जन्मस्थान है ।

कटाक्षराज – लाहौर–पेशावर लाइनमें ख़िबड़ा स्टेशनसे १४.५ कि.मी. दूर पर्वतपर हिन्दुओंका यह तीर्थ है । यहाँ अमर- कुण्ड सरोवर है ।

हिंगलाज–यह प्रसिद्ध शक्तिपीठ है । करांचीसे जहाज द्वारा मकराना तक जाकर आगे पैदल मार्ग है । १३वें मुकामपर यह स्थान गुफामें है । बहुत संकीर्ण मार्ग है । वहाँ भीतर ज्योति तथा काली मन्दिर है । ज्योति पृथ्वीसे स्वतः निकलती है । यहाँ सतीका ब्रह्मरन्ध्र गिरा था ।

३- **बंग्लादेश**–बंग्लादेशमें कई शक्तिपीठ हैं । मुख्य तीर्थोंमें सीताकुण्ड स्टेशनके पास पहाड़पर सीताकुण्ड, बलुआकुण्ड स्टेशनके पास बलुआकुण्ड, बोगेरा स्टेशनसे ३२ कि.मी. दूर भवानीपुरमें शक्तिपीठ, बारीसालसे २१ कि.मी. पर शिकारपुर ग्राममें सुगन्धाके तटपर उग्रतारा शक्तिपीठ, खुलना जिलेके ईश्वरीपुर ग्राममें शक्तिपीठ, भिंगारा स्टेशनके पास मेहरकाली वाड़ी, चटगाँवमें चन्द्रशेखर मन्दिरमें शक्तिपीठ, वहीं चन्द्रनाथ पर्वतपर कुण्ड एवं मन्दिर आदि अनेक तीर्थ हैं ।

प्रधान बौद्ध तीर्थ

१-**लुम्बिनी**–यहाँ भगवान् बुद्धका जन्म हुआ था । गोरखपुरसे एक लाइन नौतनवाँ तक जाती है । वहाँसे १६ कि.मी. दूर नैपाल राज्यमें है ।

२-**बुद्ध-गया**–यहाँ बोध प्राप्त हुआ था । यह गया स्टेशनसे ११ कि.मी. दूर है । मुख्य मन्दिरके अतिरिक्त भी बुद्ध मन्दिर हैं । जिन देशोंमें बौद्ध-धर्म है, उन देशों द्वारा बौद्ध मन्दिर बने हैं, जो दर्शनीय हैं ।

३-**सारनाथ**–यहींसे बुद्धने धर्मका उपदेश प्रारम्भ किया । वाराणसीसे ९.५ कि.मी. पर सारनाथ स्टेशन है । यहाँ मन्दिर तथा

स्तूप भी है। वाराणसी जं. से सारनाथ ८ कि.मी. है। रेलके साथ बस, टैक्सी-टैम्पो से पहुँचना सुलभ है।

४-कुशीनगर–यहाँ बुद्धका निर्वाण हुआ। यह देवरिया स्टेशनसे ३३.५ कि.मी. है। गोरखपुरसे भी बस जाती है। बड़ा भव्य मन्दिर है। कुशीनगरमें मुख्य स्तूप तथा कुम्भ स्तूप कहा जाता है।

शेष स्तूप पावागढ़, वैशाली, कपिलवस्तु, रामग्राम, अल्लकल्प, राजगृह तथा बेट द्वीपमें बने। अंगार-स्तूप पिप्पलीयवनमें बना। इनमेंसे पिप्पलीयवन, अल्लकल्प तथा रामग्रामका पता नहीं है। शेष स्थान प्रसिद्ध हैं।

५-कौशाम्बी–इलाहाबाद जिलेके भरवारी स्टेशनसे २५.५ कि.मी. पर है। यहाँ बुद्धके केश तथा नख सुरक्षित हैं।

६-साँची–भोपालसे ४० कि.मी पर स्टेशन है। इसे पहिले विदिशा कहते थे। यहाँ एक स्तूप है।

७-पेशावर (पश्चिम पाकिस्तान)–यहाँ एक बड़े ऊँचे स्तूपके नीचेसे बुद्धकी अस्थियाँ निकलीं।

प्रधान जैनतीर्थ

१-अयोध्या–ऋषभदेवकी जन्मभूमि है। सरयू-तटपर मन्दिर है। यह पांच तीर्थंकरोंकी जन्मस्थली है।

२-श्रावस्ती–गोंडा जिलेमें बलरामपुरसे १६ कि.मी पर सहेठ-महेठ ग्राम है। तीसरे तीर्थंकर सम्भवनाथकी जन्मभूमि है।

३-कौशाम्बी–भरवारी स्टेशनसे ३५-४० कि.मी. है। यहाँ

प्रभास पर्वतपर छठे तीर्थंकर पद्मप्रभने तप किया । कौशाम्बी नगर उनकी जन्मभूमि है ।

४-वाराणसी–सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ और तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथकी जन्मभूमि है । भदैनी तथा भेलूपुर मुहल्लोंमें जैन-मन्दिर हैं ।

५-सिंहपुर (सारनाथ)–ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ की जन्मभूमि है । यह वाराणसीसे १० कि.मी. पर है ।

६-चन्द्रपुर (चन्द्रवती)–सारनाथसे १४.५ कि.मी. पर गाँव है । आठवें तीर्थंकर चन्द्रप्रभका जन्मस्थान है ।

७-खखूंद–गोरखपुरसे ६२ कि.मी. नूनखार स्टेशनसे ५ कि.मी. । नौंवे तीर्थंकर पुष्पदन्तका जन्मस्थल है ।

८-रत्नपुर–फैजाबाद जिलेके सोहावल स्टेशनसे २.५ कि.मी. है । पन्द्रहवें तीर्थंकर धर्मनाथका जन्मस्थान है ।

९-कम्पिल–फर्रूखाबाद जिलेमें कायमगंज स्टेशनसे १३ कि.मी. है । तेरहवें तीर्थंकर विमलनाथने यहाँ जन्म लिया ।

१०-हस्तिनापुर–मेरठ नगरसे ३५ कि.मी.. पर है । यहाँ शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ और अरनाथ नामक तीन तीर्थंकरोंने जन्म लिया है ।

११-सौरीपुर–वटेश्वर (यमुना-तट) बाइसवें तीर्थंकर नेमिनाथने जन्म लिया ।

१२-मथुरा–यहाँ नगरसे बाहर चौरासी नामक जैन तीर्थ स्थल है ।

१३-अहिच्छत्र–बरेली जिलेमें आँवला कस्बेसे १३ कि.मी.

पर रामनगर गाँव है। यहाँ पार्श्वनाथने तप करके केवल ज्ञान प्राप्त किया।

१४-सम्भेद शिखर (पारसनाथ)–हजारीबाग जिलेमें पारसनाथ स्टेशनसे ३२ कि.मी. पर मधुबन है। यहाँ अनेक जैन धर्मशालाएँ हैं। यहाँ से ९.५ कि.मी. पर्वतपर चढ़ना, ९.५ कि.मी. की पर्वत यात्रा और ९.५ कि.मी. उतरना है। यहाँसे २० तीर्थंकर तथा अनेकों जैन साधु मुक्ति गये। पहाड़ियोंपर चरण-चिह्न हैं। एक चौबीस तीर्थंकर मन्दिर भी यहाँ है।

१५-पावापुर–राजगृहसे आगे नालन्दा भग्नावशेष है। उससे थोड़ी दूरीपर पावापुर है। यहाँ चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामीने निर्वाण प्राप्त किया। सरोवरके बीचमें मन्दिर है। बस्तीमें श्वेताम्बर जैन मन्दिर है।

१६-राजगृह–विवरण राजगृह तीर्थ वर्णनमें है। यहाँ महावीर स्वामीकी प्रथम धर्मदेशना हुई। यहाँ विशाल स्तूप हाल ही बना है।

१७-चम्पापुर–वारहवें तीर्थंकर वासुपूज्य स्वामीका यह जन्म एवं निर्वाण स्थान है। यह स्थान भागलपुरके के पश्चिम ५ कि.मी पर है।

१८-खण्डगिरि–भुवनेश्वर (उड़ीसा) से ८ कि.मी.पर उदयगिरि तथा खण्डगिरि पहाड़ियोंपर गुफाएँ हैं।

१९-कैलास–तिब्बतमें ऋषभदेवका निर्वाण स्थान है।

२०-गिरिनार–तीर्थ वर्णनमें वर्णन आ चुका है। बाइसवें तीर्थंकर नेमिनाथका निर्वाण स्थान है।

२१-माँगी-तुंगी–नासिकसे १२८ कि.मी. दूर वनमें दो पर्वत शिखर हैं । यहाँ गुफाओंमें जैन मन्दिर हैं ।

२२-गजपन्था–नासिकके पास मसरूल गाँवकी पहाड़ीपर है । यहाँसे कई नरेश मोक्ष गये ।

२३-कुंथलगिरि–वार्सी टाउन (मैसूर राज्य) से ३३.५ कि.मी. दूर छोटी पहाड़ी है ।

२४-श्रवणबेलगोला–मैसूर-हरिहर लाइनपर आरसीकेरे या हासन स्टेशनसे यहाँ मोटर-बसका मार्ग है । यहाँ चन्द्रगिरि और विन्ध्यगिरि दो पर्वत हैं । दोनोंपर जैन मन्दिर हैं । नीचे धर्मशाला है । यहाँ विन्ध्यगिरि पर ५७ फुट ऊँची विश्वकी सबसे बड़ी मूर्ति गोम्मटेश्वर बाहुबलीकी है और भी मन्दिर आसपास हैं ।

२५-हालेविद–वेलूर-वर्णन यात्रा-विवरणमें है ।

२६-मूलविद्री–दक्षिण कनाडा जिलेमें है । यहाँ १८ जैन मन्दिर हैं । इनमें त्रिभुवन तिलक चूड़ामणि मन्दिर विशाल है । सिद्धान्त-वसति मन्दिरमें दिगम्बर जैनोंके सिद्धान्त ग्रन्थ ताड़पत्र लिखे रक्षित हैं । इसमें मोती, पन्ना, पुखराज, गोमेद, नीलम आदिकी रत्न मूर्तियाँ हैं ।

२७-कारकल–मूलबिद्रीसे १६ कि.मी पर है । १८ जैंन मन्दिर हैं । पहाड़ीपर ३२ फुट ऊँची बाहुबली मूर्ति है । दूसरी पहाड़ीपर बने मन्दिरमें चारों ओर तीन-तीन विशाल मूर्तियाँ हैं ।

२८-केशरियाजी–उदयपुरसे ६४ कि.मी. पर ऋषभदेवका मन्दिर है । मूर्तिपर यहाँ बहुत अधिक केशर चढ़ाई जाती है ।

२९-श्रीमहावीरजी–मथुरा-नागदा लाइनपर इसी नामका स्टेशन

है । वहाँसे तीर्थ ६.५ कि.मी. है । गाँव चान्दन है । यह अतिशय क्षेत्र है । अनेकों धर्मशालाएँ हैं । महावीर-मन्दिर विशाल है । यहाँ भूमिसे मिली मूर्ति मन्दिरमें है ।

३०-**सिद्धवरकूट**–ओंकारेश्वर-मान्धाता द्वीपमें यह स्थान है ।

३१-**बड़वानी**–इस स्थानसे ८ कि.मी. पर चूलगिरि पर्वत है । इस पर आदिनाथकी ८४ फुट ऊँची मूर्ति खोदी हुई है । पर्वतपर २२ और मन्दिर हैं ।

३२-**मुक्तागिरि**–बरारके एलिचपुर नगरसे १९ कि.मी. पर जंगलमें छोटी पहाड़ी है । उसमें गुफाएँ हैं । ५२ मन्दिर आसपास हैं ।

३३-**थूवनजी**–झाँसी जिलेमें बूढ़ी चँदेरी है । वहाँ २५ मन्दिर हैं ।

३४-**देवगढ़**–ललितपुर (झांसी) से ३०.५ कि.मी. पर वेतवा किनारे एक छोटी पहाड़ीपर कई मन्दिर हैं । ये मन्दिर कलाकी दृष्टिसे श्रेष्ठ हैं । यहाँ २०० शिलालेख हैं ।

३५-**अहार**–टीकमगढ़से १४.५ कि.मी. पर गाँव है । वहाँसे ९.५ कि.मी. पर निर्जनमें तीन मन्दिर हैं । एकमें श्रीशान्तिनाथकी २१ फुटकी मूर्ति है ।

३६-**पपौरा**–टीकमगढ़के पास जंगलमें कोटके भीतर ९० जैन मन्दिर हैं ।

३७-**कुण्डलपुर**–दमोह स्टेशनसे ३५ कि.मी. पर कुंडलाकार पर्वत है । तलहटीमें तथा ऊपर ५९ मन्दिर हैं ।

३८-**नैनागिरि**–सागर स्टेशनसे ४८ कि.मी. पर जंगलमें छोटी

पहाड़ीपर तथा तलहटी में ३२ मन्दिर हैं ।

३९-द्रोणगिरि–छतरपुर-सागर रोडपर सेधपा ग्रामके पास पहाड़ीपर २४ मन्दिर हैं ।

४०-खुजराहो–प्रसिद्ध स्थान है । पन्नासे मार्ग है । ३१ जैन मन्दिर हैं । सनातन धर्मके मन्दिर बहुत विशाल हैं । उनमें भी शिव-मन्दिर बहुत सुन्दर है ।

४१-सोनागिरि–ग्वालियर-झाँसी लाइनपर यह स्टेशन है । यहाँ पहाड़ तथा तलहटीमें ९४ मन्दिर हैं ।

श्वेताम्बर-जैन तीर्थ

बहुतसे तीर्थ दिगम्बर-श्वेताम्बर दोनोंके हैं । उनके वर्णन ऊपरके विवरणमें आ गये हैं । यहाँ अब केवल श्वेताम्बर जैन तीर्थोंका स्थान उल्लेख है ।

मालवामें–उज्जैन, धार, माण्डवगढ़, मकसीजी, लक्ष्मणी तथा ग्वालियर किलेमें चमत्कारी जैन मूर्तियाँ हैं ।

मध्य प्रदेशमें–भाँदक, अन्तरिक्षजी दो जैन तीर्थ हैं ।

दक्षिण भारतमें–हैदराबाद जाने वाली लाइनपर कुलपाकजी है ।

पंजाबमें–कांगडा नगरकोटमें पर्वतपर जैन मन्दिर है ।

सौराष्ट्र–सिद्धाचल-पालीताना स्टेशनके पास पहाड़ीपर जैन-मन्दिरोंका नगर ही है । इसका दूसरा नाम शत्रुंजय है । यह पाँच पवित्र पर्वतोंमें है । यहाँसे करोड़ों मुनि मोक्ष गये । पालीताना स्टेशनसे पर्वत ५.५ कि.मी. है । पक्की सड़क है । ऊपर चढ़नेको सीढ़ियाँ

बनी हैं । पासमें शत्रुंजय नदी है, जो श्वेताम्बर जैनोंमें परम पवित्र है । यह तीर्थ श्वेताम्बर जैन समाजका प्रधान तीर्थ है । इसके अतिरिक्त बल्लभीपुर, भावनगरके पास घोघा एवं तलाजा तथा प्रभास-पाटण जैन तीर्थ हैं ।

गुजरातमें–पाटण, अहमदाबाद, खम्भात, शंखेश्वर पार्श्वनाथ, तारंगाहिल, भोयणीग्राम, पावागढ़, कच्छमें भद्रेश्वरमें जैन तीर्थ हैं ।

राजस्थानमें–आबू तथा उसके पास जीरापल्ली, हमीरपुर, ब्राह्मणवारा हैं । गोडवाड़ प्रदेशमें राणकपुर, घाणेराव, नाडलाई, नकाडोल, वरकांठा ये पञ्च तीर्थ हैं । मारवाडमें कम्भरियाजी, आरासण, कोरठा, श्रीमाल, जालौर, कापरडा, नाकोड़ा, ओसियाँ, पाली तथा संतगढ़ हैं । मेडतारोड स्टेशनके पास फलौंधी है । आवू प्रदेशमें बसन्तगढ़ है । जालौर तथा भीनमालमें कई मन्दिर हैं ।

सांचौर, मेषानगर (बालोतरा स्टेशनसे ६.५ कि.मी.) नाकोड, वाडमेर तथा पासमें खेड-किराडू आदि प्राचीन तीर्थ हैं ।

बीकानेर-जोधपुर लाइनपर आसरनाड़ा स्टेशनसे धंधाणी तीर्थ जाते हैं । यहाँ पद्मप्रभुजिनालय है ।

जोधपुरके पास मण्डोर है । मेड़ता, नागौर, हथंडीमुछाड़ामें प्राचीन मन्दिर हैं ।

जैसलमेरमें कई जैन मन्दिर हैं । उदयपुरसे देलवाड़ा-नागदा बस मार्गपर हैं । चित्तौड़गढ़में कई मन्दिर हैं । यहाँ जैन कीर्ति-स्तम्भ है । चित्तौड़के पास करेड़ामें सुन्दर मन्दिर है ।

अत्यन्त संक्षिप्त स्थान-निर्देश सूची मात्र यह जैन तीर्थ स्थलोंकी है ।

चार धाम

१-**बद्रीनाथ**–हरिद्वार से २७७ कि.मी. मोटर बस का मार्ग है ।

२-**द्वारिका**–प्रसिद्ध स्टेशन है । गुजरातमें यह पश्चिम समुद्रतटपर है ।

३-**जगन्नाथपुरी**–उड़ीसामें समुद्रतटपर है ।

४-**रामेश्वर**–तमिलनाडुमें दक्षिण-समुद्र तटपर है ।

मोक्षदायिनी सप्तपुरी

१-काशी (वाराणसी) २-काञ्ची ३-मायापुरी (हरिद्वार) ४-अयोध्या ५-द्वारिका ६-मथुरा ७-अवन्तिका (उज्जैन) ।

पञ्चकेदार

१-**केदारनाथ** २-**मध्यमेश्वर** (मदमहेश्वर) ऊषीमठसे २९ कि.मी. ३-**तुंगनाथ** ४-**रुद्रनाथ**-मंडल् चट्टीसे मार्ग जाता है । ५-**कल्पेश्वर**-हेलंग (कुम्हार चट्टी) से अलकनन्दा पार करके ९.५ कि.मी. जाना होता है ।

सप्तबदरी

१-श्रीबद्रीनाथ २-आदिबद्री (ध्यानबद्री) कुम्हारचट्टीसे ९.५ कि.मी. । ३-वृद्धबद्री–ऊषीमठ–कुम्हारचट्टीसे ४ कि.मी. । ४-भविष्यबद्री–जोशीमठ से १७.५ कि.मी. । ५-योगबद्री–पाण्डुकेश्वरमें । ६-आदिबद्री–तिब्बतके कैलास मार्गमें थुलिंगमठ । ७-नृसिंहबद्री–जोशीमठमें ।

पञ्चनाथ

१-बद्रीनाथ २-रंगनाथ (श्रीरंगम्) ३-जगन्नाथ (पुरी, उड़ीसामें) ४-द्वारिकानाथ ५-गोवर्धननाथ (श्रीनाथ) नाथद्वारामें ।

पञ्चकाशी

१-वाराणसी २-गुप्तकाशी ३-उत्तरकाशी ४-दक्षिणकाशी (तेन्काशी) ५-शिवकाशी (दक्षिणमें)

पञ्चतत्त्वलिंग

१-पृथ्वीतत्वलिंग-एकाश्मेश्वर कांचीमें २-जलतत्वलिंग जम्बुकेश्वर श्रीरंगम्में । ३-अग्नितत्वलिंग अरुणाचलम्में । ४-वायुतत्वलिंग श्रीकालहस्तीश्वर कालहस्तीमें । ५-आकाशतत्वलिंग चिदम्बरम्में ।

सप्तक्षेत्र

१-कुरुक्षेत्र (पंजाब) २-हरिहरक्षेत्र (सोनपुर) ३-प्रभास-क्षेत्र ४-रेणुकाक्षेत्र (मथुराके पास) ५-भृगुक्षेत्र (भरुच) ६-पुरुषोत्तमक्षेत्र (जगन्नाथपुरी) ७-सूकरक्षेत्र (सोरों) ।

सप्तपुण्य-सरिताएँ

१-गंगा २-यमुना ३-गोदावरी ४-सरस्वती ५-कावेरी ६-नर्मदा ७-सिन्धु ।

द्वादश देवी-पीठ

१-कामाक्षी काञ्चीमें । २-भ्रमराम्बा – मलयमें । ३-कुमारी – कन्याकुमारीमें । ४-अम्बाजी – गुजरातमें । ५-महालक्ष्मी – कोल्हापुरमें । ६-कालिका – उज्जैनमें । ७-ललितादेवी – अलोपीदेवी – प्रयागमें । ८-

विन्ध्यवासिनी – विन्ध्याचलमें । ९-विशालाक्षी – वाराणसीमें । १०-मंगलावती – गयामें । ११-त्रिपुरसुन्दरी – बंगालमें । १२-गुह्यकेश्वरी – नेपालमें ।

द्वादश ज्योतिर्लिंग

१-विश्वनाथ (वाराणसीमें) २-वैद्यनाथ (वैद्यनाथधाममें) ३-रामेश्वर ४-मल्लिकार्जुन (श्रीशैलपर) ५-धृष्णेश्वर (इलोरा गुफाके पास) ६-नागेश (अवढानागनाथमें) ७-भीमाशंकर (पूनासे मार्ग है) ८-त्र्यम्बकेश्वर (नासिक, महाराष्ट्रमें) ९-ओंकारेश्वर (मध्य प्रदेशमें) १०-महाकाल (उज्जैनमें) ११-सोमनाथ (प्रभास-क्षेत्र गुजरातमें) १२-केदारनाथ (उत्तराखण्डमें) मतान्तरसे हाटकेश्वर (वडनगर-गुजरातमें) ।

चतुर्दश प्रयाग

१- प्रयागराज (गंगा-यमुना-सरस्वती), २- देवप्रयाग (अलकनन्दा-भागीरथी), ३- रुद्रप्रयाग (अलकनन्दा-मन्दाकिनी), ४- कर्णप्रयाग (पिण्डरगंगा-अलकनन्दा), ५- नन्दप्रयाग (अलकनन्दा-नन्दा), ६- विष्णुप्रयाग (विष्णुगंगा-अलकनन्दा), ७- सूर्यप्रयाग (अलसतरंगिणी-मन्दाकिनी), ८- इन्द्रप्रयाग (भागीरथी-व्यासगंगा) ९- सोमप्रयाग (सोमनदी-मन्दाकिनी), १०- भास्कर प्रयाग ११- हरिप्रयाग (हरिगंगा-भागीरथी) १२- गुप्तप्रयाग (नीलगंगा-भागीरथी), १३- श्यामप्रयाग (श्यामगंगा-भागीरथी), १४- केशवप्रयाग (अलकनन्दा-सरस्वती) ।

कुम्भ स्थान

हरिद्वार - कुम्भ राशिके गुरुमें, मेषके सूर्य में

प्रयाग - वृष राशिके गुरुमें, मकरके सूर्य में

उज्जैन - सिंह राशिके गुरुमें, मेषके सूर्य में

नासिक - सिंह राशिके गुरुमें, सिंहके सूर्य में ।

श्राद्धके लिए प्रधान तीर्थ

१- देवप्रयाग, २- त्रियुगीनारायण, ३- मदमहेश्वर, ४- रुद्रनाथ, ५- बदरीनाथ, ६- हरिद्वार, ७- कुरुक्षेत्र, ८- पिण्डारक-तीर्थ, ९- मथुरा, १०-नैमिषारण्य, ११- धौतपाप, १२- बिठूर, १३- प्रयागराज, १४- काशी, १५- अयोध्या, १६- गया, १७- बोधगया, १८- राजगृह, १९- याजपुर, २०- परशुराम-कुण्ड, २१- भुवनेश्वर, २२- उज्जैन, २३- जगन्नाथपुरी, २४- अमरकण्टक, २५- नासिक, २६- त्र्यम्बकेश्वर, २७- पंढरपुर, २८- लाहार्गल, २९- पुष्कर, ३०- तिरुपति, ३१- शिवकांची, ३२- कुम्भकोणम्, ३३- श्रीरंगम्, ३४- रामेश्वरम्, ३५- धनुष्कोटि, ३६- दर्भशयनम्, ३७- सिद्धपुर, ३८- द्वारकापुरी, ३९- नारायण-सर, ४०- प्रभास-पाटण, ४१- शूलपाणि, ४२- चाणोद ।

तीर्थ यात्रामें छोड़नेकी चीजें

तीर्थ यात्रामें दम्भ, छोड़ो, दर्प छोड़ो, मान छोड़ो, शान छोड़ो ।
तीर्थ यात्रामें गर्व छोड़ो, क्रोध छोड़ो, काम छोड़ो, नाम छोड़ो ।
तीर्थ यात्रामें लोभ छोड़ो, मोह छोड़ो, द्रोह छोड़ो, द्वेष छोड़ो ।
तीर्थ यात्रामें बैर छोड़ो, संग छोड़ो, ढंग छोड़ो, रंग छोड़ो ।
तीर्थ यात्रामें क्रोध करो अपने दोष-दुर्गणों पर ।
तीर्थ यात्रामें लोभ करो भगवान्के भजन का ।
तीर्थ यात्रामें मोह करो भगवान्की महिमा का ।
तीर्थ यात्रामें संग करो भगवद्भक्तोंका, संतों का ।

कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम्
श्रीकृष्ण-जन्मस्थान-सेवा-संस्थान